साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
की ओर से
पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली द्वारा प्रकाशित

प्रथम संस्करण
१९५६
मूल्य तीन रुपये

उद्योगशाला प्रेस किंग्सवे, दिल्ली में मुद्रित

हिन्दी-पाठकों से

❁

मेरे लिए सन्तोषकी वात है कि मलयालम्से हिन्दीमें अनूदित किया जाने वाला सवसे पहला उपन्यास 'केरलसिंहम्' है, जो अव 'केरलसिंह'-के नामसे प्रकाशित हो रहा है

इस उपन्यासका विषय है—विदेशी आधिपत्यसे अपनी स्वतन्त्रता-की रक्षाके लिए केरलीय जनताका वीरतापूर्ण सघर्ष इस सघर्षके नेता पपश्शिराजा केरलवर्मा थे वे वीरताके साक्षात् अवतार और अत्यन्त स्मरणीय पुरुप थे विद्वान्, कवि और योद्धा—केरलवर्माने पन्द्रह वर्ष-से अधिक हैदरअली और टीपू सुलतानसे लोहा लिया था और जव टीपू-की सेनाएँ वापस चली गई और अग्रेजोने केरलपर अपना सीधा शासन स्थापित करनेका प्रयत्न किया तव उन्होंने अग्रेजोके विरुद्ध राष्ट्रीय प्रतिरोधका मोर्चा सगठित किया इसमें वे इतने सफल हुए कि अग्रेज अपने वडे-से-वडे प्रयत्नोंके वाद भी कोई प्रगति नही कर सके और उनका शासन उनके समुद्र-तटवर्ती दुर्गोंतक ही सीमित रहा उनके विरुद्ध मोर्चे वांधने वाला कोई छोटा मोटा व्यक्ति नही, महा प्रतिभाशाली आर्थर वेलेस्ली था, जो इतिहासमे 'नैपोलियनका बिजेता, ड्यूक आफ वेलिंगटन' के नामसे प्रख्यात हुआ उसे प्रचुर सैनिक साधन तो उप-

लब्ध थे ही, अपने भाई शक्तिशाली गवर्नर-जनरल लार्ड वेलेस्लीका पूर्ण समर्थन भी प्राप्त था परन्तु असाई और वाटरलूके विजेताको केरलवर्माके रूपमे सेरको सवा-सेर मिला था उसने अपनी सारी युक्तियाँ लडाई, परन्तु जब मलाबार छोडा उस समयतक केरलवर्माको पराजित नही किया जा सका था और वहाँ तब भी विद्रोह फैला हुआ था

इस सराहनापूर्ण कथाके अनैतिहासिक और अतिरजित समझे जानेकी सम्भावना थी, इसलिए मैने मूल पुस्तकमें परिशिष्टके रूपमें 'वेलिंगटनके खरीतो' के कुछ ऐसे उद्धरण दे देनेकी सावधानी बरती थी, जिनसे पपश्शिराजाके विरुद्धकी गई कार्रवाइयोका पता चलता है

इस कथाका एक पहलू और भी है, जो इतिहासकारोंके लिए दिलचस्पीका होगा यह पहलू है उस शिक्षाका, जो वेलेस्लीने केरलवर्माके विरुद्ध अपनी असफल कार्रवाइयोसे ली और जिसका उपयोग उसने बहुत सफलताके साथ नैपोलियनके विरुद्ध स्पेनके युद्धमे किया केवल युद्ध-प्रणालीको कुछ अशोमें बदल दिया गया—केरलवर्माके छापामार युद्धकी तरकीबोका ही वेलेस्लीने मार्शल सोल्ट और उसकी सेनाओके विरुद्ध प्रयोग किया था वेलिंगटनने वाटरलूमे जो कीर्ति प्राप्त की उसकी प्रशिक्षण-भूमि केरल ही था

केरलवर्माके सघर्षके एक और पहलू पर भी जोर देनेकी आवश्यकता है वे एक सच्चे देशभक्त थे उन्होने अपनी प्रजाकी स्वतन्त्रताके लिए सघर्ष किया, न कि अपने राज्यको पुन प्रतिष्ठित करनेके लिए वे कोई राज्य-च्युत राजा नही थ, जिन्होने अपने अधिकारोंके लिए युद्ध किया हो वे सच्चे अर्थोंमें जन-आन्दोलनके नेता—शिवाजी और प्रताप के केरलीय प्रतिरूप थे

कविके रूपमें उन्हे चार 'आट्टकथाओ (कथकलि-काव्यो) की रचनाका श्रेय प्राप्त है यह स्मरणीय है कि उनमेंसे प्रत्येकका विषय पाण्डवोका वनवास-जीवन है, जिससे मलाबारके वनोमे उनके अपने ही वासकी झलक मिलती है ये 'आट्टकथाएँ' साधारणत 'कोट्टय कृतियों'

के नामसे प्रसिद्ध हैं और इनकी गणना सर्वोत्तम कथकलि-गीतिनाट्यों-में की जाती है अब भी ये साहित्य तथा नाट्य काव्य दोनोंके रूपमें अत्यन्त लोकप्रिय हैं कहा जाता है कि केरलवर्मा स्वय एक श्रेष्ठ अभिनेता थे और अपनी ही 'आट्टकथाओ' के अनेक वीर पात्रोंका अभिनय किया करते थे

मैंने 'केरलसिंहम्' मे उन्नीसवी शताब्दीके प्रारम्भिक कालके केरलीय सामाजिक जीवनके चित्रणका भी प्रयत्न किया है लगभग ५० वर्षोंके विध्वसकारी युद्धोंके परिणामस्वरूप उस समयका समाज प्राय नष्ट-भ्रष्ट हो गया था जिन सामाजिक बन्धनोंमे केरलीय जनता एकता-के सूत्रमे बँधी थी वे शिथिल पड गए थे और जिन प्रदेशोंमे टीपूकी सेनाएँ खदेडी गई थी उनमें अराजकताकी-सी स्थिति फैली हुई थी इसी अवस्थाका प्रतिबिम्ब इस उपन्यासमे उपलब्ध होता है

इस कृतिके हिंदी-पाठकोंसे मैं निवेदन करना चाहता हूँ कि इसमे जिस समाज और जिन आचार-व्यवहारोंका चित्रण किया गया है, वे सम्भव है, उन्हे विलक्षण और अपरिचित प्रतीत हो मलाबारमे कौटुम्बिक सम्बन्धोंका आधार प्रधानत मातृ-सत्ता है दूसरोंके लिए इस प्रणालीको समझना सरल नही है केरलके सामाजिक आधार शेष भारतके सामाजिक आचारोंसे सदा भिन्न रहे हैं और इसीलिए इस उपन्यासकी बहुत-सी बातें अनोखी मालूम हो सकती है परन्तु उन्हे एक अपरिचित समाजकी प्रतिच्छविके रूपमें देखना चाहिए और ऐसे लोगोंके आचार-व्यवहारके रूपमें समझना चाहिए, जो अपनी सामाजिक परम्पराओंको अधिक-से-अधिक मूल्यवान मानते हैं

जहाँतक 'केरलसिंहम्' के हिंदी अनुवादका सबध है, कहना न होगा कि साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित यह अनुवाद ही अधिकृत एव प्रमाणित है

नई दिल्ली

—का० मा० पणिक्कर

प्रस्तावना

> येपा वशे समजनि हरिश्चन्द्र नामा नरेन्द्रः
> प्रत्यापत्ति पतग । यदुपज्ञ च कौमारिलाना ।
> युद्धे येपामहित हतये चण्डिका सन्निधत्ते
> तेपामेपा स्तुतिपु न भवेत् कस्य वक्त्र पवित्र ॥

कोट्टयके राजाओकी प्रशसामे महापण्डित उद्दण्ड शास्त्रीने उपर्युक्त उद्गार व्यक्त किये थे "जिनके वशमें राजा हरिश्चन्द्रने जन्म लिया, जिन्होने केरलमें कौमारिल आदि मीमासा-शास्त्रोका प्रचार किया, जिनके शत्रुओको नष्ट करनेके लिए श्रीचण्डिका देवी स्वय युद्ध-भूमिमे अवतरित होती है, उन राजाओकी स्तुति करनेसे किसका मुख पवित्र न होगा?"

यद्यपि यह श्लोक पुरळी-राजाओकी प्रशस्तिमे लिखा गया है, फिर भी केरलवर्मा पपश्शि राजाके सम्बन्धमें अक्षरश सत्य है सत्यसधतामे वे हरिश्चन्द्रके समान थे पाण्डित्यके विपयमे विशेप कहनेकी आवश्यकता ही नही है, क्योकि यह उनकी कृतियो द्वारा, जिनका आज भी केरलीय जनता अभिनन्दन करती है, सुव्यक्त है उनकी युद्ध-कुशलताके विपयमे इतना ही कहना पर्याप्त है कि उन्होने उस कर्नल आर्थर वेलेस्लीको भी पराजयका स्वाद चखाया, जिसने लोकनेता नेपोलियनको हराकर ड्यूक

आफ वेलिगटनकी उपाधि प्राप्त की थी इसलिए यह मानकर कि केरलीयोके गौरव-स्तम्भ केरल वर्मा पपश्शि राजाके पवित्र इतिहासका वर्णन करनेमे किसीका भी मुख पवित्र हो जायगा, उद्दण्ड शास्त्रीका अनुकरण करनेमे सकोचकी आवश्यकता नही है

इतिहास स्वीकार करता है कि पपश्शि राजाके साथ युद्ध करनेमे जो अनुभव मिला उसीके बलपर वेलेस्ली नेपोलियनको हरा सका उसने पपश्शिराजाके साथ युद्ध करनेके लिए पहाडी प्रदेशोमे छोटे-छोटे दुर्ग बनाकर सारे देशपर अधिकार कर लेनेका प्रयत्न किया था युद्धके इस तरीकेको अग्रेजीमे 'ब्लाक हाउस सिस्टम्' कहते है स्पेनमे उसने इसीका अवलम्बन करके नेपोलियनको हराया था

यह उपन्यास पपश्शि राजा और वेलेस्लीके बीच हुए युद्धके आधारपर लिखा गया है इसलिए कहनेकी आवश्यकता नही कि इसका आधार न तो उस समयके केरलका इतिहास है और न राजा केरल वर्माकी जीवनी ही है केरल वर्माके जीवनमे जो-कुछ अति विशिष्ट प्रतीत हुआ, उसके एक अशका सकेत-मात्र इसमे किया गया है

मलयालम् भाषामे केरलवर्माकी जीवनीका न होना केरलीयोंके लिए अभिमानकी बात नही है देशके स्वातन्त्र्यकी रक्षाके लिए आक्रमणकारी शक्तियोके साथ युद्ध करते हुए बिना हार माने वीर-स्वर्ग प्राप्त करने वाले इस महान् वीरके समान अन्य पुरुष समस्त भारतके इतिहासमे विरले ही है महाराणा प्रताप, छत्रसाल बुन्देले आदिका ही स्थान केरल वर्मा पपश्शि राजाका भी है परन्तु केरलीय जनताने उन्हे भुला सा दिया है साहित्य और इतिहास दोनोके प्रकाण्ड पण्डित श्री टी० के० कृष्ण मेनवनने इनके बारेमे कहा है—"१७९२ मे जब अग्रेजोने केरलमें शासन प्रारम्भ किया तबसे उनके और कोट्टयके तत्कालीन राजा 'बपश्शि' (?) केरलवर्माके बीच लडाई शुरू हुई"—(कोकिल सदेश व्याख्या) अर्थात् हमने उन्हे इतना भुला दिया कि 'पपश्शि' बदलकर 'बपश्शि' बन गया !

कप्पन कृष्ण मेनवनका 'केरलवर्मा पपश्शि राजा' नामक गद्य-नाटक ही इनके संबंधमे रचित पहला मलयाल-ग्रंथ है यह वीररस-प्रधान नाटक महाराजाके स्वभाव-माहात्म्य, आदर्श-महत्त्व तथा वीर्य पराक्रमको पर्याप्त रूपमे व्यक्त करता है श्री के० सुकुमारन् बी० ए० ने 'जन-रंजिनी' नामक मासिक पत्रिकामे महाराजाकी जीवनीपर 'पपश्शि राजा' शीर्षकसे दो लेख प्रकाशित कराये थे ये लेख मुख्यत मिस्टर लोगनकी 'मलाबार मैन्युएल' के आधारपर लिखे गए थे फिर भी इनमे महाराजा-के जीवनकी मुख्य घटनाओंकी जानकारी मिलती है इस 'लोगन मैन्युएल' और वेलिंगटनके खरीतो (वेलिंगटन-डिसपैचेज) मे पपश्शि राजाके संबंधमें बहुत-सी जानकारी उपलब्ध है

'वेलिंगटन डिसपैचेज' नामक पुस्तकके पपश्शि राजा-संबंधी कुछ अंश इस पुस्तकके अन्तमे परिशिष्टके रूपमे दे दिये गए है ग्रंथकर्त्ता साधारणत नायकके गुणोंको स्पष्ट करनेके लिए प्रतिनायकपर दोषा-रोपण किया करते है परिशिष्टसे स्पष्ट हो जायगा कि मैंने इस मार्गका अवलम्बन नही किया है

श्री टी० के० कृष्ण मेनवनने जिसको 'वपश्शि' बताया है उस 'पपश्शि' नामके बारेमे भी दो शब्द कह देना आवश्यक है केरलवर्माके पपश्शि राजा नामसे विख्यात होनेका कारण उनका 'पपश्शि-राज-मंदिर' मे रहना है कोट्टयम राज्यके बडे राजा ये कभी नही थे कोट्टयम-राजवंशकी एक शाखा पपश्शिमे रहती थी पपश्शि दुर्ग और राज-मंदिर 'माट्टन्नूर' से चार मील दक्षिण 'कूत्तुपरम्बु के मार्गपर है आज जो बडा मार्ग बना है वह उनके महलके बीचसे जाता है उस स्थानसे लग-भग एक फर्लांग दूर खेतके उस पार एक राजमहल आज भी मौजूद है उसमे गोद ली हुई एक रानी, उनके पुत्र केरलवर्मा राजा और दो बालक आज भी रहते है

कोट्टयम राज्यका सीमा-सरहद-सम्बन्धी तथा अन्य आवश्यक ज्ञान

प्राप्त करानेमे जिन्होंने मेरी सहायताकी उन मित्रवर श्री कूटाळ्ळि यज-मानन् कुञ्जिक्कम्मारन् नम्पियारके प्रति मैं अपनी कृतज्ञता प्रकट करता हूँ पपशिश राज-मदिर और कैतेरीमे उनके अतिथिके रूपमे मैं रह सका था उन्ही साहित्य-मर्मज्ञ, समाजाभिमानी, नम्पियार महानुभावको अपन स्नेह तथा आदरके उपलक्ष्यमें यह ग्रथ समर्पित करता हूँ

—का० माधव पणिक्कर

पहला अध्याय

❀

उन दिनो डाकुओ, कपनीवालो* और राज्य-भ्रष्ट राजाओंके उपद्रवो-के कारण कोट्टयमसे पानूर जानेवाला रास्ता बहुत कम चलता था यदि नितात अनिवार्य ही हो जाता तो भी बडे-बडे लोग सशस्त्र अनुचरोंके बिना उस मार्गसे नही निकलते थे मार्गके दोनो पार्श्वोपर फैली हुई भूमि स्वामियोकी लापरवाहीके कारण चोर-डाकुओका वास-स्थान बन गई थी कम्पनीवालो और कोट्टयके राजाके बीच आये दिनके सघर्षोके कारण यह प्रदेश निवासके योग्य ही नही रह गया था

हमारी कहानी जिस दिनसे प्रारभ होती है उस दिन तीसरे पहर एक अनागत-श्मश्रु युवा लगभग अठारह वर्षकी युवतीके साथ उस मार्ग-से चला जा रहा था दोनो इतने अधिक श्रान्त थे कि एक पग भी आगे बढना कठिन हो रहा था युवाकी कमरमे बँधी कटार और हाथकी तल-वार साफ बता रही थी कि वह नायर† है उसका डील-डौल उमरके हिसाबसे कही अधिक विकसित था सत्रह वर्षका वह युवक आगे-पीछे देखता हुआ सावधान होकर चल रहा था और पत्ते हिलनेकी आवाजसे भी चौकन्ना हो उठता था

---

*ईस्ट इण्डिया कम्पनी

†केरलीय क्षत्रिय, जो बिना कटार या तलवारके घरसे बाहर नही निकलते थे और थे वीरताके लिए प्रसिद्ध

युवती उस समयकी वेश-भूषाके अनुसार एक वस्त्र पहने और दूसरा ओढे थी उसके चेहरेपर आत्यंतिक दु खकी छाया-सी पडी हुई थी फिर भी, उसपर प्रथम दृष्टि पडते ही किसीके लिए यह समझना कठिन नही था कि वह कुलीन घरानेकी है और केरल रमणियोंके सौन्दर्यका सजीव उदाहरण है

वे आपसमे बिना कोई बातचीत किये चुपचाप चले जा रहे थे थोडी देरके बाद युवतीने वेदनामय स्वरमे कहा—"अब तो एक पग भी चलना दूभर है भूख और प्याससे मै विवश हो गई हूँ

युवक—अब तो मुश्किलसे दो मील ही रास्ता शेष रहा है देरी करेंगे तो रात हो जायगी इस मार्गमे कही कोई घर भी तो नही है हाय, देवी श्रीपोर्कली !* मै क्या करूँ? दीदी, तुम मेरा हाथ पकडकर चलो

युवती—मुझसे अब कुछ नही हो सकेगा पैर उठाकर आगे रखनेकी भी शक्ति अब मुझमे नही है मै एक ओर बैठ जाती हूँ तुम इधर-उधर देखो, अगर कोई मदद मिल सके तो ठीक है

युवक—यह कैसे होगा ? तुमको इस विजन पथमे अकेली छोडकर मै कैसे जाऊँ? तुम अकेली यहाँ कैसे बैठी रहोगी, दीदी ? अब जो होना हो सो हो, हम थोडी देर यही आराम करेंगे भगवती ही कुछ रास्ता दिखायेंगी

दोनो मार्गके एक ओर एक वृक्षकी छायामें बैठ गये भूख और प्याससे व्याकुल और दिन-भर चलनेसे थकी हुई वह युवती शीघ्र ही निद्राके वशीभूत हो गई

युवक किंकर्तव्यविमूढ-सा होकर सोचमें पड गया समय बीता जा रहा था गन्तव्य स्थान अब भी तीन मील दूर था, यह मार्ग दिनमे ही विपत्तिका राज-पथ बना रहता था, फिर रातका तो कहना ही क्या ? लोगोको पकडकर गुलाम बनाकर बेच देनेकी प्रथा उन दिनो भी प्रचलित थी कुञ्जिक्कोय नामके एक प्रबल मुसलमानके अनुचर चारो ओर घूमते

---

*पपश्शि राज-वंशकी कुलदेवी, रण-चंडिका पोर माने युद्ध, कलि माने आवेश

रहते थे और जिन्हें भी वे विजन प्रदेश अथवा रात्रिमे इक्का-दुक्का पा जाते उन्हे पकड ले जाते थे यही एक चिंता थी, जो युवकको अधिक व्याकुल कर रही थी वह उपाय सोच ही रहा था कि दूरसे दो पुरुष आते दिखलाई दिये वे दोनो सशस्त्र थे और बाह्य भाव-भगी तथा चाल-ढालसे कोई अफसर मालूम होते थे यह अनुमान करना भी कठिन नहीं था कि उनमेंसे एक स्वामी और दूसरा सेवक है युवक पहले तो कुछ डरा, किन्तु बादमे दृढताके साथ वह अपनी तलवारकी मूठ थामकर उनके निकट आनेकी प्रतीक्षा करने लगा

पथिकोने सोई हुई युवती और उसकी रक्षाके हेतु खडे हुए युवकको देखा पास पहुँचनेपर उस पथिकने, जो हाथमे ढाल तथा तलवार लिये और कमरमे रिवाल्वर कसे आगे-आगे चल रहा था, युवकके सामने आकर कहा—"मालूम होता है आप किसी विपत्तिमे फँस गए है यदि हम कोई सहायता कर सकते हो तो बताइए !"

युवक—आज सुबहसे ही हम लोग पैदल चल रहे है मेरी यह बहन भूख और प्याससे पीडित होकर अब और चलनेमे असमर्थ हो गई है इसीलिए हम यहाँ बैठ गये है दिन बीता जारहा है श्रीपोर्कली भगवतीकी ही शरण है

श्रीपोर्कली भगवतीका नाम सुनते ही दोनो आगन्तुकोके मुख आतरिक भक्तिसे उज्ज्वल हो उठे प्रमुख व्यक्तिने कहा—"कोरा,¹ पासके बागमे जाकर चार कच्चे नारियल तोड ला !"

कोरा—स्वामी, किसी अनजान व्यक्ति के बागमे जाकर नारियल तोडूँ, और बादमे लडाई-झगडा हो जाय तो ?

स्वामी—यह सारी भूमि तम्पुरान † की है—जल्दी जा और

---

¹'कोरन्' नामका सम्बोधन कोरन-कुमारन्-कुमार

† राज-वशके सब पुरुषोको 'तम्पुरान' कहा जाता है, यथा बडे तपुरान, छोटे तम्पुरान आदि इसी प्रकार राज-वशकी स्त्रियोको 'तम्पुराटी' कहा जाता है यहाँ तम्पुरान शब्दका उपयोग महाराजाके अर्थमें किया गया है

श्रीपोर्कलो भगवतीके अभिषेकके लिए माँगकर ले आ

इस उत्तरके बाद अनुचर निश्शक होकर बागके अहातेमे गया और नारियल तोडकर ले आया फिर उसने कमरमे चाकू निकालकर दो नारियल साफ करके युवकके हाथोमे दिये युवकने मुर्झाई लताके समान पडी हुई क्लात बहनको धीरे-से जगाकर एक नारियल दिया युवती बिना इधर-उधर देखे नारियल का वह अमृत-तुल्य मधुर जल एक साँसमे ही पी गई थकावट दूर करनेके लिए भगवान्ने नारियलके जलके समान श्रेष्ठ अन्य पेय मनुष्यको कौन-सा दिया है ? उसकी शीतलता शरीरमे फैलते ही मानो युवतीको नवजीवन प्राप्त हो गया मन्त्र-शक्ति-के द्वारा मृत्युके मुखसे बच जानेपर जो विस्मय होता है, कुछ वैसे ही विस्मयके साथ उसने चारो ओर दृष्टि फेरकर देखा सुकुमार होनेपर भी दृढ गात्र, सशस्त्र होनेपर भी दयामय, गाभीर्य और पौरुषकी मूर्ति, एक नर-केसरी उसके सामने खडा है अपनी विवशताके स्मरणसे, या इस प्रकार मार्गमे असहाय पड जानेकी आत्म-ग्लानिसे अथवा स्त्री-पुरुषके प्रथम दर्शनमे होनेवाले भावोन्मेषसे उसने सकोच तथा लज्जाके वशीभूत होकर अपना सिर नीचे झुका लिया बादमें उसने ज्यो ही तुरन्त उठनेका प्रयत्न किया तो उसे देखकर पथिकने कहा—"थोडी देर और विश्राम कीजिए अँधेरा होनेके पूर्व ही मैं आपको किसी ठीक स्थानपर पहुँचा दूँगा"

इसका उत्तर युवकने दिया—हमे अभी तीन-चार मील और चलना है अब देर करना ठीक नही, हमें जाने दीजिए

पथिक—ठीक है, परन्तु यह तो बताइए कि आप दोनो अकेले इस रास्तेपर कैसे आ गए ? देखनेसे तो यही लगता है कि आप लोग अनु-चरोंके साथ पालकीपर यात्रा करनेके अभ्यासी हैं

युवकने इसके उत्तरमे एक दु खभरी कहानी सुनाई उसने कहा—"गत रात्रि कडेरीमें* कुछ सशस्त्र लोगोने हमारे घरपर आक्रमण किया

*स्थान विशेष

सामना करनेवाले दो बड़े भाइयोको मार डाला घरमे आग लगा दी हम दोनो भाई-बहन जलते हुए घरसे भाग निकले ”

पथिकका मुँह क्रोधसे लाल हो उठा उसने कहा—“कोट्टयके इतने निकट ही लोग उपद्रवी बन गए ? खैर ! कुछ पता है, यह राक्षसी कृत्य किसने किया ?”

युवक—कुरुम्ब्रनाट्टुके राजाके लोग है, ऐसा सुना है वे कर उगाहने-के लिए कडेरीमे आये थे मेरे बड़े भैयाने अन्नदाताका पक्ष लिया, इसलिए शायद उनके बीच कुछ कहा-सुनी हो गई मेरा अनुमान है, यही एक कारण है

“ऐसा भी कहते सुना है कि कैतेरी अम्पु नायरकी यह करतूत है”—युवतीने कहा

“दीदी, बेकार क्यो तम्पुरानके लोगोको भला-बुरा कहती हो ? अम्पु यजमान[1] कभी ऐसा नही कर सकते ”

“मैने तो मौसीके मुखसे सुना था ”

“मौसी तो कहेगी ही वे कुरुम्ब्रनाट्टुके राजाकी पक्षपातिनी जो है अम्पु यजमानको हमसे कोई विरोध नही है, वे ऐसा नही कर सकते ” युवकने कहा

पथिक—क्या आप लोग कैतेरी अम्पुको जानते है ? कैसे कह सकते है कि उसीने यह सब नही करवाया ?

युवकने कहा—कभी नही बड़े दादा कहा करते थे कि अम्पु यजमान तम्पुरानके दाहिने हाथ है और अम्पु यजमानको दोष देनेवाली मेरी यह दीदी और हम सब तम्पुरानके पक्षमे है

घरका नाम प्रथाके अनुसार, केरलमे प्रत्येक व्यक्तिके नामके पूर्व उसके घरका नाम जोड दिया जाता है आजकल यह प्रथा कम हो गई है उदाहरण—कैतेरी अम्पु नायर, चन्द्रोत्तु नम्पियार आदि

[1] यजमान, यजमानन्—श्रीमान् स्वामीके लिए सेव्य-सेवक-भावका आदर-सूचक शब्द

युवती—मैंने जो सुना था सो कह दिया, बस.

"ठीक है किन्तु अम्पु आग लगानेवाला न हो, सो बात नही है. कितने ही घरोको उसने जलवा डाला है परन्तु यह काम उसका नही है वह तो उस देशमे था ही नही" पथिकने कहा

"क्या आप अम्पु यजमानको जानते है ?" युवकने पूछा

"हाँ, थोडा-बहुत जानता हूँ"

"दादाके मुखसे सुना है कि इतना वीर और समर्थ पुरुष कोई है ही नही मेरी इच्छा है कि उनके नेतृत्वमे युद्ध करनेका सुअवसर पाऊँ क्या आप मुझे उनके पास पहुँचा सकते है ?" युवकने भक्ति-गद्गद स्वरमे कहा.

पथिकने एक मुस्कराहटके साथ उत्तर दिया—"तुम तो अभी बच्चे हो तुम अभी अम्पुके साथ पर्वतो और वनोमे भटक-भटककर कैसे युद्ध करोगे ? तुम्हारा शस्त्राभ्यास भी पूरा नही हुआ और, अब लडाई पहले-जैसी रही नही ढाल और तलवार लेकर पवित बनाकर खडे हो जानेमे काम नही चलता वनमे, पहाडोमे, खदकोमे छिपकर लडना पडता है आहार और निद्राका भी कोई ठिकाना नही रहता यह सब तुमसे हो सकेगा क्या ?"

युवकने कहा— इन सब बातोकी मुझे चिन्ता नही है मेरा अभ्यास पूर्ण हो गया है तम्पुरान और यजमान जहाँ है, क्या मै वहाँ नही जा सकता ?

युवतीने अपने भाईकी बातपर कहा—"बहुत ठीक ! मुझे भी अनाथ छोडकर जानेकी उतावली हो गई ?"

युवक—दीदी, रुष्ट न हो तम्पुरानकी सेवामे जानेके समय यह सब नही सोचना चाहिए कैतेरीमे भी माक्कम् केट्टिलम्मा* और उनकी बहन

---

*राज-पत्नी केरलमे राजाकी पत्नी राज-वशकी नही होती थी. राजाओंके विवाह उच्च नायर-कुटुबोमे होते थे रानी (शासिका) बनने-का अधिकार राजाकी बहन अथवा बहनकी सन्तानको होता था अन-

अकेली ही तो है अम्पु यजमान तो सदा उनके साथ वने नही रहते

युवती—क्षमा करो भैया, मै अपने इस समयके दु खके कारण ही ऐसा कह गई तुमने जो कहा वही ठीक है तम्पुरान है तभी हम है तुम मुझे मामाके पास पहुँचाकर तम्पुरानकी सेवामे चले जाना

पथिक—तुम दोनो राजी हो गए, अब तुमको अम्पु नायरके पास पहुँचानेकी जिम्मेदारी मैने ली अब समय अधिक हो चला है थकान मिट गई हो तो अब देरी नही करनी चाहिए तुम लोगोको कहाँ जाना है ?

युवकने कहा—हमारे मामा चन्द्रोत्तु* प्रभुके एक प्रवन्धक है जानेके लिए अब कोई और स्थान न होनेके कारण दीदीको वही पहुँचानेका विचार किया है

"चलो, मेरा रास्ता भी वही है आजकी रात वही बिता लेगे, नम्पियारसे † मिलना भी है अच्छा तो चले" पथिकने कहा और वह सबको साथ लेकर चल पडा

अब कम्मू और उसकी बहनकी चालमे पहलेकी-सी असहाय दीनता नही थी युवकका हृदय पपश्शि‡ राजाके प्रताप और सामर्थ्यको सोच-सोचकर प्रफुल्लित हो रहा था केरलकी स्वतत्रताके लिए सर्वस्व त्याग करके, सब प्रकारके क्लेशोको अगीकार करके जीवन-भर युद्ध करनेवाले वीर पुरुषके नामके स्मरण-मात्रसे ही उसका हृदय आह्लादसे भर उठता था उनका नेतृत्व स्वीकार करके, उन्हे ईश्वरके समान आराध्य मानकर उनकी छत्र-छायामे लडनेवाले वीर-केसरियोको एक-

---

एव राजाकी पत्नीको 'केट्टिलम्मा' अथवा 'राज-पत्नी' कहा जाता था ट्रावनकोरमे 'अम्मच्चि' (अम्माजी) कहा जाता था अवशिष्ट राज-वशोमें ये प्रथाएँ आज भी जारी है

*पानूर प्रदेशके एक मुख्य सामन्त प्रभु—सामन्त, लार्ड

†राजाकी दी हुई एक पदवी, वश-परपरासे चलनेवाला उपनाम

‡पपश्शि नामक स्थान मे रहनेवाले राजा इस ग्रथके नायकके लिए विशेष रूपसे प्रयुक्त नाम—पपश्शिराजा

एक करके मन-ही-मन गिनता हुआ मानो वह आनन्द-सागरमे डुबकियाँ लगाने लगा वह खुशीसे फूला नही समाता था कि उन्हीमेसे एक वीर होनेका सुअवसर उसे भी शीघ्र मिलनेवाला है भाइयोकी मृत्युका, गृह-दाहका, यहाँ तक कि अपना और अपनी एक-मात्र सहोदराकी अनाथा-वस्थाका भी उसे स्मरण नही रहा एक-मात्र वीर्य और पराक्रम दिखाकर कीर्ति-सपादन करनेका पथ ही उसे अपने सामने स्पष्ट दिखाई दे रहा था

युवतीका ध्यान दूसरी तरफ था मार्गमे असहाय पडे-पडे मर जानेसे, या किसीके हाथ मे पडकर निकृष्ट जीवन बितानेसे मेरी और मेरे भाईकी रक्षा करनेवाला यह महानुभाव कौन होगा ? उसके कसरती सुदृढ देह-गठन, भाव-गम्भीरता और मुखपर दमकते हुए तेजको देखकर यह अनुमान करना कठिन नही था कि वह कोई असाधारण शक्तिशाली पुरुष है यह जानकर कि वह अम्पु नायरका मित्र है, उसने यह भी अनुमान कर लिया कि वह तम्पुरानके पक्षका है चन्द्रोत्तु गृहपतिसे* मिलने जानेकी बातसे निश्चित हो गया कि वह अभिजात वर्गका है उसके चेहरेको देखकर अपने अनुमानको परख लेनेके विचारसे जब उसने फिर एक बार उसकी ओर देखा तो मालूम हुआ कि वह स्वय भी कुतूहलके साथ उसकी ओर देख रहा है आँखे मिलते ही उसने शीघ्रतापूर्वक अपनी आँखे हटाकर भाईसे कहा—"कम्मू, कल तुम मुझे छोडकर इनके साथ चले जाओगे, तो मै क्या करूँगी ? हमेशाके लिए मामीके साथ रहना उचित होगा क्या ?"

कम्मू—दीदी, इतनी चिन्ता करनेकी आवश्यकता नही है यदि मै अम्पु यजमानके आश्रयमे रह गया, तो क्या वे मदद नही करेंगे ? इस देशमें उनके मित्र और विश्वस्तजन बहुत है यदि मै सच्चे हृदयसे उनकी सेवा करूँगा तो वे हमको कभी नही त्यागेंगे

पथिक—तुम लोगोको अम्पुपर इतना भरोसा है ? ऐसी उसने क्या

*घर अथवा परिवारके मुख्य पुरुष

बात की है ?

इसका उत्तर कम्मूने नही बल्कि उसकी दीदीने दिया—"अम्पु यज-मानने क्या किया है सो तो सारा देश जानता है कष्टोमे तम्पुरानकी प्रजाकी रक्षा करते हुए और आततायियोको दण्ड देते हुए हमने उनको कितनी ही बार देखा है"

प्रश्नकर्ता पथिककी आँखे हर्षाश्रुओसे भर आई, पर भाई-बहनने इसे नही देखा

इस बीच वे लगभग दो मील चल चुके थे अब सध्या होने ही वाली थी किसीसे छिपा नही रहा कि उण्णिनडा—(यही युवतीका नाम था) को चलनेमे बहुत कष्ट हो रहा है और यह भी लगभग निश्चित था कि सध्याके पूर्व चन्द्रोत्तु-भवनमे पहुँचनेका प्रयास सफल नही हो सकता परन्तु कम्मू अथवा उण्णिनडाको इसका कोई भय नही था

थकी हुई उण्णिनडाको और अधिक न थकानेके विचारसे वे धीरे-धीरे चल रहे थे जब वे लोग चन्द्रोत्तु-भवनके मोडपर पहुँचे तो उस समय रात एक-दो घटे बीत चुकी थी अब तकका मार्ग समतल प्रदेश-में था इसलिए अधिक कठिनाई नही हो रही थी चन्द्रोत्तु-भवन अब भी एक-दो फर्लांग दूर, खेतोके उस पार था अधेरी रातमे खेतोकी पगडडी-से चलना भी सरल नही था फिर भी वे चल पडे सबसे आगे सशस्त्र सेवक, बादमे कम्मू, उसके पीछे उण्णिनडा और अतमे सबके नेताके रूपमे पथिक-प्रमुख थे वे थोडे ही चले होगे कि उण्णिनडा सहसा चीख पडी—'हाय, काँटा चुभ गया' अब उसने भाईके कधेपर हाथ रखकर चलना आरम्भ किया, किन्तु चलना सभव नही था और अधेरेमे काँटा निकाला भी कैसे जाता ।

उस सबल पुरुषने यह कहते हुए कि अब तो निकट ही है, उसे अपने हाथोमे उठा लिया और अपने अनुचरसे कहा—"कोरा, जल्दी-जल्दी चलो" और वह तेजीसे आगे बढने लगा

उण्णिनडाने इस तरह हाथोपर उठाकर ले चलनेका बहुत विरोध

किया, परन्तु उसका सारा विरोध मानो बहरे कानोमे पडा और वे तेजी-से चलकर चन्द्रोत्तु-भवनकी सीढियोपर पहुँच गए

"लो, पहुँच गए अब तो चुप हो जाओ!"-पथिक-प्रमुखने सावधानी-के साथ उण्णिनडाको नीचे उतारते हुए स्नेहके साथ कहा ये शब्द उण्णिनटाके कानोमे मानो अमृत-धाराके समान प्रविष्ट हुए अब तक उसने कभी पुरुषका स्पर्श नही किया था और आज एकाएक इस पुरुषके हाथोमे इस प्रकार असहाय पड जानेसे उसे बेहद दुःख हो रहा था. किन्तु धीरे-धीरे वह शात हो गई

जब वे कोरन्का अनुसरण करते हुए परकोटेको पार करके मुख्य गृहके समुख पहुँचे तो गृहपति एक-दो अनुचरोके साथ दालानमे बैठे बातचीत कर रहे थे जैसे ही उन्होने आगन्तुकोको देखा उनके आश्चर्यकी सीमा न रही और आँखके इशारेसे अनुचरोको दूर करनेके पश्चात् वे बोले—"यह क्या ? अम्पु ! ऐसे कैसे आये ? अन्नदाता सकुशल तो है ? ये सब कौन है ?"

गृहपतिके स्वागत-शब्द सुनकर उण्णिनडा और कम्मू कितने परि-श्रान्त हुए यह बताना सम्भव नही है

अम्पु नायरने उत्तर दिया—सब बाते बादमे होगी यह बालिका यहाँके एक प्रबन्धकर्ताकी भानजी है बहुत थकी हुई है इसके पैरमें काँटा चुभ गया है

उस भाई-बहनको उनके मामाके यहाँ भेजनेकी व्यवस्था करके चन्द्रोत्तु नम्पियार अम्पु नायरका हाथ पकडकर यह कहते हुए भवनके अदर चले गए कि—"आओ, सब विस्तारसे कहना होगा मुझे बहुत-कुछ जानना है"

दूसरा अध्याय

O

चन्द्रोत्तु-परिवार इरुवनाट्टु प्रदेशमे राज करनेवाले सामन्त-वंशो-मेंसे एक था धन, प्रताप तथा वलमें आगे वढे हुए परिवार उत्तर केरलमे कम नही थे, किन्तु प्रतिष्ठामें नम्पियारसे वढकर कोई नही था उनको अभिमान था कि न तो वे कभी किसीके आधीन रहे और न उन्होने किसीका अधिकार मानकर शासन ही किया उन दिनो राजे-रजवाडे आस-पासके छोटे-छोटे क्षेत्रो पर अपना अधिकार जमा लिया करते थे किन्तु यह एक परिवार ऐसा था जो किसीकी अधीनता स्वीकार किये विना, और किसीसे मनसव या ओहदा प्राप्त किये विना ही अपना काम चला रहा था

उस समय इरुवनाट्टुके सामन्तोमे सर्व-प्रधान नम्पियार ही थे. वे कुञ्जिक्कणएन्के नामसे प्रसिद्ध थे और उनकी आयु लगभग पचपन वर्षकी थी मांसल शरीर, किंचित् वढी हुई तोंद और पलकोके भारीपनसे अर्ध-निमीलित-सी दिखनेवाली आँखे यह वता रही थी कि वे एक सुख-लोलुप शासक है सच पूछा जाय तो युद्ध आदिमे कुञ्जिक्कणएन् नम्पि-यारकी कोई विशेष अभिरुचि भी नही थी हैदरअलीके युद्धोके जमानेमे वे वालक ही थे तव वे चन्द्रोत्तु-भवनकी स्थानीय जायदादकी देख-रेख करते हुए मय्यर्पीमें फ्रासीसी लोगोकी अधीनतामे निवास कर रहे थे। हैदरअलीके वाद जव टीपू सुलताननें केरलपर आक्रमण किया तव भी उन्हे कोई विशेष कष्ट नही उठाना पडा इरुवनाट्टुमे रहनेवाले नम्पि-

यारोको टीपूने बहुत कष्ट दिया और चन्द्रोत्तु-भवनके गृहपतियोको भी कम कष्ट नही उठाने पडे परन्तु कुञ्ञिक्कण्णन् नम्पियार तब भी अपनी पत्नी सहित सुखसे काल-यापन करते रहे चार वर्ष पूर्व जब वे गृहपति बने थे तभी चन्द्रोत्तु-भवनमे रहनेके लिए आये थे

मय्यपीमे दीर्घ कालतक वास करनेके कारण कुञ्ञिक्कण्णन् नम्पियार आचार-विचार आदिमे अन्य केरलीय प्रभुजनोमे भिन्न थे वे फ्रासीसी भाषा जानते थे, यूरोपियनोके सहवासमे रहते थे और युवावस्थामे उन्हे यूरोपीय रहन-सहनका शौक हो गया था—इस सबके कारण उन्हे केरलमें ही नही समस्त भारतमें घटनाओ तथा होनेवाले परिवर्तनोका मोटा ज्ञान रहता था परन्तु इधर जबसे वे गृहपति बने थे, पाश्चात्य सस्कृति-सबधी उनका भ्रम कम होने लगा था और अब वे सब कार्य अपनी स्थिति और मान-मर्यादाके अनुसार ही करते थे जब कम्पनी-वालोने उस क्षेत्रपर अधिकार कर लिया तो इनका यूरोपीय भाषा-ज्ञान तथा लोक-परिचय इरुवनाट्टुके अन्य नम्पियारोको बहुत सहायक हुआ कम्पनीके साथ समस्त व्यवहारमे उस क्षेत्रके प्रभुगण* इनकीही सलाह-पर चलते थे तलश्शेरी† (तेलिचेरी) का सुपरवाइजर भी यह बात जानता था और इसीलिए इनका मान भी करता था इसका यह अर्थ नही कि वह इनसे हार्दिक स्नेह करता हो अथवा राज्य-कार्यमे इनके ऊपर भरोसा रखता हो उसे केवल यह भय था कि इनको विरोधी बनाना कम्पनीके लिए हानिकारक हो सकता है इसी भयसे वह इनके साथ शिष्टताका व्यवहार करता था

अपने सम्मान्य अतिथि अप्पु नायरको पहचानते ही किसी गभीर परिस्थितिका अनुमान करके वे इस राज-पुरुषको अन्तर्गृहमें ले गये वहाँ उन्होने महाराजाके कुशल-समाचार पूछनेके बाद प्रश्न किया—"क्या

---

*लार्ड, सामन्त, प्रभाव रखने वाला

†आधुनिक तेलिचेरी उत्तर मलाबारमे ईस्ट इडिया कम्पनीका मुख्य केन्द्र

युद्धके भीपए वन जानेकी आशका है ?"

अम्पु—मालूम तो होता है कि कपनीवालोने ऐसा ही निश्चय कर लिया है सधि करके शान्तिसे रहना उनको स्वीकार नही है उनके लिए इतना पर्याप्त नही है कि सव लोग उनके साथ मित्रताका व्यवहार करते रहे वे चाहते हैं कि सव उनका एकाधिपत्य स्वीकार करे

नम्पियार—हाँ, ठीक है अव सभव भी नही कि कपनीके रहते हुए इस देशमें हमारे लोग राज्य कर सके उनके लिए राजा और सामत, ब्राह्मए और चाण्डाल सव एक-से है सभीको उनके सामने सिर भुकाना चाहिए

अम्पु—अच्छा, तो करके देखे हमारे महाराजाके रहते हुए इस देशमें यह कभी नही होगा और इस प्रकार शासन करनेके लिए उनके पास शक्ति कहाँ है ?

नम्पियार—ठीक है कि महाराजा हार नही मानेगे वे वीर पुरुप है परन्तु केरलको कम्पनीवालोकी अधीनता स्वीकार करनी ही पडेगी. यह मत सोचना कि वे अशक्त है तलश्शेरीमे भले ही उनकी वडी सेना न हो, किन्तु उनकी शक्ति विश्व-भरमे व्याप्त है तीन-चौथाई भारतवर्प उनके अधीन हो चुका है

अम्पु—हाँ-हाँ, देखेगे उनकी शक्ति ! वयनाट्टुके जगलोमे गोरी सेनाकी चाल देखेगे आपको याद है, टीपू सुलतानकी सेना यहाँ कितनी नप्ट हुई थी ?

नम्पियार—इनकी भी सेना वहुत नप्ट हो जायगी जवतक हमारे महाराजा है तवतक युद्ध भी चलता रहेगा परन्तु यह टीपूकी कहानी नही है इनकी सेना अगणित है जहाज और वन्दूक असख्य है, धन-शक्ति अपार है द्वीप-द्वीपान्तरोसे सेना आयगी धीरे-धीरे, एक-एक करके सवको अधिकारमे कर लिया जायगा

अम्पु—इसीलिए आपका आदेश है कि उनकी अधीनता स्वीकार कर ली जाय ?

नम्पियार —गलत मत समझिए ! आज केरलके गौरवके रक्षक तम्पुरान ही है यदि वे भी हार मान लेगे तो केरल-लक्ष्मी नष्ट हो जायगी इतना ही नही, हम सवके लिए यह अत्यन्त अपमानका विषय होगा यदि तम्पुरानने ही सिर झुका दिया तो हम सव अपने सिर कैसे उठा सकेगे ?

अम्पु—यही एक समाधान है मैंने नीलेश्वरसे यहाँतक भ्रमण किया है कोई भी यह सलाह नही देता कि तम्पुरान हार मान ले उनके दृढ निश्चयके लिए सभीको आदर है फिर हम कैसे हार जायँगे ?

नम्पियार—तम्पुरान नही हारेगे यह निश्चित है परन्तु कपनीवालोके लिए एकका जीवन-काल निस्सार है उनके वाद केरलके स्वातन्त्र्यकी रक्षा कौन करेगा ?

अम्पु—आपका कहना ठीक है परन्तु तम्पुरानकी मृत्युके वाद जीवित रहनेकी इच्छा हममेसे किसीको नही है तव जैसा भाग्य होगा, वैसा होगा जवतक जीवित है तवतक तो स्वतत्रतासे जियेगे, यही सोचा है

नम्पियार—अच्छा, आज यहाँ कैसे आना हुआ यह तो वताइए !

अम्पु—हाँ, अव स्पष्ट ही करूँ कपनीके नये सेनानायकने यदि युद्ध ज्यादा वढा दिया तो आप-जैसे लोगोकी सहायताके विना हम क्या कर सकेगे ?

इस सीधे-सादे प्रश्नसे नम्पियारके मुखपर कोई भाव-परिवर्तन नही हुआ उन्होने धीरेसे उत्तर दिया—"इस विषयमें अपनी राय तो मैने दे ही दी यह कहनेकी आवश्यकता नही कि मै किसके पक्षमे हूँ परन्तु तलश्शेरी दुर्गके अधीन रहनेवाले हम लोग क्या कर सकते है ?"

अम्पु—आपकी स्थिति तो तम्पुरान जानते ही है आप सीधे युद्धम सहायता दें, ऐसा आग्रह भी वे नही करते वे अपने लोगोको व्यर्थ नष्ट नही कराना चाहते

नम्पियार—तो फिर मुझसे क्या सहायता चाहते है ? यदि धनकी सहायताकी वात है तो यहाँ जो-कुछ है वह सव तम्पुरानका ही है, आप

निवेदन कर दीजिए

अम्पु—अभी धनकी आवश्यकता नही है आगे हो सकती है तब धन कहाँ-कहाँसे मँगवाना होगा यह सब उनको मालूम है

नम्पियार—यदि जन नही चाहिये, धन भी नही चाहिए तो फिर क्या सहायता करूँ ?

अम्पु—बताता हूँ हमारे पास तो तलवार और धनुष-बाण ही है इनसे कुछ तो काम बन जायगा, विशेषकर जगलोमे तो धनुष-बाणसे काम चल ही जाता है परन्तु यदि पाँच-एक-सौ बन्दूक और आवश्यकताके अनुसार कारतूस न हो तो कपनीकी सेनाका सामना कैसे किया जायगा? तलश्शेरीमे सब मिल सकता है, परन्तु वहाँसे हटानके लिए आपकी सहायता चाहिए

नम्पियार—यहाँ तक पहुँचा सको तो आगे मै मार्ग बना लूँगा तलश्शेरीमे ही यदि हमारे आदमीके हाथ सौप दिया जाय तो थोडा-बहुत मै भी अपने साथ ले आऊँगा हर सप्ताह किसी-न-किसी काममे सुपरवाइजरसे मिलने मुझे वहाँ जाना तो पडता ही है

अम्पु—आप एक बहुत बडी जिम्मेदारी ले रहे है कपनीवालोको जरा भी शका हो गई तो कितना कठिन होगा, आप जानते ही है

नम्पियार—आप-जैसे लोग जानपर खेलनेको तैयार हो, तो मुझसे क्या इतना भी न होगा ? यह जिम्मेदारी मैने ले ली

अम्पु—एक बात और है—जितनी चाहिएँ उतनी बदूके हमे तलश्शेरीमें नही मिलेगी क्या और कोई रास्ता है ? मय्यपीमे तो आपका बहुत प्रभाव है ?

नम्पियार—समझ गया जरूरी कार्रवाई कर लूँगा

अम्पु—आपने इतना काम उठा लिया है अब और कहनेमें सकोच होता है किन्तु काम बडा सगीन है इसे करने योग्य कोई दूसरा दिखलाई नही पडता

नम्पियार—कुछ भी हो, कहो तो सही जो-कुछ मुझसे बनेगा, सब

करनेके लिए तैयार हूँ

अम्पु—आप तलश्शेरीके बिलकुल पास है—इसलिए कहता हूँ वहाँ जो-कुछ होता है उसकी ठीक सूचनाएँ पानेके लिए कुछ प्रबंध कर रखा है शत्रु-पक्षके विचार और तैयारियोका पता रखना ही तो युद्धमे सबमे अधिक आवश्यक होता है वहाँसे संदेशवाहक द्वारा सीधे भेजना संभव नही है उसके लिए भी आपकी सहायता चाहिए

नम्पियार—तलश्शेरीमे आपका जो आदमी है वह विश्वास-पात्र है ?

अम्पु—उनसे आपका अच्छा परिचय है मेरी जानकारी तो यह है कि वे आपके मित्र भी है

नम्पियार—कौन ? मेरी समझमें नही आया

अम्पु—आपसे कहनेमें कोई संकोच नही करूँगा—अली मूसा मय-य्कार

नम्पियार—तो यह भी मैंने स्वीकार किया

बातचीत थोडी देर और चलती रही बादमें राजसी भोजन हुआ और सोनेके लिए जाते समय अम्पु नायरने कहा—"हाँ, तो कल सुबह मुझे जाना है तब तक मालूम नही आप जाग पायेंगे या नही इसलिए अभीसे आज्ञा लिये लेता हूँ"

"मुझे यह जाननेकी आवश्यकता नही कि आप कहाँ जायेंगे, परन्तु मुझे कल सुपरवाइजरसे मिलनेके लिए तलश्शेरी जाना है मैं दिन निकलनेके बाद जाऊँगा"

"मै भी उसी ओर जा रहा हूँ आप तलश्शेरी जा रहे है तो सेवक-के रूपमें मुझे भी ले जा सकते है ने चलें तो अच्छा हो"

"मेरे साथ छ पालकीवाले और दस सिपाही होते है यदि सिपाहियो-में मिल जानेमें कठिनाई न हो तो ठीक है वहाँ जानेके लिए आपपर कोई रोक-टोक तो नही ?"

"रोक-टोक तो नही है, परन्तु मै नही चाहता कि मेरे तलश्शेरी जानेकी बात किसीको मालूम हो"

× × × ×

सारा काम इच्छानुसार हो गया फिर भी अम्पु नायरको बहुत देर तक नीद नही आई जब भी वह आँखे बन्द करता या खोलता तो सामने एक ही चीज घूमती दिखाई देती—उण्णिनडाका परिश्रान्त और भय-विह्वल मुख बहुत प्रयत्न करनेपर भी वह वीर पुरुष अपने हृदयसे उस चित्रको नही हटा सका धीरे-धीरे उस मुखका भाव बदलने लगा पहले जो मुख श्रान्त दिखाई देता था अब उसपर प्रसन्नता और सलज्ज मधुरिमा दिखाई देने लगी भयके लक्षण हट गए और विश्वास तथा प्रेम स्पष्ट दिखाई देने लगा यह सब आनन्ददायक तो था, किन्तु स्वामीके कार्यसे मनको हटानेवाला था इसलिए अम्पु नायरने नम्पियारके साथ हुई बातोमे मन लगानेका प्रयत्न किया परन्तु सब विफल हुआ उन विचारोंके बीच भी उसे अपने वक्षपर मालाके समान विश्राम करती हुई युवतीके स्पर्शका सुख अनुभव होने लगा

रातके अन्तिम पहरमे ही उन्हे नीद आ सकी इतनेपर भी आहार, निद्रा आदि छोडकर जगलो और पहाडोपर रहनेका अभ्यासी होनेके कारण ब्राह्म-मुहूर्तमें जाग जानेमें उसे कोई कठिनाई नही हुई नित्य-कर्मसे निवृत्त होकर दालानमे आया तो कम्मू भी वहाँ उपस्थित हो गया था

अम्पु नायरने कहा—क्यो कम्मू, कलकी थकान मिट गई ? तम्पु-रानकी सेवामे आनेके लिए तैयार हो क्या ?

कम्मूने उत्तर दिया—आपको पहचाने विना ही कल हम लोग कुछ-का-कुछ कह गये हमारे घरके जलाये जानेके मामलेमे आपपर शका करनेके कारण दीदी बहुत दुखी हो रही है

"उसमें ऐसी क्या बात है ? इतना ही तो कहा था कि लोग ऐसा

कहते है ? इसमे दुखी होनेकी क्या जरूरत ? तम्पुरानके पास जानेकी अनुमति तुम्हारी दीदीने दे दी ? तुम चले जाओगे तो उनकी सहायताके लिए यहाँ कोई नही होगा "

"आपके साथ मै कही भी जाऊँ, दीदीको मजूर है मेरी प्रार्थना है कि आप आज ही मुझे अपने साथ ले चलिए !"

"यह तो सभव नही है मुझे और कई जगह जाना है मै कब तम्पु-रानके पास पहुँचूँगा यह भी नही जानता थोडे दिन तुम यही रहो "

इस आज्ञाके विपरीत कम्मूने कुछ नही कहा, परन्तु उसकी भाव-भगिमासे अम्पु नायरको मालूम हो गया कि उसे बहुत दुख और निराशा हुई है उन्होने कुछ सोचकर कहा—"तुम्हे यह स्वीकार नही है तो थोडे दिन कैतेरीमे जाकर रहो मै तम्पुरानके पास पहुँचते ही तुमको बुला लूँगा "

तुरन्त तलवार उठाकर युद्ध-भूमिपर जानेके इच्छुक कम्मूके लिए यह प्रस्ताव भी सन्तोपजनक नही था फिर भी इस विचारसे उसे सान्त्वना मिली कि कैतेरीमें रहूँगा तो राज-पत्नीकी ही सेवामे रहना होगा

उसकी विचार-धारा पहचानकर अम्पु नायरने कहा—"कैतेरीमे सब स्त्रियाँ ही हैं तपुरानके सम्बन्धके कारण शत्रु वहाँ भी आक्रमण कर सकता है कुछ प्रबन्ध होने तक कम-से-कम एक विश्वस्त व्यक्तिका वहाँ रहना आवश्यक है इसलिए, तुम वहाँ रहोगे तो तम्पुरानको भी प्रसन्नता होगी हाँ, तो तुम्हारा अभ्यास पूर्ण हो गया है ?"

"बहुत-कुछ पूर्ण हो गया है "

"तो आज ही कैतेरी चले जाओ !"

अम्पु नायरने नौकरको बुलाकर एक ताल-पत्र मँगवाया और अपने रजत-नाराचसे* लिखा—"इस व्यक्तिको अपने घरमे रखो शीघ्र ही बुला लूँगा " पत्रपर अपनी बहनका नाम लिखकर उसे कम्मूके हाथोंमें

---

*ताल-पत्रपर लिखनेकी चाँदीकी लेखनी

देते हुए उन्होने कहा—"सुविधा देखकर रवाना हो जाओ सामर्थ्य और विश्वस्तता दिखानेके अवसर तुम्हे काफी मिलेगे"

"दीदीसे विदा लेने-भरकी देर है"—कम्मूने कहा और वह अपने निवास-स्थानकी ओर रवाना हो गया

अम्पु नायर अपने कर्तव्यपर विचार करते हुए उसी दालानमे बैठ गये नौकरसे मालूम हुआ कि नम्पियार नित्य-कर्म तथा पूजा-पाठमे लगे हुए है और उन्हे एक-दो घण्टे लगेगे अम्पुने सोचा कि नम्पियार-के साथ तलश्शेरी जानेसे दूसरोकी जानकारीसे बचकर कई काम कर सकते है अपने पराक्रमके लिए प्रख्यात, कपनीके नये सेनापति, कर्नल वेलेस्लीके क्या-क्या विचार है, सेना आदिकी क्या स्थिति है, बम्बईमे कितनी सेना आई है, उनके पास कितनी बन्दूकें है, हमारे लोगोमेसे कौन-कौन उनके साथ मिल गया है, इस सबकी जानकारी हो जायगी कुरुम्ब्रनाट्टुके राजा विभीषण बनकर शत्रुकी शरणमे गये है, यह सर्व-विदित था उनसे विशेष भय भी नही था परन्तु देशमे एक ऐसी जन-श्रुति फैली हुई थी कि अन्य प्रमुख सरदारोमेसे कुछको विभीषण बना-कर और कुछको उपहार आदि देकर कपनीवालोने अपने साथ मिला लिया है तम्पुराननें यही ठीक तरहसे जाननेके लिए उन्हे इस समय तलश्शेरी भेजनेका निश्चय किया था तम्पुरानके पक्षवालोमेसे भी एक-दोके बारेमे जो अफवाह सुनाई देती थी उनका तथ्य जानना भी आव-श्यक था

इस प्रकार जब वे विविध चिन्ता-तरगोमे डूब-उतरा रहे थ उसी समय कम्मू फिर उनके सामने उपस्थित हुआ थोडी दूरीपर उण्णि-नडा भी खडी थी

अम्पु नायरने उण्णिनडाको लक्ष्य करके पूछा—"पैरमे अब तो दर्द नही है ?"

"दर्द तो कांटा निकालते ही मिट गया था"—उण्णिनडाने उत्तर दिया. कुछ देर कोई कुछ नहीं बोला और बादमें उण्णिनडाने ही बात आगे

कहते हैं ? इसमें दुखी होनेकी क्या जरूरत ? तम्पुरानके पास जानेकी अनुमति तुम्हारी दीदीने दे दी ? तुम चले जाओगे तो उनकी सहायताके लिए यहाँ कोई नहीं होगा"

"आपके साथ मैं कहीं भी जाऊँ, दीदीको मजूर है मेरी प्रार्थना है कि आप आज ही मुझे अपने साथ ले चलिए !"

"यह तो सभव नहीं है मुझे और कई जगह जाना है मैं कब तम्पुरानके पास पहुँचूँगा यह भी नहीं जानता थोड़े दिन तुम यही रहो"

इस आज्ञाके विपरीत कम्मूने कुछ नहीं कहा, परन्तु उसकी भाव-भगिमासे अम्पु नायरको मालूम हो गया कि उसे बहुत दुख और निराशा हुई है उन्होंने कुछ सोचकर कहा—"तुम्हे यह स्वीकार नहीं है तो थोड़े दिन कैतेरीमे जाकर रहो मैं तम्पुरानके पास पहुँचते ही तुमको बुला लूँगा"

तुरन्त तलवार उठाकर युद्ध-भूमिपर जानेके इच्छुक कम्मूके लिए यह प्रस्ताव भी सन्तोपजनक नहीं था फिर भी इस विचारसे उसे सान्त्वना मिली कि कैतेरीमे रहूँगा तो राज-पत्नीकी ही सेवामे रहना होगा

उनकी विचार-धारा पहचानकर अम्पु नायरने कहा—"कैतेरीमे सब स्त्रियाँ ही हैं तपुरानके सम्बन्धके कारण शत्रु वहाँ भी आक्रमण कर सकता है कुछ प्रबन्ध होने तक कम-से-कम एक विश्वस्त व्यक्तिका वहाँ रहना आवश्यक है इसलिए, तुम वहाँ रहोगे तो तम्पुरानको भी प्रसन्नता होगी हाँ, तो तुम्हारा अभ्यास पूर्ण हो गया है ?"

"बहुत-कुछ पूर्ण हो गया है"

"तो आज ही कैतेरी चले जाओ !"

अम्पु नायरने नौकरको बुलाकर एक ताल-पत्र मँगवाया और अपने रजन-नाराचमे* लिखा—"इस व्यक्तिको अपने घरमे रखो शीघ्र ही बुला लूँगा" पत्रपर अपनी बहनका नाम लिखकर उसे कम्मूके हाथोंमें

*ताल-पत्रपर लिखनेकी चाँदीकी लेखनी

देते हुए उन्होंने कहा—"सुविधा देखकर रवाना हो जाओ सामर्थ्य और विश्वस्तता दिखानेके अवसर तुम्हें काफी मिलेंगे"

"दीदीसे विदा लेने-भरकी देर है"—कम्मूने कहा और वह अपने निवास-स्थानकी ओर रवाना हो गया

अम्पु नायर अपने कर्तव्यपर विचार करते हुए उसी दालानमें बैठ गये नौकरसे मालूम हुआ कि नम्पियार नित्य-कर्म तथा पूजा-पाठमें लगे हुए हैं और उन्हें एक-दो घण्टे लगेंगे अम्पुने सोचा कि नम्पियारके साथ तलश्शेरी जानेसे दूसरोकी जानकारीसे बचकर कई काम कर सकते हैं अपने पराक्रमके लिए प्रख्यात, कपनीके नये सेनापति, कर्नल वेलेस्लीके क्या-क्या विचार हैं, सेना आदिकी क्या स्थिति है, बम्बईमें कितनी सेना आई है, उनके पास कितनी बन्दूकें हैं, हमारे लोगोमेंसे कौन-कौन उनके साथ मिल गया है, इन सबकी जानकारी हो जायगी कुरुम्ब्रनाट्टुके राजा विभीषण बनकर शत्रुकी शरणमें गये हैं, यह सर्वविदित था उनसे विशेष भय भी नहीं था परन्तु देशमें एक ऐसी जनश्रुति फैली हुई थी कि अन्य प्रमुख सरदारोमेंसे कुछको विभीषण बनाकर और कुछको उपहार आदि देकर कपनीवालोंने अपने साथ मिला लिया है तम्पुराननें यही ठीक तरहसे जाननेके लिए उन्हें इस समय तलश्शेरी भेजनेका निश्चय किया था तम्पुरानके पक्षवालोंमेंसे भी एक-दोके बारेमें जो अफवाहें सुनाई देती थीं उनका तथ्य जानना भी आवश्यक था

इस प्रकार जब वे विविध चिन्ता-तरंगोंमें डूब-उतरा रहे थे उसी समय कम्मू फिर उनके सामने उपस्थित हुआ थोडी दूरीपर उण्णिनडा भी खड़ी थी

अम्पु नायरने उण्णिनडाको लक्ष्य करके पूछा—"पैरमें अब तो दर्द नहीं है ?"

"दर्द तो कांटा निकालते ही मिट गया था"—उण्णिनडाने उत्तर दिया. कुछ देर कोई कुछ नहीं बोला और बादमें उण्णिनडाने ही बात आगे

बढाई और कहा—"मुझ असहायका अब यही एक सहारा बचा है इसे मैं आपके हाथ सौंपती हूँ श्रीपोर्कली भगवतीकी इच्छा जैसी हो !"

"कम्मूकी जिम्मेदारी अब मेरी है डरनेकी आवश्यकता नही तम्पुरानका साथ देनेवाले सब एक परिवारके बन जाते हैं मैं भ्रातृ-हीन था, अबसे कम्मू मेरा भाई बन गया"—अम्पु नायरने कहा

"बिना पहचाने मैं बहुत-कुछ ऊल-जलूल कह गई कृपा करके आप सब क्षमा कीजिएगा अपनी बातें याद करके मुझे असह्य लज्जा हो रही है"

"इतना दुखी होनेकी क्या बात है ? तम्पुरान और उनके अनुचरोंके प्रति तुम लोगोंकी श्रद्धा और भक्तिको देखकर हम गद्‌गद् हो जाते हैं"

"अब इस ओर कब आना होगा ?"

"तम्पुरानकी सेवामें निरत लोगोंका कार्यक्रम निश्चित कैसे रह सकता है ? ईश्वर सहायता करे कि शीघ्र ही आकर मिल सकूँ"

नम्पियार यजमान नित्य-कर्म आदिसे निवृत्त होकर यात्राके लिए तैयार हो गये एक अनुचरसे यह समाचार पाकर अम्पु नायरने कहा—"तो अब आप विश्राम करें कम्मू, रवाना होनेमें विलम्ब न करना !"

अम्पु नायर नम्पियारकी राह देखने लगे और उण्णिनडा आँखें बन्द करके तम्पुरान, अम्पु नायर और अपने भाई तीनोंके लिए श्रीपोर्कली भगवतीसे प्रार्थना करके अन्त पुरमें चली गई

तीसरा अध्याय

पुण्यभूमि भार्गव-क्षेत्रके* लिए वह समय मानो आपत्ति-काल था तिरुविताकूर† और कोच्चि‡ क्रमश ब्रिटिशोंके अधीन हो चुके थे परन्तु अराजकतारूपी दुर्मूर्तिका नग्न ताडव अपने पैशाचिक रूपमें प्रकट हुआ था, कोच्चिके उत्तरके राज्योमे पालकाट्टुशेरी* से हैदरअली जब अपनी सेना केरलमें लाया तबसे इन राज्योमें न तो सन्तोष रहा, न शान्ति रही और न जनतामे पारस्परिक सबध ही अवशिष्ट रह गया हैदरके आक्रमण न रोक सकनेके कारण सामूतिरि† आदि राजा तथा अन्य प्रतिष्ठित लोगोने अपने महल, भडार आदि छोडकर तिरुविताकूरमें

---

*केरल ऐतिह्यके अनुसार, भार्गव परशुरामद्वारा समुद्रसे निकाला हुआ देश

†मूलशब्द-श्रीवाळ्कोट (श्री—श्री, वाळ्—निवास, कोट—स्थान) अपभ्रश—तिरुवाकोट, ट्रावनकोर, तिरुविताकूर

‡कोचीन सस्कृत—गोश्री

*पालकाड नामका स्थान 'पाल' (सस्कृत—'सप्तच्छद') नामक वृक्षोंका वन वर्तमान—पालघाट

†कोषिक्कोड (कालीकट)के राज-वशका नाम राजाको भी सामूतिरि कहा जाता है

शरण ग्रहण कर ली थी जो लोग अन्य राज्योमे शरण नही ले सकते थे वे जगलोमे छिप गये बहुत-सी जनताने इस्लाम धर्म स्वीकार करके आत्म-रक्षा कर ली

परन्तु देशवासियोने मैसूरकी सेनाको क्षण-भर भी चैन नही लेने दी बादमे टीपू सुलतानने जो ये घोषणाएँ की कि मलयाली लोग शैतानकी जाति है, नायरोको देखते ही गोली मार देनी चाहिए और केरलको जीतकर अपने अधीन करनेसे अपने राज्यकी हानि ही हुई है आदि, उनसे उस समयकी केरलीय जनताकी अवस्थाका अनुमान किया जा सकता है महाभारतके शान्तिपर्वमे भीष्म पितामहने अराजकताकी जो व्याख्या की है वह उस समयके केरलके सम्बन्धमे अक्षरश सत्य उतरती है

टीपू और उसके प्रतिनिधियोके कुशासनसे मलयालियोके ऊपर जो विपत्तियाँ आई उनका वर्णन नही किया जा सकता परन्तु स्वातन्त्र्य-प्रिय नायर जनता सभी आपत्तियोको सहती हुई मैसूर-व्याघ्र* के साथ बराबर युद्ध करती रही राजाओ और नेताओके इधर-उधर भाग जानेसे ये युद्ध भी एक प्रकारसे असगठित ही थे ऐसा कोई नेता नही था, जो सामूतिरिके राज्योमे अथवा चिरैकल† आदि देशोमे नायरोका यथोचित सगठन करके उन्हे युद्धके लिए सन्नद्ध करता लोगोने केवल कोट्टय राज्यमें ही उत्तम नेतृत्वके अधीन युद्ध किया अन्य राजाओ तथा देश-प्रमुखोके‡ समान कोट्टयके राजाने भी तिरुविताकूरमे शरण ले ली थी किन्तु उस समय उत्तराधिकार-क्रममे चतुर्थ राजा केरलवर्माने उच्च

---

* 'टाइगर आफ मैसूर', टीपू सुलतान

† केरल के एक राज-वश का नाम

‡ उस समय केरलमें सामन्तशाही राज्य था सामन्तोसे विचार-विनिमय किये बिना राजा कोई काम नही करते थे उन्ही सामन्तोको देश-प्रमुख कहा गया है

स्वरसे इस भीरुताकी निन्दाकी और वे स्वदेश तथा प्रजाकी रक्षा-के लिए कटिवद्ध होकर अपने स्थानपर बने रहे केवल इक्कीस वर्षके उस राजकुमारके नेतृत्वमे कोट्टय, वयनाट्टु आदि स्थानोंके नायर वीर एकत्रित हुए और उन्होंने मैसूरकी शक्ति को ध्वस्त करने का बीडा उठाया उनका निवास-स्थान पपश्शि-राजमहल ही स्वतत्र केरलकी राजधानी बना

टीपू साम, दाम, दड, भेद आदिकी सब चाले चलकर भी उस सर्व-प्रिय प्रतापी राजाको हराने अथवा नष्ट करनेमे विफल रहा पपश्शिके इस शैतान कुमारको नष्ट करनेके लिए उस दशकधरतुल्य टीपूने समरदक्ष सेनापतियोकी अधीनतामे भारी सेना भेजी जब उसकी सेनाका पारावार सारे देशमे फैल गया तो पुरळीश्वर[*] केरलवर्माने 'वन ही गति' समझकर पुरळी पहाडो और जगलोमे शरण ली परन्तु मैसूरकी सेना जहाँ कही तबू लगाकर निवास करती वहाँ रातमें अचानक तपु-रानके लोग आक्रमण कर देते और सेनाकी खाद्य-सामग्री नष्ट करके तबुओमे आग लगाकर भाग जाते इस प्रकार टीपूकी शक्तिको चुनौती देते हुए, उसके अधिकारको नष्ट करते हुए और केरलकी स्वातन्त्र्य-पताका ऊँची फहराते हुए केरलवर्मा दस वर्षतक युद्ध करते रहे

इसी समय टीपूको एक और प्रबल शत्रुका सामना करना पडा बग-देश और मद्रास आदि स्थानोंमे शासक बनी हुई अग्रेजोकी ईस्ट इडिया कपनी और टीपूके बीच युद्ध छिड गया केरलमे यह बात फैल गई कि कार्नवालिस नामक गवर्नर-जनरलकी देख-रेखमे टीपूसे युद्ध करनेके लिए भारी सेना सजाई गई है तलश्शेरी शहरमें कपनीके व्यापारकी रक्षाके लिए एक दुर्ग और कुछ सेना थी कपनीके सेनानायकोका इरादा था कि टीपूपर पूर्वसे आक्रमण किया जाय और साथ-ही-साथ पश्चिममे

---

[*] केरलवर्मा पुरळी नामक पहाड राज्य के अन्दर होनेके कारण पुरळीश्वर

केरल प्रदेशसे भी आक्रमण करके फ्रासीसी लोगोंके साथ उनका सबंध काट दिया जाय इस प्रयत्नमें सहायता देनेके लिए कपनीने केरलके राजाओसे भी प्रार्थना की टीपूको हरानेमे मदद करनेपर उन राजाओ-को फिरसे उनके राज्योमे अधिष्ठित करनेका वचन भी दिया गया कपनीके अधिकारियोने घोषित किया कि कपनीकी दिलचस्पी केवल व्यापारमें है, राज्य-सपादन करनेमें नही जैसे-तैसे सामूतिरि आदि राजा कपनीको सहायता पहुँचानेके लिए तैयार हो गए

पच्चीस वर्षोसे परदेशोमें निवास करनेवाले राजाओकी अपेक्षा कई-गुनी अधिक सहायता 'मैसूर-व्याघ्र' के निष्कासनमें केरलवर्माने दी उनका प्रताप, उनकी जन-शक्ति, और उनका युद्ध-कौशल कपनीवालो-को भली भाँति ज्ञात था, अतएव उन्होने इस 'पपश्शि राजा'को अपना उत्तम बन्धु मान लिया परन्तु सधि-पत्रद्वारा इस प्रकारका सम्बन्ध कायम होनेके पूर्व केरलवर्मा कोई सहायता देनेको तैयार न हुए इस-लिए एक ऐसा सधि-पत्र बनाया गया जिसके अनुसार टीपूके साथ युद्ध करनेमें दोनो पक्ष एक-दूसरेको सहायता दें और जब केरल टीपूसे मुक्त हो जाय तब परपरागत रूपमे कोट्टयके अधीन रहे हुए प्रदेशको केरल-वर्माके स्वतत्र अधिकारमे दे दिया जाय

युद्ध समाप्त होनेके बाद ही केरलवर्मा कपनीकी असली चालको समझे टीपू और कपनीके बीचके सधि-पत्रमें कहा गया कि टीपू केरलका राज्य कपनीको सौंप रहा है अतएव अपनी विजयके उन्मादमें कपनीके अधिकारी केरल-राजाओको उनका राज्य वापस करनेकी प्रतिज्ञा भूल गये और उन्होने राजाओको सूचित कर दिया कि अब केरलका शासन कपनीके हाथमें है

कपनीके इस निश्चयका विरोध करनेकी शक्ति सामूतिरि आदि राजाओमें नही थी कपनी जान चुकी थी कि भारतवर्षमें सबसे धनी और समृद्ध प्रदेश केरल है उसकी मुख्य व्यापारिक वस्तुएँ इलायची, काली मिर्च आदि केरलकी ही उपज थीं इनपर अधिकार पानेके लिए

उन्होने पुर्तगीज और डच लोगोसे कितना युद्ध किया था अब देश ही हाथमे आ गया तो क्या उसे केवल कुछ लेखोके आधारपर इन दुर्बल राजाओके हाथमे सौप दिया जाय, जिनमें टीपूका भी सामना करनेकी शक्ति नही थी ? ऐसा करनेका कंपनीका कोई इरादा नही था

परन्तु उस समय कपनीके पास केरलमे इस अधिकारको कायम रखनेके लिए उपयुक्त सैन्य-शक्ति, कर वसूल करनेके लिए कर्मचारी, शान्ति और व्यवस्थाके सरक्षणके लिए योग्य साधन नही थे फलत इस घोषणासे देशमे अराजकताका और भी बोल-बाला हुआ दीर्घ काल-तक अन्य देशोमे रहकर लौटे हुए राजाओ तथा अन्य कर्मचारियोको एक-मात्र यही चिन्ता थी कि कपनीका शासन पूर्णतया जमनेके पूर्व अधिक-से-अधिक धन किस प्रकार वसूल किया जा सकता है बहुत-से लोग अपने-आपको राजाओंके कर्मचारी बताकर शस्त्रोके बलपर प्रजाके धन धान्य आदिका अपहरण करने लगे

आसानीसे कर वसूल करनेका प्रबध न होनेके कारण कपनीने वह काम पांच वर्षके इकरारपर राजाओको सौप दिया था यह मार्ग केवल इसलिए अपनाया गया था कि राजा लोग उस समय शान्त हो जायें और समय आनेपर उनसे फिर राज्य छीन लिया जाय इससे भी देश-वासियोंके कष्टोमे वृद्धि ही हुई

उण्णिमूत्ता-जैसे प्रमुख डाकू और कुञ्ञिक्कोय-जैसे दास-विक्रेता खुले-आम गांवो और शहरोमें अपनी पैशाचिक प्रवृत्तियाँ चला रहे थे कपनी-में उनका मुकाबला करनेकी शक्ति नही थी सक्षेपमें, केरलकी अवस्था भीषणतम अराजकताकी थी

× × × ×

कपनीका सीधा विरोध करनेका साहस केवल केरलवर्माने ही किया यह मालूम होते ही कि कपनी सधि की शर्ते पूर्ण करनेको तैयार नही है, उन्होने युद्ध करनेका निश्चय कर लिया था उनकी कार्रवाइयोसे

कोट्टय और वयनाट्टुमे कम्पनीका अधिकार शून्यवत् हो गया कपनी-के अधिकारियोने अपनी पूर्व-रीतिके अनुसार कुरुम्ब्रनाट्टुके राजाको साथ लेकर केरलवर्मासे लडनेका शक्ति-भर प्रयत्न किया, परतु न तो उन देशोसे एक पैसा ही वसूल हुआ और न कोई आदमी ही युद्धके लिए मिला युद्धद्वारा राज्यपर अधिकार करनेकी शक्ति उस समय बम्बई-सरकारके पास भी नही थी इसलिए सधि करना ही उचित जानकर वैसा करनेकी आज्ञा तलश्शेरीस्थित सुपरवाइजरको दे दी गई

केरलवर्मा पुन पपश्शिदुर्गके शासक बन गये

केरलवर्मासे सधि करनेका एक कारण और भी था कपनी फिरसे टीपू सुलतानके साथ युद्ध करनेकी तैयारी कर रही थी इस बार गवर्नर-जनरलने मैसूरके शासकको बिलकुल मिटा देनेका निश्चय कर लिया था योजना यह थी कि उसपर बगलौर और कटकसे एक साथ हमला किया जाय केरलवर्माके विरोधी रहनेपर कटकसे आक्रमण करना सभव नही होता अतएव उन्हे प्रसन्न करके मित्र बना लेने का मार्ग ही श्रेयस्कर समझा गया

श्रीरगपट्टनके युद्धमे टीपू मारा गया और सारा मैसूर-राज्य कपनीके हाथमें आ गया अब केरलवर्मासे उसे कोई प्रयोजन नही रहा और उसके अधिकारियोने पैतरे बदल दिये उन्होने खुल्लम-खुल्ला कहना शुरू कर दिया कि केरलवर्माके शासनाधीन राज्य भी दूसरे राज्योके समान कपनीके अधिकारमे है परिणामत कपनी और केरलवर्मा के बीच फिरसे युद्ध छिड गया हमारी कहानी का आरम्भ इसी समय होता है

केरलवर्मा पपश्शिराजाकी आयु उस समय ४७ वर्षके आस-पास थी वे सब प्रकारसे एक असाधारण पुरुष थे केरलके पौरुषकी तो मानो वे मूर्ति ही थे कष्ट सहन करने योग्य दृढ और बलिष्ठ दीर्घ शरीर, सुडौल कधे और ग्रीवा, विशाल वक्षस्थल और आजानुबाहु यह उनकी आकृति थी उन्नत ललाट, शौर्यसे भरी आंखे, निश्चयकी दृढता और

म्यैयके द्योतक अधर-पुट आदि उनके मुखको असामान्य गौरव प्रदान करते थे उनकी पैनी-आँखे तो मानो दूसरोंके हृदयमे प्रवेश करके अन्तस्का रहस्य देख सकती थी उनकी मुखाकृति इतनी भव्य थी कि प्रथम दृष्टिमे ही हृदय भक्ति और आदरसे भर उठता था

उनका पराक्रम, आज्ञा-शक्ति, धैर्य, प्रताप, नीति-चातुर्य आदि केरलमे ही नही अन्य प्रदेशोमे भी प्रख्यात था पचीस वर्षतक सब प्रकारके कष्ट सहन करके केरलके स्वातन्त्र्यकी रक्षा करनेवाले इस महापुरुषको केरलीय जनता दिव्य विभूति मानकर पूजने लगी तो इसमे आश्चर्य ही क्या है ? परन्तु श्रद्धा और आदरका कारण सिर्फ यही नही था दीनोंके लिए उनकी दया असीम थी अपने आश्रितोकी रक्षाके लिए प्राणोको भी होम देनेके लिए वे सदैव तत्पर रहते थे उनके इस गुणको स्मरण करके डाकू लोग भी उनके पक्षके लोगोंके घरोंसे दूर ही रहते थे कोई भी हो, एक बार शरणमे आनेके बाद त्यागा नहीं गया इन सब गुणोंके अलावा उन्हे सबका प्राणप्रिय बना देनेवाली एक बात यह थी कि राजा होकर भी वे युद्ध-भूमिमे, वनमे और सर्वत्र साधारण योद्धाके समान रहते थे कष्ट-सहनमें, खान-पानमे, निद्रा-विश्राममे, वे अपने और दूसरेके बीच कोई भेद नही करते थे ऐसे केरलवर्मदेव केरलीय जनताके लिए देवता बन गए तो इसमे क्या आश्चर्य ?

कोट्टय राज-वशमे पाण्डित्य और साहित्य-सेवाकी जो वृत्ति परपरा-से चली आ रही थी वह उनमे पराकाष्ठातक पहुँच गई थी सगीत-शास्त्र तथा नृत्य-कलामे उनकी बराबरी करनेवाले उस समय केवल एक ही महानुभाव थे—तिरुविताकूरके राजा, रामराजा बहादुर धर्मराजा नामसे प्रख्यात श्रीराम वर्मा युद्धोंके इस कालमे ही केरलवर्माने बक-वध, कालकेय वध, और कल्याण-सौगन्धिक आदि आट्टकथाओ[1] (कथकलीके लिए उपयुक्त साहित्य-कृतियो) की रचना की और ये कृतियाँ अपने अनु-

---

[1] कथकलीके लिए निर्मित काव्य-साहित्य विशेष गीति-कथाएँ

पम गुणोसे मलयालम साहित्यके कण्ठाभरण और केरलीय नृत्य-कलाके अमूल्य रत्न-भडारके रूपमे आज भी विद्यमान है

फिरसे युद्ध छिडनेपर महा पराक्रमी आर्थर वेलेस्ली कपनीकी सेना-का नायक नियुक्त किया गया जब वह तलश्शेरी पहुँचा तब युद्धकी प्रणाली ही कुछ अलग दिखलाई पडी तपुरान अपने दो भानजो और कुछ विश्वसनीय अनुचरोको साथ लेकर पुरळी पर्वतपर चले गए देशका शासन चलानेके लिए उन्होने पपयवीट्टिल चन्तुको, और कर वसूल करने तथा जन-रक्षाके लिए कैतेरी अम्पु नायरको नियुक्त कर दिया अविञ्जि-क्काट्टु केट्टिलम्मा—तपुरानकी प्रथम पत्नी—भी उनके साथ वनवासमे चली गई

जब जनताने सुना कि तपुराननने पपश्शिका राजमहल त्यागकर वन-वास स्वीकार किया है तो उसके दिलोमे केरलके भविष्यके सबधमें चिन्ता व्याप्त हो गई उनका निर्णय जानकर कपनीवालोने भी अपने मनसूबे व्यक्त करनेमें देरी न करनेका निश्चय किया

❸

चौथा अध्याय

अम्पु नायरका पत्र लेकर कम्मारन् नायर (कम्मू) सायंकालतक कैंतेरी-भवनके निकट पहुँच गया सह्याद्रि-सन्तानोंके समान विराजमान पहाडियोकी पट-भूमिकापर धान्य-सकुल खेत, अधित्यकामे अधिष्ठित सुपारी, नारियल और कटहल आदिकी लहलहाती हुई वाटिकाएँ—यह थी केरलके साधारण नायर-परिवारोंके निवास-स्थान की रूप-रेखा. मकान प्राय खेतो और वाटिकाओंके बीचमे होते थे कैंतेरी-भवन भी इससे भिन्न नही था मार्गसे खेतमे उतरकर चार-पाँच सौ गज चलनेपर एक देवी-मन्दिर और एक बडा मकान दृष्टिगत होता था पूर्व दिशामें कुछ हटकर, खेतके पास जो एक भवन दिखाई दे रहा था, वह उस कालमे नायरोंके शस्त्राभ्यास के लिए उपयोगमे आनेवाली और कुलीन परिवारो में अनिवार्य रूपसे बनाई जानेवाली 'कळरी' (युद्धाभ्यासशाला) थी मकानके पीछे ऊँची-ऊँची टेकडियाँ खडी थी—मानो गृह-रक्षाके लिए बनाये गये दुर्ग हो उस पूर्वाभिमुख भवनके सामने और दक्षिण भागमें धानके खेत थे

ऊँची प्राचीरोंसे घिरा हुआ कैंतेरी-भवन बाहरसे देखनेवालोको दिखलाई नही पडता था कम्मू मार्गके आस-पास रहनेवाले लोगोसे रास्ता पूछता हुआ जब कैंतेरी-भवनकी प्राचीरके पास पहुँचा तो उसे एक मधुर गान सुनाई पडा, जो मानो उसके श्रवण-पुटोमे अमृत-वर्षा करता हुआ

उसका स्वागत कर रहा हो—'शरण भव सरसीरुह्-लोचन शरणागत-वत्सल ! जनार्दन !'

गीतकी यह पल्लवी (टेक) सुनकर उसने निश्चय कर लिया कि गानेवाली माक्कम् केट्टिलम्मा ही है स्वरके माधुर्य और अभ्यासकी निपुणताने क्षण-भरके लिए उसे अभिभूत कर लिया केट्टिलम्मा किसी विशेष कार्यमे व्यस्त नही है यह समझकर उसने आँगनमे प्रवेश किया

पषश्शि-राजमहलको छोडकर वन जाते समय तपुरान अपनी प्रथम पत्नीको साथ ले गये थे द्वितीय पत्नी माक्कम्ने साथ जानेका बहुत आग्रह किया, परन्तु उन्होने उसे यौवनवती और शरीर-श्रममें अनभ्यस्त जानकर घरमें ही रहने देना ठीक समझा

बडी रानीके बारेमें भी उनकी यही इच्छा थी, किन्तु उन्हे साथ चलनेसे नही रोक सके उन्होने टीपूके साथ हुए युद्धमे पूरे समय साथ रहकर सुख-दुःख की भागिनी बनकर सेवा की थी ऐसी सहधर्मिणीको रोकनेकी हिम्मत ही उन्हे नही हुई परन्तु दूसरी पत्नी न केवल युवती ही थी वरन् उसे सगीत आदिसे भी विशेष प्रेम था अत तपुरान उसे सुकुमार प्रकृतिकी समझते थे कदाचित् उन्होने वनमे दो पत्नियोंके साथ रहनेसे सभाव्य कठिनाइयोकी कल्पना भी की होगी कुछ भी हो माक्कम् केट्टिलम्मा को कैतेरी† वापस जाना ही पडा

कैतेरी-भवन की गृहेश्वरी उण्णियम्मा माक्कम्की बडी बहन और तम्पुरानके एक प्रमुख सेवक पपयवीट्टिल चन्नुकी पत्नी थी चन्नु पहले-पहल केवल दौड-धूप का काम करनेवाले एक छोकरेके रूपमें तम्पु-रानके पास आया था, परन्तु बादमे अपने सामर्थ्य और तम्पुरानके आश्रितोंके प्रति सहज वात्सल्यके कारण उनके मुख्य अधिकारियोंमेंसे एक बन गया टीपूके साथ युद्धके समय वह तपुरानका दाहिना हाथ था स्थान-मानादिसे हीन होनेपर भी तम्पुरानकी आज्ञासे अम्पु नायर

---

† माक्कम् और उसके भाई अम्पु नायरका घर

आदिने उसे कँतेरी-परिवारका सबंधी बनाना स्वीकार किया था

चन्तुको तम्पुरानकी दृष्टिमे जो स्थान और देशमे जो प्रमुखता प्राप्त थी उसपर उण्णियम्माको बहुत अभिमान था एक-दो वर्ष बाद जब तम्पुराननें उण्णियम्माकी छोटी बहन माक्कम्को पत्नीके रूपमे स्वीकार कर लिया तो उसे अपनी पदवीमें कमी महसूस होने लगी उसे माक्कम्के प्रति जो ईर्ष्या हुई वह धीरे-धीरे व्यग्यके रूपमे प्रकट होने लगी परन्तु बड़ी बहनके इस विरोधी रुखका कारण शुद्ध-हृदय माक्कम्की समझमें नहीं आया तम्पुरानके देशमे रहते समय माक्कम् राजमहलमे ही रहती थी, इसलिए उण्णियम्माको अपना मनोभाव प्रदर्शित करनेका अवसर नहीं मिला था जब वे वनवासी हो गए तब माक्कम् केट्टिलम्माको घर लौटना पडा* और उण्णियम्माको अवसर मिल गया

कँतेरी-भवनमे उण्णियम्मा, उसके दो बच्चे, माक्कम् और उनकी स्वर्गवासिनी ज्येष्ठ सहोदरीकी एक सन्तान—नीलुक्कुट्टी—ही रहते थे नीलुक्कुट्टीकी माताकी मृत्यु उसके शैशवमें ही हो गई थी, अतएव माक्कम्ने ही उसे पाल-पोसकर बडा किया था पपशिमे भी नीलुक्कुट्टी माक्कम्के साथ रही थी

कँतेरी-कुटुम्बकी और भी शाखाएँ थीं वे सब अलग-अलग घरोमे रहती थी 'कँतेरी वटक्केवीट्टिल' नामके भवनमें चार-पाँच पुरुष, सात-आठ स्त्रियाँ और उन सबके बच्चे अपने मामा इक्कण्डन् नायरके आश्रयमे रहते थे इक्कण्डन् नायरकी आयु साठ वर्षसे ऊपर थी परन्तु

---

* केरलमें मातृसत्ता प्रचलित है, जो भारतके किसी अन्य प्रान्तमें नहीं है अतएव विवाहके बाद भी लडकियोंके लिए माताका घर ही अपना घर होता है, पतिका घर नही लडकेका घर भी वही होता है इसलिए भाई और बहनका घर एक ही हुआ वशकी स्थापना लडकोंसे नहीं, लडकियोंसे होती है इस प्रथाको मलयालममें 'पेन्वषी' कहते है, जिसका अक्षरश अर्थ है—'स्त्री द्वारा'.

उनमें शक्तिकी कमी विलकुल नही थी साठ वर्ष पूर्ण हो जाने पर भी वे एक युवतीको विवाह करके ले आये थे लोगोका कहना था कि वे तान्त्रिक हे, श्मशानमें जाकर देवीका पूजन किया करते है और 'पच मकार' (मद्य, मास, मत्स्य, मुद्रा और मानिनी) के सेवनमे रुचि रखते है एक वात तो निश्चत है—स्वय इक्कण्डन नायर ही स्वीकार करते थे कि विलायती मद्य उन्हे विशेप प्रिय है व्हिस्की, ब्रेंडी आदिकी प्रशसा उनके मुँहसे सुननेपर ऐसा मालूम होता था कि समुद्र-मथनमे सुवा प्राप्त करके देवगण उसके गुणोका वर्णन कर रहे हो

स्वामिनीकी आज्ञा से सेविका वाहर आई और उसने रुखाई के साथ कम्मूसे पूछा—"क्या वात है ? कहाँसे आये हो ?

"अम्पु यजमानने केट्टिलम्माके लिए एक पत्र दिया है वही लाया हूँ"

"तो वैठो, मे अन्दर जाकर वताती हूँ"

थोडी देरमें उण्णियम्मा, माक्कम् और नीलुक्कुट्टी वरामदेमे आ गईं वहनोमे आयुका अन्तर वहुत न होनेपर भी माक्कम् केट्टिलम्माको पहचाननेमे कम्मूको देरी नही लगी दोनो सुन्दरी थी, परन्तु उसने निश्चय जान लिया कि खूब गहने पहने हुए, पानसे होठोको लाल किये हुए और सुवर्ण-वसन आदिसे सुसज्जित स्त्री विरह-पीडिता राज-पत्नी नही हो सकती इतना ही नही, वडी वहन की सशयमय दृप्टि और अप्रसन्न मुद्रा भी वता रही थी कि यह राज-पत्नी माक्कम् नही है अपने मनमें सकल्पित रूप जिसमे देखा उसीको उसने पहचाना शोकाकुल होनेपर भी स्वभावसे प्रसन्न-मुख, विरहोचित अल्प भूपा, निराडवर शुभ्र वेश, अजन-रहित आँखें माक्कम् केट्टिलम्माको पहचाननेमे कम्मूकी सहायक हुईं उमको झुककर नमस्कार करके उण्णियम्माके हाथकी उपेक्षा करके, उसके ही हाथमें उसने अम्पु नायरका पत्र समर्पित किया उसने यह नही जाना कि इस एक गलती से ही उसने एक पक्का शत्रु वना लिया

उण्णियम्माका मुख लाल होते और भाव बदलते माक्कम्ने ही देखा उसने पत्रको देखे विना ही उण्णियम्माकी ओर बढा दिया

उण्णियम्माने उत्तर दिया—नही, तुम ही देखो तम्पुरानकी कोई बात होगी

माक्कम्—तो भी क्या हुआ ? आपसे छिपानेकी क्या बात है ?

"ओ हो ! जरा कोई सुने तो सही ! तुम लोगोका भाव ऐसा ही तो है ! मैं कौन होती हूँ ? आ गई हूँ कहीसे ! दादाने भी तो तुमको ही लिखा है अपना काम तुम ही देख लो !" कहती हुई उण्णियम्मा तमककर अदर चली गई

माक्कम्ने पत्र पढनेके बाद पूछा—दादा अच्छे तो है ?

"जी हाँ !"

"आपको यहाँ रहनेके लिए लिखा है इसमे कोई कठिनाई नही है परन्तु प्रश्न यह है कि काम क्या होगा?"

"शायद यह सोचकर भेजा होगा कि जहाँ स्त्रियाँ अकेली रहती है वहाँ एक पहरुवा ही हो जाय"

माक्कम्ने मुस्कराहटके साथ उत्तर दिया—ठीक ! कँतेरीमें भी पहरे-की आवश्यकता दादाको महसूस हो रही है तो हालत गभीर ही होनी चाहिए परन्तु जबतक श्रीपोर्कली भगवतीकी कृपा है, ऐसी अवस्था नही होगी"

"यदि मेरे मुँहसे कोई गलत बात निकल गई हो तो क्षमा कीजिए जबतक स्वामी नही बुलाते तबतक आपका आज्ञाकारी बनकर रहनेसे बढकर मेरे लिए और क्या है ?"

"अच्छा, इसमे लिखा है कि आपका अभ्यास पूर्ण हो गया है तो हमारी अभ्यास-शालामे जिनका अभ्यास पूर्ण नही हुआ उनको आप सिखा सकते है ?"

"जी हाँ मै वही काम करूँगा"

"धनुष और तलवारके अतिरिक्त बन्दूक चलाना भी आपने सीखा है ?"

"बहुत अभ्यास है ऐसा तो नही कह सकता, फिर भी अचूक बन्दूक चला लेता हूं, बस "

"तो मैं भी सीखना चाहती हूँ पहाडोपर जानेके पहले उन्होने मुझे रिवाल्वर भेंट किया था और कहा था—'अब अधिक काम इससे होता है, इसे सदा साथ रखना परन्तु इसका प्रयोग सिखानेका समय नही रहा कभी होगा भी, पता नही "

अन्तिम वाक्यसे प्रकट हुई अधीरताको शीघ्रतासे छिपाकर माक्कम्-ने फिर कहा—"अच्छा तो उसे ले आती हूँ "

और वह रिवाल्वर लाने अन्दर चली गई

कम्मूके मनमें न जाने क्या-क्या विचार उठने लगे कितनी कुलीन! कितना विनय! कैसी स्नेहमयी वाणी! कितना गाम्भीर्य! उसका हृदय विस्मयसे भर उठा कैतेरीमें रहनेका आदेश जब अम्पु नायरने दिया था तब उसको सन्तोष नही हुआ था परन्तु अब, केट्टिलम्मासे मिलकर बातें करनेके बाद, वह कैतेरीमें रहना अपना परम सौभाग्य समझने लगा

केट्टिलम्मा रिवाल्वर लेकर बाहर आ गई उसने यह कहते हुए हथियार कम्मूके हाथमें दे दिया कि "इसे कैसे चलाते हैं मैं नही जानती मय्यपीके किसी साहबने इसे तम्पुरानको उपहारके रूपमे दिया था "

कम्मूने इस प्रकारका हथियार पहले कभी नही देखा था वह जेबमें रखने योग्य छोटा और इतना हल्का था कि बच्चे भी खेल सके

अपनी हथेलीके अन्दर आ जानेवाली उस छोटी-सी चीजको देखकर पहले महाराजाने उसे खिलौना ही समझा था और यही समझकर उसके बारेमें बात भी की थी परन्तु भेंट देनेवाला फ्रांसीसी सेनाका एक उच्च अधिकारी था और उसने इस हथियारकी बहुत प्रशसा की थी इसीलिए महाराजाने एक दूसरे यूरोपीय सैनिक अधिकारीको, जो उनसे

मिलन आया था, यह रिवाल्वर दिखाया इसे चलाकर उस अधिकारी-ने अपना मत दिया कि इसके समान ठीक निशाना मारनेवाला हथि-यार कठिनाईसे मिलेगा फिर भी महाराजा-जैसे पुरुषोके लिए इसका भार बहुत कम था

तपुरान जब पपश्शि छोड रहे थे तब उन्होने यह रिवाल्वर माक्कम्-को दे दिया था पता नही उन्होने इस प्रकारकी भेट अपनी प्रियतमाको क्यो दी कदाचित् उन्होने सोचा होगा कि यदि मेरी मृत्यु अथवा परा-जय हो जाय तो मेरी प्रिय पत्नी गिरफ्तारी आदि अवश्यभावी परिणामो-से इसके द्वारा अपनी रक्षा कर लेगी—कदाचित् वे उसे यह उपाय सुझा रहे थे अथवा उन्होने यह सोचा होगा कि काल-स्थितिके अनुसार स्त्रियो-के लिए भी स्वय रक्षा-मार्ग खोजना आवश्यक हो सकता है अथवा, अपने-से ही शस्त्र-विद्या सीखी हुई माक्कम्की शिक्षा पूर्ण करनेकी दृष्टिसे उन्होंने ऐसा किया हो केट्टिलम्माका विचार था कि तपुरानने यह सब सोचकर ही यह भेट दी होगी

परन्तु लाभ क्या ? धनुष और तलवारका पर्याप्त परिचय होनेपर भी केट्टिलम्माको बन्दूकसे कारतूस निकालना तक मालूम नही था. उसने उसे अनेक बार हाथमें लेकर और उलट-पुलटकर देखा, परन्तु वह उसके लिए एक खिलौना-मात्र ही बना रहा इसका दु ख उसके मनमें भरा हुआ था जब कम्मूने कहा कि बन्दूकका भी अभ्यास उसने किया है तो इसे चलाना सीख लेनेकी इच्छा माक्कम्के हृदयमें प्रबल हो उठी

कम्मूने विनयके साथ रिवाल्वर हाथमे लिया और उसे देखा खोल-कर निश्चय कर लिया कि इसमें कारतूस नही भरा हुआ है और उसे दाहिने हाथमे लेकर, अँगूठेसे घोडा दबाकर चलानेकी विधि बता दी

उसने बताया कि यहाँ कारतूस रखा जाता है, इस प्रकार बन्द किया जाता है, फिर चलानेके लिए यह जो अँगूठा-जैसा दीख रहा है, इसे खींचकर छोड देते हैं

"कारतूस मेरे पास है एक-दो वार इसे चलाकर दिखाइए !" केट्टिलम्माने कौतुकके साथ कहा

इस नये हथियारमे ध्यान लग जानेसे वह वीरांगना क्षण-भरके लिए अपनी वहनके व्यंग्यादिकी तथा अन्य सब दु खोकी वेदना भूल गई उसने ऐसा आनन्द अनुभव किया मानो किसी कामिनीने नया अलंकार अथवा किसी शिशुने नया खिलौना पा लिया हो वह शीघ्रतासे जाकर कारतूस ले आई

कम्मूने निस्संकोच भावसे उसमे कारतूस भरकर कहा—"यह दूरके शत्रुको मारनेके लिए उपयोगी नही हो सकता, पास आनेवालेको एक ही वारमे गिराया जा सकता है और इससे लगातार छ वार कर सकते है

वह आँगनमे उतरा केट्टिलम्मा भी साथ हो ली कम्मूने एक पत्ता लेकर तालावके पासके एक पेडपर काँटेसे खोस दिया, फिर अपने स्थान-पर लौटकर 'देखिए' कहते हुए, हाथ आगे वढाकर रिवाल्वर चला दिया गोली सीधी जाकर उस पत्तेके वीचमे लगी

"लक्ष्य खूब सधा, जरा मै भी देखूँ"—कहते हुए केट्टिलम्माने रिवाल्वर अपने हाथमे ले लिया

रिवाल्वरके शब्दसे भयभीत होकर जब उण्णियम्मा वाहर दौडी आई तो उसने देखा कि माक्कम् खुश होकर रिवाल्वर हाथमें लिये खडी है उसके क्रोध और ईर्ष्याकी सीमा न रही उसने वडवडाना आरम्भ कर दिया—'देखो तो, यह मेरी वहन है! अपरिचित युवकके साथ कैसी हिली-मिली आँगनमे खडी है ! अपनी मान-मर्यादाका कोई ख्याल ही नही ! क्या यह अनुचित नही है ?'

माक्कम् तो शास्त्राभ्यासके उत्साहमे सब-कुछ भूल गई थी उसने यह कहते हुए कि देखूँ, तुमने जहाँ निशाना मारा वहाँ मै भी मार सकती हूँ या नही और रिवाल्वर चलाया गोली लक्ष्यसे तीन इच दूर लगी

कम्मूने कहा—धनुष चलानेवालोंका लक्ष्य चूक नही सकता हाथ जरा खोलकर अँगूठेसे कई बार अभ्यास कीजिए हाथ सध जायगा "

"एक बार फिर देखूँ" कहते हुए केट्टिलम्माने फिर गोली छोडी इस बार वह लक्ष्यके अधिक समीप लगी इससे उत्साहित होकर उसने और गोली चलाई चौथी बार लक्ष्य-वेध हो गया और मावकम्के मुख-पर सफलता-सूचक मदहास दमक उठा उसने कहा—"जब पधारेंगे तब उनको दिखाऊँगी कि इससे क्या कर सकती हूँ, और किसने यह विद्या सिखाई है यह भी निवेदन करना नही भूलूँगी "

"मैंने तो कुछ भी नही सिखाया रिवाल्वर खोलकर दिखा देनेके सिवा मैंने किया ही क्या है ?" कम्मूने विनय प्रकट करते हुए कहा

"और कैसे सिखाते ?" मावकम्ने पूछा और फिर कहा—"अभ्यास-शालामें निशाना शुरू करनेके पहले ही अपने सामर्थ्य की परीक्षा तो दे दी ! सकोच करनेकी कोई बात नही सिखानेवाले चले गए तो हमारी अभ्यास-शाला अनाथ हो गई थी, अब उसे सिखानेवाला गुरु मिल गया अब उस ओर चलो तुम्हारे भोजनादिका प्रबन्ध कर दूँ "

कम्मूने इस प्रकार कहकर जैसे ही वह बरामदेमें आई वैसे ही उसे उण्णियम्माके वाग्बाणोंकी तीक्ष्णता अनुभव करनेका अवसर मिला, "मान-मर्यादा का उल्लघन करके चाहे जिसके साथ इस प्रकारका व्यव-हार करना इस घरके लिए अपमानजनक है राज-पत्नी होने के अभि-मानमें कुछ भी करने लगो, परन्तु पूछनेवाले भी होगे" आदि-आदि बहुत-कुछ बकवास उसने की मावकम् बहुत देरतक इन बातोंको सुनी-अन-सुनी करके चुपचाप खडी रही, फिर भी जब उण्णियम्माने अपना विष-वमन बन्द न किया तो उसने नम्रतापूर्वक पूछा, "आखिर मैंने किया क्या है, जो आप यह सब कह रही है ?"

यह प्रश्न उण्णियम्माकी क्रोधाग्निमें घृताहुतिके समान पडा उसने कहा—"शर्म नही आती ? कहींसे आये किसी भी पुरुषके साथ खडी

मटक-मटककर बाते कर रही है देखनेको और किसीके आँखे नही है? कुलका नाश करनेके लिए पैदा हुई ज्येष्ठा* ।

मावकम् और अधिक सुननेके लिए वहाँ खडी नही रही और अपने कमरेमे चली गई

*श्री का विपरीत शब्द पौराणिक कथाके अनुसार, समुद्र-मथनसे श्रीके पूर्व ज्येष्ठा भगवती निकली थी, जो सब अवगुणोंमे पूर्ण और सर्वथा अशुभकारिणी है सब अशुभ स्थानोमे उसका निवास माना जाता है श्रीके पूर्व प्रकट होनेके कारण उसे ज्येष्ठा (बडी) कहा गया है

पाँचवाँ अध्याय

❀

पुरळी पर्वतमाला कोट्टय-प्रदेशके मेरुदण्डके समान है हाथियो, व्याघ्रो, चीतो, जगली भैसो आदि हिंस्र पशुओसे भरे इन पहाडोपर वेडर* और कुरिच्यर† आदि वन्य जातियोंके अतिरिक्त कोई नही रहता पहाडी जगलमे ऊँचे-ऊँचे वृक्षोकी चारो ओर फैली शाखाओ और प्रशाखाओंके कारण सूर्यकी किरणे भी वहाँ प्रवेश नही कर पाती वृक्षोपर चढी और घने रूपमे फैली समस्त भूभागको छिपा लेनेवाली लताओ और झाडियोंके कारण वन्य पशुओके लिए भी उसके अन्दर घूम-फिर सकना सुगम नही है वर्षा-काल आरम्भ हो जानेसे वृक्षोकी शाखा-प्रशाखाएँ नव-नव पल्लवोंके साथ लहलहा उठी थी और प्रकृतिदेवी अपने इस हरित वैभवका प्रदर्शन करके मानो नवोन्मेषके साथ आह्लादित हो रही थी

---

* वेड या वेडन्का बहु वचन एक वनवासी जाति व्याध जाति

† कुरिच्य अथवा कुरिच्यन्का बहु वचन एक वनवासी जाति, जिसे न केवल अस्पृश्य माना जाता था, वरन् सवर्ण लोगोंसे एक निश्चित दूरीपर रखा जाता था अब भी इस जातिके इक्के-दुक्के लोग वनोंमें पाये जाते हैं विश्वसनीयता और वीरता इन लोगोके विशेष गुण थे

लगभग पच्चीस वर्षोसे पुरळी पर्वत कोट्टय राज्यकी दूसरी राजधानी बना हुआ था हैदरअलीके जमानेमे केरलवर्माने जब इस वनका आश्रय लिया था तभी उन्होने इसकी गोदमे अभयका मूक सदेश पा लिया था और तभीसे अपनी दूरदर्शिताके कारण, आवश्यकता पडनेपर उपयोग करनेके लिए उसे सुसज्जित करके निवासयोग्य भी बना रखा था वनके अन्तरालमे एक भाग साफ कराकर एक छोटा सा मकान, एक देवीका मन्दिर, अनुचर-परिचरोके रहनेके लिए लम्बी शालाएँ, अस्त्र-शस्त्र सग्रह करके छिपा रखनेके लिए तलघर आदि सभी आवश्यक घर-मकान तैयार कर लिए गये थे वहाँतक पहुँचनेका मार्ग कुछ खास-खास नेताओ और विश्वास-पात्र कुरिच्योके अतिरिक्त किसीको मालूम नही था

लोगोका ख्याल था कि जब तम्पुरान कपनीके साथ सधि करके राज्य कर रहे थे तभी उन्होने परदेशी खनकोको बुलाकर वहाँ कुछ सुरगें बनवा ली थी और गुफाओमे भी कुछ काम करवा लिया था परन्तु सबकी जानकारी तम्पुरान और उनके दो भानजो, और कुरिच्योके नायक तथा एक-दो मुख्य सेवकोके अतिरिक्त किसीको नही थी

उन्होने मान रखा था कि जन्म-पत्रीके दुष्ट ग्रहोके अनुसार शनिके प्रभावके कारण कानन-वास करना होगा इसीलिए उस ज्योतिष-शास्त्रज्ञने केवल पुरळी पर्वत ही नही वरन् वयनाट्टुके अन्य दुर्गम वन-प्रदेशोमे भी ऐसी तैयारियाँ कर रखी थीं यह बात खास खवासोको ही ज्ञात थी उन सब स्थानोमे कुरिच्यो और वेडोका पहरा रहता था इसलिए शत्रुके हमलेका डर वहाँ बिलकुल नही था

कपनीवालोने समझा कि तम्पुरानने उनके भयसे ही राजमहल छोडकर पहाडोमें शरण ली है परन्तु यथार्थ बात यह नहीं थी वे युद्धसे चिर-परिचित थे और जानते थे कि युद्ध करनेकी सुविधा पहाडोके बीचसे ही अधिक होगी इधर कर्नल वेलेस्ली और उसके सेनानायक तम्पुरानके जगलोमें चले जानेसे प्रसन्न हुए और उन्होने मान लिया कि

कोट्टयपर अधिकार करनेका सुअवसर आ गया है इसकी प्रारम्भिक कार्रवाईके रूपमे उन्होने एक फरमान जारी करनेका निश्चय किया जिसका सारांश यह था कि "सब लोगोको चाहिए कि वे पपश्शि राजा कहलानेवाले केरलवर्मा अथवा उनके साथियोको किसी प्रकारकी सहायता न दे जो-कोई सहायता करेगा उसे कपनीकी ओरसे कठोर दण्ड दिया जायगा जिन लोगोने आजतकके युद्धोमे भाग लिया है वे यदि शस्त्र रखकर कपनीकी अधीनता स्वीकार कर लेगे तो उन्हे क्षमा कर दिया जायगा"

कपनीके पिट्ठू कुछ देशी प्रमुखोने परामर्श दिया कि महाराजाकी गैरहाजिरीमे इस प्रकारकी घोषणा आवश्यक सैन्य-शक्तिके प्रदर्शनके साथ मानन्चेरीमे ही की जाय तो प्रजा खुल्लम-खुल्ला तम्पुरानको छोडकर कपनीके आश्रयमे आ जायगी कपनीवालोने समझ लिया कि इस प्रकार कोट्टय राज्यमें अपनी सत्ता स्थापित करनेके बाद पुरळी पर्वतको घेरकर तम्पुरानको पकड लेना कठिन न होगा देशवासियोको अपने अधीन करके तम्पुरानके पास भोजन सामग्रीका जाना रोककर, कपनीके सैनिको-द्वारा चारो ओरसे एक साथ आक्रमण करवाना यह उनकी योजना थी

तम्पुरानने अपने गुप्तचरोंके द्वारा इस योजनाका पूरा पता लगा लिया था और, कपनीने इसके लिए कितनी सेना एकत्रित की है, उसका क्या बल है, उसके मार्ग कौन-कौन-से होगे आदिकी जानकारी प्राप्त करनेके लिए उन्होने अपने विश्वस्त सेवक अम्पु नायरको तलश्शेरी भेजा था अम्पुने अपने अनुसधानोका परिणाम अबतक उन्हे नही बताया था

जिस दिन मानन्चेरीमे घोषणा होनेवाली थी उस दिन तीसरे पहर तम्पुरान अपने निवास-स्थानके निकट एक वृक्षकी छायामे विश्रायत करके बैठे हुए थे उनके पास ही अपना उत्तरीय बिछाकर अरळात्तु नम्पि भी बैठे हुए थे थोडी दूरपर चार-पांच कर्मचारी अदबके साथ खडे थे

तम्पुरान बोले—शायद आज दोपहरको कपनीवाले मानन्चेरीमें

ढिढोरा पीटकर घोपणा करने वाले थे उसके वारेमे कोई समाचार नही आया

नम्पि—वे घोपणा करके चले भी गये होगे हमे क्या ? इतना तो निश्चित है कि जनता उनकी आज्ञा नही मानेगी

कण्णोत्तु नम्पियार—कपनीवाले कितना भी ढिढोरा पीटे, कोट्टय-की प्रजा उनके अधीन नही हो सकती और घोपणा करने आये हुए ढिढोरची लोगोको यो ही छोड दिया जायगा ऐसा भी नही लगता

तम्पुरान—मुझे यही भय है यदि प्रजा कपनीकी सेनासे लड पडी तो कठिन हो जायगा वन्दूकोमे लैस सेनाके सामने खाली हाथ या ईट-पत्थर लेकर खडे हो जानेका क्या परिणाम होगा ? मैने कहला भेजा था कि सब लोगोको शान्त रहना चाहिए

तलय्कल चन्तु—कपनीवालोको विजयोन्मादमे जीतका प्रदर्शन करनेकी इच्छा हुए बिना नही रह सकती इसलिए वे कोई भी कारण बनाकर प्रजापर आक्रमण कर सकते है

तम्पुरान—चन्तु ठीक कहता है जय-भेरीके साथ श्रीगणेश करने-पर ही कपनीवालोको प्रजासे सहायताकी कोई आशा हो सकती है वे लोग पूरे मानचेरी प्रदेशको रक्तसे सान देनेमें सकोच नही करेगे तभी तो ढिढोरा पीटकर यह कह सकेगे कि केरलवर्मा अपने मानचेरीकी भी रक्षा नही कर सका ? कुरिच्यर अधेरा होनेके पहले आ नही जायँगे ?

मानचेरीमे क्या हुआ यह जाननेकी उत्सुकताका सवरण कोई भी नही कर पा रहा था धीरमति, अनुद्विग्न-मना तपुरानको भी इस नाटक-की नान्दी कैसे हुई यह जाननेकी उत्कठा थी सब-के-सब मानचेरीके समाचार लेने गए हुए कुरिच्योके लौटकर आनेकी राह देख रहे थे

इसी बीच एक व्यक्ति शीघ्र गतिसे जगलमे रास्ता बनाता हुआ आता दिखाई पडा हाथमें ढाल और तलवार तथा कमरमे लटकती हुई कटार देखनेमे ही स्पप्ट था कि आनेवाला कुरिच्य नही, नायर है नम्पि-यार तम्पुरानका इशारा समझकर दूरसे आते हुए व्यक्तिके पास गया.

पूछनेपर आगन्तुकने कहा—"अम्पु यजमानके पाससे आ रहा हूँ समाचार देनेके लिए उन्होंने भेजा है"

"क्या हुआ वहाँ ?"

"कपनीवालोकी सेना आज सुवह मानचेरीमे पहुँच गई थी वे लोग ढिढोरा पीटकर लोगोको इकट्ठा करके घोषणा पढने लगे परन्तु पहला वाक्य भी पूरा नही कर पाये पढनेके लिए जो व्यक्ति खडा हुआ उसे यजमानने एक गोलीसे गिरा दिया उसके वाद जो लडाई हुई उसमे कपनी-की पूरी सेनाका सफाया कर दिया गया"

कण्णोत्तु नम्पियार शीघ्रताके साथ तम्पुरानके पास गये और उन्होने उन्हे समाचार दिया

तम्पुरान—अम्पु अद्भुत आदमी है ! उसने कैसे यह किया ? समाचार लानेवालेको यहाँ वुलाओ

तम्पुरान तथा अन्य सभी लोगोने मानचेरीकी घटनाका पूर्ण विवरण जाननेके लिए सदेश-वाहकसे तरह-तरहके प्रश्न किये उसके उत्तरोंसे जो मालूम हुआ वह इस प्रकार है—

कपनीकी सेना जव मानचेरी पहुँची तव वहाँके लोग वहुत भयभीत हुए परन्तु अम्पु नायरने आदमी भेजकर घर-घर खवर भिजवाई कि सव वयस्क पुरुष घोषणा सुननेके लिए अवश्य पहुँचे फलत सेनापति लारेंसके ढिंढोरा पिटवानेपर झुड-के-झुड लोग मन्दिरके अहातेमे एकत्रित हो गए अम्पु नायरके लोग भी उनमे शामिल थे समाचार जाननेके लिए तम्पुरानने जिन कुरिच्योको भेजा था उन्हे कपनीकी सेनाके वापसी-के मार्गपर छिपाकर खडा कर दिया गया जव सेना वन्दूकोंसे लैस होकर तैयारीमे खडी हो गई तव वडा साहव कुर्सीपर वैठा उसके वाद घोषणा पढनेकी आज्ञा दी गई पढना शुरू ही हुआ था कि अम्पु नायरने दुभाषियेको गोलीसे गिरा दिया इसपर साहव वन्दूक लेकर खडा हुआ तो उसे भी गोलीका निशाना वना दिया गया सेना एकदम गोली चलाने लगी कुछ लोग मरे और कुछ घायल हुए परन्तु सेनानायककी मृत्युसे

और चारो ओरसे घिरे होनेके कारण उन सबको एक-एक करके नायरो-की तलवारोके घाट उतरना पडा जो बाकी बचे वे भाग खडे हुए, परन्तु उन्हे कुरिच्योंके तीरोका शिकार होना पडा

तम्पुरानने सब सुननेके बाद कहा—श्रीपोर्कली भगवतीकी ही सहायतासे यह सब सभव हुआ घटना छोटी होनेपर भी इसका फल बडा होगा केरल-भरके लोग इसको एक शुभ शकुन मानेगे

बक्कूर एमन नायर—तम्पुरानके श्रीमुखसे निकला हुआ वचन सत्य है तम्पुरानकी प्रजाके लिए यह एक जय-भेरी ही है जो सकोच कर रहे है उनका साहस बढेगा अम्पुने उचित ही किया है

कण्णोत्तु नम्पियार—लेकिन आगे ? वेकाटु* और डिण्डिमलड† दोनो स्थानोमे कपनीकी सेना मौजूद है, वयनाट्टुमे भी कई स्थानोपर छावनी पडी है इन सबपर एक साथ आक्रमण किया जा सके तो ही हम बच सकते है

तम्पुरान—उसीकी तैयारी मैं कर रहा हूँ वयनाट्टुकी स्थिति एडच्चेरी कुकन सँभाल लेगा वेकाटुके लोगोके लिए भी सेना भेज चुका हूँ परन्तु डिण्डिमलडकी सेनाका मोर्चा लेना कठिन मालूम होता है उसका स्थान सबल है एमनका क्या मत है ?

एमन नायर—आगे बढकर आक्रमण करना हमारा आखिरी कदम होना चाहिए

कण्णोत्तु नम्पियार—सबसे आवश्यक तो यह है कि पपशिपर जो सेना घेरा डाले हुए है उसको नष्ट किया जाय राज-मन्दिरमे ही म्लेच्छ सेनाका निवास करना हमारे लिए लज्जाकी बात है वह तो हमारे पौरुषको ही चुनौती दे रही है कपनीके लोग जबतक पपशि और कोट्टयमे बने है, मेरा मन शान्त नही रह सकता

---

* एक स्थान

† एक पहाड

तम्पुरान यह सुनकर मुसकरा दिये वे बोले—शकरनको दो टूक वारकी ही नीति पसन्द है तुम और अम्पु एक-से ही हो सामर्थ्य हाथमे तो है, सिरमे नही है यदि पषश्शिको सँभाल सकता तो क्या उसे छोडकर जगलमे आता ? हमारे लोग कपनीकी वन्दूकोके शिकार हो जायँ तो क्या लाभ ? मान लो कि आज हमने उन्हे पषश्शिसे हटा भी दिया तो क्या वे कल ही अधिक वडी सेना तलश्शेरीमे भेज नही सकते ? यदि मुझसे पहले पूछा गया होता तो शायद मानचेरीमे भी मै युद्ध न होने देता पहाडोमे कपनीवालोको घुसने न दे और इधर-उधर उनकी छावनियोको नष्ट करते रहे फिर वे जगलोमे सेना लायँगे और तवभी उनको नष्ट करने मे हमे कठिनाई नही होगी इसके विपरीत खुले मैदानमे उतरकर युद्ध करनेमे हमे सफलता नही मिल सकती

सबने मान लिया कि वुद्धिमत्ताका मार्ग यही है परन्तु कण्णोत्तु नम्पियारको यह पसन्द नही आया

“अम्पु कहाँ गया ? और कुरिच्यर कहा है ?” तम्पुरानने पूछा

मानचेरीसे आये नायरने उत्तर दिया—एक-दो दिन वाद सेवामें उपस्थित हो जायँगे यह निवेदन करनेका आदेश दिया है कुरिच्योको साथ लेकर गये है

तम्पुरान—पता नही अव और क्या-क्या पराक्रम दिखाने गया है. कुछ-न-कुछ उपद्रव तो करेगा ही यहाँ आ जाता तो कुछ समाधान होता.

अम्पु नायरका स्वभाव ही आज्ञासे अधिक काम करके दिखानेका था उसकी स्वामि-भक्ति और पराक्रमसे तम्पुरान भलीभाँति परिचित थे साथ-साथ वे यह भी जानते थे कि उसे किसी भी विपत्तिमे कूद पडनेमें सकोच नही होता सारी परिस्थितियोको सोचे-समझे विना तत्काल लाभ देखकर साहस भी कर वैठता है चिन्ता-सूचक भावके साथ उन्होने कहा—“सब सोचते है, मानो यह पहले-जैसा ही युद्ध है उस समय कपनीके दिन अच्छे नही थे उसको अनेक प्रवल शत्रुओका सामना करना पड रहा था आज वह स्थिति नही है इधर-उधर जाकर उसकी सेनाको

परेशान करनेसे कोई प्रयोजन सिद्ध नही होगा टीपूके साथके युद्धमे ही पता चल गया है कि कर्नल वेलेस्ली कितना पराक्रमी है उसे इधर भेजनेसे ही पता चलता है कि उनकी तैयारी कम नही है

तम्पुरानका कथन ठीक था सभी जानते थे कि अबकी लडाई पहले-जैसी नही होगी तलश्शेरीमे जो तैयारियाँ हो रही थी उसकी थोडी-बहुत जानकारी उन सभीको थी इसलिए उनके दिलोमे भी कुछ भय होने लगा था किन्तु महाराजा किसी ओरसे भी परिभ्रान्त नही थे ब्रिटिश साम्राज्यकी सारी शक्ति एकत्र होकर आ जाय तो भी वे पराधीनता स्वीकार करनेवाले नही थे यह निश्चय करके कि आगेकी कार्रवाई सोच-विचार करके ही होनी चाहिए, वे बहुत देरतक चुप रहे और फिर कण्णवत्तु-नम्पियारको पास बुलाकर बहुत देरतक गुप्त मत्रणा करते रहे

कण्णवत्तु नम्पियार तम्पुरानके प्रधानमत्रीके स्थानपर थे उनका कण्णवत्तु-कुटुम्ब उत्तर केरलके प्रमुख परिवारोमेंसे एक था सम्पत्ति, लोकप्रियता और परपरागत शासनाधिकारसे यह कुटुम्ब अपने क्षेत्र का शासन सुचारु रूपसे करता रहा था इसने कभी किसी राजाका अधिकार स्वीकार नही किया और न किसी प्रबल राजाने इनपर अधिकार चलाने-का कभी कोई प्रयत्न ही किया स्वबल के अलावा बन्धु-बलसे भी कण्ण-वत्तु नम्पियार उस समय प्रबल और एक स्वतत्र शक्तिके रूपमे था कल्याट्टु, वेडा आदि प्रदेशोंके सामन्तोंके साथ इस कुटुम्बका बन्धुत्व पुरातन कालसे चला आ रहा था ऐसे समर्थ कण्णवत्तु शकरन नम्पियार को महाराजाने अपना प्रधानमत्री बनाया, इससे उनकी नीतिनिपुणता-का प्रत्यक्ष परिचय मिलता था

शकरन नम्पियार बाल्य-कालसे ही तम्पुरानके साथी थे तम्पुरानके प्रति उनकी भक्ति और उनके प्रति तम्पुरानका विश्वास केरलमे सर्वजन-विदित था यद्यपि तम्पुरान कहा करते थे कि नम्पियार अविवेकी हैं, कभी-कभी अनुचित साहस कर बैठते हैं फिर भी, वास्तवमे नम्पियार दूरदर्शिता रखनेवाले उत्तम सचिव थे

एक वात से महाराजाको वरावर चिन्ता होती रहती थी अनेक प्रसगोमे उन्हे प्रतीत हुआ था कि नम्पियार और अम्पु नायरके वीच कुछ मनमुटाव है कारण यह था कि साहसी अम्पु नम्पियारके आदेशोसे आगे वढकर अपने-आप भी कुछ-न-कुछ कर लेता था नम्पियारका ख्याल था कि अम्पुको ऐसा करनेका साहस इसलिए होता है कि उसकी वहन महाराजाकी प्रिय पत्नी है अम्पुके मनमे यह विचार भरा हुआ था कि नम्पियारमे अग्रसर होनेकी शक्ति कम है और पीछे वैठकर सोचनेकी ही शक्ति अधिक है जो कुछ भी हो, यह स्पष्ट था कि उन दोनो के वीच विशेष स्नेह-भाव नही था

मत्रीसे मत्रणा करनेके वाद महाराजाने निश्चय किया कि मचेरी अत्तन कुरुक्कळके साथ सधि करनेका जो विचार चल रहा है उसे पूर्ण करनेके वाद ही कपनीके साथ मोर्चा लेना चाहिए नम्पियारने महाराजासे कहा कि उत्तर केरलके नायर-प्रमुख कपनीके साथ भिडते रहे तभी उसकी शक्ति छिन्न-भिन्न होगी और हमारे ऊपर नही आयगी इसलिए, कल्याट्टु तथा वेट आदिके सामन्तोको प्रोत्साहित करके उनके साथ वन्धुत्व दृढ करना, स्वतत्र रूपमे सेना तैयार करवाना, कपनीके विरोधियोको पक्षमें कर लेना और उनके द्वारा कपनीके यातायात तथा भोजन-सामग्रीके आने-जानमें वाधाएँ डलवाना यह सव सर्वाधिक आवश्यक है यह सव करनेकी आज्ञा महाराजाने कण्णवत्तु नम्पियारको दे दी

छठा अध्याय

बारह वर्षोंसे जो हार-ही-हार हो रही है उसका किसी भी प्रकार अन्त करनेके लिए कपनीके अधिकारी व्याकुल हो उठे समय भी उनके अनुकूल था दक्षिणापथमे दग-कवरके प्रतापके समान राज्य करनेवाला टीपू दो वर्ष पूर्व श्रीरगपट्टनके युद्धमे धराशायी हो चुका था मैसूर राज्य कपनीके अधीन था महाराष्ट्र साम्राज्यके नायक आपसमे फूट होनेके कारण दुर्बल हो रहे थे पेशवा कपनीके आश्रयमे जानेके लिए तैयार थे यद्यपि सिंधिया, होलकर आदिको नि शेष करनेका गवनर-जनरलने निश्चय कर लिया था, तथापि तैयारी पूर्ण करनेके लिए कम-से-कम एक वर्षकी और आवश्यकता थी इसलिए उन्होने अपनी सारी शक्ति लगाकर पपश्शि राजाको दबानेका निश्चय किया कर्नल ड्यू और मेजर कामरान आदि सेनानायकोंके अनुभवसे गवनर-जनरलने जान लिया था कि यह काम किसी साधारण व्यक्तिका नही है इसलिए उसने टीपूके साथके युद्धमे असामान्य कूट कौशलका प्रदर्शन करनेवाले अपने भाई आर्थर वेलेस्लीको इस कामके लिए नियुक्त किया यद्यपि अभी वह बत्तीस वर्षकी आयुका युवक ही था फिर भी उसमे वह विचारशीलता और सामर्थ्य विद्यमान था, जिसने आगे चलकर लोकनेता नेपोलियनको हरानेमें उसे सफल बनाया भारतमें सभी जानते थे कि यह वीर, जो बाद मे वेलिंगटनके नामसे प्रसिद्ध हुआ, गवर्नर-जनरल वेलेस्लीका दाहिना हाथ है

कर्नल वेलेस्लीकी मुखाकृति पाश्चात्य सामन्तोंके अनुरूप थी अविवेक नामकी चीज उसमे थी ही नही मितभाषिता, मित आहार-विहार एव अत्यधिक कष्ट-सहिष्णुता आदि उसके सहज गुण थे सुना जाता है कि लम्बे समयतक ब्रिटिश साम्राज्यके प्रधान राजनीतिज्ञ और विश्व-के प्रथम सेनानीके रूपमे काम करनेवाले इस महापुरुषके मुखसे न तो कभी कोई विचारहीन शब्द निकला और न कभी उसने कोई विचारहीन कार्य ही किया इतने महान् योद्धाका केरल-स्थित ब्रिटिश सेनाका सेना-पति नियुक्त किया जाना ही यह प्रमाणित करता है कि कपनीके लोग पषश्शि राजासे कितने डरते थे और उनके नेतृत्वमें चलनेवाले स्वातन्त्र्य-सग्रामको कितना गभीर समझते थे ।

वेलेस्लीको केरल आये चार महीने हो चुके थे वह पूर्ण रूपसे उस प्रदेशकी जानकारी भी प्राप्त कर नही सका था कि वर्षा आरभ हो गई, और वर्षाके दिनोंमें वह तम्पुरानके साथ युद्ध छेड़नेको तैयार न हुआ उसने सारा वर्षा-काल केरलकी स्थिति तथा लोगोंकी प्रवृत्तियोको समझने और युद्धकी योजना बनानेमे व्यतीत किया उसने अनेक बार नीलेश्वरसे कोपिक्कोट, (कालीकट) तककी यात्रा की और वहांकी भू-प्रकृति तथा जनता और नेताओंकी विचार-धारा एव मनोभावो आदिको समझनेका प्रयत्न किया

श्रावण मासका आगमन हुआ इस समय भी तलश्शेरीमें युद्धकी कोई तैयारी दिखलाई नही पड़ी बम्बईसे गोरी पलटन और देशी सेना तथा तोपे और बन्दूकें आदि भारी सख्यामें आ रही थी परन्तु उन्हे एकत्र करनेके अलावा युद्धकी कोई प्रत्यक्ष तैयारी वेलेस्लीने नही दिखाई

तलश्शेरी दुर्गके सुपरवाइजर आदि अधिकारी अधीर होने लगे उनमेंसे अनेकने कर्नल वेलेस्लीको तुरन्त युद्ध आरम्भ करनेकी आवश्य-कता सुझाई सबको वेलेस्लीने एक ही उत्तर दिया—"समय नही हुआ जब होगा तब करूँगा"

किसीको भी नही मालूम था कि वेलेस्ली क्या करनेवाला है कोट्टय और कूत्तुपरम्पु* दोनो स्थानोमे दो बडी सेनाएँ रखनेपर भी उसने उनको निश्चित आज्ञा दे रखी थी कि किसीसे भी झगडा न करें इतना ही नही, वयनाट्टु आदि स्थानोकी सेनाको वापस बुला लिया था कोट्टय और कूत्तुपरम्पुके अतिरिक्त मणत्तनासे कपनीकी सेना थी वेलेस्ली खुल्लम-खुल्ला अपने मित्रोंसे कहा करता था कि वह मणत्ताना-से भी सेनाको वापस बुलानेवाला है

तलश्शेरीके सुपरवाइजर वेवरको यह सब बहुत अखर रहा था जहाँ सेना विशेष थी वहीसे कपनीके व्यापारके लिए काली मिर्च आदि वसूल होती थी जबसे कर्नल सेनाओको वापस बुलाने लगा तबसे व्यापार-सामग्रीकी वसूली भी कम हो गई अब यदि मणत्तनासे भी सेना हटा ली गई तो कपनीके गोदामोके खाली पडे रहनेकी नौबत आ जायगी

उसे चिन्ता थी कि कही इस बारेमें वम्बईके गवर्नरने जवाब तलब किया और यह उत्तर दे दिया गया कि सेना-नायकको व्यापारमें दिलचस्पी नही है इसलिए ऐसा हो रहा है, तो नौकरीसे ही हाथ धोना पडेगा कपनीसे तो कोई बहाना भी बना सकता था, केवल एक चेता-वनी ही मिलती, इसलिए इस ओरसे वेवरको विशेष व्याकुलता नही थी परन्तु, वम्बई-सरकारसे छिपाकर मय्यपी†के फ्रासीसी व्यापारियो-के साथ स्वय जो व्यापार करता था वह भी इस वर्ष असभव हो जायगा कपनीके नियमोके अनुसार अन्य यूरोपीय लोग देशवासियोसे काली

---

* एक स्थान विशेप, जहाँ 'चाक्यार कूत्तु' हुआ करता था कूत्तु-पुराण कथाओके विशेष अगोका अभिनय, जो चाक्यार जातिका कोई एक आदमी करता है उसे साधारणत 'चाक्यार कूत्तु' कहते हैं

† उत्तरी मलाबारका तत्कालीन फ्रासीसी केन्द्र.

मिर्च आदि नही खरीद सकते थे जबसे केरल टीपूके हाथोंसे कपनी-के हाथोंमे आया तबसे फ्रासीसी और पुर्तगीज लोगोका इस देशसे व्यापार करना असाध्य हो गया था तलश्शेरीके सुपरवाइजरका काम करनेवाले लोगोंके लिए यह एक बडी कमाईका जरिया था विदेश भेजनेके लिए एकत्र किया हुआ माल हिसावमे लिये विना ऊँचे भाव-पर दूसरोंको बेच दिया जाता था और इस कार्यमे सुपरवाइजरका सहायक लुई पेरेरा नामका एक दुभाषिया था

लुई पेरेराने पहलेके सुपरवाइजरके खानसामाके रूपमें काम शुरू किया था उस लम्पट व्यक्तिकी दुर्वृत्तियोमे सहायक और दूत वनकर धीरे-धीरे वह दुभाषियेके स्थानपर नियुक्त हो गया इसी समय केरल टीपूसे कपनीवालोको मिला था कपनीके कर्मचारियोकी अनीति और लोभको भली भाँति समझनेवाला लुई निम्न श्रेणीके कुछ कर्मचारियोकी सहायतासे मय्यशीके फ्रासीसी व्यापारियोको छिपकर काली मिर्च वेचने लगा इससे उसने वहुत कमाई की किन्तु गोरोंके प्रति अपनी नम्रता और व्यवहारमे उसने कोई अन्तर नही पडने दिया

जवसे वेवर तलश्शेरीका सुपरवाइजर वनकर आया तवसे लुई पेरेरा-की शुभदशा आरम्भ हो गई वेवर अविवाहित था उसने सुन रखा था कि तलश्शेरी गोरे लोगोंके लिए अप्सराओंसे भरा स्वर्ग है इस विषय-मे पेरेराने सकेत कर देना ही पर्याप्त था उसे शीघ्र ही मालूम हो गया कि पेरेरा व्यापार-कार्यो मे अति चतुर और प्रथम कोटिका दुभा-षिया है पेरेराकी प्रेरणासे पहले-पहल अनेक अप्सराएँ निशा-कालमें वेवरके भवनको स्वर्ग वनाती रही, परन्तु कोई तीन वर्ष पूर्वसे चिर-तवधुट्टी नामकी एक उर्वशीने सवका निष्कासन करके वहाँ अपना एका-धिकार जमा लिया था

निम्न श्रेणीके कर्मचारियोंके आश्रयमे छिपा व्यापार करनेवाला पेरेरा जव सुपरवाइजर का एक-मात्र कृपा-पात्र वन गया तो वह अपना

किसीको भी नही मालूम था कि वेलेस्ली क्या करनेवाला है कोट्टय और कूत्तुपरम्पु* दोनो स्थानोमे दो वडी सेनाएँ रखनेपर भी उसने उनको निश्चित आज्ञा दे रखी थी कि किसीसे भी झगडा न करें. इतना ही नही, वयनाट्टु आदि स्थानोकी सेनाको वापस वुला लिया था कोट्टय और कूत्तुपरम्पुके अतिरिक्त मणत्तनामें कपनीकी सेना थी वेलेस्ली खुल्लम-खुल्ला अपन मित्रोंसे कहा करता था कि वह मणत्तना-से भी सेनाको वापस वुलानेवाला है

तलश्शेरीके सुपरवाइजर वेवरको यह सब वहुत अखर रहा था जहाँ सेना विशेष थी वहीसे कपनीके व्यापारके लिए काली मिर्च आदि वसूल होती थी जवसे कर्नल सेनाओको वापस वुलाने लगा तवसे व्यापार-सामग्रीकी वसूली भी कम हो गई अव यदि मणत्तनासे भी सेना हटा ली गई तो कपनीके गोदामोंके खाली पडे रहनेकी नौवत आ जायगी

उसे चिन्ता थी कि कही इस वारेमें वम्वईके गवर्नरने जवाव तलव किया और यह उत्तर दे दिया गया कि सेना-नायकको व्यापारमें दिलचस्पी नही है इसलिए ऐसा हो रहा है, तो नौकरीसे ही हाथ धोना पडेगा कपनीसे तो कोई वहाना भी वना सकता था, केवल एक चेता-वनी ही मिलती, इसलिए इस ओरसे वेवरको विशेष व्याकुलता नही थी परन्तु, वम्वई-सरकारसे छिपाकर मय्यपी†के फ्रासीसी व्यापारियो-के साथ स्वय जो व्यापार करता था वह भी इस वर्ष असभव हो जायगा कपनीके नियमोके अनुसार अन्य यूरोपीय लोग देशवासियोंसे काली

---

* एक स्थान विशेष, जहाँ 'चाक्यार कूत्तु' हुआ करता था कूत्तु-पुराण कथाओके विशेष अशोका अभिनय, जो चाक्यार जातिका कोई एक आदमी करता है उसे साधारणत 'चाक्यार कूत्तु' कहते हैं

† उत्तरी मलावारका तत्कालीन फ्रासीसी केन्द्र.

मिर्च आदि नही खरीद सकते थे जबसे केरल टीपूके हाथोंसे कपनी-के हाथोमे आया तबसे फ्रासीसी और पुर्तगीज लोगोका इस देशसे व्यापार करना असाध्य हो गया था तलश्शेरीके सुपरवाइजरका काम करनेवाले लोगोके लिए यह एक बडी कमाईका जरिया था विदेश भेजनेके लिए एकत्र किया हुआ माल हिसाबमे लिये बिना ऊँचे भाव-पर दूसरोंको बेच दिया जाता था और इस कार्यमे सुपरवाइजरका सहायक लुई पेरेरा नामका एक दुभापिया था

लुई पेरेराने पहलेके सुपरवाइजरके खानसामाके रूपमें काम शुरु किया था उस लम्पट व्यक्तिकी दुर्वृत्तियोमें सहायक और दूत बनकर धीरे-धीरे वह दुभापियेके स्थानपर नियुक्त हो गया इसी समय केरल टीपूसे कपनीवालोको मिला था कपनीके कर्मचारियोकी अनीति और लोभको भली भाँति समझनेवाला लुई निम्न श्रेणीके कुछ कर्मचारियोकी सहायतासे मध्यरीके फ्रासीसी व्यापारियोको छिपकर काली मिर्च बेचने लगा इससे उसने बहुत कमाई की किन्तु गोरोंके प्रति अपनी नम्रता और व्यवहारमे उसने कोई अन्तर नही पडने दिया

जबसे वेवर तलश्शेरीका सुपरवाइजर बनकर आया तबसे लुई पेरेरा-की शुक्रदशा आरम्भ हो गई वेवर अविवाहित था उसने सुन रखा था कि तलश्शेरी गोरे लोगोके लिए अप्सराओंसे भरा स्वर्ग है इस विषय-मे पेरेराने सकेत कर देना ही पर्याप्त था उसे शीघ्र ही मालूम हो गया कि पेरेरा व्यापार-कार्यो मे अति चतुर और प्रथम कोटिका दुभा-पिया है पेरेराकी प्रेरणासे पहले-पहल अनेक अप्सराएँ निशा-कालमें वेवरके भवनको स्वर्ग बनाती रही, परन्तु कोई तीन, वर्ष पूर्वसे चिर-तक्कुट्टी नामकी एक उर्वशीने सबका निष्कासन करके वहाँ अपना एका-धिकार जमा लिया था

निम्न श्रेणीके कर्मचारियोंके आश्रयमें छिपा व्यापार करनेवाला पेरेरा जब सुपरवाइजर का एक-मात्र कृपा-पात्र बन गया तो वह अपना

काम निर्भय होकर खुल्लम-खुल्ला चलाने लगा लोगोका कहना था कि इस व्यापारमे चिरतक्कुट्टी भी हिस्सेदार थी

वेलेस्लीकी नई नीति इन लोगोके लिए एक उपद्रव बन गई पेशगी ली हुई रकमकी काली मिर्च भी मय्यपीमे पहुँचानी असभव मालूम होने लगी अब यदि मणत्तनामे भी छावनी हटा दी गई तो जो परिणाम होगा वह पेरेराने ठीक तरहसे सुपरवाइजरको समझा दिया

सुपरवाइजरके बगलेसे एक फर्लागकी दूरीपर वेलेस्लीका निवास-स्थान था मानचेरीकी लडाईके दूसरे दिन दस बजेके आस-पास बेबर अपनी पालकीपर सवार होकर वेलेस्लीसे मिलनेके लिए उसके निवास-स्थानपर आया

वेलेस्ली अपने काममे लीन था उसके कमरेकी दीवारपर उत्तर केरलका एक बडा मानचित्र टँगा हुआ था उसमे वह लाल और नीली पेंसिलसे चिह्न लगा रहा था और अपनी भावी प्रवृत्तियोके बारेमे विचार कर रहा था कमरेमे सेनाके एक-दो उपनायक, एक दुभाषिया और वेश-भूषा आदिसे नायर-प्रमुख दीखनेवाला एक व्यक्ति मौजूद था

सुपरवाइजरका आदरके साथ अभिवादन करते हुए वेलेस्लीने कहा—मुझे आपकी कुछ सलाहकी जरूरत थी आपके पास एक आदमी भेजनेकी सोच ही रहा था कि आप स्वय आ गये अच्छा हुआ

सुपरवाइजर—मै भी कुछ विचार-विनिमय करनेको इधर आनेकी बात दो दिनसे सोच रहा था व्यस्त होनेसे न आ सका

कर्नल—हम जो सोच रहे है सो थोडेमे बताता हूँ केरलवर्माके विरुद्ध तुरन्त कार्रवाई करनेका निश्चय मैने कर लिया है अब वर्षा भी समाप्त हो गई है देर करनेकी जरूरत नही है

सुपरवाइजर—हाँ, उसका घमड बढता जा रहा है मानचेरीकी पराजयका बदला तुरन्त न लिया गया तो देशवासियोके दिलोमें हमारे प्रति आदर कम हो जायगा आपने युद्ध करनेका ही निश्चय कर लिया तो जीतके बारेमें शका करनेकी गुजाइश ही नही है

कर्नल—युद्धके बारेमे फिर निश्चय करूँगा अभी मेरा उद्देश्य वह नही है इस नक्शेमे आप लाल रेखासे अंकित जो स्थान देखते है, उन सब स्थानोमे छोटे-छोटे किले बनवाऊँगा

सुपरवाइजरने दीवारपर टँगे नक्शेको एक बार अच्छी तरह देख लिया फिर आश्चर्यके साथ उसने कहा—"वयनाट्टु और कोट्टयके सभी मुख्य स्थान इसमे आ गये है इतने किले बनवानेके लिए पैसा कहाँसे आयगा ?"

कर्नल—इसीके लिए मै आपसे सलाह लेना चाहता था युद्धके लिए आवश्यक धन एकत्रित करनेका काम आपका है इरुवनाट्टुमे तुरन्त ही किला बन जाना चाहिए और स्थानोमें भी तुरन्त ही निर्माण-कार्य आरम्भ हो जाना चाहिए कुल मिलाकर खर्चके लिए तत्काल दो लाख पौंडकी जरूरत है आप यह रकम फौरन मेरे पास पहुँचा दे

सुपरवाइजर—क्या ? दो लाख ? उसके बदले दो हजार भी यहाँ नही है खजानेमे पैसा कहासे आये ? व्यापार तो चलता ही नही अब स्थानोसे भी सेना हटा देगे तो काली मिर्चका एक दाना भी गोदाममें नही आ पायगा

कर्नल—यह सब कहनेसे कोई लाभ नही मेरी युद्ध-नीति निश्चित हो गई है उसके लिए आवश्यक धन चाहिए ही यहाके खजानेमे न हो तो कलकत्ताको लिखकर मँगा लूँगा

कलकत्ताको लिखनेकी बात सुनते ही सुपरवाइजर चौंका अपने प्रिय भाईकी सलाहके विपरीत गवर्नर जनरल कुछ नही करेंगे, वह सब खूब अच्छी तरह जानता था अपनी नौकरी, चोरीकी कमाई और भावी तरक्की—सभी कर्नलके विरोधसे मारी जायगी यह समझकर सुपरवाइजरने चतुराईसे काम लेनेका निश्चय किया उसने कहा—"अगर युद्धकी जरूरतोंके लिए आपको रुपया चाहिए ही तो वह जुटाना होगा, मैंने उसकी कठिनाईकी बात सोचकर कहा था लेकिन यह तो बताइए, जब इतनी बडी सेना हमारे पास है, तब जगलोमें छिपते फिरनेवाले एक

देशी राजाको नष्ट करनेमे क्या कठिनाई है उसकी मददके लिए ज्यादा-से-ज्यादा हजार लोग होगे हम तो बम्बईसे आई हुई सेना और बन्दूकों-से एक साम्राज्य ही स्वाधीन कर सकते है

कर्नल मुसकराया उसने कहा—"कर्नल ड्यूने भी ऐसा ही सोचा था फल क्या निकला ? उसकी सेनामेसे अब कितने बचे है ? बन्दूकोम कितनी उपयोगी रह गई है ? मै ऐसा युद्ध नही करता मै सेनाको नही लडाता, बुद्धिको लडाता हूँ"

सुपरवाइजर—फिर भी क्या जगलमे असहाय पडे एक हजार लोगो-को सर करनेके लिए इतनी बडी सेनाकी आवश्यकता है ?

कर्नल—यही तो आपकी गलतफहमी है वे हजार लोग नही है एक ही व्यक्ति है—केरलवर्मा उसको दबानेके लिए ही बुद्धि चाहिए और क्या आप यही मानते है कि उसके साथ हजार आदमी ही है ?

सुपरवाइजर—इससे ज्यादा हो ही नही सकते सारे देशवासी हमारे अधीन है

कर्नलने दुभाषियेसे कहा—हमने अभी जिन सामन्तोके विरुद्ध तुरन्त कार्रवाई करनेका निश्चय किया है उनके नाम इनको सुना दो

दुभाषिया पढने लगा—"कटत्तनाट्टु राजा, अविञ्ञाट्टु नायर, पेरुवयिल नम्पियार, चुपलि नम्पियार, इरुवनाट्टु नम्पियार लोग, कल्याट प्रभु, वयनाट्टु एमन नायर"

सुपरवाइजर—ये सब कपनीके पक्षके है सभी कपनीको अपनी काली मिर्च आदि भी बेचते है

कर्नल जोरसे हँस पडा—ठीक ! ठीक ! ये सब हमको मिर्च बेचते है परन्तु उन रुपयोमे वे क्या करते है यह भी आपने कभी सोचा है ? केरलवर्माको जो सहायता मिलती है, वह सब इन लोगोसे ही मिलती है जगलमे रहनेवालोका प्रबध ये ही करते है बन्दूक आदि जरूरी सामान जमा कर देते है हमारी योजनाएँ उनको बता देते है एक बात जान लीजिए कि इस देशका हर आदमी केरलवर्माके साथ है सबको डराकर

अलग किये विना हम युद्ध करेंगे तो हमारा कोई आदमी नहीं बनेगा

सुपरवाइजर--इसका क्या सबूत है कि ये सब केरलवर्माके पक्षमें है ? इनमेंसे कई लोग सदा ही हमारे पास आनेवाले और हमें मदद करनेवाले है

कर्नल—सबूत ? हाँ, इसीकी मुझे पहलेसे शका थी परन्तु इसका सबूत देनेवाले ये है —दूसरे कमरेमे जो नायर खडा था उसकी ओर कर्नलने सकेत किया

सुपरवाइजर—तो आप क्या करनेवाले है ?

कर्नल—अभी निश्चय नही किया लेकिन आगे इस प्रकार काम नही चलने दूँगा सहायकोको नष्ट कर देनेसे केरलवर्मा आप-ही-आप नष्ट हो जायगा

सुपरवाइजर—फिर भी व्यक्तियो और उनकी मान-मर्यादा आदि-का ख्याल किये विना ही यदि कठोर कार्रवाई की गई तो यह भी हो सकता है कि जनता एकदम विद्रोह कर दे तब हमारे व्यापारका क्या होगा ?

कर्नल—व्यापार-आपार मै कुछ नही जानता और यह तो मैंने पहले ही सोच लिया है कि जनता विगडेगी उसका उपाय तब सोचा जायगा

सुपरवाइजरने समझ लिया कि कर्नलने अपनी नीति तथा युद्ध-योजनाको गुप्त रखा है और उस सम्बन्धमें उससे बातें करना वृथा है फिर भी उसने सोचा कि मणत्तनासे सेना हटानेसे उसे विरत करनेका एक प्रयत्न करना चाहिए इस इरादेसे उसने कहा—"आपकी युद्ध-नीति आदि समझनेका सामर्थ्य मुझमे नही है लेकिन जो स्वय दबे हुए है उनको और दबाना एक अनोखी नीति मालूम होती है"

कर्नल—मेरे दोस्त ! युद्धमें मेरा लक्ष्य सिर्फ कार्य-सिद्धि है, वीरतापूर्वक स्वर्ग पाना नही हमारी उद्देश्य-सिद्धिके साधनोमें युद्ध केवल एक साधन है हम केरलपर अपना अधिकार करना और

अपने शत्रुको नष्ट करना ही तो चाहते है ? आप जो सोचते है कि दोनो पक्षोके लोगोका पंक्ति बनाकर आमने-सामने खडे हो जाना और एक-दूसरेको मार डालना ही युद्ध है, सो ठीक नही है कम-से-कम मेरी युद्ध-नीति ऐसी नही है और जहाँतक मैं जानता हूँ, केरल-वर्माकी भी रीति यह नही है मेरी रीति वे जानते है और उनकी रीति मैं जानता हूँ आप क्यो इस झझटमे पडते है ?

सुपरवाइजर—आपका कहना ठीक होगा परन्तु अपनी सेनाको इस प्रकार हटानेमें कितनी मान-हानि होती है ? अब मणत्तनामें ही हमारी सेना रह गई है आप उसे भी हटा रहे है !

कर्नल—आपके विचार मै समझ गया लेकिन उस वारेमें वातें करना व्यर्थ है

कर्नल उठकर खडा हो गया यह समझकर कि हमारा अपमान कर रहे है, सुपरवाइजर भी तुरन्त वापस हो गया

सुपरवाइजरके जानेके वाद कर्नल वेलेस्ली अपने निर्णयके अनुसार हुक्म देने लगा पहला हुक्म चुपलि नम्पियारको गिरफ्तार करके तलश्शेरीमें लाकर रखनेका था इस कामके लिए सेनाकी एक टुकडीको भेज भी दिया वयनाट्टुमे एमन नायरको पकडकर श्रीरग-पट्टन ले जानेकी भी आज्ञा दी गई वेलेस्ली भी जानता था कि यह काम उतना सरल नही है एमन नायर एक महा प्रतापी सामन्त था पूरा वयनाट्टु उसकी आज्ञाके अधीन था कर्नल जानता था कि सीधे युद्ध करके उसे पकड लेनेकी शक्ति इस समय कपनीके पास नही है इसलिए मित्रताका भाव दिखाकर धोखेसे पकडनेका उपाय सुझाया गया कटत्तनाट्टुके राजाके पास इस आशयका पत्र लेकर एक सेना-पतिको भेजा गया कि उनके षड्यन्त्रोका पता चल गया है और यदि वे तुरन्त अपने कामोसे विरत न हुए तो कपनी उनके पोरळातिरि*

---

* केरलका एक राज-वश.

वशका समूल उच्छेद कर देगी

इस प्रकार जब वह गभीर कार्रवाइयोमे निमग्न था उसी समय मेजर होम्स नामक एक उप-सेनापति जरूरी बाते करनेके इरादेसे अन्दर आया उसने कहा—"केरलवर्मा और उनकी सेनाने कुट्टिया-डिच्चुर पार कर लिया है—ऐसा समाचार मिला है शायद वे मणत्तना-की छावनीपर आक्रमण करेगे "

कर्नल—सेनाको पहले ही हटा लेना चाहिए था अब सोचनेसे क्या लाभ ? केरलवर्मा उस सेनाको नष्ट करके ही छोडेंगे, अच्छा, उनकी सहायताके लिए दो सौ सैनिकोके साथ आप अभी चले जाइए

अपनी एक टुकडी शत्रुके मुखमें पड गई यह जानकर भी उस वीर सेनापतिके भावोमे कोई अन्तर नही पडा वेलेस्ली पराजयोसे निराश होनेवाला व्यक्ति नही था मेजर होम्सको आज्ञा देनेके बाद उसने अपना काम जारी रखा

जब मेजर होम्स चला गया तब उस नायर-प्रमुखने दुभाषियेके द्वारा कहलाया—"पहले निवेदन किया ही था कि कण्णवत्तु नम्पियारने सेनाके साथ वयनाट्टुमे प्रवेश कर लिया है महाराजाने इस समय स्व-स्थान छोडकर कुट्टियाडिच्चुरके लिए प्रस्थान किया है इस समय महाराजाके केन्द्र-स्थानमे कोई बडा पहरा नही होगा इसलिए उस स्थान-को आसानीसे स्वाधीन किया जा सकता है "

"क्या कहा ?" जरा विस्तारसे सुननेके इरादेसे कर्नलने पूछा

पुरली पर्वतमे महाराजाके स्थानके बारेमे और उस स्थानपर अधिकार कर लेनेपर वहाँकी बन्दूके तथा अन्य हथियार भी हाथ आनेकी सुविधाके बारेमे उस व्यक्तिने विस्तारपूर्वक जानकारी दी कण्णवत्तु नम्पियार और महाराजाके दूर होनेसे वहाँ पहरेके लिए कुछ कुरिच्यर ही होगे यह भी उसने ब्रिटिश सेनापतिको बताया कर्नलको विश्वास नही हुआ अपनी सैनिक-सामग्रीकी रक्षाकी पर्याप्त व्यवस्था किये बिना

केरलवर्मा दूसरे स्थानोमें कैसे जायेंगे ? अपनी शका दुभापियेके द्वारा उसने जताई

नायरने कहा—सुनिए वह स्थान अत्यन्त सुरक्षित है आप कितनी भी वडी मेना लेकर जायें, उगे खोजने और स्वाधीन करनेमे समर्थ नही होंगे लेकिन वहाँ पहुँचनेका एक गुप्तमार्ग है, जो महाराजाके एक-दो विश्वस्त और प्रमुख लोगोको ही मालूम है हम वहाँ जाकर एक-दो दिन छिपकर रहे तो वह स्थान स्वाधीन कर सकेंगे इतना ही नही, उनको पकड भी सकेंगे

"अच्छा, तो आज रातको खानेके वाद मेरे पास आओ, तव निश्चय करेंगे"—यह कहकर वेलेस्लीने उसे विदा कर दिया

सातवाँ अध्याय

कर्नलसे विदा लेकर जब नायर बाहर निकला तो वह मनमे खुश हो रहा था कि अब मेरा मनोरथ पूर्ण होनेमे विलम्ब नही है उसे निश्चय था कि महाराजा अब पकडे ही गये अपनी चालके विफल होनेकी उसे कोई आशका नही थी कर्नल अपने वादे का पक्का मालूम होता था अतएव वह अपनी भावी उन्नति और ऐश्वर्य की कल्पनाएँ कर-करके बडे-बडे मनसूबे बाँधने लगा

मुख्य मार्गसे होकर वह उस मणि-हर्म्यके पीछेके रास्तेपर पहुँचा, जो सुपरवाइजरने चिरुतक्कुट्टीके लिए बनवा दिया था वह भवन तलश्शेरीके नयनाभिराम सौधोमेसे एक था जबसे चिरुतक्कुट्टी का सबध सुपरवाइजरके साथ हुआ तबसे वह जनताके आदरकी पात्र न होनेपर भी तत्कालके लिए तो सम्मानित बन ही गई थी दो-चार वर्ष पूर्व तलश्शेरीमे आई हुई वह बे-घर-बार स्त्री काल-क्रमसे वहाँकी रानी-जैसी बन गई थी लोग समझते थे कि उसके पास अनन्त धन-सपत्ति है कपनीके नौकर उसकी पालकीके वाहक थे लोगोका कहना था कि घरमे भी वह जो गहने-कपडे पहनती है उनका समस्त केरलमें मिलना दुर्लभ है

लोगोकी मान्यता यह थी कि उसके निवासके लिए सुपरवाइजरने जो भवन बनवा दिया है वह देवेन्द्रके सौधको भी मात देनेवाला है साथ ही यह अफवाह भी फैली हुई थी कि बडे-बडे सामन्त, राजा-महा-

राजा और व्यापारी भी उससे मिलनेके लिए आया करते हैं इतना तो सत्य है कि ईस्ट इंडिया कंपनीके विरोधी हो जानेपर कण्णूरकी रानी उसके घर गई थी और उसने उसे अनेक बहुमूल्य उपहार देकर प्रसन्न किया था सारे देशमें प्रसिद्ध था कि यदि कंपनीसे कोई काम निकलवाना हो तो उसका राज-मार्ग चिरुतक्कुट्टीको किसी तरह प्रसन्न कर लेना ही है

इस मनोहर मन्दिरकी अधिष्ठात्री देवीका दर्शन और वन्दन करके जाना अपनी उन्नतिमें भी सहायक होगा, ऐसा सोचता हुआ नायर उस भवनका अवलोकन करने लगा इसी अवसरपर उसने वहाँ जो-कुछ देखा उससे वह आश्चर्य-चकित हुए बिना न रह सका घरके पीछेका द्वार खोलकर कैतेरी अम्पु नायर बाहर निकल रहे थे अम्पु नायरने भी चारों ओर दृष्टि फिराई तो उन्हें नायर दिखलाई पड़ा दोनोंने एक-दूसरेको पहचान लिया अम्पु नायरने क्षण-भर कुछ सोचा और फिर वे चिरुतक्कुट्टीके घरमें ही लौट आए और निर्भयताके साथ सामनेके द्वारसे निकलकर शीघ्रताके साथ चलने लगे

अम्पु नायरके घरमें लौटते ही नायर शीघ्रताके साथ वेलेस्लीके बंगलेपर वापस गया वहाँ उसने दुभाषियेसे कहा—"तम्पुरानके मुख्य कार्यकर्ताओंमेंसे एक अकेला तलश्शेरीमें आया हुआ है मानन्तेरीमें आक्रमण करनेवाला वही है यदि मेरे साथ चार लोगोंको भी भेज दिया जाय तो उसे पकड़कर ला सकता हूँ" फलत कर्नलकी आज्ञासे दस सवार उसके साथ कर दिये गये और वह बाहर निकला

यह अनुमान करके कि अम्पु नायर शहरकी मुख्य सड़कोंसे नहीं निकले, नायर तलश्शेरीसे बाहर जानेके मार्गकी ओर रवाना हुआ शहरके बाहर निकलनेके बाद उसे पता चला कि अम्पु नायर किस मार्गसे गया है लोगोंसे पूछा तो उन्होंने बताया कि उसके बताये हुए हुलियेका एक व्यक्ति कभी जल्दी चलता और कभी दौड़ता हुआ पानूरके रास्तेसे जा रहा था नायरके साथ कंपनीके लोग भी उसी रास्तेपर आगे बढ़े

अम्पु नायरको जब मालूम हुआ कि लोग उनका पीछा कर रहे हैं तो उन्हें भाग निकलना ही रक्षाका एक-मात्र उपाय सूझा परन्तु वे जानते थे कि देश कैसा है और शत्रुकी शक्ति कितनी है, अतएव उन्हें भाग निकलना सरल नही मालूम हुआ फिर भी श्रीपोर्कलभगवतीका स्मरण करते हुए वे जितना हो सका उतनी तेजीसे भागने लगे उनका ख्याल था कि किसी प्रकार मुख्य मार्गसे हटकर, बाग-बागीचोसे होकर, वृक्षोकी आडमे लुक-छिपकर कपनीके क्षेत्रसे बाहर निकल जायँ तो रक्षा हो जायगी कुछ दूर जानेके बाद उन्हे ख्याल हुआ कि बागोकी दीवारो आदिसे रास्ता रुक सकता है, इसलिए इतने समयतक गलत रास्तेपर चलनेकी बुद्धिहीनताको कोसते हुए वे फिर मुख्य मार्गपर आ गए

"वह जा रहा है"—गरजते हुए कपनी के आदमी आगे दौडे एक-दो तीर भी पास आकर गिरे शिकारियोसे घिरे हुए व्याघ्रके समान अम्पु नायर परिभ्रान्त हो गए थकावटकी परवाह किये बिना पूरी शक्तिसे भागने लगे थोडा आगे बढनेपर मार्ग कुछ मुडा हुआ दिखाई दिया जब ऐसे स्थानपर पहुँचे जहाँ सिपाही उन्हे देख नही सकते थे, तो शीघ्रताके साथ मुडकर, वे अहातेमे प्रवेश करके एक बट-वृक्षकी ओट मे बैठ गये

अम्पु नायर मुडकर भाग गये ऐसा शक कपनीके सिपाही नही कर सके, इसलिए वे सीधे मार्गमे ही बढते गये बहुत दूर जानेपर भी जब उन्हे उनका कोई चिन्ह नही मिला तो उन्होने लोगोसे पूछा लोगोने बताया वैसा कोई आदमी उस मार्गसे नही गुजरा तब सिपाहियोको दो टुकडियोमे बाँटकर आस-पासके अहातोमें खोजनेके लिए भेज दिया गया

शत्रुओंके कुछ आगे बढ जानेके बाद अम्पु तलश्शेरी वापस चले जानेका इरादा कर रहे थे परन्तु उसी समय दो सिपाही उस अहातेमें आ पहुँचे और केवल दो आदमी देखकर, अम्पू आत्म-रक्षाके लिए हाथमे पिस्तौल लेकर बैठ गये वृक्षके पास पहुँचते ही सिपाही चीख पडे—"यह खडा है" और अम्पुकी गोली उसी समय एकके सीनेसे पार हो गई दूसरेका विस्मय अभी खतम भी न हुआ था कि उसके ऊपर अम्पु-

की तलवार जा पडी पिस्तौलकी आवाज सुनकर शत्रु वहाँ पहुँच जायेंगे यह सोचकर अम्पु फिर भागने लगे

समय तीसरे पहरका हो रहा था विरोधी दलके नेताकी व्याकुलता बढ गई कर्नलमे उसी रातको मिलना आवश्यक था काम गभीर था इतना ही नही, वह अपना सारा भविष्य उसपर निर्भर समझता था सध्या होनेके पूर्व तलश्शेरी पहुँचकर आवश्यक आज्ञा लेकर कार्यसिद्धिके लिए प्रयत्न करना चाहिए इस व्यक्तिके पीछे बेकार दौडनेसे कोई लाभ नही इस प्रकार सोचकर वह वापस जानेका इरादा करने लगा

वे सब पानूर-प्रदेशमें पहुँच चुके थे कपनीके सैनिकोका नायक–नायर सोच रहा था कि हम कपनीके अधिकार-क्षेत्रकी सीमापर पहुँच गये है और अब अम्पुको पकडना सभव नही है इसी बीच उसने देखा, अम्पु चन्द्रोत्तु भवनके खेतोके बीचकी पगडडियोसे जा रहे है उसका क्रोध फिर धधक उठा पगडडियोपर दौडना सभव न होनेके कारण अम्पु धीरे-धीरे सँभल-सँभलकर चल रहे थे अपने अनुचरोको उत्तेजित करता हुआ नायर भी खेतोमें उतर पडा

अम्पुने सोचा कि यदि सीधा चन्द्रोत्तु-भवनमें जाऊँ तो कपनीवाले उनको भी परेशान करेंगे, इसलिए वह एक छोटे मार्गमे एक खुले अहाते-मे उतरकर भागने लगे परन्तु जा पडे उण्णिनडाके सामने वह रात-का खाना बनानेके लिए घडा लेकर तालाबकी ओर पानी लेने जा रही थी

अम्पुको देखकर उसने सहसा यह उद्गार निकाला—"हाय ! यजमान !"

"चुप !" अम्पुनायरने इशारेसे कहा फिर उन्होने शीघ्रतासे कहा, "मेरे पीछे लोग आ रहे है मुझे शीघ्र कही छिप जाना है"

उण्णिनडाको सारी दुनिया ही आँखोंके सामने घूमती हुई दिखाई दी. अम्पुनायरको परिश्रान्त और क्षीण देखकर वह और भी घबरा गई.

उसने कहा–"दीवार लाँघकर घरके आँगनमे चले जाइए वहाँ कोई नही है मामी और बच्चे चन्द्रोत्तु-भवन गये हैं"

अम्पुनायरने सोचा कि यदि शत्रुको मालूम हुआ तो वह घरमें आग लगा देगा पर वे लाचार थे शीघ्रताके साथ दीवार फाँदकर घरके अन्दर चले गये

कपनीके सिपाहियोको खेतोमे चलनेका अभ्यास नही था, इसलिए वे बडी कठिनाईसे पार पहुँचे तब अम्पुनायर वहाँ कही नही थे तालाब-से पानी लेकर जानेवाली युवतीको उन्होने देखा

नेताने उससे कडककर पूछा— "बोल, लडकी! इधरसे कोई गया है!"

उण्णिनडाने इसका कोई उत्तर नही दिया और वह जोरसे चिल्लाने लगी–"बचाओ, बचाओ! चोर! चोर!"

"इसका मुह बन्द कर रे! नेताने आज्ञा दी उसका चीखना सुन-कर चन्द्रोत्तुके कुछ लोग भी वहाँ पहुँच गये

"मुसीबत है," शत्रु-दलके नेताने कहा–"अब यहाँ नही रुकना लेकिन हाथमें मिलेको छोडना भी नही" और उण्णिनडाको उठाकर वे वापस खेतमे उतर पडे चन्द्रोत्तुवालोने उनका पीछा करनेका प्रयत्न किया, परन्तु उस दलके नेताकी पिस्तौलके कारण वे वापस चले आये और चन्द्रोत्तु नम्पियारके पास जाकर उन्होने समाचार दिया

अम्पुनायरने उस घरको बचानेकी इच्छासे चन्द्रोत्तु-भवनका ही रास्ता पकड लिया था, इसलिए खेतकी घटनाका समाचार उन्हे बादमे मिला इस ख्यालसे भी उनको बहुत दुःख हुआ कि मेरे ही कारण वह निर्दोष कुमारी इतनी घोर विपत्तिमें पडी भेडियोंके हाथमें पडी हिरणी-जैसी उस बालिकाकी हालत सोचकर उन्होने निश्चय किया कि किसी भी तरह उसकी रक्षा तो करनी ही होगी परन्तु महाराजका काम भी वैसा ही गभीर था तलश्शेरीमे जो समाचार मिले थे उन्हें शीघ्र-से-शीघ्र तम्पुरानको बताना अत्यावश्यक था एक क्षणका भी विलम्ब भीषण

विपत्तिका कारण बन सकता था इस धर्म-सकटमे बचनेका कोई उपाय न देखकर उसने नम्पियारसे मिलकर सलाह लेनेका निश्चय किया

एकान्तमे नम्पियारसे मिलनेमे अम्पुनायरको कठिनाई नही हुई उन्होने सब बाते विस्तारसे चन्द्रोत्तु नम्पियारको बतलाई

नम्पियारने पूछा—"अब क्या किया जाय ?"

"उस बालिकाको छोड देना हमारे स्वाभिमानको क्षति पहुँचानेवाला होगा कौन जानता है, वह दुष्ट उसके साथ कैसा-कैसा उपद्रव करेगा ? गुलाम बनाकर बेच देनेमें भी सकोच नही करेगा"

"तो करना क्या चहिए ?"

"अभी एक आदमी भेजकर यह सब तलश्शेरीके सुपरवाइजरको बताया जाय तो शायद कुछ काम चले. यदि एक ऐसा पत्र उसके पास भेजा जाय कि चन्द्रोत्तु-भवनमें आकर यहाँकी एक लडकीको पकडकर वे लोग ले गये तो बचत हो सकती है"

"ऐसा पत्र भेजनेसे भी क्या लाभ ? जबतक सुपरवाइजर खोज-खबर लेगा तबतक कितने दिन बीत जायँगे फिर, यदि सैनिक अधिकारी यह कहे कि शत्रुको सहायता देनेके कारण पकडा है ?"

"इस सबका उपाय चिरुतक्कुट्टी निकाल लेगी सुपरवाइजरको अर्जी भेज देनेसे ही काम नही चलेगा, चिरुतक्कुट्टीको भी बताना होगा"

नम्पियारने आश्चर्यके साथ पूछा—"क्या ? चिरुतक्कुट्टी आपक पक्षमें है ?"

"यह बात नही है परन्तु वह मेरे लिए कुछ भी करनेमे सकोच नही करेगी"

"रहस्य जाननेकी इच्छा नही है, लेकिन यदि कोई दूसरा जाकर कहे तो क्या चिरुता मानेगी ?"

"उसके लिए मैं एक पत्र लिख दूँगा"

इतना कहकर एक पत्र 'भोज-पत्र' और नाराच लेकर उन्होने

लिखा—"उण्णिनंडाको किसी भी प्रकार बचाना चाहिए बाकी सब यह पत्रवाहक बतायगा" और पत्र नम्पियारके हाथमे दे दिया

"बाकी मै कर लूँगा"—नम्पियारने कहा

अम्पु नायरको थोडा-सा समाधान हुआ अब उन्होने महाराजाके कामके लिए तुरन्त जानेकी आज्ञा माँगी परन्तु नम्पियारने इतनी थकी हुई हालतमे जाने देनेसे इकार कर दिया, फलत अम्पुको रुकना पडा सायकाल उस देशके किसी सामन्तके समान पालकीमे चढकर, अनुचर-परिचारको आदिके साथ ही वे निकल सके

निराश होकर लौटे नायर और सिपाही सध्याके उपरान्त तलश्शेरी पहुँचे नायरने दुभाषियेके द्वारा खबर दी कि अम्पु भागकर चन्द्रोत्तु-भवनके किसी अहातेमें छिप गया और हम उसे छिपनेमे मदद करने-वाली स्त्रीको पकडकर ले आये है

दुभाषियेने कहा—यह सुनकर कर्नल क्या कहेगे, मै नही जानता वे स्त्रियो और बच्चोको तग करना भयानक अपराध मानते है ऐसे लोगोको भयानक दण्ड देनेमें भी वे सकोच नही करते

नायर काँप उठा उसने भी सुन रखा था कि कर्नल स्वत शान्त स्वभाव होनेपर भी आज्ञाका उल्लघन करनेवालोको किसी प्रकार भी दबा देनेकी वृत्ति रखते है उसने सोचा कि यदि यह बात सच है तो मेरा काम उनको पसन्द नही आयगा और वे मुझे अन्याय करने वाला कहकर दण्ड भी दे सकते है उसकी समझमे नही आया कि क्या करना चाहिए दुभाषियेने परामर्श दिया कि उसे सैनिक बधन-में न रखकर सुपरवाइजरने कहकर जेलमें रखवा देना चाहिए यह नायरको स्वीकार नही था उस दुष्टने यह सोचकर कि कुञ्जि-कोया*को बेच देनेसे अच्छा मूल्य मिल सकता है, दुभाषियेकी बातका

* एक मुसलमान दस्यु तथा दास-व्यापारी उस समय इन पेशो-में मुसलमानोका एकाधिपत्य था

वहुत-कुछ विरोध किया परन्तु जव उसने देखा कि कर्नलके क्रोधकी वात सोचकर ही दुभाषिया कांपा जा रहा है तो उसने उसकी वात मान ली

तालावके पाससे निर्दयतापूर्वक पकडी गई उण्णिनडाको मार्गमे वहुत कष्ट और अपमान सहना पडा खेत पार करके कुछ दूरतक एक सैनिक उसे लादकर ले गया था जव देखा कि कोई पीछा नही कर रहा है तव नीचे उतारकर उसे पैदल चलनेका आदेश दिया गया वह थक जानेके कारण चलनेमे असमर्थ हो गई तो नेताने उसपर गालियोकी वर्षा की इससे कुछ विशेष लाभ न हुआ तो क्रोधान्ध होकर उसे मारा-पीटा भी

प्रहारो-पर-प्रहार होनेपर भी वह कन्या न तो रोई, और न उसने किसी प्रकारकी वेदना ही व्यक्त की यथार्थमे उसे कोई दु ख महसूस नही हो रहा था जव अम्पु मार्गमें पहली वार मिले थे तवसे ही उस वीर-पुरुषकी छवि उसके हृदयमें अकित हो गई थी वह सदा सोचा करती थी—'कितनी दया, कितना दाक्षिण्य, कितना पौरुष !' उसके साथ जाने-का सुअवसर अपने भाईको मिला इसलिए अपने भाईसे भी उसे ईर्ष्या-सी होती थी परन्तु उसके कारण उनके साथ मेरा भी कुछ सवध है—यह सोचकर प्रसन्न भी होती थी अव अपने उन्ही हृदयेश्वरके लिए इतना कष्ट सहनेको मिला—इसे वह अपने लिए अभिमानका हेतु मानने लगी वह सोचती थी—'कुछ भी हो, वे तो वच गये मुझे कुछ भी हो जाय, कोई परवाह नही' अम्पु नायर मुझे वचानेके लिए कुछ किये विना नही रह सकते यह भी वह जानती थी

तलश्शेरी पहुँचनेके वाद उण्णिनडाको सैनिकोके पहरेमें एक कमरे-में वन्द करके नायर दुभाषियेके पास गया था पहले उसकी इच्छा थी कि उसे किसी अलग कमरेमें अपने ही अधिकारमें रखे, किन्तु सैनिकोके विरोधके कारण वह वैसा नही कर सका कुछ देरमें जेलमें रखनेकी आज्ञा लेकर दुभाषिया वहां आ गया

आठवाँ अध्याय

महाराज केरलवर्मा कुट्टियाडिच्चुरम्* से उतरकर आ रहे है, यह समाचार देश-भरमे दावानलके समान फैल गया मानचेरीकी घटनासे उत्साहित केरलीय जनताका हृदय तपुरानकी इस वीरतासे आह्लादित हो उठा ये दोनो घटनाएँ वेलेस्लीके आनेके वादसे डरी और दवी हुई जनताके लिए अपने स्वातन्त्र्यपर भरोसा और साहस करनेकी शक्ति वढानेवाली थी सबको मालूम हो गया कि टीपूको जीतनेवाले वेलेस्लीकी भी तपुरान परवाह नही करते सवको अव यह विश्वास भी हो गया कि तपुरान कपनीके बलसे डरकर नही वल्कि युद्ध करनेके इरादेसे जगलोमें अपनी तैयारीकी सुविधा देखकर गये थे आगे क्या होगा—इस कुतूहल-ने अव जनताके हृदयमे प्रथम स्थान प्राप्त कर लिया

सर्वत्र यह अफवाह फैल रही थी कि महाराजाके निकटवर्ती देश-भरमें घूम-घूमकर प्रजाको उत्साहित कर रहे है, तपुराननें कैतेरी अपुनायर और पपयवीटिट्ल चन्तु नायरको यह कार्य सौपा है, इनके अतिरिक्त, अनेक सामत और राजा गुप्त रूपसे तम्पुरानको सहायता पहुँचा रहे है

देशके सभी सामन्त और राजा लोग यद्यपि हृदयसे तपुरानके पक्षमें थे, तथापि कपनीकी सैनिक-शक्तिसे डरकर चुप थे तपुरानको

---

*कुट्टियाडि नामक स्थानकी पहाडी घाटी चुरम्—घाटी.

सीधे आक्रमण करते देखकर वे भी प्रसन्न हुए उनके अतिरिक्त भी तपुरानके अनेक प्रवल सहायक थे उण्णिमूप्पन नामक एक मुस्लिम नेताने टीपूकी सेनाओसे निकले हुए सैनिकोको एकत्र करके एक सेना वना ली थी और वह मुरिंडोट्टुके पासके प्रदेशमे अपना अड्डा वनाकर आक्रमणात्मक प्रवृत्तियाँ किया करता था वह भी वेलेस्लीके भयसे तम्पु-रानकी शरणमे आ गया था यह भी अफवाह फैली हुई थी कि मचेरी अत्तन कुरुक्कळ भी साथ देनेके लिए तैयार है

जव तम्पुरान कुट्टियाडिच्चुरम्मे उतरे उस समय उनके पास केवल दो सौ नायर और डेढ सौ कुरिच्यर थे इतनी छोटी-सी सेनाके साथ कपनीकी मणत्तना-स्थित सेनासे लडनेका इरादा उनका नही था उन्होने सुन रखा था कि उत्तरसे कपनीकी सेनाके लिए भारी मात्रामे रसद लाई जा रही है और उसकी रक्षाके लिए केवल सौ सैनिक ही नियुक्त है सचमुच वे इसपर अधिकार करनेके इरादेसे ही आगे वढे थे

तम्पुरानके आनेकी वात जोर-शोरसे पहले तलश्शेरीमे ही पहुँची. मणत्तनाके सेनानायक कप्तान स्टुवर्टको तो उस समय इसका पता चला जव कि उसके पास तलश्शेरीसे यह समाचार लेकर एक दूत पहुँचा कि तीन दिन के अन्दर ही मेजर होम्सकी अधीनतामें वहाँ कुमुक पहुँचा दी जायगी लगातार युद्धोमे विजय प्राप्त करनेवाली कर्ना-टकी सेनाकी एक सर्व-सुसज्ज टुकडी मौजूद होनेपर भी कप्तान स्टु- यह समाचार पाकर घवरा उठा उसने निश्चय किया कि मणत्तना- निकलकर मेजर होम्सके साथ मिलकर ही तम्पुरानका सामना करना ।क होगा

तम्पुरानको गुप्तचरोसे मालूम हुआ कि सेना मणत्तनासे हटाई जायगी और उसकी सहायताके लिए तलश्शेरीसे एक सैनिक टुकडी तुरत रवाना की जा रही है इसपर रसद लानेवालोको रोकनेके लिए उण्णि-मूप्पनको भेजकर तम्पुरान स्वय मणत्तनाकी ओर मुडे उस समर-

चतुरका इरादा था कि मेजर होम्सके पहुँचनेके पहले ही इस सेनाका सफाया कर दिया जाय

तम्पुराननें गुप्त पहाडी मार्गोसे कुरिच्योको पहले ही मणत्तनाकी ओर रवाना कर दिया और यह अफवाह फैला दी कि वे स्वय सेना समेत उण्णिमूप्पनसे मिलने जा रहे है उन्होने स्पष्ट रूपसे कहा कि जब मेजर होम्स आ रहा है तब मणत्तनापर आक्रमणमे कोई लाभ नही कप्तान स्टुवर्टके गुप्तचरोने तपुरानकी योजनाओको जाननेका प्रयत्न किया उनको मालूम हुआ कि उन्होने कुरिच्योको वापस पहाडोमें भेज दिया और स्वय वे कपनीकी सेनाके भयसे मणत्तना न जाकर मुरिंडोट्टुके लिए रवाना हो गए है

यह सुनकर कप्तान स्टुवर्टने कहा—मुझे पहले ही विश्वास नही था कि तपुरान आयँगे और आ ही गये तो उन्हे दिखा दूँगा

उस रातको जगल अथवा नगरमे कही भी कोई हलचल नही थी रात्रिके अन्तिम पहरमें चन्द्र अस्त हो गया कपनीके सेनानायक कप्तान स्टुवर्टने राजसी भोजन करके और स्वदेश में अमृतके समान मानी जानेवाली व्हिस्की पीकर सुख-निद्राका अवलबन किया सजग पहरेदार सेना छावनीके चारो ओर पहरा देती रही रात वैसी ही शान्ति-से बीत गई

प्रभात हो ही रहा था सिपाही जल्दी उठकर नित्य-कर्ममें लग गये समय-निष्ठाको जीवनका धर्म माननेवाला कप्तान स्टुवर्ट भी उठकर, अपने पलगपर ही बैठा नित्य-कर्मोमें प्रथम स्थान प्राप्त चाय-पान कर रहा था

इधर-उधर कुछ शोर-गुल सुन कर वह उठ खडा हुआ पता नही कहाँसे असख्य बाण छावनीमे आकर गिर रहे थे पहरेदार एक-एक करके धराशायी हो रहे थे उसने पास रखी हुई बिगुल उठाकर विपत्ति-सूचक आह्वान किया असमय ही इस बिगुलसे आश्चर्य-चकित होकर सैनिक-गण अपने-अपने हथियार लेनेके लिए दौड पडे नित्य-कर्म पूरा किये

विना ही सैनिकोके इधर-उधरसे भागनेके कारण जो गडवडी मची उसका वर्णन नही किया जा सकता लगातार वरसनेवाले वाणोंसे वहुत-से लोग काल-कवलित हो गये पिस्तौल लेकर खडे अपनी सेनाको प्रोत्साहित करते हुए स्टुवर्टको भी एक वाण लगा उसने अपनी जघामे लगे हुए वाणको निकालकर फेंक दिया और वैसे ही आज्ञा देता और सेनाको तैयार करता हुआ अपने स्थानपर खडा रहा

कुरिच्योंके आक्रमणसे जव गडवडी वढ गई तव एकाएक शर-वर्षा वन्द हो गई इसका कारण जाननेका अवसर भी नही मिला था कि छावनीके एक पार्श्वसे वन्दूकोकी आवाज सुनाई देने लगी कप्तान स्टुवर्टने समझ लिया कि शत्रु सीधा आक्रमण कर रहा है उसकी सेनाको तैयार होनेका समय भी नही मिला अप्रत्याशित आक्रमणसे जो गडवडी हुई वह भी भयानक थी इस हालतमे सीधे आक्रमण करनेवाले शत्रुका सामना करना उसने असभव समझा

घावसे वहते हुए रक्तसे लोहू-लुहान वह हूए-सेनापति अपनी वढती हुई कमजोरीकी परवाह न करके सेनाको आज्ञा देता जा रहा था परन्तु थोडे ही समयमे मुँहसे शब्द निकालना भी असभव हो गया और वह वही गिर पडा सेनापतिके गिरनेसे सेना और भी विह्वल हो उठी कुछ लोग युद्ध-भूमिको छोडकर भागने लगे, उनपर कुरिच्योंके तीर अचूक रूपसे पडे सामनेसे आक्रमण करनेवाली सेनाने अनवरत गोलियाँ वरसाते हुए छावनीमे प्रवेश किया महाराजा उसका नेतृत्व करते हुए सामने ही थे

कम्पनीकी सेनाके वहुत-से लोग देरतक युद्ध करते रहे, लेकिन नायकके रहनेसे वे अधिक समयतक टिके न रह सके जो खडे थ, वे क्षण-भरमे लिये गये विरोधी व्यूहमे पडे सैनिक जानपर खेल गये फिर भी अन्तमें उन्हे आयुध रखकर हार माननी ही पडी

जव दिन निकला तवतक मणत्तनाका युद्ध भी समाप्त हो चुका था कम्पनीकी सेनामे कोई भी नही वचा तम्पुराननने घायल कप्तान स्टुवर्टकी भलीभाँति सेवा करनेका आदेश दिया और मृतोका यथाविधि

सस्कार करानेकी व्यवस्था भी कर दी भागे हुए सैनिकोको पकडने और उनके शस्त्रास्त्रोपर अधिकार करनेके लिए एक टुकडी नियुक्त कर दी गई

मणत्तनाकी विजयसे पाँच सौ बन्दूक, उनके लिए आवश्यक अन्य सामग्री, सेनाके लिए सग्रहीत रसद और तीन हजार रुपये तम्पुरानके हाथ लगे इसके अलावा उन्होने जो विशेष रूपसे सग्रहीत कराया, वह था—सैनिकोके कपडे और हथियार

दस बजे सुबहतक वह प्रदेश इतना शान्त हो गया कि किसीको पता भी न लगता था कि वहाँ उस दिन कोई युद्ध हो चुका था महाराजाने वहाँके भगवती-क्षेत्रमे जाकर भक्तिपूर्वक स्नान, आराधना आदि की. बादमे एक प्रशान्त राज्यके शासकके समान प्रसन्न-वदन होकर कार्य-विचार के लिए तत्काल निर्मित किये गये राज-सिहासनपर आसीन हो गये यह सिहासन वट-वृक्षकी वेदीपर बनाया गया था सबसे पहले उनके समक्ष बन्दी सैनिक उपस्थित किये गये वे मैसूर देशके थे इसलिए महाराजा स्वय उनसे कन्नड भाषामें प्रश्न करने लगे जब यह प्रकट हुआ कि उनके दिलोमें अग्रेज कम्पनीके लिए कोई श्रद्धा-भक्ति नही है और वे केवल पैसा कमानेके लिए उनकी सेनामें भरती हुए है तो उनसे पूछा गया कि यदि उसी वेतनपर उन्हे तम्पुरानकी सेनामें काम मिले तो वे करेंगे या नही आपसमे विचार-विनिमय करके उन्होने अपने नायकके द्वारा सहमति व्यक्त की इसपर उन्हे कुछ पुरस्कार दिया गया और वे तम्पुरानके आदमी बन गये

देशके प्रमुख व्यक्ति भी महाराजाके दर्शन करने आये उनमेंसे लगभग सभी समय-समयपर आवश्यक सहायता करनेवाले थे उनको भी यथायोग्य पारितोषिक देकर सन्तुष्ट किया गया उपज और देशवासियो-की कठिनाइयो आदि सभी विषयोपर उनके साथ विचार-विमर्श करके तम्पुरानने उन्हे यह आश्वासन देकर विदा किया कि 'ईश्वरकी कृपासे सब ठीक हो जायगा.'

इतना सब हो जानेके बाद महाराजाने कुरिच्योंके नेता तलय्कन चन्तुको बुलवाया लोग कहते थे तम्पुरान और चन्तु राम और गुहके समान हैं चन्तु एक निम्न जातिका व्यक्ति था उसमें शिक्षा, प्रभुत्व, वाग्मिता, कुछ भी नही था परन्तु महाराजा कहा करते थे कि उसकी-जैसी स्वामि-भक्ति, बुद्धि,सहृदयता और स्थैर्य केरल-भरमें किसी दूसरेमें नही है किसी भी विपत्तिमें चन्तुसे परामर्श किये बिना महाराजा कोई कदम नही उठाते थे और चन्तुके दिलमे भी एक ही भाव था—कितना भी कष्ट सहन करके, किसी भी समय, किसी भी कार्यमें, तम्पुरानकी सेवा करना ! कुरिच्य लोग चन्तुको केवल नेता ही नही, अपना आराध्य मानते थे चन्तुकी आज्ञा ही उनके नियम थे, वही उनका धर्म था तम्पुरान स्पष्ट कहा करते थे कि सब नायर जनता मुझे छोड दे और केवल ये कुरिच्यर मेरे साथ रहे तो भी मै कम्पनीके साथ मोर्चा ले सकता हूँ

चन्तु तम्पुरानके समक्ष विनयावनत खडे हो गये महाराजाने कहा—"चन्तु* की सहायतासे हमें पूर्ण विजय मिल गई अब क्या करना चाहिए ?"

चन्तु—दासका क्या सामर्थ्य है ? स्वामीके ही प्रभावसे यह सब होता है नही तो चन्तु और कुरिच्यरसे क्या हो सकता है ?

"हमारे बीच इन औपचारिक बातोकी क्या आवश्यकता है ? हमें आगेकी बात सोचनी है देशसे क्या समाचार आया है ?"

तम्पुरानके गुप्तचर अधिकतर कुरिच्यर थे उनको कही भी जानेमें ·धा नही थी, इसलिए समय-समयपर सभी समाचार तम्पुरानको मिल थे

चन्तुने कहा—कम्पनीकी एक और सैनिक-टुकडी इधर आ रही है ·व वह कुत्तुपरम्पुसे रवाना होगी आजके समाचार मिलनेपर उसका निश्चय क्या होगा, पता नही लेकिन—

---

*बराबर वालोसे बात करनेमे बहुधा 'तुम' या 'आप' सर्वनामोका प्रयोग न करके नामका ही उपयोग किया जाता है

महाराजा—'लेकिन' कहकर रुक क्यो गये ?

"रास्तेमें ही उसे रोक लेनके लिए कैतेरी यजमान†ने सेनाकी तैयारी कर रखी है एक सौ कुरिच्योको भी भेज देनेको कहा है"

"अम्पु क्या-क्या कर बैठेगा, पता नही तलश्शेरीसे आनेवाली सेना नगण्य नही है सुना है उसके साथ दो तोपे भी है जाकर मुकावला करे और अधिक सकटमे पड जाय तो कठिन हो जायगा उसको शीघ्र वापस बुलाना है"

"इसके वाद कुछ आवश्यक कार्यके लिए सेवामे उपस्थित होगे, यह भी कहला भेजा है"

"अच्छा चन्तु, एक काम करो आज हमको यहाँसे जो युद्ध-सामग्री कपडे, रुपये आदि मिले है, सवको तुरन्त पहाडके किलेमे पहुँचा दो इसके लिए कुछ कुरिच्योको साथ लेकर तुम्हे ही जाना होगा किसीको पता न चले, यह सब तहखानोमें रख दिया जाये— इच्चेन कुकन‡से भी कह देना।"

"स्वामीके वापस जानेके पहले दासका यहाँसे हटना उचित है ?"

"इधर आनेवाले मेजर होम्सका उधर जाकर स्वागत करना चाहता हूँ कल सुबह रवाना होऊँ तो शामको कण्णवत्तु पहुँच जाऊँगा फिर अम्पु क्या करता है यह देखकर चार दिनमे लौट आऊँगा'

महाराजाकी आज्ञा शिरोधार्य करके वह विश्वस्त सेवक चला गया बादमे यह निश्चय किया जाने लगा कि रातको कथकलीके लिए कौन-सी कथा चुननी चाहिए रोज कम-से-कम दो घटे कथकली न देखे तो तम्पुरानको अच्छा नही लगता था ऐसे अवसरोपर अपने अनुचरोको ही नट बनाकर कथकली करवाया करते थे

तम्पुरानके कथकली-सघके गुरु उनके सेनानायकोमेंसे ही एक थे उनसे सलाह की गई कि इस दिन कौन-सी कथा होनी चाहिए इस विचार-

---

†कैतेरीके श्रीमान्—अम्पु नायर

‡पपस्सिराजाके प्रधान सेनापति

विमर्शमे सभी प्रमुख व्यक्ति सम्मिलित थे सबकी राय हुई कि स्वय तम्पुरानकी लिखी हुई 'कालकेय वध' नामकी कथा उपयुक्त होगी परन्तु महाराजाकी राय थी कि तिरुविताकूरके महाराजाकी लिखी 'पूतना-वध' नामक कथा होनी चाहिए

कथकली-आचार्यने अन्तिम निर्णय दिया—दक्षिणमे प्रचलित एक कथाका हमारे सघने अभी अभ्यास किया है 'नल-चरित' चार दिनकी कथा है, उसमें तीसरे दिनकी कथा सुन्दर है

महाराजाने उत्तर दिया—हाँ, कथा मैंने पढी है तिरुअनन्तपुरम्मे* महाराजाने एक ग्रथ मेरे पास भेजा था कविता प्रथम कोटिकी है. परन्तु अभिनय-योग्यता उतनी नही है खैर नई तो है, देख लेगे

युद्ध-भूमिको लीला-भूमि वना लेनेकी समचित्तता महाराजाका विशेष गुण था अधिक कालसे उनके साथ रहनेवाले सेनानियोको उनका यह स्वभाव मालूम था विजय-भेरीके वाद 'केळिक्कोट्टु'† का उनका नियम केरल-भरमे सभी जानते थे तम्पुरान कहा करते थे—"केळिक्कोट्टु सुनकर शत्रु जान ले कि मै कहाँ हूँ उसे ऐसा नही मालूम होना चाहिए कि हम डरके कारण छिपे हुए है"

राज्य-कार्यों और कथकलीमें व्यस्त होनेपर भी तम्पुरान घायल पडे हुए कप्तान स्टुवर्टको नही भूले उन्होंने उस सेनानायकको उण्णिमूपनके पास कैदमें रखनेके लिए भेज दिया

⑦

---

* श्रीअनन्तपुरम् अपभ्रश–तिरुवतरम्, ट्रिवेड्रम्

† केळि—केलि, खेल कोट्टु—वाजा, वजाना जिस घरमे कथकली होती है उसमें सायकाल लोगोको सूचना देने और आमत्रित करनेके लिए विशेष प्रकारका वडा ढोल वजाया जाता है इस क्रियाको 'केळिक्कोट्टु' कहा जाता है

नवाँ अध्याय

माक्कम् केट्टिलम्माकी धारणा हो गई थी कि उसके जीवनका आनन्द-सूर्य सदाके लिए अस्त हो गया है दु सह विरह-वेदना, प्राणेश्वर-की सभाव्य विपत्तियोके कारण सतत चिन्ता, उनकी सदिग्ध गति-विधि एव शत्रुओद्वारा होनेवाले कष्टोमे निरन्तर व्याकुलता आदिके कारण वह अनन्त सन्ताप-समुद्रमे डूबती-उतराती रहती थी वह जानती थी कि उसके पतिकी विजय और जीवनपर कितने महत्कार्य अवलबित है फिर भी विरहके दु खकी आत्यन्तिक वेदनामें यह विचार उसे सान्त्वना प्रदान नही करता था

वह अपने सहज धैर्य और वीर-पत्नी होनेके अभिमानसे अपनी व्याकुलता प्रकट किये बिना दिन काट रही थी। किन्तु उण्णियम्माने अपनी शत्रुताने उसका जीवन दूभर कर रखा था जबसे वह पपञ्ञिसे वापस आई थी तबसे उसके प्रति उण्णियम्माका विद्वेष बहुत अधिक बढ गया था वह सदैव श्रवण-वेधक वाग्शरोका प्रयोग करनेपर तुली रहती थी केट्टिलम्मा कुछ करे या न करे, उण्णियम्माके वाग्बाण बे-रोक-टोक चला ही करते थे यदि वह कोई गृह-कार्य करने लगती तो ताना देकर कहती—"बडी रानी बनकर, सज-धजकर रहनेके सिवाय हो किस काम-की ? पता नही कबतक यह पदवी और शान चलेगी।" यदि गालियोकी वर्षाके कारण वहाँसे चली जाती तो कहती—"ओहो। उसके हाथ तो मक्खनके बने है। काम करे तो पिघल जायँगे। बाबा, ऐसा कैसे चलेगा।"

शुभ्र वस्त्र धारण करती तो उसके मुखसे निकलता—"वेश्या-जैसी मर्जी है। पता नहीं किसको दिखानेके लिए। इस वंशमें कोई कलंक न लगाये तो बस।" आदि

बड़ी बहनकी इस प्रकारकी बातोंसे माक्कम्‌को बहुत दुःख होता था, परन्तु उसने कभी एक शब्द भी उलटकर नहीं कहा आजकल इन गालियों-के रूपमें भिन्नता आ गई थी पहले उण्णियम्माके लिए भी तम्पुरान आराध्य-मूर्ति थे, परन्तु अब उनपर भी आक्षेप करनेमें उसे संकोच नहीं होता था पहले कभी-कभी इस विषयमें माक्कम् नम्रताके साथ टोक दिया करती थी—"उन्होंने ऐसा क्या किया है, दीदी? ऐसा न कहो कोई सुनेगा तो कितनी लज्जाकी बात होगी।" इसका उत्तर दुगुनी तीव्रतासे मिला करता था—"उन्होंने क्या किया? कोई सुने तो सुने। क्या कोई खा जायगा? देखूँगी जल्दी ही उनका और तुम्हारा यह बड़प्पन।"

ये बातें दिनमें दस बार उण्णियम्मा दुहराने लगी जब वह तम्पुरान-के बारेमें कुछ कहने लगती तो माक्कम् कान बन्द करके वहाँसे चली जाती। मेरे साथ द्वेष और मत्सर है तो रहे, परन्तु महाराजाके साथ यह विद्वेष क्यों पैदा हो गया? माक्कम्‌को इस उलझनका उत्तर ढूँढे न मिलता

कम्मूको कैतरीमें रहते अब दो सप्ताह बीत चुके जबसे वह कळरी-(अभ्यासशाला) में शिक्षा देने लगा तबसे उस घरमें कुछ बाह्य अन्तर दिखाई देने लगा जिन बालकोंका शस्त्राभ्यास पूर्ण नहीं हुआ था वे फिरसे ढाल और तलवार लेकर अभ्यास करने लगे उनको नये-नये तरीके सिखानेमें कम्मू भी तत्पर हो गया बीस-तीस युवक कळरीमें दिन-भर दौड़-धूप किया करते थे ऐसा लगता था मानो एक नये प्राणका संचार हुआ हो

उत्तरके घरमें* इक्कण्डन नायरको यह सब पसन्द न आया उनका

---

* मुख्य घरके आस-पासके घरोंका परिचय दिशाका नाम जोड़कर देनेकी प्रथा है जैसे उत्तरका घर, दक्षिणका घर आदि

कहना था कि जब कँतेरी-भवनके कोई पुरुष यहाँ नही है तब मेरी अनुमतिके बिना जो यह किया गया सो अनुचित है उन्होने दो बार आदमी भेजकर अपना मत उण्णियम्मा और माक्कम्पर प्रकट भी कर दिया था, परन्तु इस हस्तक्षेपके बारेमे दोनो बहनोका मत एक ही था—"हमारे परिवारिक कार्योसे उत्तर-गृहवालोका कोई वास्ता नही है" उण्णिअम्माने स्वय ही उत्तर भिजवा दिया था—"इस घरका कार्य यहाँ-के पुरुषोके कहे अनुसार चलेगा औरोको उससे कोई मतलब नही" इससे सन्तुष्ट न होकर एक बार इक्कण्डन नायर स्वय ही इन स्त्रियोको शासित करने आये साहस बटोरनेके लिए उन्होने तलश्शेरीसे आई हुई विशेष मदिराका सेवन कर लिया था फिर भी उण्णिअम्माके सामने उनकी जबान न खुल सकी

कळरीके अभ्यासोमे माक्कम् स्वय भाग नही लेती थी परन्तु नीलुक्कुट्टीको, शस्त्राभ्यासकी आवश्यकता समझकर, उसने कम्मूके हाथो सौप दिया था नीलुक्कुट्टी कौमार्यकी अवस्था पार कर चुकी थी, इसलिए उसे दूसरे बालकोके साथ भेजना अनुचित समझकर माक्कम्ने कम्मूको निर्देश किया कि वह सुबह-शाम उसके घरके आँगनमें ही शिक्षा दिया करे अभ्यासके समय माक्कम् भी दालानमें बैठा करती थी कभी-कभी वह स्वय भी पिस्तौल चलानेका अभ्यास किया करती थी

मणत्तनाका युद्ध जिस दिन हुआ उसी दिन उसकी वार्ता समस्त देशमे फैल गई थी प्रात स्नान और भगवतीका दर्शन करके जब माक्कम् घर वापस आई तब कम्मूने उसे यह समाचार दिया यह सुनकर कि तम्पुरान स्वय युद्धका सचालन कर रहे है, माक्कम्के हृदयसे यह प्रार्थना निकल पडी—"श्रीपोर्कली भगवती! उनकी रक्षा करना!" शैशवसे ही युद्ध-भूमि-पर जीवन-यापन करनेवाले महाराजा युद्ध कर रहे है, यह सुनकर उस वीरागनाको कोई भय नही हुआ परन्तु परिस्थितियोकी विषमताने उसे आर्त कर दिया

"कुछ भी नई बात मालूम हो तो समाचार देना," कहती हुई

केट्टिलम्मा अन्दर चली गई परन्तु सायकाल हो जानेपर भी कोई समाचार नही आया कम्मूने किसीको भेजकर पता लगानेका प्रयत्न किया, परन्तु युद्धके परिणामके बारेमे कुछ जान नही सका माक्कम्का हृदय व्याकुल हो उठा मनमे बार-बार शकाएँ उठने लगी—"क्या युद्धमे कुछ अनहोनी हो गई? क्या हार गये?" परन्तु उण्णियम्मा प्रसन्न हो रही थी कहती भी रही—"तुम्हारे तम्पुरानका काल आ गया! अधिक घमड करनेका यह फल तो होगा ही!"

माक्कम्ने रातका भोजन भी नही किया असह्य सिर-दर्दके बहाने जल्दी ही कमरेका दरवाजा बन्द करके लेट गई परन्तु व्याकुल हृदयको शान्ति और निद्रा कहाँ? कितने भी प्रयत्न किये, फिर भी मन युद्धकी चिन्तामें ही निरत रहा आँखे बन्द करती तो सहारक रुद्रके समान हाथमें तलवार लेकर खडे तम्पुरानका रूप सामने आ जाता!

इस प्रकार लगभग आधी रात बीत गई तब उण्णियम्माके कमरेका दरवाजा खुलनेकी आवाज आई थोडे ही समयमे पपयवीट्टिल चन्तु नायरकी हँसी और बाते भी सुनाई दी

चन्तु नायरकी आवाज और बात करनेके ढगमे माक्कम्को कुछ अन्तर मालूम हुआ यह स्पष्ट था कि वह शराबके नशेमे बाते कर रहा है जब उसकी आवाज ऊँची हो जाती तो उण्णियम्मा टोकती—"धीरे-धीरे बोलो वह ज्येष्ठा जागती होगी तो सुन लेगी" दपतिका स्वैरालाप सुननेकी इच्छा माक्कम्को बिलकुल नही थी, किन्तु तम्पुरानका नाम बार बार सुनाई पडा इसलिए ध्यान हठात् उस ओर आकर्षित हो गया सभापण-विषयके उत्साहमे अथवा मद्य-लहरीके प्रभावसे चन्तु जोरसे ही बोलता गया

सारी स्थिति और अवस्थाकी गभीरता माक्कम्की समझमे आ गई "इनका घमड अब देखूँगी केट्टिलम्मा* है न? मुझे एक

* राज-पत्नी देखो, पाद-टिप्पणी पृष्ठ ६

नौकरानी-जैसी समझती है दिखा दूँगी।"

"यदि चन्तु मर्द है तो आजसे तीसरे दिन देख लेना तब देखूँगा कि मान और स्थान किसके हाथ रहता है अब किसीके आश्रयमे रहनेकी आवश्यकता नही है चन्तुका सामर्थ्य दुनिया देख लेगी"

इस प्रकार गन्धर्वनगर बनाते-बनाते वे दोनो सो गये

माक्कम्‌को व्याकुलताके कारण नीद नही आई बादमे यह निश्चय करनेमे विलम्ब नही लगा कि क्या करना चाहिए किसी प्रकार उसने थोडा समय और बिताया बादमे धीरेसे अपने शयन-कक्षका द्वार खोल-कर बाहर निकली और उसने कम्मूको जगाया उससे कहा—"रात्रिके अन्तिम पहरमे यहाँसे रवाना होना आवश्यक है उसके लिए एक पालकी और छै-सात अत्यन्त विश्वस्त अनुचरोकी आवश्यकता है इस प्रबधका पता और किसीको न चले"

कम्मू अपनी स्वामिनीकी आज्ञाका पालन करनेके लिए तुरन्त तत्पर हो गया कळरीके सामने ही सोए हुए दो शिष्योको जगाकर उसे यात्रा-के लिए आवश्यक प्रबध कर लेनेमे कोई कठिनाई नही हुई नक्षत्रोकी स्थितिसे उसने अनुमान कर लिया कि इस समय रातके दो बजे होगे कळरीके छात्र उसी स्थानके थे इसलिए पालकी, वाहक तथा अनुचर आदि तुरन्त तैयार हो गये निश्चित समयपर केट्टिलम्मा कम्मू तथा पाँच-छ नायर वीरोके साथ रवाना हो गई

माक्कम्‌ने आज्ञा दी थी कि प्रभात होनेके पूर्व कारेट्ट नामक स्थान-पर पहुँच जाना चाहिए वह कहाँ और किसलिए जा रही थी यह सब कम्मू तथा अनुचरोको ज्ञात नही था

पयर्वीट्टिल चन्तु प्रभात होनेके पहले ही पत्नी-गृहसे† चल पडा प्रभात होते ही कूत्तुपरपु पहुँच जानेका वादा था इसलिए और कोई न देख

† पत्नीका घर देखो, पाद-टिप्पणी पृष्ठ ३१

पाये इस इच्छासे भी, वह वहुत सवेरे ही घरमे निकल गया पतिके जानेके वाद उण्णियम्म। फिरसे सो गई दिन-चढे उठकर, नित्य-कर्मादिमे निवृत्त होकर वह जव अन्त पुरमे आई तव उमे मालूम हुआ कि केट्टिलम्मा घरमे नही है दासीने वताया कि कळरीमे शिक्षा देनेवाले आशान‡ कम्मू भी नही है सुनकर उण्णियम्माने प्रलाप करना शुरु कर दिया—

"कितनी लज्जाकी वात है! किमने सोचा था कि इस वशमे ऐमा भी होगा! किसीके साथ भागनेका साहस उमे कैमे हो गया!' आदि.

उसको कोई शका रही ही नही माक्कम्के वारेमें कोई भी वुरी वात मान लेनेके लिए वह सदैव तैयार रहती थी जवसे कम्मू वहाँ आया है, वह उसका और केट्टिलम्माका नाम जोड-जोडकर ऊल-जलूल वका करती थी यह घरकी दासियोको भी विदित था माक्कम्के प्रति स्नेह और श्रद्धाके कारण अवतक किसीने उसकी वातोपर विश्वास नही किया था अव यह मालूम होने पर कि उस युवकके साथ रातमे केट्टिलम्मा भाग गई है, वे भी उण्णियम्माके साथ हो गई

केट्टिलम्माके भाग जानेकी वात देश-भरमे फैल जानेमें देरी नही लगी इससे अत्यधिक सन्तुष्ट होनेवाले उत्तरी घरके लोग ही थे गृह-स्वामी इक्कण्डन नायर पता लगानेके लिए सुवह-सुवह ही कैतेरीमे आ धमके उन्होने अपने मनके भाव इन शव्दोमे व्यक्त किये—

"औरतोको छूट देनेका फल यही होता है घरमें पुरुष हो तभी मान-मर्यादाकी रक्षा हो सकती है अम्पु अपने तम्पुरानके पीछे फिरता है घरमे औरते अपनी मनमानी करें तो पूछनेवाला कौन है?

"मैने तो कहा था मगर वह तो केट्टिलम्मा (राज-पत्नी) है न? वडी वहन हूँ तो क्या हुआ? मेरा कहना वह क्यो माने? कितनी लज्जाकी वात है!"—उण्णियम्माने कहा

इस प्रकार आरम्भ हुआ सभापण जव समाप्त हुआ तो उण्णियम्मा

‡ आचान, आयान, आचार्य.

को लगा कि "वडे मामाकी वात ठीक है" और "वडे मामाजी"को महसूस हुआ कि "इस घरके लोगोके दोष इस लडकीमें नही है" जव इक्कण्डन नायरने कहा कि "यह सव तम्पुरानके दोष और अम्पुके गुरुत्व-अभिमानने हुआ है" तो वह भी उण्णियम्माको ठीक जँचा वे प्रसन्न होकर अपने घरको चले गये

इक्कण्डन नायर जव उण्णियम्मासे ये सव वाते कर रहे थे तव माक्कम् अनुचरोके साथ कारेट्ट प्रदेश पार कर चुकी थी उसके वादका मार्ग ऐसे विजन वनसे था जहाँसे लोग-वाग वहुत कम आया-जाया करते थे पहले वहाँ लोग रहा करते थे, परन्तु हैदरके आक्रमणके वाद आवादी वहुत कम रह गई थी सारा स्थान झाड-झखाडोसे भरा हुआ था इधर-उधर मकानोके कुछ खण्डहर दिखाई पडते थे, जिनसे पता चलता था कि कभी यहाँ आवादी रह चुकी है टीपूके अधिकार-के समय यह स्थान चोरो और डाकुओका अड्डा वन गया था, इसलिए लोग यहाँसे दूर-दूर ही रहे टीपूके वाद गाँवो और शहरोसे दूरके भागो-में शासन-व्यवस्था पुन स्थापित नही हो पाई, फलत उन उपद्रवियोका प्रावल्य वढता ही गया इस वन-प्रदेशको अनेक तस्कर-नायकोने अपना अड्डा वना रखा था, परन्तु उनमे कुञालि मोय्तीन (कुञ-अलि मोहि-उद्-दीन) नामका एक तस्कर-नायक सवसे प्रवल और भयानक था

जव यह मालूम हुआ कि इसी मार्गसे जाना है तो पालकी-वाहकोने आपत्ति की उन्होने यह भी स्पष्ट कर दिया कि "हमारी आपत्तिका कारण अपने प्राणोका भय नही, वरन् केट्टिलम्मापर सभावित विपत्ति-का ख्याल है कुञालि मोय्तीनके साथ सौ-डेढ सौ लोग होगे आवश्यक हथियार भी होगे हमारे साथके लोग क्या कर सकेंगे ?"

इसका उत्तर कम्मू नही दे सका पालकीके अन्दरसे माक्कम्ने ही कहा—"मोय्तीन यदि तम्पुरानके लोगोको तग करेगा तो वह इन वनोमें कितने दिन जी सकेगा ?" फिर उसने आदेश दिया—"तुम लोगोमेंसे एक

मोयृतीनके अड्डेपर जाकर बता आये कि मै इस मार्गसे जा रही हूँ वह सब प्रवन्ध कर देगा "

पालकी एक स्थानपर रोककर कम्मू स्वय मोयृतीनका अड्डा खोजने-के लिए निकला उसके जानेके थोडी ही देर बाद कुछ हथियारबन्द लोग आते हुए दिखाई दिये एक भीमकाय पुरुष हाथमे तलवार लिये उनके आगे-आगे चल रहा था लम्बी दाढी-मूँछे, लाल-लाल आँखे और टोपी आदि देखकर माक्कम्ने अनुमान कर लिया कि वह कोई मुसलमान तस्कर है उसने यह भी सोचा कि यह मोयृतीन ही हो सकता है उसका हाथ तुरन्त अपनी कमरमे छिपी हुई पिस्तौलपर जा पहुँचा

तस्कर-नेताकी आकृति, उसकी रुक्षता और उसके अनुचरोके मुखसे प्रकट होनेवाली क्रूरतासे माक्कम्का हृदय भी अस्थिर हो उठा फिर भी वह "जो हो, सो हो" सोचकर पिस्तौल हाथमें लेकर खडी हो गई पालकी-के वाहक वहाँसे इस प्रकार गायब हो गए जैसे भेडियेको देखकर बकरियाँ भाग खडा होती है अब उसकी सहायताके लिए केवल वे नायर-बालक ही थे, जिनका अभ्यास अभी पूरा नही हुआ था उनके चेहरोमे भी ऐसा प्रकट हो रहा था कि वे बहुत डर गये है

वाहकोका भागना, नायर-युवकोके भयभीत चेहरे और क्रोध तथा धैर्यके साथ खडी माक्कम्—यह सब देखकर उस तस्करने परिहासके साथ अट्टहास किया उस विजन प्रदेशमे उसका अट्टहास किसी पिशाचके दुस्सह गर्जनके समान मालूम हुआ परन्तु प्रतिध्वनिके वायुमे विलीन होनेसे पहले ही उसका भाव बदल गया उसके सामने लगभग एक फुट-की दूरीपर एक बाण आकर गिरा उसी समय दाहिनी और बाई ओर भी उतनी ही दूरीपर एक-एक बाण आकर गिरा तस्करने चारो ओर देखा, पर कही कोई दिखलाई नही पडा

उन अस्त्रोका सदेश दोनो पक्षोकी समझमें आ गया यदि वह पीछे हटनेके अलावा जरा भी हिले तो अगला तीर उसका कण्ठ छेदकर निकल

जायगा इन विषयोंका पर्याप्त परिचय रखनेवाला मोयृतीन क्षण-मात्रमें सब-कुछ समझ गया माक्कम्ने भी जान लिया कि यह वाण फेंकनेवाले कुरिच्य लोग ही हैं "कीचक मरा तो मारा भीमसेनने" इस न्यायके अनुसार माक्कम्को यह भी मालूम हो गया कि यदि कुरिच्यर (कुरिच्य लोग) मेरे सहायक हैं तो यह मेरे प्रियतम महाराजाकी ही आज्ञासे हैं अपनी रक्षाके वारेमें तम्पुरानकी चिन्ताका खयाल करके वह गद्गद् हो उठी

मोयृतीनको भी कोई शका नही थी उसके आवास-स्थान इस वन-में उसे रोकनेवाला कुरिच्योंके अतिरिक्त कोई नही हो सकता, यदि कुरिच्यर इसमें शामिल हैं तो यह तम्पुरानकी आज्ञासे ही होगा, इसका अर्थ है कि ये पथिक तम्पुरानके वन्धुजन हैं—यह खयाल आनेके वाद अपना कर्तव्य निश्चित करनेमें उसे विलम्व नही हुआ एक इशारेसे अपने अनुयायियोंको वापस भेजकर सामने पडे वाण को उसने उठा लिया फिर एक-दो कदम आगे चलकर, माक्कम्को झुककर सलाम करनेके वाद उसने कहा—"तम्पुरानके स्वजनोंके लिए हमारे स्थानमें कोई रोक-टोक नही है मोयृतीन भी तम्पुरानका सेवक है इसलिए थोडी देर आराम करके आगे वढें तो वडी कृपा होगी"

इसका उत्तर माक्कम्के अनुचरोंमेंसे एकने दिया—"केट्टिलम्मा कुछ जरूरी कामसे शीघ्र ही जाना चाहती है"

"केट्टिलम्मा" सुनते ही मोयृतीनने एक वार फिर झुककर सलाम किया और कहा—"अम्पु यजमान हमारे मालिक हैं मोयृतीनके योग्य क्या काम है ? हुक्म दीजिये आपका हुक्म ईश्वरके हुक्मके समान माना जायगा"

माक्कम्—आपके वारेमें मैंने भी सुना है मुझे जल्दी-से-जल्दी उस स्थानपर पहुँचना है जहाँ तम्पुरान विराजमान हैं कुछ सहायकोंको मेरे साथ भेज दीजिए

मोयृतीन—इस जगलके आगे, पहाडके नीचेतक मैं पहुँचा दूँगा. उसके आगेका मार्ग मुझे भी मालूम नही कुरिच्यर ही जानते हैं

माक्कम्—फिर मैं आज ही कैसे पहुँच सकूँगी ?

मोय्तीनने जरा सोचकर उत्तर दिया—मैं पहाडके नीचे पहरा देने वाले कुरिच्य-नायकको समाचार दूँगा आप पधारी हैं, यह सुनते ही क्या वे आवश्यक प्रवन्ध नही करेंगे ?

माक्कम्ने इस वातको मान लिया तवतक कम्मू भी आ गया मोय्तीनके अनुचर फल-मूलादि लेकर आये भोजन और विश्राम करके केट्टिलम्माने पहाडके लिए प्रस्थान किया

दसवाँ अध्याय

०

अविञ्जिवक्काट्टु केट्टिलम्मा (बडी राज-पत्नी) भोजनके बाद चाँदी-के पानदानसे आवश्यक सामग्री लेकर पान खानेकी तैयारीमे थी स्नान करके शुभ्र वस्त्र और आभरण आदि धारण करके, काजल लगाकर वे उस काननमे भी अपने राजमहलके समान ही रहती थी इस विषयमें पहले-पहल कुछ लोगोने आलोचना की थी तबके ट्टिलम्माने स्वय उत्तर दिया था—"तम्पुरान जहाँ विराजमान है वही मेरे लिए राज-प्रासाद है मेरे लिए जगल और घरमे क्या भेद ? जहाँ मेरे स्वामी है वहाँ चाहे जगल हो चाहे पषश्शिका महल हो, मेरे लिए एक-सा है" इसके प्रतिकूल कुछ कहनेका साहस किसीको नही हुआ महाराजाने तो केट्टिलम्माके उस व्यवहारका अभिनन्दन ही किया

केट्टिलम्माकी उम्र चालीस वर्षकी हो चुकी थी वे पन्द्रह वर्षकी आयुमे महाराजाकी पत्नी बनकर पपश्शिमे आई थी उस दिनसे अबतक उस साध्वीको अपने देशमें रहनेका अवसर कम ही मिला है विवाहके एक-दो मास बाद ही उसे पतिका अनुगमन करके वनमे निवास करना पडा था अन्य राजा अपनी पत्नियोंके साथ तिरुविताकूरमे शरण लेने गये तब कुञ्जानि* केट्टिलम्माने केरलवर्माके साथ पुरळी पहाड़मे शरण

---

* अविञ्जिवक्काट्टु कुञ्जानि केट्टिलम्मा अविञ्जिवक्काट्टु नाम, कुञ्जानि—स्वनाम, केट्टिलम्मा—राज-पत्नी, बडी ९

पहले पच्चीस वर्ष वही वन उनका भवन रहा कपनीके साथ सधिके वाद जव थोडे दिन महाराजाने राजधानीमे वास किया था तव वे भी उनके साथ पपश्शिमे रहती थी परन्तु वहाँ उनको सचमुच कोई विशेप सुख नही मिला उन्होने महसूस किया कि वन-भोग ही राज-भोगोमे अच्छे है

इस ढलती हुई आयुमें भी उनके सौंदर्यमे कोई कमी नही आई थी नवनीतके समान कोमल शरीरको स्वर्ण-वर्ण असाधारण कान्ति प्रदान कर रहा था ऊर्मिल, लवी केश-राशि स्नानके उपरान्त छोर वाँधकर छोड दी गई थी विशाल नेत्र, काम-धनुपके समान भृकुटियाँ, रत्न-जटित कर्ण-फूल, ताम्बूल-लालिमाके विना ही लाल बने अधरोष्ठ, मुख-कमलमे सदा प्रत्यक्ष प्रफुल्लता आदि इस तथ्यको व्यक्त कर रहे थे कि कुञ्ञानि केट्टिलम्मा ही तम्पुरान-जैसे महापुरुपकी धर्म-पत्नी वनने योग्य है शरीर थोडा मासल होने लगा था और यही एक कारण था जिससे लोग उनकी आयु चालीसके लगभग मानते थे

सकल कला-निष्णात पतिके साहचर्यके कारण केट्टिलम्माने भी साहित्य-सगीत आदिमे प्रवीणता प्राप्त कर ली थी सुना जाता था कि कथकलिके लिए तम्पुरान जो गीत लिखते थे उन्हे केट्टिलम्माको गाकर सुना देनेके वाद ही ग्रथमे लिखा जाता था

श्रीरामचन्द्रके पीछे सीताके समान पतिका अनुगमन करके वनवास स्वीकार करनेवाली इस पति-परायणाकी महाराजाके अनुयायी देवीके समान आराधना करते थे उस स्थानमे केट्टिलम्मा और उनकी एक चारिका के अतिरिक्त कोई स्त्री नही थी

एक सेवकने आकर कैतेरी केट्टिलम्माके आगमनकी सूचना दी और भोजनके उपरान्त पानमें चूना लगाने बैठी हुई कुञ्ञानि केट्टिलम्माका विश्राम समाप्त हो गया पान को वैसे ही छोडकर वे वाहर आई और उन्होने पालकीसे उतरकर आती हुई माक्कम्का स्नेह-सिक्त मन्द हासके साथ स्वागत किया परस्पर आश्लेषणमे एक देह वना वह राज-पत्नी-युगल अदर चला गया

"घरमें सब कुशलसे तो है ? सूचना दिये बिना कैसे चली आई ?" कुञ्जानि केट्टिलम्माने पूछा

"कार्य बडा महत्त्वपूर्ण है यह सोचकर स्वय ही निकल पडी कि यदि महाराजाको शीघ्र-से-शीघ्र खबर कर दी जाय तो शायद आनेवाली विपत्तिका उपाय हो जायगा"

बडी राज-पत्नीने माक्कम्के मुखसे कार्यकी गभीरताका अनुमान कर लिया उन्होने कहा—"आज चार दिन हो गए, तम्पुरान कुट्टियाडिच्चुरम्-मे उतरकर नीचे गये है कल मणत्तनामे थे आज सुना है कण्णवत्तुमे होगे बात क्या है ?'

"जीजी, आपसे क्या छिपाना है ? कपनीकी सेनाकी एक टुकडी इस स्थानपर अधिकार करनेके लिए निकली है"

"इस स्थानपर ? यहाँ वे कैसे पहुँचेंगे ? मार्गमे सभी जगह आवश्यक पहरा जो है ?"

"वे सीधे रास्तेसे नही आ रहे है पीछेके गुप्तमार्गसे सुरगमे आयेंगे और फिर उसी मार्गसे आगे बढेंगे"

बडी केट्टिलम्माको आश्चर्य हुआ सुरगका गुप्तमार्ग तम्पुरानके मुख्य सलाहकारोको भी नही मालूम था सीधे मार्गके अलावा कोई सुरग-का मार्ग है भी, इसकी जानकारी भी कण्णवत्तु नम्पियार, तलैक्कल चन्तु, अम्पु नायर, पषयवीट्टिल चन्तु, महाराजा, उनके दो भानजो और केट्टिलम्माके अलावा किसीको नही थी

बडी केट्टिलम्मा जरा सोचकर बोली—उनको उस मार्गका पता नही हो सकता यदि उसके बारेमें अनुमान कर लें तो भी कितना ही ढूँढें, उसे नही पा सकते हमारे बीच भी तम्पुरान और राजकुमारोको छोडकर चार ही लोग उसे जानते है

माक्कम्—आपका कहना ठीक है, परन्तु इन चारोमें ही कोई एक उनका मार्ग-प्रदर्शन करे तो ?

"यह कभी नही हो सकता तम्पुरानको उनमेंसे एक भी धोखा नही दे सकता"

"तो सुनिये, अब हमारी स्थिति चारो ओर आग लगाकर बीचमें रहने-जैसी है. पपयवीट्टिल चन्तु नायर कपनीका आदमी बन गया है वही हमको धोखा देगा"

वडी केट्टिलम्माको विश्वास नही हुआ चन्तु धोखा देगा यह कैसे माने ? बचपनमें वह अनाथ और अशरण होकर तम्पुरानके पास अनुग्रह-याचनाके लिए आया था और तम्पुरानने उसे इतने ऊँचे स्थानतक उठाया आजतक वह उनका दाहिना हाथ रहा कितना भी बुरा हो तो भी क्या वह खिलानेवाले हाथको ही काट लेगा ? अभी तो तम्पुरान उस-पर कितना विश्वास करते हैं वह स्वपुत्रके समान प्रेम करनेवाले तम्पु-रानको अकारण ही धोखा देगा ?

उनके हृदयमें इसी प्रकारके विचार दौडने लगे कुछ समयतक वे चुपचाप बैठी रही इस बीच उन्हे क्रमश चन्तुके स्वभावमें आया हुआ अन्तर याद आने लगा अपने साथके व्यवहारमे ही जो भिन्नता दिखाई दी उसका भी स्मरण उन्हे हुआ अबतक इस सबको उन्होने उसकी बुद्धिहीनता समझकर उपेक्षित कर रखा था सब मिलाकर जब सोचा तो यथार्थतापरसे कुछ परदा उठा अन्तमें उन्होने पूछा—"मेरी बहन ! तुमने यह सब कैसे जाना ?"

गत रात्रि की सारी घटना माक्कम्ने विस्तारपूर्वक वडी केट्टिलम्मा-

सुना दी

वडी केट्टिलम्माने कहा—कुछ भी हो हम जान तो गये अब परि-

हो सकता है आज रातके पहले वे पहाडकी तलहलटीतक भी नही

सकते महाराजाको तुरन्त समाचार देना चाहिए उनको रोकनेके

लिए तो उनका आना आवश्यक नही है, तलयकल चन्तु यहाँ पहुँच

गये हैं"

उसी समय उन्होने तलयकल चन्तुको बुलवाया जब उस वनचर-

नायकको सब बातें सुनाई तो उसके मुखसे एक मन्दहास निकल पड़ा उसने कहा—"ताँबा प्रकट हो गया न ? कुछ दिनोंसे मुझे शका थी ही अन्नदाताके स्नेह और विश्वासको सोचकर कुछ कहा नही, लेकिन सावधान तो था ही आने दीजिए उसको और उसके कपनीवालोको एक भी जीवित नही जा पायगा"

कुरिच्य-नेता आज्ञा लेकर गया उसने तम्पुरानको समाचार देनेके लिए आदमी भज दिया और केन्द्र-स्थानके गुप्त मार्गकी रक्षाके लिए स्वय निकला सुरगका दरवाजा बडे-बडे शिला-खडोंसे बन्द कर देनेके लिए आदमी नियुक्त किये गये लगभग दो सौ कुरिच्योंके साथ वह अविलम्ब जगलोंमे छिप गया

इधर दोनो राजपत्नियाँ इस समाधानके साथ अन्त पुरमें चली गई कि पपयर्वीट्टिल चन्तुके विश्वास-घातका उपाय कर दिया गया स्नान और भोजनके पश्चात् माक्कम् और कुञ्ञानि केट्टिलम्मा बैठकर बातें कर रही थीं महाराजाका दाक्षिण्य, धीरता, पराक्रम आदि ही उनके सभाषणका केद्र-बिन्दु था कुछ देर बाद माक्कम्ने पूछा—"आजकल कविता नही लिखते क्या ?"

छोटी केट्टिलम्माने उत्तर दिया—'कृम्मीर वध' नामकी एक कथा लिख रहे है पहला भाग लिख चुके है"

"जितना हो चुका है उतना दिखायँगी ? आप ही के पास होगी न पाण्डुलिपि ?"

"अवश्य, परन्तु अपूर्ण विद्या आचार्यको भी नही दिखानी चाहिए और काव्य-रचनामें तो तुम आचार्या भी हो"

"मै आचार्या हूँ ? तम्पुरान जो गीत आदि रचते है उनको गाकर ठीक करना और ताल, लय आदिके अनुसार सशोधित करना किसका काम है ? इसे कौन नही जानता ?"

कुञ्ञानि केट्टिलम्माने सन्दूक खोलकर धागेमें बँधे हुए चार-पाँच

ताली-पत्र लेकर माक्कम्‌के हाथपर रख दिए माक्कम् दोनो हाथोमे लेकर पढने लगी—

कालाम्बुदरुचि तेडु विपिने कामिनि। वन्नतिनालतिगहने
डोलायितमिह मामक हृदय लोकोत्तर गुणशालिनि। सदय *

(अर्थात्—काले बादलके समान अधकारमय विपिनमे, इस अति गहन वनमे आनेसे, हे कामिनि! लोकोत्तर गुणशालिनि! मेरा हृदय दयासे द्रवित होकर दोलायमान हो रहा है)

यह पद पढते-पढते माक्कम्‌का कठ गद्‌गद् हो आया हृदयमे हिलोरे मारनेवाले विचारोको दबाते हुए उसने कहा—"स्वानुभवका वर्णन करनेवाली कविताका महत्त्व कुछ अलग ही है ये शब्द उन्होने आपसे ही कहे होगे"

"चुप पगली!" बडी केट्टिलम्माने स्नेहपूर्वक डाँटा

"जीजी, आपने इसका क्या उत्तर दिया यह जाननेकी उत्सुकता बढ रही है" कहती हुई वह आगे बढी—

कान्ता। चिन्तिक्कलितिलेरे एन्तोरु
सन्ताप मिन्निह मे।

(अर्थात्—हे कान्त! इससे अधिक सन्ताप मेरे लिए और क्या हो सकता है?)

महीपाल रणिञ्ञीडु मुकुटेपु विळडुन्न
मणिदीपमतायुल्ल तव पदयुगल,
मार्गमध्ये, तप्त मणलिलिडने मरवीडुन्नतिनाल
मनसि मे शोक वळरुन्नू, मेनितळरन्नू ताप
कलरुन्नू हन्त। किमिहआन परयुन्नू †

---

* 'कृम्मीरवध-आट्टकथा' मे यह वर्णन उस समयका है जबकि द्वैत-वनमें युधिष्ठिर पाचालीसे बातचीत कर रहे थे 'आट्टकथा'—अभिनय-कथा, कथकलि-साहित्य

† पाचाली का उत्तर

(राजाओंके मुकुट-रत्न तुम्हारे इस दोनो चरणोको जव मै मार्गकी गर्म रेतपर पडते देखती हूँ तव मनका दु ख असह्य हो उठता है, शरीर विवश हो जाता है, हृदय जल उठता है ! हाय ! मै क्या करूँ ?)

माक्कम्की आँखोमे आँसू भर आये वनवास का दु ख जो भुलाये हुए थी उस वडी केट्टिलम्माका हृदय भी उद्विग्न होने लगा कुछ समयतक वे चुप रही, फिर माक्कम्ने कहा—"जीजी, यह गीत तो आपने ही लिखा होगा ! स्त्री-हृदयके लिए इतना योग्य पद और कोई नही लिख सकता"

"तुम क्या कहती हो ? तम्पुरानकी कवितामे मैं हस्तक्षेप करूँगी ?"

"आप कुछ भी कहे जीजी, मै तो नही मान सकती उस '**बाले ! नी केल मम वाणी**' ('वाले ! मेरी वात सुनो !'—युधिष्ठिरका उपर्युक्त कथन) आदि पदका उत्तर आप ही इतना ठीक लिख सकती है !"

"इतना मज़ाक मत उडाओ, नही तो मुझे भी कुछ कहना होगा. मालूम है रातको तम्पुरान किसके वारेमे श्लोकोकी रचना करते है ? अभी दो ही दिन हुए, मेरे हाथमे एक श्लोक आया है"

माक्कम्ने अनुनयके स्वरमे कहा—वह क्या है, जीजी ?

वडी केट्टिलम्माने हँसते हुए उत्तर दिया—"दिखाती हूँ, दिखाती हूँ !" और वे सावधानीसे रखा हुआ एक ताल-पत्र उठा लाई "वताऊँ, कहाँसे मिला यह ? दोपहरको जिस पलगपर वे विश्राम करते है उसके तकियेके नीचेसे !"

"दीजिए, पढूँ !"

"नही, नही ! मै ही पढूँगी"—कहती हुई वडी केट्टिलम्मा सुनाने लगी—

> जानी । जातानुकम्प भव । शरणमये । मल्लिके । कूप्पुके, ते
> कैने । केतेरि माक्कम् कवरियिलरिणवान कय्युयतु दशाया

एतानेतान मदीयानलरगर परितापोदयानाशुनी तान्
नीतान नीतानुराणींडुक चटुल कयलकरिरा तन् कर्णमूले

(अर्थात्—हे जाति-पुष्प ! मेरे ऊपर दया करो ! हे मल्लिके ! मैं हाथ जोडता हूँ तुम्हारी शरण आता हूँ हे केतकी पुष्प ! जब कैतेरी माक्कम् तुम्हे हाथमे लेकर बालोमें लगानेके लिए उठाये तब मेरे हृदयका कुछ-कुछ विरह-ताप उस सुन्दरीके कर्णमूलमें विस्तारपूर्वक कह देना)

और फिर उन्होने कहा—"देखा, स्वानुभवका वर्णन करनेवाली कविताका महत्त्व ! फिर भी इस विरहकी अवस्थामे मेरी छोटी बहन फूलोमे सजकर बैठेगी यह बात मेरी समझमे नही आई "

माक्कम्—मुझे तो फूल छुए भी कितने महीने हो गए ! उनके दिल-मे ऐसा क्यो आया ? जीजी, तुम्हे मुझसे जरा भी प्रेम हो तो इसको फाड डालो !

"वाह-वाह ! तम्पुरानका लिखा ताल-पत्र फाड डालू ? कवि लोग ऐसा बहुत-कुछ लिखेगे इसमें क्या ? लेकिन एक बात तो स्पष्ट हो गई—तुम साथ न हो तो भी सदा हृदयमें रहती हो ! यही सबसे बडी बात है न?"

"जीजी, आपका प्रेम और दाक्षिण्य ही मेरे लिए सबसे बडी वस्तु है वह पत्र एक बार मुझे दिखाइए "

"और यदि तुम उसे फाड डालो तो मैं तम्पुरानसे क्या कहूँगी ? प्रतिज्ञा करो कि नही फाडोगी, तो दूँगी "

"आपकी सौगंध ! नही फाडूँगी !"

"यदि तुम फाड डालो तो यह श्लोक मुझे कंठस्थ है—मेरे हृदयस्थ उसको कोई नष्ट नही कर सकता कितना अच्छा श्लोक है !"

माक्कम्ने उसे हाथमे लेकर दो-तीन बार पढा इसपर हँसते हुए बडी केट्टिलम्माने कहा—"याद कर रही हो ? कर लो ! कर लो ! जाकर जाति, मल्लिका, केतकी, सभी पुष्प एक साथ लगाओ परन्तु जब लगाना तब वे कुछ कहते हैं या नही, सावधानी से सुन लेना "

इस प्रकार सौहार्दमय सम्भाषण करते हुए उन दोनोने समय बिताया

उधर, तलश्कल चन्तुका भेजा हुआ कुरुच्य सध्या समय कणवत्तु पहुँचा निश्चित समयपर ही तम्पुरान एक छोटी सेनाके साथ वहाँ पहुँच चुके थे मेजर होम्सकी सेनाके मणत्तनाकी ओर जानेपर तीनो ओरसे उसपर आक्रमण करनेकी उनकी योजना थी उनके भानजे केरल वर्मा राजकुमारके अधीन कुछ नायर और कुरिच्य-योद्धा मणत्तनासे दूर जगल-मे थे अम्पु नायरकी सेनाने मानचेरीसे रवाना होकर कपनीकी सेनापर पीछेसे आक्रमण करनेका निश्चय कर रखा था इस प्रकार दोनो ओरसे आक्रमण होनेपर जब उसके जानेका कोई मार्ग न रहे तब उसको नष्ट कर देनेके लिए तम्पुरानने अपनी सेना मोर्चेपर जमा रखी थी इसके लिए आवश्यक निर्देश दिये जा चुके थे ऐसे समयपर अम्पु नायर दर्शनके लिए उपस्थित हुए

अम्पुकी मुख-मुद्रामे ही तम्पुरानने ताड लिया कि वे किसी गभीर विषयपर बात-चीत करने आये है उन्होने शान्तिके साथ पूछा—"क्यो अम्पु, सब काम कैसा है?"

"महाराज ! श्रीपोर्कली भगवतीकी कृपासे सब शुभ ही हुआ उत्तर-के सभी नायर अपनी शक्ति-भर मदद करेगे कटत्तनाट्टु तम्पुरान सीधे सामने आना छोडकर सब-कुछ करनेको तैयार है इरुवनाट्टुके सब नम्पियार भी वैसे ही है चिरक्कल तम्पुरान भी मदद करेगे "

"फिर तुम क्यो इस प्रकार कटार निगले-जैसे खडे हो ?"*

"निवेदन कर रहा हूँ हमारे सामने एक भयानक स्थिति आ गई है"

"स्पष्ट कहो छिपाते क्यो हो ?"

"कम्पनीका नया सेना-नायक सामान्य नही है उसने सीधे हमारे

---

* व्यग्याभासपूर्ण वाक्प्रयोग घबराये हुए और स्तब्ध दूसरा वाक्प्रयोग—"कटार निगलना है, आडी निगलना है, अभी निगलना है, यही निगलना है"—असाध्य कार्य का आग्रह करना

साथ लडनेके वदले हमारे सहायकोका मूलोच्छेद करनेका निश्चय किया है इरुवनाट्टुमे जो किला वनाया जा रहा है उसका यही उद्देश्य है कट्टनाट्टुके तम्पुरानको डरानेके लिए भी एक आदमी भेजा गया है शेष सवको भी नष्ट कर देनेका उद्देश्य है"

"हमारे गुप्त साथी कौन-कौन है, उसको कैसे मालूम होगा ?" उनके नाम तो हमारे मन्त्रियोंके अतिरिक्त किसीको भी मालूम नही है ?

"ऐसा एक व्यक्ति अव उनके पक्षमे हो गया है"

"क्या ? हमारा सचिव ?"

अम्पुने पपयवीट्टिल चन्तु नायरसे तलश्शेरीमे भेट होनेसे लेकर अन्त-तकका सारा वृत्तान्त तम्पुरानको कह सुनाया वह सव सुनकर धीराग्रणी और स्थिरधी महाराजा भी आश्चर्य और दु खसे स्तब्ध हो गए मेरा विश्वास-पात्र सेवक चन्तु ही विरोधी होकर कम्पनीका साथ देगा ? पिछले पच्चीस वर्षोकी कहानी तो कुछ और ही वताती है कितनी-कितनी विपत्तियोंमें चन्तुने मेरा साथ दिया अपने प्राणोको तृणवत् मानकर कितनी वार मेरी रक्षाके लिए असाधारण धैर्य दिखाया वह अनाथ होकर वाल्य-कालमे मेरे पास आया था, और उसकी विश्वस्तता, धैर्य आदि देख-कर ही तो मैने उसे इतना वढाकर प्रतिष्ठित वनाया ! पपयवीडु* मे जव सन्तान नही थी तव अपने प्रभावसे उस प्राचीन कुटुम्वमें उसे गोद लिवाकर उसे देशका प्रमुख वनवाया ! कैनेरीकी वडी पुत्रीसे विवाह कराकर उसका गौरव वढाया ! मन्त्रियोंमेसे एक वनाकर अत्यधिक [illegible]धिकार भी दिया इस कृपाके अनुरूप ही आजतक उसने मेरी सेवा [illegible] अव वह मेरे और स्वदेशके प्रति विश्वास-घात करेगा यह कैसे माना जाय ?

तम्पुरान चिन्ता-क्लान्त होकर वहुत देरतक चुप रहे उन्होने यह

---

*घरका नाम, 'पपयवीडु' चन्तुके वदले 'पपयवीट्टिल' चन्तु कहा जाता है

शका भी की कि यह सारा एक दु स्वप्न होना चाहिए

इस दीर्घ मौनको अम्पुने तोडा उसने कहा—"तम्पुरानके पहाडोमें पधारनेके पूर्व ही मुझे यह शका हुई थी कुछ दिनोमे अपने उत्तरके गृहाधिपतिके साथ मित्रताका व्यवहार देखकर मैंने जाँच-पडताल की, परन्तु कुछ स्पष्ट मालूम नही हुआ नये कर्नल का दुभाषिया वेश बदलकर उस घरमे आता है, यह समाचार मुझे मिला था अन्तमे जब तलश्शेरीमे मिला तब सारा रहस्य प्रकट हो गया"

"अब हमें क्या करना चाहिए ?" तम्पुरानने पूछा

"यदि अगुलीमें विष चढ जाय तो उसे काट देना ही उचित है"

तम्पुरान चुप रहे अम्पु कहता गया—"इस समय सकोच करना बहुत सकटमय हो जायगा हमारे सभी सहायकोको वह कर्नलद्वारा नष्ट करा देगा अभी निश्चयपूर्वक यह नही मालूम कि वज्रावात कितने लोगोपर हुआ है"

तम्पुरान—दूध पिलानेवाले हाथसे ही जहर कैसे दूँ ? उसे पकडकर कैदमे नही रख सकते क्या ?

"उसका धैर्य, पराक्रम और युद्ध-कुशलता आप जानते है उस दुशासनको वन्दी बनाना सभव नही मालूम होता इसलिए आज्ञा दीजिए—"

"उसने हमारे लिए क्या क्या किया ! एक बारकी गलतीसे सारी पूर्वकथाको कैसे भुला सकता हूँ ?"

"दासको लगता है कि इस समय दया करना गलत होगा आज्ञा दीजिए स्वामी !"

तम्पुरान धर्म-सकटमे पड गये बोले—"मुझे कुछ नही सुनना जैसा ठीक समझो, करो"

उसी समय वृश्चिय दूत वहाँ आपहुँचा उसके पाससे वटी केट्टिलम्माका यह सदेश पाकर कि "महाराजका तुरन्त यहाँ पधारना आवश्यक है" तम्पुरानके हृदयमे और भी घबराहट पैदा हो गई पचीस वर्षके

भीषण युद्ध-कालमे कभी कुञ्ञानि केट्टिलम्माको तम्पुरानने घबराते हुए नही देखा युद्ध-कार्योंमे चिरपरिचित उस वीर क्षत्राणीका युद्धमे फँसे हुए पतिको इस प्रकारका सदेश भेजना अवश्य ही किसी गभीर कारणका द्योतक है, यह तम्पुरानने निश्चय जान लिया हेतु न जाननेमे वहाँ पहुँचनेके लिए वे व्याकुल हो उठे उन्होने कहा—"अम्पु, कलके युद्धके लिए अब मै नही रुक सकूँगा तुरन्त पहाडपर पहुँचनेकी आव-श्यकता है यहाँकी सेना तुम्हारे नेतृत्वमे युद्ध करे मानचेरीमे कोई दूसरा सेना-नायक तो है न ?

"जी, हाँ"—अम्पुने तत्काल उत्तर दिया—"कोई गडबडी नही होगी शक्ति-भर सँभालनेका प्रयत्न करूँगा"

तम्पुरानने कहा—कोई दुस्साहस नही करना सोच-विचारकर काम करना"

और तत्काल ही वे रवाना हो गये

ग्यारहवाँ अध्याय

१

दूसरे दिनका युद्ध महाराजाकी योजनाके अनुसार ही चला मेजर होम्सके अधीन कम्पनीकी जो सेना आई वह तीनों ओरसे आक्रमण करके छिन्न-भिन्न कर दी गई मेजर होम्स और चार गोरे उप-सेनानायकोंने हथियार डालकर हार स्वीकार कर ली तम्पुरानकी सेनाको बहुत-सी बन्दूकें और युद्ध-सामग्री मिली अम्पु गोरे नायको और सामग्रीको लेकर पहाड़पर चढ़ने लगे

जब यह समाचार सन्देशवाहकके द्वारा तलश्शेरीमें पहुँचा तो वहाँ वर्णनातीत कोलाहल मचा शान्त स्वभाव वेलेस्ली कुपित होकर संहार-रुद्रके समान अपने कार्यालयमें टहल रहा था उसकी क्रोधान्ध जल्पनाओंका साराश यह था कि यदि तम्पुरानको जीतना हो तो पहले तलश्शेरी दुर्गके सब कर्मचारियोंको फाँसीपर चढा देना होगा

वह मन-ही-मन सोचने लगा—कप्तान स्टुवर्ट घायल होकर शत्रुके हाथमें पड़ गया और उसकी सारी सेना नष्ट हो गई इतना ही नहीं, उस छावनीका सारा सामान शत्रुके हाथ लग गया अब मेजर होम्स अपने चार साथियोंके साथ कैद हो गये हैं यद्यपि यह सब मेरी योजनाओंमें बाधक नहीं हो सकता, फिर भी इतना तो स्पष्ट है कि इस प्रकार बार-बारकी पराजयोंका कारण हमारे अन्दरका षड्यन्त्र ही है इस अनुमानको सबल बनानेके लिए और भी बातें दिखाई दे रही थी.

शत्रुको मदद करनेके अपराधमे जिस उण्णिानडाको सिविल अधि-कारियोंको सौंपा गया था उसे बिना जाँच-पडतालके छोड दिया गया तम्पुरानको मदद करनेवाले प्रभुजनोको पकडनेके लिए जिन लोगोंको भेजा गया था वे सब पराजित होकर लौट आये केवल चुपली नम्पि-यारको पकडा जा सका वह भी इसलिए कि नम्पियार बीमार होनेके कारण हट नही सकते थे वयनाट्टिल एमन नायरको भी गिरफ्तार करके श्रीरगपट्टन ले जा सके. अन्य लोगोके घरोंमे जब कम्पनीके लोग पहुँचे तब उनमेंसे हर एक किसी-न-किसी कारणवश बाहर था वेलेस्लीने निश्चित अनुमान कर लिया कि शत्रुको हमारी योजनाओंका तुरन्त पता देने-वाला कोई प्रबल गुट तलश्शेरीमे मौजूद है उसका दमन किये बिना हमारी योजनाएँ सफल नही हो सकती

सबसे पहले उसने सुपरवाइजर बेबरको बुलवाया—और उसे सारी स्थिति समझाई बबरने इस भावसे कि कर्नल मेरे ऊपर विद्रोहका अपराध लगा रहे है, कहा—"इस प्रकारका कोई सगठन तलश्शेरीम हो ही नही सकता आप तो खिसियाकर अपनी पराजयोका रोष नागरिक अधिकारियोपर उतारना चाहते है" कर्नल भी जानता था कि यथार्थमे सुपरवाइजर निर्दोष है उसकी सहायताके बिना शहरमे शासन चलानेका अधिकार सेनापतिको नही था इसलिए उसने उसे भय दिखा-कर काम चलानेके इरादेमे कहा—"मैंने जो बात कही है वह कितनी गभीर है, आप जानते है ? जब यह सब कलकत्ता मे मालूम होगा तो ... पैदा हो जायगा"

बेबरने समझ लिया कि अपने बडे भाई गवर्नर-जनरलको बताकर मुझे दण्ड दिलानेकी बात वेलेस्ली समझाना चाहता है परन्तु इससे वह डरा नहीं वह जानता था कि गवर्नर-जनरलका एक विरोधी दल भारतमें ही मौजूद है वह यह भी जानता था कि इग्लैंडमें कम्पनीके सर्वाधिकारी डनडास उसी पक्षके समर्थक है और इस बीच गवर्नर-जनरलको कई चेतावनियाँ भी मिल चुकी है जबसे कर्नल वेलेस्ली तल-

ज्यो ही आकर अपना अधिकार दिखाने लगा तबसे वेबर बम्बईमे रहने-वाले अपने ऊपरी अधिकारियोसे बराबर सलाह किया करता था उनका निर्देश था कि नागरिक कर्मचारियोको सैनिक अधिकारियोकी आज्ञा माननेकी आवश्यकता नही है और यदि वे बाध्य करे तो अधिकारी स्वय इस विषयमे लदनसे लिखा-पढी करेगे इस आधारपर ही वेबरने उत्तर दिया—"ठीक है, आप लिख सकते हैं मुझे निर्देश मिला है कि नागरिक शासकोपर सैनिक अधिकार नही चल सकता मै भी बबईको लिख दूँगा कि आप क्या चाहते है"

कर्नल वेलस्ली केवल सेनापति ही नही था उसमे राजनीति-ज्ञान भी इंगलैण्डका प्रधानमत्री बनने योग्य था उसने समझ लिया कि किस बलपर वह इस प्रकारकी बात कह रहा है, इसलिए उसने अनुनयकी भाषामे कहा—"हमारे बीच फूट पड गई तो कपनीका हित नही होगा इस शहर-मे कुछ लोग हमारे विरुद्ध काम करते है इसका मुझे प्रमाण मिल चुका है मेरी प्रार्थना है कि आप उनको दबानेका प्रयत्न करे"

वेबरने कहा—यदि ऐसा कोई सगठन हो तो मै अवश्य ही उसे दबा-ऊँगा, परन्तु इसका प्रमाण क्या है ?

कर्नल—सुनिए, आपको वह स्त्री जेलमे रखनेके लिए सौंपी गई थी आपने उसे छोड क्यो दिया ? उसका अपराध कुछ मामूली तो नही था ?

उण्णिनङाकी रिहाईकी घटना इस प्रकार घटी थी—उसके कैद में डाले जानेके दूसरे दिन प्रात काल चन्द्रोत्तु नम्पियार वेबरके पास पहुँचे म्यूयपीमे रहनेके कारण वे यूरोपियन आचार-विचारसे परिचित थे और इसी कारण कपनीके अधिकारी उनसे सौहार्द भी रखते थे बीच-बीच में दफ्तरमे आकर नम्पियार उनका सत्कार करते और उन्हे उपहार आदि भी देते थे इस कारण भी वे उनके प्रिय पात्र थे जब उन्होने आकर वेबर-को बताया कि मेरे आश्रयमे रहनेवाली एक युवतीको सैनिक लोग मर्यादा रहित तरीकेसे पकड लाये है, तो वेबरने स्वीकार किया कि यह एक अन्यायपूर्ण काम है उसने उस समय उत्तर दे दिया—"सोचेगे"

अम्पु नायरका पत्र लेकर नम्पियार चिरुतक्कुट्टीसे मिल चुके थ यह वेबरको मालूम नही था पत्र पढकर चिरुतक्कुट्टीने कहा—'उनके लिए सब-कुछ करना मेरा कर्तव्य है यह क्या कोई बडी बात है ?' साथ ही उसने कहा—"आपसे मिलनेका अवसर मिला, मेरा अहोभाग्य! थोडे ही दिन पहले अम्पु यजमानने मुझे बताया था कि मुझे जो आज्ञा मिलती है वह कहांसे आती है मैं अपनी शक्ति-भर प्रयत्न करती हूँ"

चिरुतक्कुट्टीकी नम्रता और सुव्यवहारसे नम्पियारके मनमे उसके प्रति आदरका भाव पैदा हुआ उन्होने कहा—"आपसे मिलनेका सुअवसर मिला इसलिए मुझे भी प्रसन्नता हुई यहांके समाचार जानने रहनपर ही तम्पुरानके प्राणोकी रक्षा निर्भर है"

चिरुतक्कुट्टी—यह मै जानती हूँ तम्पुरान तो हम सबके है, किसी एकके नही !

इसके बाद नम्पियार चले आये जब वे सुपरवाइजरके साथ बात कर रहे थे उस समय चिरुतक्कुट्टी अन्दर कमरेमे बैठी थी वेबर अपने अतिथिको विदा करके अन्दर गया तो चिरुतक्कुट्टीने उससे पूछा—"चन्द्रोत्तु यजमान किसलिए आये थे ?"

वेबर—उनके घरसे सैनिक एक लडकीको पकडकर ले आये है उसके बारेमे फरियाद करनेके लिए आये थे

चिरुतक्कुट्टी—क्या अन्याय है ! सैनिक लोग ऐसा करने लगे तो देशमें औरते कैसे जिये ? ऐसी हालतमे जनता कम्पनीकी क्या खाक सहायता करेगी ?

"सभी देशोमें सैनिक ऐसे ही होते है उनको न न्यायका खयाल होता है, न मर्यादाका वेलेस्लीके आनेके बादमे तो उनका खयाल हो गया है कि देशका सर्वाधिकार उनके ही हाथोमे है"—सुपरवाइजरने उत्तर दिया

"तो आपने उस लडकीके बारेमें क्या सोचा है ?"

"कचहरीमें एक अर्जी ले आनेको कहा है उस लडकीका भी बयान लेना होगा"

इस समय इतना ही काफी है सोचकर चिरुतक्कुट्टी चुप हो गई

ग्यारह बजे उण्णिनटा सुपरवाइजरके सामने पेश की गई यद्यपि उसने पिछले दिन कम्पनीके कर्मचारियोके हाथो घोर कष्ट सहे थे और वह रात-भर कैदमे निराहार पडी रहनेके कारण थकी हुई थी, फिर भी उसका मुख खिली हुई शशि-कलाके समान प्रसन्न और सुन्दर था अतएव उस परिस्थितिमे भी वह उपस्थित लोगोंके स्नेह और अनुकम्पाकी पात्री बन गई सब-कुछ सहनेकी तत्परता और धैर्यके सिवा उसके चेहरेसे दूसरा कोई लक्षण प्रकट नही होता था वह एक सतरीके साथ कचहरी-मे लाई गई और नतमस्तक खडी हो गई उसने किसीकी ओर ध्यान नही दिया

सैनिकोंके अपनी रिपोर्ट सुनानेके बाद सुपरवाइजरने उससे पूछा—तुम क्या कहती हो ? इस रिपोटमे कहा गया है कि तुमने एक विद्रोही-की मदद की क्या यह सच है ?

उण्णिनटाने सिर उठाकर देखा सुपरवाइजरकी कुर्सीके पीछे चन्द्रोत्तु नम्पियारको खडे देखकर उसके मुखकी निराशा-जनित निर्विकारता कम हो गई नम्पियारका मुख प्रसन्न दिखलाई पडा इसलिए उसने यह भी अनुमान कर लिया कि कोई विशेष कष्ट नही होगा

दुभाषियेने जब सुपरवाइजरका प्रश्न दुहराया तब उसने बातको पूरी तरह समझ लिया उसने निर्भीक और निस्सकोच होकर उत्तर दिया—'मैंने किसी राज-द्रोहीको कोई सहायता नही दी"

सुपरवाइजरने आज्ञा दी—क्या हुआ, सो पूरी तरह बताओ

उण्णिनटाने जो-कुछ कहा उसका सारांश यह है कि—शामको जब मै पानी भरनेके लिए जा रही थी तब मैने एक आदमीको खेतोंमे भागते हुए अहातेमे घुसते देखा उसके पीछे चार-पाँच लोग वहाँ आये और मुझसे सख्तीके साथ बाते करने लगे मै डरके मारे बोल भी नही सकी थी कि

उन्होने बलात् मुझे पकड लिया और यहाँ ले आये "

उण्णिअनडाकी छोटी उमर, उसके कहनेकी सहज स्वाभाविकता और सैनिकोके मर्यादाहीन व्यवहारका विचार करके सुपरवाइजरने उसे छोड देनेका आदेश दिया वन्द्रोत्तु नम्पियार उसे लेकर कचहरीसे बाहर निकल आये

नम्पियारने चिरुतवकुट्टीसे मिलकर उसे धन्यवाद दिया उसने उण्णिअनडाके साथ उन्हे बडे सौहार्दके साथ स्वीकार किया और उनके कृतज्ञता-प्रकाशनका उत्तर देते हुए कहा—"अम्पु नम्पियारके लिए मै सब-कुछ करनेके लिए बाध्य हूँ अब आपसे भी परिचय हो गया "

नम्पियारने कहा—आपने इसके प्राण और मानकी रक्षा की है इतना ही नही, सच पूछिए तो आपने मेरे ही मानका सरक्षण किया है उसका बदला मै कैसे चुका सकता हूँ ? फिर भी स्मरण-स्वरूप मेरी यह अँगूठी स्वीकार कीजिए

अपनी अँगुलीसे उतारकर उन्होने एक लाल रत्न जडी हुई अगूठी चिरुतवकुट्टीके सामने रख दी चिरुतवकुट्टीने उसे आदरके साथ स्वीकार करते हुए कहा—"आप जो-कुछ देगे उसे मै आशीर्वादके रूपमे ग्रहण करूँगी "

इस प्रकार उण्णिअनडा कारागृहसे छूट गई जब यह समाचार कर्नल वेल्लेस्लीके पास पहुँचा तभीसे उसका क्रोध प्रज्वलित हो उठा था किन्तु नागरिक अधिकारियोके हाथमे सौंपे हुए व्यक्तिको नियमानुसार छोड देनेपर आपत्ति करनेका उन्हे कोई अधिकार नही था अब बहुत-सी बाते एक साथ सामने आ जानेपर उसने सबसे पहले वही बात कह डाली सुपरवाइजरने उत्तर दिया—"उस लडकीको नियमानुसार कारागारमे कैसे रखा जा सकता था ? बयान लेनेपर स्पष्ट हो गया था कि वह अपराधिनी नही है "

कर्नल—आपका कथन ठीक होगा उस बारेमे मै कुछ नही कहता परन्तु यह बताइए कि मेजर होम्सके कुत्तुपरम्पुसे रवाना होनेके पहले ही

उनकी यात्राके मार्ग और सैनिकोकी सख्या आदि सब बातोका पता शत्रुको कैसे चला ?

सुपरवाइजर—इसका उत्तर देना मेरा काम नही है यदि आप मेरी राय जानना चाहते है तो मै कहूँगा कि सेनापतिकी विचारहीनता या असमर्थताके कारण ही ऐसा हुआ होगा

कर्नल वेलेस्लीका चेहरा क्रोधसे लाल हो उठा लेकिन अपने क्रोध-को पीकर उसने कहा—"मेरे प्रबन्धमे कुशलताकी कमी मालूम होती है आगेके लिए सावधान हो जाना मेरा काम है परन्तु उन कमियोका ज्ञान शत्रुको होता है तो यह भी निश्चित है कि इसके सहायक इसी शहरमे है मै इसी बारेमें कह रहा हूँ ऐसे विद्रोहियोका दमन किये बिना काम नही चलेगा "

सुपरवाइजर—आपका मतलब यह है कि नागरिक अधिकार भी आपके हाथोमे आ जाना चाहिए मुझे बहुत पहले ही यह शका थी इस शहरका अधिकार आपके हाथोमे देना नियमोके अनुसार सम्भव नही है मै जबतक यहाँ सुपरवाइजर रहूँगा तबतक ऐसा होने भी नही दूँगा "

कर्नल—युद्ध-सचालनके लिए यदि आवश्यक हुआ तो मै सैनिक-नियम चालू करनेमे कोई सकोच नही करूँगा तब किसीकी सम्मति लेनेके लिए मै नही रुकूँगा

सुपरवाइजरने ताड लिया कि यह सब सैनिकोकी स्वाभाविक उद्दडतासे कहा गया है और यदि इसके सामने जरा भी सिर झुका दिया गया तो कम्पनीके प्रति अपराधी बनना होगा इसलिए उसने कहा—"यदि आपने ऐसा किया तो मै अपनी सारी शक्ति लगाकर आपकी कोशिशोको रोकना अपना कर्तव्य समझूँगा मेरी अधिकारी बम्बई-सरकार है उसकी आज्ञाके बिना यहाँका अधिकार मै किसीको नही दे सकता "

इतना कहकर वह क्रोधके साथ वहाँसे चला गया

उसके जानेके बाद कर्नल अपनी आरामकुर्सीपर बैठकर सोचने लगा उसने निश्चित मान लिया कि यद्यपि हमारी छोटी-छोटी टुकडियोको

शत्रुने नष्ट कर दिया है फिर भी वह मुख्य योजनाको विफल नही कर सकता. उसने यह भी अनुमान कर लिया कि एमन नायरको श्रीरंगपट्टन भेजनेगे और चुपली नम्पियारको गिरफ्तार कर लेनेमे जनता भयभीत तो हुई ही होगी

जब उसने समझ लिया कि सुपरवाइजर मेरी आज्ञा नही मानेगा तब वह आगेके कार्यक्रमपर विचार करने लगा सुपरवाइजरको डरानेके खयालसे उसने कह तो दिया कि शहरको सैनिक अधिकारमे ले लिया जायगा, परन्तु वह जानता था कि यह कार्य सुसाध्य नही है गवर्नर-जनरलकी आज्ञाके बिना ऐसा करनेका अधिकार किसीको नही था कर्नल वेलेस्ली जानता था कि भाई और स्वेच्छाचारी गवर्नर-जनरल होता हुआ भी मार्क्विस वेलेस्ली बम्बई-सरकारसे परामर्श किये बिना ऐसी आज्ञा नही देगा इस स्थितिमे, यदि अपने कार्यका श्रीगणेश विजय-मे ही आरम्भ करना हो तो कूटनीतिमे काम लेना होगा पहली आव-श्यक बात यह है कि तम्पुरानको सहायता पहुँचानेवाले सगठनका पता लगाया जाय और उसके नेताओ आदिके बारेमें अकाट्य प्रमाण प्राप्त किये जायँ

उसने देशी कार्योंके सचिव लोबो सिकुवेरा नामक दुभाषियेको बुलवाया वह व्यक्ति अनेक भाषाएँ जाननेवाला, समर्थ और बुद्धिशाली था मैसूर-युद्धके पूर्व वह कर्नल वेलेस्लीका दुभाषिया नियुक्त हुआ था वेलेस्लीके साहचर्यसे उसकी बुद्धि और भी निखर आई थी शासन-कार्य-का भी उसको आश्चर्यजनक ज्ञान था वेलेस्लीके प्रति स्नेह और आदर-कारण वह उसका और भी प्रिय बन गया था

कुछ दिन पहले कर्नलने अपनी शकाएँ उसपर प्रकट कर दी थी सुपर-वाइजरके साथ सम्भाषणके बाद उसने उसे ही पता लगानेके लिए नियुक्त किया उसने कहा—"मै कह नही सकता कि ये सब खोज-खबर हमें कहाँ पहुँचायगी यथा-समय सब प्रमाणोके साथ आपको बताऊँगा"

कर्नल—महाराजाका प्रबन्धकर्ता वह नायर कहाँ है ? उसमे इस

कामसे मदद मिल सकती है

सिकुवेरा—चन्तु नायर सामान्य व्यक्ति नही है केरलवर्माके पास उसका बहुत बडा स्थान था अब, पता नही क्यो, उतना ही वैर भी है वह तम्पुरानकी छावनीपर अधिकार करने गया है दो दिनमे वापस आ जायगा

कर्नल—स्वजन-द्रोहियोपर भरोसा मत रखना वह समर्थ और बुद्धिशाली अवश्य है उससे अपना काम निकाल लेना चाहिए, किन्तु हमारी गुप्त बाते उसको मालूम न हो

सिकुवेरा—अबतक यही किया है

कर्नल—आनेके बाद तुरन्त ही मै उससे मिलना चाहता हूँ कई बाते सीधे उससे पूछकर ही जाननी है

कर्नलने दुभाषियेको विदा कर दिया बादमे जितनी बाते मालूम हुई थी, विस्तारपूर्वक अपने भाईको लिख भेजी

०

बारहवाँ अध्याय

उस दिन विविध प्रकारकी मनोव्यथाओंके साथ तम्पुरान कण्णवनुमे रवाना हुए थे पपयवीट्टिल चन्तुकी वचनाके बारेमे सोचते-सोचते उनकी खिन्नता बढती गई किसने सोचा था कि ऐसा भी एक दिन आयगा ! जब पहली बार मैसूरके साथ युद्धके लिए निकले थे तब चन्तु पानवाला लडका बनकर उनके साथ गया था उस बाल्यावस्थामे ही उनकी स्वामि-भक्ति, सामर्थ्य आदिपर वे प्रसन्न हुए थे वे यह भी सोचने लगे कि आज उसके इस प्रकार विश्वासघाती बन जाने का कारण मेरा दुर्भाग्य ही होगा अम्पु और चन्तुके आपसी सबध कुछ बिगडे हुए है यह उन्हे मालूम था उन्हे शका थी कि उसका कारण अम्पुका अहकार है फिर भी क्या अम्पुसे प्रतिकारके लिए वह अपने अन्नदाता को, अपनी समस्त उन्नतिके हेतुभूत महाराजाको ही बलि चढा देगा ? क्या यह नहीं हो सकता कि अम्पुके समझनेमें ही कोई गलती हो गई हो ? इस प्रकारकी अनेक शकाएँ उनको सता रही थी

इससे भी अधिक व्याकुल करनेवाली बात वेलेस्लीकी युद्ध-नीति थी सहायकोका पता लगाकर कपनी उनका सर्वनाश करनेपर तुल जाय तो स्वय जगलमें रहकर कुछ भी करें, प्रजासे मिलनेवाली सहायतापर प्रतिकूल

असर पडना निश्चित था महाराजा जानते थे कि देशके प्रभुजनोंकी सहायतासे ही कपनीके साथ युद्ध करना सभव हो रहा है भोजन सामग्री और शस्त्रास्त्रका सग्रह देशकी जनताकी सहायताके बिना असभव है वेलेस्ली भय दिखाकर उस सहायताको रोक दे तो इधर-उधर छोटी-मोटी सेनाओंको हरा देनेमे क्या लाभ ?

इस प्रकारकी मनोदशामे, सहायकोंके नाम शत्रुको बतानेवाले चन्तु-पर तम्पुरानका क्रोध बढने लगा पालकीमें उन्हे नीद नही आई रात एक लम्बे दु स्वप्न-जैसी मालूम होने लगी

प्रभातमे तम्पुरान अपने केन्द्र-स्थानमे पहुँच गये आस-पाससे ही छावनीके अन्दर कुछ विशेष हलचल मालूम होती थी मार्गपर पहरा देने वाले कुरिच्योंकी सख्या साधारणसे बहुत अधिक थी दूरसे ही नागोंकी ध्वनि और जगलकी अशान्ति, पक्षियों और पशुओंकी जाग्रति आदि देख-सुनकर उन्हे आश्चर्य होने लगा कि कानन-राज्यकी एकान्त शान्ति इस प्रकार क्यों भग हो रही है ! वे कहा करते थे कि मेरी यह राजधानी ससारका सबसे अक्षुब्ध स्थान है उनकी चुनौती थी कि कथकलीके वाद्य-ध्वनिके अतिरिक्त और कोई नाद यहाँ सुनाई नही पडेगा परन्तु आज वही यह सब उथल-पुथल !

बिना कहे ही महाराजकी चिन्ताका अनुमान करके, अथवा स्वय सब कुछ जाननेकी उत्सुकताके कारण शिविका-वाहक शीघ्रतासे चलने लगे वास-स्थानके प्राकारके अन्दर प्रवेश करते ही उनके स्वागतके लिए दोनो देवि-इट्टिलम्मा एक साथ दालानमे निकल आई थी माक्कम्को देखकर तम्पुरानका आश्चर्य और भी बढ गया बिना बुलाये माक्कम् अकेली पहाड पार करके यहाँ आई तो अवश्य ही बात गभीर होनी चाहिए—यह अनुमान दृढ हो गया वन-प्रदेशकी इस हलचलसे और अपने पास आये सदेशसे अवश्य ही कोई सबन्ध है, इसमे उन्हे कोई सदेह नही रहा

दोनो पत्नियोंका अभिवादन स्वीकार करके तम्पुरानने पूछा—"क्यों कुमारी, इतनी शीघ्रतासे क्यों बुलवाया ?"

"मेरे कहनेसे काम नही चलेगा माक्कम् कहेगी उसीने हमें बचाया है" बडी केट्टिलम्माने कहा

इतने दिनोंके बाद प्रथम-दर्शन सपत्नीके सामने होनेसे माक्कम्को कुछ कुंठा प्रतीत हो रही थी महाराजा जब उसका उत्तर सुननेके लिए उसकी ओर मुडे तो उसने लज्जासे सिर झुका लिया

उचितज्ञ बडी केट्टिलम्माने कहा—"मैं जाकर स्नान करती हूँ बहनको जो-कुछ कहना है सो तबतक कह देगी" और वे माक्कम्को एक नजर देखकर मुसकराती हुई बाहर चली गईं

तम्पुरान पलगपर बैठ गये माक्कम्को भी पास बिठा लिया फिर बोले—"कहो! कुशल तो है?"

"क्या कुशल है?" माक्कम्ने धीमे स्वरमे उत्तर दिया "आपसे दूर रहकर कुशल? इसके अलावा कोई असुख नही है"

"स्वयं अकेली निकल पडनेका कारण तो गंभीर होना चाहिए? कहो, क्या बात है?" तम्पुरान ने पूछा

माक्कम्ने निःसकोच सारी बात विस्तारके साथ बता दी तम्पुरान-ने जब यह सुना कि चन्तु कपनीके सैनिकोंके साथ गुप्त मार्गद्वारा इस केन्द्र-स्थानपर ही आक्रमण करने चला है तो उनके मुखका भाव बदल गया क्रोधसे आँखे लाल हो गईं अपने शान्त, सौम्य, दाक्षिण्य-मूर्ति स्वामीको सहार-रुद्रके समान रुक्ष मुख-भावके साथ देखकर माक्कम् भी डर गई तम्पुरान शपथ लेने लगे—"मैं श्रीपोर्कली भगवतीके चरणोंमें निश्चय करता हूँ " परन्तु बीचमे ही माक्कम् रोती हुई और यह कहती हुई उनके चरणोंमें गिर पडी कि "नही, नही! क्रोधमे आकर शपथ न लीजिए!" तम्पुरान रुक गये क्षण-भरमे शान्त होकर भयभीत केट्टिलम्माको सान्त्वना देते हुए वे बोले—"माक्कम्, तुमने मुझपर एक नही, दो उपकार किये, चन्तुके विश्वास-घातका समाचार देना और इस क्रोधको शान्त करना इस दूसरे उपकारके लिए मै तुम्हारा सदा आभारी रहूँगा निष्काम रूपसे, भगवच्चरणोंमे सब-कुछ समर्पित करके कर्म करने

वालेका सबसे बडा शत्रु क्रोध होता है"

माक्कम्—क्रोध करनेका तो आपका स्वभाव नही है वह तो उस दुष्ट-बुद्धिके निद्य कर्मोंसे पैदा हुआ एक विकार-मात्र था लेकिन मै आपका मनोभाव देखकर डर गई थी

"तो, इसके लिए क्या किया जाय ?"

"सब मालूम होते ही बडी बहनने तलय्कल चन्तुको बुलाकर आवश्यक कार्रवाई करनेके लिए कह दिया था आपको समाचार देनेके लिए आदमी भेजकर तलय्कल चन्तु और कुरिच्य मार्ग-रक्षाके लिए चले भी गये"

"चन्तु गया है तो कपनीकी सेना पूरी-की-पूरी आ जाय तो भी तल-हटी पार करके गुप्त मार्गमे प्रवेश नही कर सकेगी चन्तु गया है तो फिर मुझे क्यो बुलवाया ?"

माक्कम्का मुख उतर गया उस विवर्णताको देखकर तम्पुरानको भी अपनी गलती महसूस हुई समझानेकी दृष्टिसे उन्होंने कहा—"कण्णवत्तुसे कैतेरी होकर ही लौटनेका विचार मैंने कर रखा था"

विषादके साथ ही माक्कम्ने उत्तर दिया—जी हाँ ! इधर पधारने-के बाद माक्कम्के बारेमे क्या चिन्ता थी ! कितना असह्य दु ख सहना पडता है, आपको क्या मालूम ?

"यहाँ साथ लेकर आनेकी कठिनाई तो मैंने तुम्हे पहले ही समझा दी थी वहाँ क्या इतना दु ख है ?"

इस बातपर माक्कम्के आँसुओका बाँध फूट पडा

तम्पुरान—तुम तो धीर वनिता हो रोओ मत ! श्रीपोर्कली भग-वती सब ठीक कर देंगी जब पाण्डव वनवासके लिए गये तब सुभद्रा घर पर ही तो रही थी ? लक्ष्मणके साथ उर्मिला तो नही गई थी ? इसलिए—

माक्कम्—उन सबके उण्णिअच्चेची*-जैसी बहन नही थी

---

* उण्णि दीदी उण्णि—नाम, चेची—दीदी

"उण्णि क्या करती है ?"

"क्या कहूँ ? कैसे निवेदन करूँ ? मुँह खोलती है तो व्यंग्यके अतिरिक्त कुछ निकलता ही नही मेरा मुख देखते ही उसको क्रोध हो आता है उसको सबसे बडा दु ख यह है कि यह दासी आपकी पत्नी है"

"यह सब चन्तुकी सलाह होगी पहले तो ऐसा कभी होता नही था ! दु ख न करो सबका परिहार हो जायगा"

ये बाते हो ही रही थी कि बाहरसे खबर आई, तलय्कल चन्तु तथा दो-तीन कुरिच्य-प्रमुख आये है तम्पुरान बाहर चले गये

तम्पुरान—क्यो चन्तु, वह पकडमे आया ?

चन्तु—जी नही, देखनेको भी नही मिला साथ आई हुई एक बडी टुकडीको रातमे ही खत्म कर दिया था बाकीको लेकर प्रभात होनेसे पहले ही वह भाग गया

तम्पुरान—अब उस मार्गको ही बन्द कर देना चाहिए

चन्तु—जी हाँ, उसका प्रबन्ध कर लिया है जगलके बीचमे एक अधिक दुर्गम मार्ग सेवकने देख लिया है वह कुछ अधिक घुमावका अवश्य है यदि आज्ञा हो तो उसीको ठीक कर लिया जाय अभी सुरग-का द्वार पत्थरोसे बन्द कर दिया है

तम्पुरान—शाबाश ! ठीक किया अब बताओ, रातको ही उन सबको कैसे पा लिया ? सब विस्तारसे कहो

चन्तु मितभाषी था स्वपराक्रमका वर्णन करनेसे परे भी रहता था थोडा-थोडा जो उसने कहा उसका साराश यह है—

केट्टिलम्मासे आज्ञा पाकर तलय्कल चन्तु कुरिच्योको एकत्र करके सुरगके मुखपर चला गया और वहाँ उसने कुरिच्योको फैलाकर खडा कर दिया शत्रुकी गतिविधिका पता लगानेके लिए मार्गमे भी कुरिच्यो-को नियुक्त कर दिया था शामके समय पपयवीट्टिल कम्पनीकी सेनाके साथ तलहटीके उस पार आया उसका इरादा प्रात काल सुरगमे प्रवेश करनेका था कुरिच्योकी समर-विधि जाननेवाले उस समर-चतुरने चारो

और जगलको दिखवा लिया वहाँ कही कुरिच्य नही है यह निश्चय कर लेनेके वाद ही उसने छावनी डालनेका आदेश दिया इससे भी सतुष्ट न होकर उसने आदेश दिया कि आधे लोग रातको सोएँ और आधे जागकर पहरा दे स्वय भी वह जागकर पहरा देता रहा

अधकार ऐसा था कि अपना ही हाथ दिखलाई नही पडता था फिर भी अग्नि-शिखाएँ देखकर दूरसे ही कुरिच्योका ध्यान आकर्षित हो जायगा, इस भयसे उसने आग जलानेकी अनुमति नही दी उसने सोच रखा था कि कुरिच्योके नेता महाराजाके साथ मरणत्तना गये है और महाराजा तथा तलय्कल चन्तुकी अनुपस्थितिमे कुरिच्य कुछ नही करेगे

अपने गुप्तचरोसे उसकी योजनाका पता पाकर कुरिच्योके नेताने रातको ही वाहर निकल पडनेका निश्चय किया दिनमे भी उस मार्ग-पर चलना दुष्कर था, फिर रातको तो कुरिच्योके सिवा हिम्मत ही कौन करता ? यही उस मार्गकी सुरक्षाका मुख्य वल था नेता ही अनु-चरोको मार्ग दिखाता हुआ आगे चला वे एक-दूसरेका सहारा लेकर, एक पत्थरसे दूसरे पत्थरपर पैर जमा-जमाकर समतल भूमिपर पहुँच गये उसके वाद वैसा ही एक चढाव भी पार करना पडा थोडा विश्राम करके चन्तुके नेतृत्वमे ही उन्होने उसे भी पार कर लिया और पप-यर्वीट्टिलके पीछे पहुँच गये तव रातका अन्तिम पहर हो रहा था निवेशमे जागनेवाले अर्धनिद्रामे और सोनेवाले गाढ निद्रामे होगे यह अनुमान करके उसी समय आक्रमण कर देनेका निश्चय किया गया

इसके वादकी गडवडीकी वात क्या कहे ? पपयवीट्टिल चन्तु और उसके थोडे-से अनुयायी किसी प्रकार प्राण लेकर भाग गये सेनानिवेशमे जो-कुछ मिला वह सव लेकर कुरिच्यर तम्पुरानकी सेवामे उपस्थित हो गये

तम्पुरानने सव सुनकर कहा—भगवतीकी कृपा ! एक वडी विपत्ति-से वच गये ! अव आगेका कार्य सोचना है एटच्चेन कुकनको वुलाओ

कुकन नायर नई सेनाको युद्धाभ्यास करा रहे थे वे शीघ्र महाराजा-

के सामने उपस्थित हो गये तम्पुरानने कहा—सब बातें सुन ली कुकन? आगे क्या करना चाहिए ?

कुकन—जी ! अब बहुत सोच-विचार करके कदम रखना है यह स्थान अब सुरक्षित नही रहा

तम्पुरान—वही मैं भी सोच रहा हूँ वेलेस्लीकी योजनाका पता मुझे चल गया है वह हमारे साथ सीधा युद्ध नही करेगा उसने हमे घेरकर, हमारे साथियोको दूर करके, भोजन-सामग्रीका रास्ता रोककर जानवरो-के समान मारनेका निश्चय किया है

कुकन—यह सभव होगा ?

तम्पुरान—उनका शासन देशमे सुस्थिर हो जाय तो क्या कठिन है ? देश-भरमे छोटे-छोटे दुर्ग बनानेका उद्देश्य वेलेस्लीका है दुर्गके पासके लोग हमे मदद करनेमे डरेगे इरुवनाट्टुके नम्पियारोका उदाहरण नही देखा ?

कुकन—सुना है, चुपलि नम्पियारके गिरफ्तार कर लिये जानेमे वे डरे हुए है

तलय्कल चन्तु—कपनीकी शक्ति देशके अन्दर ही हो सकती है हम यहाँसे तो आक्रमण कर सकते है ?

तम्पुरान—हाँ, परन्तु हमारी भोजन-सामग्रीका आना रुक जाय तो हम यहाँ कितने दिन बने रह सकते है ? इसलिए अब बहुत सोच-विचार करके ही सब काम करना चाहिए खैर, उस बातको अभी छोडो, मणत्तनासे चन्तुके साथ जो चार मैसूरी सिपाही भेजे थे वे कहाँ है ?

कुकन—वे मेरे साथ है अति समर्थ है युद्ध-कार्योका परिचय भी रखते है उनमें चोक्करायर नामका व्यक्ति बहुत विशिष्ट है कहते है कि वह मैसूरके राजाका सम्बन्धी है दूसरे लोग उसके साथ बहुत सम्मान-का व्यवहार करते है

तम्पुरान—उसका हम भी विशेष सम्मान करेगे उसकी सेवा शुश्रूषा-

के लिए दो-चार अनुचर अलगसे देना स्नान, आहार आदिके बाद मैं भी उनसे मिलूँगा

कुकन—वह कुटक* भाषा भी जानता है कल हम लोग बहुत देरतक बातचीत करते रहे थे केरलके बारेमें भी कुछ-कुछ जानता है आपके प्रति भक्ति और आदरसे बात कर रहा था

तम्पुरान—मध्याह्नके बाद उसको मेरे पास ले आना

सबको विदा करके तम्पुरान अरळात्तु नम्पिके साथ बहुत देरतक गुप्त बाते करते रहे बादमे स्नानादिके लिए चले गये पूजा आदिके उपरान्त जब लौटे तो दोनो पत्नियाँ दालानमें चटाई बिछाकर बैठी हुई थी उन्हे देखकर दोनो उठ खडी हुई

बडी केट्टिलम्माने कहा—माक्कम् दो दिनके बाद ही तो जायगी?

तम्पुरान—नही, आज ही जाना चाहिए देरी करना उचित नही होगा

"यह अच्छा न्याय है ? जब आँखोसे दूर रहती है तब मल्लिका, जाति आदिसे सदेश भेजते है एक बार देख लेनेकी इच्छासे आ गई तो तुरन्त लौट जानेका आदेश दे दिया !"

"यह क्या कह रही हो ?"

माक्कम्—जीजी, क्यो तग करती हो ? मै अभी ही चली जाऊँगी

बडी केट्टिलम्मा—हाँ, हाँ ! मैने देख लिया ! ताल-पत्रमें श्लोक लिखकर रखे है ! बहन, एक बार सुना तो दो, व्यस्ततामे भूल गये होगे !

तम्पुरान हँसकर कहने लगे—अब समझमें आया लिखनेके बाद श्लोक कही दिखलाई ही नही पडा बहुत खोजा, पर मिला ही नही.

बडी केट्टिलम्मा—जिसके लिए लिखा उसके हाथमें पहुँच गया अब क्यो खोज रहे है ? वह इतना कष्ट उठाकर यहाँ आई है, इतनी

---

* कन्नड

जल्दी वापस कर देना उचित नही है फिर आपकी इच्छा !

तम्पुरान—माक्कम् यहाँ आकर मुझसे मिली है तो मैं भी कैसे ? जाकर उससे मिलूँगा आजसे सातवे दिन मैं वहाँ पहुँच जाऊँगा

माक्कम् प्रसन्न हो गई कुञ्ञानि केट्टिलम्माके पास अब इस बारे-मे कहनेको कुछ रहा ही नही इसलिए यह कहकर वे बाहर चली गई कि साथके लोगो और पालकीवालोको तैयार कराती हूँ उनके जानेके बाद तम्पुरानने कहा—"माक्कम्, बुरा मत मानना आज ही लौट जाना उचित है"

माक्कम्—इसका बुरा नही मानती, परन्तु आपने मुझे इतना गलत समझ लिया

"मैंने तुमको गलत समझा ! यह क्या कहती हो ?"

"आपके इस प्रकार जगलोमे भटकते समय मैं देशमे पुष्प-हार आदि से सज-धजकर, केट्टिलम्मा बनकर रहती हूँ, ऐसी शका भी आपने की, इससे मेरा हृदय घायल हो गया है"

"गलती मेरी है 'जाती ! जातानुकम्पाभव !' ठीक नही रहा उसे फाड डालो मैं दूसरा श्लोक लिखूँगा"

"नही, नही ! रहने दीजिए ! पत्र फाड डालनेसे श्लोक नष्ट हो जायगा ? आपका श्लोक तो सभी याद करके गाते रहेंगे"

इतने मे बडी केट्टिलम्मा वापस आ गई उन्होने कहा—"मैं शुश्रूषा करती हुई साथ रहती हूँ, फिर भी दिल तो तुम्हारे ही पास रहता है इसलिए तुमको दुःख नही होना चाहिए"

माक्कम्—यह सब तो जीजी, तुम्हारा दाक्षिण्य है

शिविका-वाहक और अनुचर तैयार होकर आ गये माक्कम अम्मूके साथ रवाना हो गई

माक्कम्को भेजनेके बाद तम्पुरान फिर से राज्य-कार्योंमे व्यस्त हो गये वे कुक्कनके साथ आये हुए चौक्करायरसे बहुत देरतक कन्नड भाषामें बातें करते रहे टीपूकी मृत्युके बाद मैसूरके राजा बननेवाले कृष्णराय-

की बातें, मैसूरकी स्थिति, कन्नड साहित्य आदि विविध विषयोंपर उसके साथ बातचीत हुई सभापरणमें तम्पुरानने जान लिया कि वह कुलीन, पण्डित और राज्य-कार्योका असाधारण ज्ञान रखनेवाला है तम्पुरानके बारेमें वह पहलेसे ही जानता था केरलके राजा जब टीपूसे लड रहे थे तभी पषश्शि राजाका नाम मैसूरमें प्रसिद्ध हो चुका था वेलेस्लीकी सेना जब टीपूका सामना कर रही थी तब उसकी मददके लिए कृष्णराय राजाने सेनाकी एक टुकडी सहायताके लिए भेजी थी चौक्करायर उस सेनाका उपसेनापति था उसकी दक्षता देखकर वेलेस्लीने उसे अपनी सेनाका नायक बनाया परन्तु वेलेस्लीकी केरल-सबधी युद्ध-नीति उसे बिलकुल पसद नही थी तम्पुरानके साथ बातचीत करनेपर उसका यह मत और भी दृढ हो गया

उसने कहा—मराठोंके साथ कपनीका युद्ध होनेवाला है परन्तु उनके सामने कपनीकी विजय सरल नही होगी

तम्पुरानने कहा—मैंने भी सुना है कि उत्तरमें युद्ध होगा मराठे बहुत प्रबल रहे है अब उनकी स्थिति कैसी है ?

मराठा-साम्राज्यकी तात्कालिक अवस्था, वहाँके नेताओ के बीच आपसी बैर, इन सबका लाभ उठाकर उनको दबानेके लिए गवर्नर-जनरल-के प्रयत्नो आदिकी पूरी कहानी उसने महाराजाको सुनाई

"तब तो कर्नल वेलेस्लीको यहासे वापस बुलाया जायगा ?" महाराजा-ने प्रश्न किया

"इसमे कोई सदेह नही नही तो उनकी विजयका कोई उपाय ही नही है"

तम्पुरान चोक्करायरको विदा करके फिर विचारमग्न हो गये

तेरहवॉ अध्याय

●

चोक्करायरके साथ बातचीत होनेके बाद तम्पुरानके व्यवहारम कुछ अन्तर आ गया युद्धके विपयमे कोई उत्साह नही रहा तलय्का चन्तु और उसके कुरिच्योकी एक बडी टुकडी कही चली गई एडच्चन कुकन नायर प्रतिदिन प्रभातमे तम्पुरानके दर्शनोके लिए आ जाता था और वहुत देरतक बातें करता रहता था परन्तु सैनिक अथवा युद्धकी तैयारी कही दिखलाई नही पडती थी तम्पुरान कुकनके साथ बात करके स्नानादिके लिए चले जाते और शेप समय साहित्य-रचनामे व्यतीत करते थे 'कृम्मीरवध'के दो-तीन पद लिखकर कुछ देर उन्हे केट्टिलम्मा-से गवाकर सुनते रहते, फिर शतरज खेलनेमे मग्न हो जाते थे आराम में कुछ विश्राम करके फिर चोक्करायरके साथ कन्नड भापाम बात करने लगते थे रातमे कथकलि हुआ करती थी वह स्थान युद्धकी रग भूमिसे वदलकर मानो एक कला-केन्द्र वन गया था इसके अन्दर रहस्य क्या है, किसीको मालूम नही था

तम्पुरानने राज्य-कारवार बिलकुल भुला नहीं दिया इसका प्रत्यक्ष प्रमाण केवल इतना ही था कि वे प्रतिदिन प्रातःकाल कुकन नायरके साय गुप्त सम्भापण करते थे और कण्णवत्तु नम्पियारके बारेमे उत्सुकता

च्यवन कर दिया करते थे—"शकरन् अवतक नही आया !" कण्णवत्तु नम्पियारको मचेरी अत्तान कुरुक्कटमे मिलने गये दो सप्ताह हो चुके थ उनके पाससे अवतक न कोई आदमी आया, न कोई पत्र ही तम्पुरान-के मनमे बार-बार शका उठती थी कि कही वह किसी सकटमे तो नही पड गया ! परन्तु उन्होने नेल्लूर एमन नायरके सिवा किसीके सामने यह शका प्रकट नही की एमन नायर एक प्रमुख सेनानायक और कण्णवत्तु नम्पियारके अभिन्न मित्र थे उनकी भी चिन्ता बढ रही थी, क्योकि किसी भी कामके लिए जानेपर नम्पियार समाचार देते रहनेमे चूकते नही थे

तम्पुरानने गप-शप, शतरज, और कथकलिमें मग्न रहनेवाले विलासी राजाके समान लगभग एक सप्ताह व्यतीत कर दिया मावकम्से मिलने जानेका जो वादा किया था उसको पूर्ण करनेका समय भी आ पहुँचा परन्तु यह बात केवल बडी कोट्टिलम्माको ज्ञात थी प्रातःकाल जब शिविका मँगवाई गई तब लोगोको मालूम हुआ कि वे कही जा रहे है दोनो ओर केवल एक-एक अनुचरको ही लेकर वे रवाना हो गये पहाडसे उतरकर कुन्नाली मोय्तीनके निवास-स्थानपर पहुँचे वहाँ पहलेसे ही उपस्थित प्रभुओके साथ आवश्यक बातचीत करने लगे उण्णि-मूप्पन, कुञ्जिकोय आदि मुस्लिम नेता भी उनमें सम्मिलित थे विचार-विमर्श सायकालतक चलता रहा

तम्पुरानके रवाना होनेके थोडे ही समय बाद चोक्कनायर भी सेना-निवेशसे बाहर निकले उनके जानेकी बात एमन नायर और एडच्चेन कुङ्कनको ही विदित थी पहाडसे उतरकर वे स्वदेशको नही वयनाट्टु-को चले गये

तम्पुरानके आनेका दिन उदित हुआ तो मावकम् अत्यन्त प्रसन्न थी उनसे विदा लेकर वह उसी दिन सध्याको स्वगृह पहुँच गई थी उण्णि-नम्माने अनेकानेक आक्षेपो और कटूक्तियोसे बहनका स्वागत किया था उनके सारे वाग्वाणोका सार यह था कि "किसीके भी साथ इस प्रकार

चली जानेवाली स्त्रियोको भ्रष्टा मानकर घरसे बाहर निकाल देना चाहिए" नौकर-चाकरो और दासियोके सामने ही वह जोर-जोरसे बकने लगी—"जिसपर पहुँचे उसके ही कधेपर हाथ डाल देनेवाली यह गणिका इस वशमे कैसे पैदा हुई! यह निर्लज्ज व्यवहार देखनेके पहले मैं मर जाती तो अच्छा होता" उसकी मदद करनेके लिए इक्कण्डन नायर भी पहुँच गया उसने गम्भीर घोषणा कर दी—

"तुम लोगोकी बाते तुम्हे ही मुबारक हो! जो कहना न माने उनसे कहनेमे कुछ मतलब! कुछ भी हो, अब अगर तुम चाहती हो कि हम लोग यहाँ आते रहे तो पहले तुम्हे मावकम्को घरसे बाहर निकाल कर, श्राद्ध करके, पिण्ड-दान करना होगा † नही तो यहाँ कोई पानी भी नही पियेगा"

उण्णियम्माने साथ दिया—"मामाजीने ठीक ही तो कहा यह ज्येष्ठा कहाँ गई थी कौन जाने? किसको खोजने गई थी? कुछ भी हो, मैं अपनी रसोईमे तो फटकने नही दूँगी"

मावकम्ने यह सब सुनी-अनसुनी कर दी शिविकासे उतरते ही भगवतीके मन्दिरमे जाकर उसने स्नान-आराधना आदि की और फिर वह अपने कमरेमे चली गई

इक्कण्डन नायरको केवल आक्षेपोसे सतोष नही हुआ उसने उण्णियम्माको निश्चित उपदेश भी दिया कि मावकम्को भ्रष्टा घोषित करके तत्काल घरसे निकाल देना चाहिए उण्णियम्माने यह सलाहमान

---

† किसी स्त्रीके आचरणभ्रष्टा प्रमाणित होनपर उसका परिवार उसे घरसे निकालकर "मरी हुई" मान लेता था बादमे सब स्वजन-परिजनोको आमन्त्रित करके उसका श्राद्ध आदि (मृत्यु के बाद की जानेवाली सब क्रियाएँ) किया जाता था यदि कोई ऐसा न करता, उसके पूरे परिवारको भ्रष्ट घोषित कर दिया जाता था भ्रष्टोके साथ चाडालो जैसा व्यवहार होता था

स्वीकार था, किन्तु वह जानती थी कि अम्पुको यह सब मालूम हुआ तो घरसे निकाली जानेवाली माक्कम् नहीं होगी वह अपना रोना रोती हुई बोली—"माक्कम् कुछ भी करे, दादा उसको रोकेंगे नहीं और अब तो उसे तम्पुरानका भी बल है मैं क्या कर सकती हूँ ?"

इक्कण्डन नायरने कहा—तम्पुरानका बल तो अब पूरा हो चुका अम्पु भी फाँसीपर लटकेगा इसलिए इस बारेमे चिंता करनेकी कोई बात नही

"हाय ! दादाकी यह गति होगी ?"—उण्णियम्माके मुँहसे निकल पड़ा इसी बीच, यह सोचकर कि मैं जरूरतसे ज्यादा बोल गया, इक्कण्डन वहाँसे चलता बना

चार-पाँच दिन बीत जानेपर भी उण्णियम्माके क्रोध अथवा वाग्बाणोंकी तीक्ष्णता कम नही हुई प्रतिदिन उसे उपदेश देनेके लिए इक्कण्डन भी हाजिर हुआ ही करता था पथयबीट्टिलको बताकर कुछ करनेकी बात उन्होंने सोच रखी थी

इतनी बातें सुननेपर भी माक्कम् न तो रुष्ट ही हुई और न उसने कोई अपना मनोभाव ही व्यक्त किया इससे उन दोनोंके क्रोधमें बेहद वृद्धि हुई यह जाननेके लिए कि माक्कम् कहाँ गई थी, उण्णियम्माने लाख प्रयत्न किये, परन्तु माक्कम्ने इससे अधिक कुछ नही कहा कि मुझे जरूरी कामसे जाना था

तम्पुरानके आनेका वादा जिस दिनका था उस दिन अपराह्णमे एक अपरिचित मुसलमान कैतेरीमे आया और उसने केट्टिलम्मासे मिलना चाहा माक्कम् निःशक बाहर चली गई और सदेश सुनकर आ गई वह दूत मोरनीनके निवास-स्थानसे आया था और यह सदेश लाया था कि तम्पुरान रातको नौ-दस बजेतक कैतेरी पहुँचेगे

सध्या होनेपर केट्टिलम्मा बिलकुल बदल चुकी थी उसने अपना कमरा, पलग, परिधान-उपधान सभी सुसज्जित कर दिया और स्वय स्नानादि करके, सुगधित पुष्पोंकी माला तथा आभरण आदि पहनकर,

वासक-सज्जिका वनकर अपने प्रियतमकी वाट जोहने लगी

काजल आँजे, तिलक लगाए, पुष्पादिसे सुसज्जित और अलंकृत माक्कम्‌को देखकर उण्णियम्माके हृदयमे द्वेषकी आग और भी भडक उठी उसने मान लिया कि उसकी वहन यह सब साज-सजावट किसी जारके लिए कर रही है जवसे उसने वाहर खडी माक्कम्‌को दूतसे वातें करते देखा था तभीसे उसके हृदयमे तरह-तरहके विचार पैदा हो रहे थे वह अनुमान करने लगी कि माक्कम् अभी-अभी अकेली घरसे निकलकर गई थी, अब यह इस कुटुम्वके लिए न जाने क्या-क्या कलक मोल लेनेवाली है

उसने उत्तरके घरमे* जाकर इक्कण्डन नायरकी पत्नीसे सब हाल कहा नायर-पत्नीने उसे परामर्श दिया--"इस प्रकार किसी पुरुषके साथ उसे पकडा जा सके तो भ्रष्टा घोषित करके निकाल देनेमें कोई कठिनाई नही होगी, इसलिए पकडनेका प्रयत्न करना चाहिए" उसी समय पपयवीट्टिल चन्तुको वुलानेके लिए भी आदमीको भेज दिया गया

उण्णियम्मा वहाँसे लौटी तो वडी खुश दिखाई देती थी उसने माक्कम्‌को भी न तो दुर्मुख दिखाया और न परुष वचन ही कहे जल्दी खाना खाकर सिर-दर्दका वहाना करके सोने चली गई

माक्कम् रातको खाना खाकर केरलवर्मा-कृत रामायण, जिसका वह प्रतिदिन पारायण करती थी, पढने वैठ गई आँखे ग्रन्थपर जमी हुई थी मुखसे मधुर वाक्य-सरिता प्रवाहित हो रही थी परन्तु हृदय वहाँ कही नही था अपने प्रियतमके आगमनकी प्रतीक्षामें वह शेष सब-कुछ भूली हुई थी उनका कैसे स्वागत करूँ, क्या-क्या वातें करूँ, कैसे उनको प्रसन्न करूँ, आदि विचार-तरगो और स्वप्नोमे वह डूव-उतरा रही थी

उण्णियम्माने भी कमरेमे जाकर दरवाजा वन्द कर लिया था परन्तु सोनेका इरादा उसका था ही नही माक्कम्‌के प्रति ईर्ष्या और द्वेषके

---

* देखो, पाद-टिप्पणी पृष्ठ ७६

कारण उसे एक क्षणकी भी शान्ति नही मिल रही थी वह ध्यान लगाये पडी थी कि माक्कम्का द्वार खुलनेकी आवाज सुनाई पडे

वाहरके दालानमे विस्तर विछाकर कम्मू सुख-निद्रामे लीन हो चुका था थोडी रात वीतनेपर तम्पुरान एक सेवकके साथ कंतेरीके आँगनमे आ पहुचे माक्कम्का रामायण-पाठ वाहरसे ही उन्होने सुन लिया था पैरोकी आहटसे ही उन्हे पहचानकर माक्कम्ने दरवाजा खोल दिया चप्पल वाहर उतारकर तम्पुरानने कमरेमे प्रवेश किया

वाहर लोगोकी वाते और माक्कम्के दरवाजा खोलनेकी आवाज सुनकर उण्णियम्मा शीघ्रतासे उठ वैठी दवे पैरो दरवाजा खोलकर नौकरको जगाया और इक्कण्डन नायरको सदेश भेजा कि जैसा अनुमान किया था वैसा ही हुआ है जव नौकर दौत्य लेकर पहुँचा तव इक्कण्डन नायर थोडी ही देर पहले पहुँचे हुए चन्तु नायरके साथ शाक्तेय विधि[1] से सुरा-पान करके आनन्द-मग्न हो रहा था

"तुम जाओ, हम आते है" कहकर उसने नौकरको विदा कर दिया और जो नई वोतल खोली थी उसको खाली करनेमें अपना ध्यान लगाया

चन्तुको यह एक स्वर्ण अवसर प्रतीत हुआ यदि माक्कम्को ऐसे अपराधमे सवके सामने पकड लिया और भ्रष्टा घोषित कर सका तो मेरा तीर जीवन-भरके वैरी अप्पुनायर और तम्पुरान दोनोको एक साथ लगेगा, इसलिए देश-प्रमुखोको भी साथ ले जानेका उसने निश्चय किया अपने वंश-भरका अपमान सोचकर इक्कण्डन नायरने इसका विरोध किया परन्तु कंतेरी-वंशको नीचा दिखानेके लिए उत्सुक इक्कण्डन नायरकी पत्नीने चन्तुका पूर्ण समर्थन किया इसलिए वृद्धकी वात वहरे कानोमें ही पडी सात-आठ प्रमुख व्यक्तियोको आदमी भेजकर वुलवाया गया और सव लोग मशाल आदिके साथ कंतेरी-भवनकी ओर रवाना हुए

चन्तुसे किसीने पूछा—"सवको इकट्ठा करके क्यो जा रहे हो ?"

---

1 (व्यग्य) शक्ति-पूजाकी विधि-मद्य—पान

"जरा ठहरो ! जो उत्सव देखने योग्य है, उसे सुनकर समाप्त क्यों कर देना चाहते हो ?"—चन्तुने उत्तर दिया

मशालों और जन-समुदायको देखकर कम्मू उठ खड़ा हुआ चन्तु और इक्कण्डन नायरको पहचानकर वह समझ गया कि उसकी स्वामिनी पर कोई संकट आनेवाला है उसने तलवार हाथमें ले ली

चन्तुने अपने साथके लोगोंको बाहर खड़ा करके उण्णियम्माके गृहमें प्रवेश किया और फिर बाहर आकर उसने सब लोगोंको बताया कि माक्कम् चरित्रहीना है, एक सप्ताह पूर्व वह किसीकी इजाजत लिये बिना घरसे कहीं चली गई थी तम्पुरान जब पहाड़ोंपर हैं तब इस समय उसके पास कोई आदमी आया हुआ है इस प्रकारका व्यवहार सारे देशके लिए अपमानजनक है घरमें कोई पुरुष नहीं है और मैं स्वयं इस कुटुम्ब का सम्बन्धी हूँ, इसलिए इसकी मान-रक्षा करना मेरा कर्तव्य है जब सब लोगोंने यह बात मान ली तब चन्तु दरवाजे-पर पहुँचा और उसने माक्कम्से कपाट खोलनेके लिए कहा जब वह बरामदेमें पहुँचा तो कम्मू तलवार लेकर आगे बढ़ा और उसने पूछा—"कहाँ जा रहे हो ?"

बरामदेमें लड़ना सम्भव न समझकर दोनों आँगनमें उतर आये. इसी बीच तम्पुरानके साथ आया हुआ नायर भी वहाँ पहुँच गया

बाहर कोलाहल सुनकर तम्पुरान और माक्कम् जाग उठे बात क्या है जाननेके लिए ध्यान देकर सुनने लगे माक्कम्ने जब आवाजसे चन्तु और इक्कण्डन नायरको पहचाना तो उसने मान लिया कि ये दल बनाकर तम्पुरानको मारनेके लिए आये हैं वह घबरा गई सहायताके लिए कम्मू और एक अनुचरके सिवा कोई नहीं था अब क्या होगा, सोचकर वह व्याकुल हो उठी हाथमें आये तम्पुरानको जाने न देनेका वे शक्ति-भर प्रयत्न करेंगे, इसमें शंका नहीं घरमें आग लगा देनेमें भी संकोच नहीं करेंगे वह हृदयसे प्रार्थना करने लगी—"श्री पोर्कली भगवती ! मेरे कारण आई इस विपत्तिमें रक्षा करो !"

महाराजाको कोई बेचैनी नही थी उनको शका नही थी कि ये लोग उन्हे पकडनेके लिए आये है किसी भी हालतमे, बद रहना उन्होने पसन्द नही किया कुलदेवीका ध्यान करके हाथमे तलवार लिये वे बाहर निकल आये

"क्या है रे, चन्तु ?" महाराजाने रूखे स्वरमे प्रश्न किया उस सुपरिचित स्वरको सुनकर और उसकी आज्ञात्मक गुरुताको महसूस करके चन्तु सहसा "स्वामी" कहकर निश्चेष्ट खडा हो गया उसकी तलवार हाथमे छूट गई और कम्मूने उसे दूर फेक दिया

"हाय ! ये तो तम्पुरान है !" कहकर उपस्थित प्रमुख हाथ जोड-कर विनयावनत होकर खडे हो गये इक्कण्डन नायर वहाँसे गायब हो गया एक ओर देशवासियोका भक्ति-भाव और दूसरी ओर शेरकी पूँछ पकडे हुएके समान चन्तुका पसोपेश देखकर तम्पुराननने समझ लिया कि कोई कपट-जाल अवश्य है चन्तुने चारो ओर देखकर कही भाग निकलने-का प्रयत्न किया परन्तु किसी एक व्यक्तिने उसे यह कहकर पकड लिया कि इस धूर्तको मत छोडना, इसने हमें भी धोखा देनेका प्रयत्न किया है

तम्पुराननने उपस्थित लोगोसे पूछा—आप लोग मशाल आदि लेकर कैसे आये ?

एक प्रमुख व्यक्तिने नम्रताके साथ उत्तर दिया—"अन्नदाता ! इसने ही हमे धोखा दिया" इतना कहकर वह चुप हो गया

तम्पुराननने आश्वासनमयी वाणी मे कहा—"कहिए, निसकोच कहिए"

उसने कहा—"इसने हमे यह कहकर यहाँ बुलाया कि केट्टिलम्मा अन्नदाताको धोखा दे रही है, इस प्रकार तम्पुरानके साथ विश्वास-घात करना ठीक नहीं है सत्य स्थिति जानकर स्वामीको बता देना आवश्यक है"

तम्पुराननने चन्तुकी ओर देखा उसकी उस समयकी हालतका वर्णन कैसे किया जाय ? तम्पुरानको ही मावकमके कमरेसे निकलते देखकर

उसके आश्चर्यका ठिकाना नही था उसने सोचा भी नही था कि वे इस प्रकार निर्भय और निश्शक होकर सर्वत्र भ्रमण करते होगे माक्कम्को अपमानित करनेकी उसकी इच्छा तो निष्फल हो ही गई, अब उलटे तम्पुरानको ईश्वरके समान माननेवाले देशवासियोके पजेमे फँस गया ! प्राण-रक्षाका एक ही उपाय दिखलाई पडता था—तम्पुरानकी शरणमे जाना क्षण-भरके लिए उसकी सारी उद्दण्डता और अहकार समाप्त हो गया और वह काष्ठ-प्रतिमा-सा खडा रहा परन्तु वह नीच होनेपर भी योद्धा था अन्तमे जोरसे हँस पडा और बोला—"भागनेका मेरा कोई इरादा नही है मृत्युका भय भी नही है देखूँगा—कौन आज नही तो कल फाँसी पर चढता है" ऐसा कहता हुआ वह सिर उठाकर खडा हो गया, मानो तम्पुरानसे ही मोर्चा लेना चाहता हो

तम्पुराननने इन बातोकी ओर ध्यान ही नही दिया परन्तु तलवार गिर पडनेपर भी और शत्रुओसे घिरा होनेपर भी निस्सकोच और निर्भय खडे उस राज-द्रोहीका औद्धत्य कम्मूसे सहन नही हुआ उसने आगे बढ-कर चन्तुका हाथ पकड लिया किन्तु वह अभ्यासियोमे श्रेष्ठ था, उसने एक ही हाथसे कम्मूको हटा दिया वह दूर जाकर गिरा परन्तु तम्पुरान-के सामने ही उसने यह जो औद्धत्य दिखाया उससे तम्पुरानके क्रोधकी सीमा नही रही यह उसने ताड लिया आग बरसानेवाली उन आँखोसे उसके हृदयमे भी भयका सचार हो गया

तम्पुराननने कहा—नीच-रक्तसे मै अपनी तलवार अशुद्ध नही करूँगा स्वय पालकर बढाये हुए वृक्षको उसी हाथसे नही काटा जाता लेकिन आप यहाँ आनेकी जरूरत नही है चले जाओ

उण्णियम्मा खडी यह सब देख रही थी वह बाहर निकल आई और बोली—"तो, मुझे भी यहाँ नही रहना है माक्कम् और उसके लोग ही आराममे रहे भीख माँगनी पडे तो भी अब यह घर मेरे कामका नही है"

इसका उत्तर भी तम्पुराननने ही दिया—"ऐसा है तो ऐसा ही सही

इस घरकी और इसके निवासियोकी रक्षा मै यहाँके निवासियोको सौंपता हूँ"

एकत्र जन-समुदायने प्रतिज्ञा की—"हम महाराजाकी आज्ञाका प्राण-पणसे पालन करेंगे।"

अब यहाँ खडे रहनेसे कोई लाभ नही, यह सोचकर चन्तु और उण्णियम्मा इक्कण्डनके घर चले गये जनताके चले जाने पर तम्पुरान भी माक्कम्‌ने विदा लेकर रातको ही रवाना हो गये

चौदहवाँ अध्याय

●

चन्द्रोत्तु नम्पियारके साथ तलश्शेरीसे आनेके वाद मानो उण्णिनडा-को एक नया जीवन मिल गया अम्पुनायरके लिए वह कोई भी कष्ट सहनेको तैयार थी फिर भी म्लेच्छोके हाथ पड जानेके कारण उसका भाग्य क्या होगा, यह सोचकर वह घवरा जाती थी नम्पियार उसे वापस ले आए तो वह पहलेके कष्टको एक दु स्वप्नके समान भूल गई

नम्पियारने उससे वात्सल्यके साथ वहुत-कुछ पूछा वे उसके वारेमे केवल इतना ही जानते थे कि मेरे एक कर्मचारीके घरमे कोई ऐसी वालिका रहती है, और अम्पु नायर उसे किसी मार्गमे अनाथ पाकर अपने साथ ले आये है जव प्रश्न करनेपर कुछ समझमे आया तव उन्होने उससे कहा—"तुमको म्लेच्छोके हाथोंमे मैंने नही वचाया, चिरुतकुट्टीने अम्पु नायरके लिए ही सुपरवाइजरको वाध्य करके सव-कुछ करवाया है अपनी आपसी मित्रताके कारण मैंने यह जिम्मेदारी ली, वस इतना ही काम मेरा है

उण्णिनडा चुप रही नम्पियारने भी आगे कुछ नही कहा चन्द्रोत्तु-भवनके द्वारपर पहुँचनेपर उन्होंने इतना और कहा—"सव समाचार देने-

के लिए मैं अम्पुके पास आदमी भेज रहा हूँ तुम्हे इस घरमे आने-जाने-का सदा स्वातन्त्र्य है इसे भी अपना ही घर समझना"

उन्होने अपने घरमे भी सबको बता दिया कि वह बालिका मेरी रक्षामे है और उसे घरकी-जैसी मान लेना चाहिए

उस दिनसे उण्णिएनडाको कोई कष्ट नही रहा उसकी मामी भी उसके साथ सम्मानका व्यवहार करने लगी मालिक ही जिसका आदर करते हो उसे वे लोग आदरणीय माननेको तैयार हो गये तो इसमें आश्चर्य क्या ?

मामाजीका वात्सल्य भी बढ गया मालिककी बहनने स्वय आदमी भेजकर उसे बुलाया और उपहारादि देकर उसके प्रति स्नेह प्रकट किया यह देखकर ही सबने समझ लिया कि यह लडकी भविष्यमे कोई बडा स्थान प्राप्त करनेवाली है

अम्पु नायर मेजर होम्ससे युद्धके बाद, वादेके अनुसार, पहाडपर न जाकर गुप्त वेश धारण करके इधर-उधर घूमते रहे इसी बीच उन्हे एक भयानक समाचार मिला लोग कहते थे कि तम्पुरानके मुख्य सचिव कण्णवत्तु शकरन नम्पियार कपनीवालोके हाथो पकडे गये है वे अत्तन कुरुक्कळसे मिलकर वापसीमे कालीकटके पास एक स्थानपर विश्राम कर रहे थे गुप्तचरोंने खबर पाकर सैनिकोने उन्हे घेर लिया और गिरफ्तार कर लिया इस समाचारकी यथार्थताका पता लगाना आवश्यक था, इसलिए अम्पु नायर वेश बदलकर कालीकट चले गये थे

कण्णवत्तु नम्पियारके पकडे जानेके समाचारसे वेलेस्लीको बहुत सन्तोष हुआ उसको तम्पुरानके एक प्रमुख सहायकके पकडे जानेकी प्रसन्नता उतनी नही थी जितनी कि इस बात की कि इससे मुझे अपनी निश्चित योजना काममे लानेका एक अवसर मिल गया है उसने निश्चित कर रखा था कि तम्पुरानका कोई भी आदमी पकडा जाय तो उसे फाँसीपर चढाकर उसकी सम्पत्तिपर अधिकार कर लिया जाय उसका खयाल था कि इस एक सभावनासे ही स्वाभिमानी और भूमिको प्राणोसे

अधिक माननेवाले नायर डर जायेंगे उसने पपयवीट्टिल चन्तु और अपने दुभाषियेसे इस विषयमे परामर्श किया

दुभाषियेने कहा—प्रभुजनोको फांसीपर चढाना इस देशकी प्रथाओ-के विरुद्ध है मुझे भय है कि सारे नायर एक साथ मिलकर युद्धके लिए तैयार न हो जायें

वेलेस्ली—मेरे खयालमे वे दब जायेंगे इतने प्रमुख व्यक्तिको हम ऊहापोह किये बिना फांसीपर चढा देगे तो लोग अवश्य ही डर जायेंगे फांसी होनेके बाद ही दूसरोको पता चलने दे इस नायरकी क्या राय है, पूछो

चन्तु—चुपली नम्पियारको बन्दी कर लेनेसे ही लोग डर गये हैं अब कण्णवत्तु नम्पियारको फांसी देकर उसकी सम्पत्ति कपनीके सहायकोमें बांट दी जाय तो तम्पुरानका सहायक कोई नही रह जायगा

कण्णवत्तु नम्पियारके साथ चन्तुको दीर्घकालसे स्पर्धा थी कारण यह था कि महाप्रभु नम्पियार चन्तुका विशेप सम्मान नही करते थे अब कण्णवत्तु कुटुम्बकी सारी सम्पत्ति और स्थान भी मिल जानेकी सभावना देखकर वह कपटी खुश हो उठा

वेलेस्लीने चन्तुका भाव समझ लिया उसने दुभाषियेके द्वारा कहलाया—"कण्णवत्तुकी सम्पत्ति कपनीके सहायकोमे बांट देनेकी बात-पर फिर विचार होता रहेगा अभी आवश्यक यह है कि एक छोटी सी सैनिकोकी टुकडी जाकर कण्णवत्तु-भवनकी सम्पत्तिपर अधिकार कर ले सैनिक टुकडी आज ही रवाना हो जाये"

इस प्रकार आवश्यक आज्ञा देकर वेलेस्ली अपने बरामदेमे घूमता हुआ विचारमग्न हो गया कलकत्ता से गवर्नर-जनरलका एक दफ्तरी पत्र और भाईके नाते एक निजी पत्र आज ही उसे मिला था गवर्नर-जनरल-का पत्र उसकी युद्ध-नीतिकी प्रशसा और अबतक किये गये कामके समर्थनसे परिपूर्ण था परन्तु उसके निजी पत्रका स्वर कुछ भिन्न था उसमें स्पष्ट कहा गया था कि इन चार महीनोमें इतने छोटे शत्रु को भी न

जीत सकनेमे कलकत्ता, वम्बई और मद्रासके शत्रु तीव्र आलोचना कर रहे हैं लन्दनमे आनेवाले पत्रोके शब्द भी कठोर हो रहे हैं इसलिए हम दोनोकी मान-रक्षाके लिए एक विजय तत्काल ही प्राप्त होनी आवश्यक है मराठा-साम्राज्यके साथ जो स्पर्धा चल रही है वह शीघ्र ही घोर युद्धमे परिणत हो सकती है ऐसा हो तो उसका नेतृत्व कर्नल वेलेस्लीको देनकी सिफारिश लदनको की गई है इसके विरुद्ध प्रयत्न करनेवाले लोग वहाँ पर्याप्त संख्यामें हैं इसलिए पपशिश राजापर विजयका समाचार शीघ्र ही मिलना आवश्यक है, आदि

गवर्नर-जनरल मार्क्विस वेलेस्लीने समझ रखा था कि ब्रिटिश साम्राज्यका भविष्य उसके ही परिवारपर निर्भर है यह ऐतिहासिक सत्य है कि वह किसी भी प्रकार अपने भाई-बंधुओको ऊँचे पदोपर नियुक्त करनेमे सकोच नही करता था उसने पहले ही निश्चय कर रखा था कि यदि मराठोके साथ युद्ध होनेवाला हो तो मेरे भाईको ही नेतृत्व मिलना चाहिए सिंधिया और होलकरके रुखसे उसने जान लिया था कि युद्ध अनिवार्य है और यदि ऐसा युद्ध शुरु हो गया तो भारत-साम्राज्यका भविष्य ही उसपर निर्भर करेगा अबतक मराठोंके साथ किसी युद्धमें कपनी जीत नही सकी थी इस वार विजय प्राप्त करनेके लिए उसने आवश्यक उपाय कर रखे थे पेशवाको होलकर और सिंधियासे अलग करके अपने पक्षमे कर लिया था गायकवाडको भी रिश्वत देकर और लोभ दिखाकर अपने पक्षमे किया जा चुका था अब केवल सिंधिया और होलकर ही युद्धके लिए तैयार रह गये थे गवर्नर-जनरल उनको भी आपसमे लडा देनेका गुप्त षड्यन्त्र रच रहा था

अकेले सिंधियाके साथ ही युद्ध करना पडे तो कम्पनीकी सेना ही जीतगी इसका उसे निश्चय था उस विजयका हेतुभूत अपने और अपने भाईको वनाया जा सके तो भारतमे ब्रिटिश साम्राज्यके सस्थापक ही वे दोनो भाई माने जायेंगे उस स्वार्थ-मूर्तिकी विचार-धारा यही थी.

कर्नल वेलेस्लीकी इच्छा भी यही थी परन्तु थोडे ही दिनोमे पपशिश

राजापर विजयकी रिपोर्ट देनेके बारेमे अग्रजकी आज्ञाका पालन सभव नही दिखलाई पडता था इस समय लाज रखनेको कण्णवत्तु नम्पियार-की गिरफ्तारीका समाचार उसे मिल गया था विद्रोही नेताओमे एकके केन्द्र-स्थान कण्णवत्तु गाँवमे ही नम्पियारको फाँसी दी जाय तो इस बात-का एक अकाट्य प्रमाण मिल जायगा कि पपश्शि राजाकी शक्ति लग-भग नष्ट कर दी गई है इतना ही नही, तम्पुरानका एक हाथ तो टूट ही जायगा और देशवासियोंके हृदयमे भी अधिक भयका सचार होगा

वेलेस्लीने ये सब योजनाएँ तलश्शेरीके अन्य लोगोको मालूम नही होने दी दो दिन बाद जब नम्पियारको गिरफ तार करके दिवावेके साथ तलश्शेरी लाया गया तभी बेबरतकको इसका पता चला नम्पियारको सम्मानके साथ किन्तु कडे पहरेमे एक रात मूसा मरय्कार नामक मुसल-मान नेताके घरमें ठहराया गया दूसरे दिन शत्रु-सेनाके एक सेनापतिके योग्य आदर-सत्कारके साथ वेलेस्लीने उनका स्वागत किया कर्नल अपनी पूरी वेश-भूषा और सजधजके साथ सब काम कर रहा था दुभाषियेसे यह जानकर कि नम्पियारको भी अपने पदके अनुरूप वेश भूषामे ही उससे मिलना चाहिए, वे भी पूरी शान-शौकतके साथ वहाँ पहुँचे

अभ्यंग स्नान करके अगराग और गुलाब-जल आदि लगाकर मृदु पटाम्बरका कचुक पहने, दोनो हाथोमें सुवर्ण-वीर-शृखला ‡ पहने कमर-में तलवार बाँधे, पूर्ण प्रभुजनोचित आडम्बरके साथ आये हुए उस सम्मान्य अतिथिको अगरक्षकोमेंसे एकने आदरके साथ स्वीकार करके उचित स्थानपर बैठाया बादम कर्नल वेलेस्लीने भी अगरक्षकोके साथ

‡ किसीकी वीरतासे प्रसन्न होकर राजा उसे एक या दोनो हाथोके लिए स्वर्ण-ककण प्रदान करता था, जिसे अत्यन्त सम्मान-सूचक समझा जाता था राजासे प्राप्त किये विना ऐसी शृखला पहननेका अधिकार किसीको नही होता था जजीरके समान बना होनेके कारण इसे शृखला कहा जाता था

उस स्थानमे प्रवेश किया दोनो सेनापति उचित उपचार और अभि-वादनके पश्चात् एक-दूसरेके सम्मुख आसनस्थ हुए

कर्नलने सभाषण प्रारम्भ किया—"केरलवर्मा सकुशल तो है ?"

"जहाँतक मै जानता हूँ, सकुशल है"

"मै जानता हूँ कि वे बुद्धिमान, समर्थ और वीर है परन्तु वे कपनी-के साथ विरोध क्यो कर रहे है ? ऐसा तो नही कि कम्पनीकी शक्तिको वे जानते नही ?"

"कम्पनीकी शक्तिसे वे भली-भाँति परिचित है वे यह भी जानते है कि कम्पनीने बडे-बडे महाराजाओ और नवाबोको जीतकर तीन-चौथाई भारतवर्षपर अधिकार कर लिया है टीपूको जीतनेवाले आपकी चतुराईसे भी वे अपरिचित नही है"

"तो फिर, अविवेकीके समान एक असाध्य कार्यके लिए वे क्यो प्रयत्न कर रहे है ? उससे जनताको वृथा कष्ट ही तो होगा ?"

"हो सकता है परन्तु देशका नाश उनकी गलतीसे नही हो रहा है"

"तो किसकी गलतीसे हो रहा है ? कम्पनीने टीपूको जीतकर यह राज्य स्वाधीन किया है इसका सर्वाधिकार कम्पनीका है यदि महा-राजाके जैसे लोग उसकी सहायता करे तो देशका कितना हित हो सकता है"

"कम्पनीके साथ मिलकर रहना हमारे अन्नदाताको मजूर है परन्तु स्वतन्त्रता, स्वाभिमान, और स्वदेश आदि मूल्यवान वस्तुएँ खोकर जीने-की इच्छा उन्हे नही है न होगी ही"

कर्नलने अपना स्वर बदलकर कहा—"मालूम है इस सबका क्या परिणाम होगा ? आज नही तो कल, मै केरलवर्माकी शक्ति नि शेष कर दूँगा विरोधियोंके प्रति तनिक भी दया दिखानेका इरादा अब मेरा नही है जो पकडमे आयेंगे उनको फाँसीपर ही चढाया जायगा उनकी धन-सम्पत्ति जब्त कर ली जायगी बाल-बच्चोको रास्तोपर निकलवा दूँगा जगलमे रहनेवालोको खानेतकको न मिलेगा सोच लीजिए"

"सोचनेको कुछ है ही नही यह मत्र हमारे अन्नदाता जानते है इतना, और इससे भी कुछ अधिक सहन करनेको तम्पुरान और उनके साथी तैयार है वे सब-कुछ स्वीकार कर मकते है, परन्तु जीते जी केरलकी स्वतन्त्रता खोनेको तैयार नही है इमलिए आपने जिनको पाया है उनको फाँमीपर चढा दीजिए, उनकी मम्पत्ति जब्त कर लीजिए। परन्तु हमारी आगेकी पीढियाँ तो कम-मे-कम मनुष्य ही बनी रहे—इसके लिए हम मव-कुछ महनेको तैयार है"

यह वीरतापूर्ण भापण सुनकर कर्नलने अपने शत्रुका हृदयमे मम्मान किया उसने सोचा था कि यदि एक मधि ही इस प्रकारकी हो जाय कि महाराजाने हार मान ली तो वही हमारे लिए उत्तम वस्तु होगी एक दो मासमे खुदको केरलसे जाना होगा उसके पूर्व महाराजाको जीतने या दवानेका कोई मार्ग दिखाई नही दे रहा है नम्पियारकेद्वारा कोई मंधि हो सके तो विजय-भेरी वजाकर जा सकता हूँ यदि यह सव असम्भव हो तभी नम्पियारको फाँसी देकर ऐसी रिपोर्ट देनेका विचार किया था कि विद्रोहियोकी रीढ तोड दी गई है

इतने वीर और शक्तिशाली व्यक्तिको फाँसी देनेमे कर्नलको भी सकोच हो रहा था फिर भी अपने उत्कर्पके लिए यदि वह ऐसी भी कोई विजय न दिखला सके तो कठिन होगा केवल इस विचारसे ही वह उस भीपण कार्यके लिए तैयार हो रहा था

उपचारपूर्वक दोनो विदा हो गये कणवत्तु नम्पियार जानते थे कि उन्हे कर्नलने अन्तिम उपचार दिखाकर ही भेजा है परन्तु उनके मुखपर कोई विकार प्रकट नही हुआ उन्होने इतना पता लगाने तकका भी प्रयत्न नही किया कि वेलेस्ली क्या करनेवाला है उन्होने अनुमान किया था कि मेरे तलश्शेरी लाये जानेका समाचार महाराजा उसी शामको या दूसरे प्रभातको जान लेंगे यह भी वे जानते थे कि पता चलनेपर वे कुछ भी करके उन्हे बचाये विना नहीं रह मकते यह शका भी उन्हे नहीं थी कि वेलेस्ली इतनी जल्दी कुछ करेगा चार-पाँच दिन बारा-

ध्यानमे रहनके वाद विचार करनेका ढोग भी अवश्य करेगा और उसके वाद ही कोई कार्रवाई की जायगी तलश्शेरीके शेष सब लोगोका भी यही विश्वास था

नम्पियारके लिए एक पूरा मकान खाली करके सब प्रकारकी सुख-सुविधाका प्रवध कर दिया गया था जव उनके मान और प्रतिष्ठाके अनुसार ही सब-कुछ किया गया और स्वय वेलेम्लीने इतने उपचारके साथ उन्हे स्वीकार किया तो देशवासी और सिविल कर्मचारी भी कुछ निश्चिन्त-से हो गये थे शामको तरह-तरहके फल आदि लेकर नम्पियारसे मिलने लोग आये तो उन्हे यह मालूम हो गया कि चिरुतक्कुट्टी भी सजग हो गई है परन्तु उन्हे यह नही मालूम पडा कि उन लोगोको वाहर निकलते ही सैनिकोने वन्दी बना लिया था

अपने उद्देश्यका पता किसीको न चले इस विचारसे ही वेलेम्लीने यह सब कराया था नम्पियार रात्रिका भोजन करके पान खाने वैठे ही थे कि कर्नलकी आज्ञासे दुभापिया वहाँ पहुँचा उसने कहा—"मालिक चिन्ता न करे हम कण्णवत्तु ही जा रहे है पर्याप्त सख्यामें अनुचर भी साथ है" ये शब्द कुछ शुभ-सूचक नही मालूम हुए किन्तु वह धीर योद्धा एक शब्द भी कहे विना दुभापियेके साथ चला गया

× × ×

दूसरे दिन सूर्योदय होनेपर कण्णवत्तुके निवासियोका प्रभात-दर्शन एक पैशाचिक दृश्य था कण्णवत्तु-भवनके सामनेके आँगनमे तीन फाँसियाँ लगी थी—वीचमे वडे नम्पियार और उनके इधर-उधर उनके दो भानजे टँगे हुए थे । और आस-पास सर्वत्र सशस्त्र सैनिक पूर्ण जागरूकताके साथ पहरा दे रहे थे

पन्द्रहवाँ अध्याय

●

कण्णवत्तु नम्पियारकी गिरफ्तारीका समाचार लेकर जब एक आदमी तम्पुरानके निवास-स्थानपर पहुँचा तब तम्पुरान कतेरीके लिए रवाना हो चुके थे उसे निश्चित आदेश था कि समाचार और किसीको न दिया जाय इसलिए वह उलझनमे पड गया दूसरे दिन मध्यान्ह मे तम्पुरान वापस आये परन्तु केट्टिलम्माने उन्हे बताया कि तलश्शेरीमे आवश्यक समाचार लेकर एक आदमी आया है उसे बुलाकर बात करनेपर तम्पुरान एक-दम स्तब्ध हो गये कठिन विपत्तियोमे भी धीर दिखाई देनेवाले प्रियतम-को विषाद-मग्न देखकर केट्टिलम्माने भी समझ लिया कि विपत्ति कुछ साधारण नही है उसके बार-बार पूछनेपर भी कि क्या हुआ, क्या विपत्ति आ गई, तम्पुरान 'किंकर्त्तव्यविमूढ'-जैसे मूक ही रहे कुछ देर बाद एक दीर्घ निश्वास छोडकर, मानो कुछ निश्चय कर रहे हो, कुन्न नायर और तलक्कल चन्तुको बुलवाया अपने दाहिने हाथ कण्णवत्तु नम्पियारको किसी भी प्रकार बचानेके लिए मानो वे बद्ध-कंकण हो गये सोचनेकी बात इतनी ही थी किस प्रकार और क्या किया जाय कुन्न नायरकी सलाह थी कि तलश्शेरी शहरपर सीधा आक्रमण किया जाय चन्तुने कहा कि कुरिच्योको भेजकर उनको निकाल लायगे

तम्पुरान—इस सबसे काम नही चलेगा तलश्शेरी दुर्गपर अधिकार करनेमें टीपू भी समर्थ नही हुआ यह सोचना भी व्यर्थ है इस अवसरपर बुद्धिसे काम लेना चाहिए, बलसे नही अत्तान कुरुक्कळ अथवा उण्णि-मूप्पनसे ही यह काम बनेगा

कुकन—ऐसा न कहे, तम्पुरान ! हमसे जो नही बन सकता वह उनसे कैसे बनेगा ?

तम्पुरान—सुनो, हम तो कपनीवालोंसे लडनेवाले शत्रु है मुसलमान लोग, विशेषकर ये व्यापारी, उनके नजदीक है उण्णिमूप्पन स्वय किले-के अन्दर न जा सके तो भी कई अन्य व्यापारी जा सकते है यह काम हमसे नही, उससे ही होगा इसलिए तुरन्त उसीको बुलाओ

उनकी बात पूरी भी नही हुई थी कि किसीने आकर समाचार दिया कि अम्पु नायर दर्शनोके लिए आये है

"क्या ? अम्पु ? जल्दी ले आओ"—तम्पुरानने आज्ञा दी देशमें रहकर सभी आवश्यक कार्य करनेकी जोखिम अपने ऊपर वहन करने-वाला अम्पु सहसा आ गया तो कार्य भी उतना ही गभीर होगा, यह किसीसे छिपा न रहा

अम्पु नायर प्रणाम करके निश्चल खडा हो गया उसका प्राणहीन, दयनीय और निस्तेज मुख देखकर सबका हृदय कॉपने लगा तम्पुरानने ही साहस बटोरकर प्रश्न किया—

"कुछ भी हो, अम्पु ! कहो, क्या बात है ? जाने बिना उपाय कैसे सोचे ?"

तम्पुरानकी आज्ञा सुननेके बाद भी अम्पुके मुँहसे बात नही निकलती थी यह प्रत्यक्ष था कि वह कुछ बोलना चाहता है, लेकिन उसके लिए बोलना असभव हो रहा है बहुत कठिनाईसे उसने भरे हुए कठसे कहा—"कण्णदन्, नम्पियारको कपनीवालोने "और वह आगे न बोल सका

"क्या कह रहे हो, अम्पु ?" तम्पुरानने पूछा उनके स्वरमे अमर्ष और वेदना भरी हुई थी

अम्पु—वे राक्षस है ! घातक है ! भयानक काम किया !

तम्पुरान—क्या ? हत्या कर डाली ?

तम्पुरान अपना उद्वेग नही छिपा सके

अम्पु—जी उनको उनको कण्णवत्तु-भवनके आँगन मे ही फाँसी !

अम्पुकी आँखे आँसू और आग एक साथ बरसाने लगी

कुकन—क्या ? कण्णवत्तु यजमानको फाँसी दे दी गई ! खुल्लम-खुल्ला ? कण्णवत्तु-भवनमे ? हमारे लोग—देशवासी—नायर लोग कहाँ गये थे ? कोई नही था वहाँ ?

अम्पुने कुकनके अभिमुख होकर कहा—शायद मै अपराधी हूँ यजमानको कपनीवालोंनें पकड लिया यह,मैने सुना उसी समय मै तलश्शेरी पहुँचा वहाँ पता चला कि वेलेस्लीने उनका अत्यन्त उपचार और सम्मानके साथ स्वागत किया है वह जब उनसे मिला तो उसने उनके साथ एक कैदीके रूपमें नही, सम्मान्य अतिथिके रूपमे व्यवहार किया इसपर भी कल रातको ही उन्हे वहाँसे निकलवा लानेका प्रबन्ध मैने किया था परन्तु कूटनीतिज्ञ कर्नलने रातको ही अत्यन्त गुप्तरूपमे उन्हे वहाँसे हटवा ५५ और फिर यह घोर कृत्य किया गया सब हो जानेके बाद ही मुझे पता चला मै स्वय यह सब तुरत बतानेके लिए यहाँ पहुँचा हूँ

अम्पुकी बातें सुनकर तम्पुरान और उपस्थित नेताओंको विश्वास हो गया कि उसकी कोई गलती नही थी

तम्पुरानने सान्त्वना देते हुए कहा—दुखी मत हो, अम्पु, तुमसे कोई गलती नही हुई

परन्तु अरळातु नम्पिको यह ठीक नही जँचा उन्होने पूछा—"नम्पियारको बचानेके लिए अम्पुने क्या उपाय किया था ?"

अम्पुने तम्पुरानकी ओर देखा, मानो पूछ रहा हो कि इस प्रश्नका

उत्तर दूँ या नही तम्पुरान आँखे वद करके योग-ध्यानस्थ-जैसे वैठे थे विवश होकर अम्पुने उत्तर दिया—"कपनीवालोंके एक प्रधान विश्वास-पात्रने वह कार्य अपने ऊपर ले लिया था वे वहाँ सव-कुछ करनेकी शक्ति रखते है इसलिए कोई कठिनाई हो ही नही सकती थी लेकिन वेलेस्ली इतना कपट करेगा यह किसने सोचा था ?"

नम्पिको मजूर नही हुआ उन्होने कहा—फिर भी नम्पियारके पास किसीको रखना ही चाहिए था

इसका उत्तर देनेका अवसर भी अम्पुको नही मिला महाराजा गीघ्रतासे उठकर किसीसे कुछ कहे विना ही अन्दर चले गये

कण्णवत्तु नम्पियार और उनके उत्तराधिकारियोको फाँसी दी जाने-का समाचार जव फैला तो देश-भरमे हाहाकार मच गया चुपलि नम्पि-यारके कारागृहमे रखे जानेसे ही जनता भयभीत हो रही थी अव उच्च-पद, शक्ति, प्रताप आदिके साथ निर्वाध रूपमे शासन करनेवाले एक महाप्रवल प्रभुको इस प्रकार उनकी ही प्रजाके वीच, उनके ही भवनमे फाँसी दी गई यह वात सवके लिए घवराहटका कारण वन गई सभीने यही माना कि अव महाराजाके पख टूट गये उन्हे यह डर भी होने लगा कि यदि हमारे कामोका पता भी कपनीको चल जाय तो क्या होगा ? कर्नलने जिस उद्देश्यसे यह घोर कृत्य करवाया, वह सफल हो गया

परन्तु, एक वात कपनीवाले और तम्पुरानके पक्षके अरळात्तु नम्पि-जैसे लोग भी नही जानते थे वह वात यह थी कि कपनीके भयसे अथवा अपने स्वार्थोंके वशीभूत होकर वडे वडे प्रभुजन भले ही दव जायँ, मगर साधारण जनताके हृदयमे तम्पुरानके लिए जो आदर और भक्ति है उसमे कभी कमी नही हो सकती

उस दिन महाराजा न तो वाहर निकले और न अपने सचिवो, सेनापतियो आदिसे ही मिले दूसरे दिन प्रभातमें ही उन्होने अम्पुको वुलाकर आज्ञा दी कि वह तत्काल अपने स्थानको लौट जाये और यह ध्यानमें रखता हुआ कि वही कोई विद्रोह न फूट पडे, देशमे ही रहे.

इतना ही नही, तलश्शेरीमे जो-कुछ होता है उसकी पूरी जानकारी रखे और समय-समयपर सूचनाएँ भेजता रहे उनका निश्चित आदेश था कि मेरी आज्ञा मिले विना किसीसे कोई युद्ध न किया जाय

तम्पुरानकी अवसरके अनुकूल ऊँचे उठनेकी शक्तिसे परिचित अम्पु-को इन आज्ञाओमे अत्यधिक आश्चर्य हुआ परन्तु तम्पुरानने अधिक कहनेकी अनिच्छा प्रकट की तो वह आज्ञा लेकर चुपचाप बाहर निकल आया उस विषयमे अधिक सोचनेपर वह इस निर्णयपर पहुँचा कि महाराजा कोई गम्भीर विचार कर रहे है और उसके उपरान्त जो निश्चय होगा वही आगेका कार्यक्रम बनेगा उसे लगा कि घबरानेकी बात नही, महाराजा तैयारी कर रहे है, समय आनेपर सबको दिखाई दे जायगा

कण्णवत्तु नम्पियारको फाँसी दे दी जाने और उनकी सम्पत्ति जब्त कर ली जानेपर भी तम्पुरानका शान्त बना रहना सबको बुरा लग रहा था अरळात्तु नम्पि आदि सेवक-प्रमुखो और कोट्टयके नायर-सामन्तोने इसे महाराजाके भारी तेजोभगका सूचक माना परन्तु महा-राजाने अपने दैनिक कार्यक्रममे भी कोई अन्तर नही आने दिया अप-राह्नमें जब नम्पिके साथ शतरज खेला करते थ तब प्रतिदिन ही नम्पि टोकते थे—खेलमे असावधानी मालूम हो रही है महाराजा कभी इसका उत्तर नही देते थे रोज कथकलि देखनेका कार्यक्रम भी जारी रहा

सीधे-सादे नम्पिको यह सब देखकर बडा दुःख हो रहा था वे सोचा करते थे—और कभी-कभी कह भी दिया करते थे कि—बडे लोगोको किसीसे सच्चा स्नेह नही होता देखो न, अपने लिए प्राण देनेवाले अभिन्न मित्रकी हत्या होनेपर भी महाराजाको कोई उद्विग्नता नही हुई! पहले-जैसे खेल-तमाशेमे मग्न है!

एक दिन शतरज खेलते हुए नम्पिने प्यादेसे वजीरको मार दिया फिर उन्होने कहा—"हाय! वजीर को प्यादे से काट दिया फिर भी देख

तो निश्चल ही है इस खेलमें अब शायद उत्साह नही है।" महाराजा किसी घोर व्यथामे म्लान होकर चुपचाप वहांसे उठ गये

तम्पुरानके लोगोंके बीच और भी कुछ अफवाहे उड रही थी जबसे पपयवीट्टिल चन्तुका विश्वास-घात प्रकट हुआ, तबसे कुछ प्रमुख व्यक्तियोंके दिलोमे भी शका-कुशकाएं उठने लगी थी चन्तु और अम्पु रिश्तेदार थे, इसलिए अम्पुपर भी लोग शका करने लगे थे तम्पुरान पहाडपर है, परन्तु तीन महीने हो गये अम्पु देशमे ही रह रहे है। लोग पूछने लगे, ऐसा क्यो ? कर वसूल करने और देख-भाल करनेके लिए तम्पुरानने स्वय नियुक्त किया है, साधारण लोग इस बातको नही समझते थे उन लोगोने निश्चय कर लिया कि किसी दुर्विचारसे ही वह देशमे रह रहा है

कण्णवत्तु नम्पियारको न बचानेके लिए भी लोग अम्पुको दोषी ठहराने लगे यह भी कहा जाता था कि यदि अम्पु आवश्यक कार्रवाई करनेको तैयार होता तो देशवासी कम्पनीकी सेनाको मार भगाते यह भी हो सकता था कि तलश्शेरीमे या कण्णवत्तु जानेके मार्गमे नम्पियारको छुडा लिया जाता जनतामें यही खयाल फैला हुआ था कि कण्णवत्तु नम्पियारकी हत्या अम्पुकी लापरवाहीसे हुई

लोग यह भी जानते थे कि नम्पियार और अम्पुके बीचमें अच्छा सम्बन्ध नही था अम्पुका युवावस्थाका उत्साहाधिक्य महाराजाके पुराने सचिवो और सेनापतियोमेसे अनेकको पसन्द नही था महाराजा यह जानते थे यह भी एक कारण था जिसने उन्होने अम्पुको देशमें रहकर काम सँभालनेकी आज्ञा दी थी

अम्पुके बारेमे दुशकाएं फैली तो कैतेरी-भवनके सारे जीवनमे ही वे जुड गई मानवन्से मिलनेके लिए जब महाराजा पधारे थे तबकी घटना अब पहाड बन चुकी थी उसे यहाँतक बढा दिया गया था कि कुरुम्ब्रनाट्टु राजाकी सेना और अम्पुने मिलकर महाराजाको घेर लिया

था और महाराजा अपने अद्भुत पराक्रमके कारण ही बच सके लोग यह भी कहने लगे कि माक्कम् केट्टिलम्मा भी शत्रुके साथ मिलकर महाराजाको धोखा दे रही है यदि ऐसा न होता तो रातको उन्हे घेर लेनेका प्रबन्ध न किया जा सकता

महाराजाके सामने ही नम्पिने अम्पुकी उदासीनताकी बात कही इससे अनुमान किया जा सकता है कि बात कितनी फैल चुकी थी इस प्रकारकी बाते शुरू करनेवाला पडोसी इक्कण्डन नायर था देशवासियो पर अम्पुके प्रभावको कम करनेका यह उत्तम उपाय था इस प्रकारकी बाते फैलती देखकर अपने शत्रु-पक्षको एक साथ समाप्त करनेके मनसूबेमे चन्तु नायर भी उन्हे खुल्लम-खुल्ला कहने लगा जहाँ अवसर मिलता, वह कहता फिरता कि कण्णवत्तु नम्पियारको फाँसीपर लटाने देना महाराजाके लिए एक अमिट कलककी बात है अम्पु नायरकी छिपी मददसे ही कम्पनीवाले यह कर सके नायर कहलाने वालोके लिए अब सिर ऊँचा करके चलना ही कठिन हो गया है, आदि-आदि

माक्कम्के बारेमे भी ये लोग बाते फैलाने लगे उसके ऊपर चरित्र-दोषका आरोपण भी कुछ दिनोसे हो रहा था किसीकी आज्ञाके बिना वह तीन-चार दिनोके लिए कही चली गई थी यह बात भी सबको मालूम हुई तम्पुरानको बुलवाकर कम्पनीवालोके सुपुर्द कर देनेके षड्‌यन्त्रकी अफवाह तो दावानलके समान सारे देशमे फैल गई

अम्पु नायर जहाँ जाते वही महसूस करते कि लोग उन्हे शकाकी दृष्टिसे देखने लगे है कोई सीधे कुछ नही कहता था, परन्तु जब वे किसीके पास पूर्ववत् राज्य-कार्यके सम्बन्धमे जाते तो या तो गृहपति घरमें न होता, या वह कार्यमे कोई अभिरुचि न दिखाता था धन, जन या भोजन-सामग्रीके बारेमे कहते तो उत्तरमे कोई-न-कोई बहाना सुननेको मिल जाता इस प्रकार उनके लिए सारा वातावरण ही बदलता हुआ दिखलाई पडा

अम्पु जब तलश्शेरीकी बातें जाननेके लिए चन्द्रोत्तु-भवन गये तब उन्हें सारी बातें मालूम हुईं चन्तुसे बचनेके लिए वहाँ जानेके बाद, कण्णवत्तु नम्पियारकी रक्षाका उपाय करनेके लिए एक बार और भी वे वहाँ गये थे, परन्तु उन दिनों जल्दीमें थे अब इतनी जल्दी न होने-से कुछ आरामसे बातें होने लगीं चन्द्रोत्तु नम्पियारने अम्पुका यथा-पूर्व प्रसन्नतासे स्वागत किया

बहुत देरतक बातें होती रहीं जब जानेके लिए निकले तब नम्पि-यारने ही उनसे कहा—वह युवती तुम्हारा नाम जप-जपकर ही दिन बिता रही है उससे दो बातें करके ही जाना उचित होगा यही अन्तःपुरमें होगी चलो

जबसे उण्णिएनडाको मालूम हुआ कि अम्पु नायर आये हैं तबसे ही वह अपने हृदय-वल्लभसे मिलनेके लिए उतावली हो रही थी अन्य कार्यों-में व्यस्त रहनेके कारण अम्पु उण्णिएनडाको भूले हुए-से थे अब चन्द्रोत्तु यजमानकी बात सुनकर अपने वक्षस्थलपर हारके समान थोड़ी देर पड़ी रही बालिकाकी स्मृति ताजा हो आई उनकी प्राण-रक्षाके लिए उसने अपने प्राणों और मानको भी बाजीपर चढ़ाकर जो धीरता दिखाई थी उसका स्मरण करके वे पुलकित हो उठे

छोटी अवस्थामें ही विधुर हुए अम्पु नायरको उसी समय महाराजा-के साथ देश छोड़ना पड़ा था और उन्होंने गृहस्थ-जीवनकी बात कभी सोची ही नहीं परन्तु इस समय उन्हें मालूम हुआ कि उण्णिएनडाके प्रति उनके हृदयका भाव किस ओर झुक रहा है

उन्होंने अन्तःपुरके दालानमें प्रवेश किया ही था कि उण्णिएनडाने एक मन्द मुस्कराहटके साथ, लज्जासे मुख नीचा करके उनका स्वागत किया अम्पुने प्रति-मन्दहासके साथ कहा—"कैसी हो ? उस दिन तो तुमने मेरे प्राण ही बचा लिए उसका धन्यवाद कैसे दूँ ?"

उण्णिएनडाने कहा—ये कैसी बातें कर रहे हैं ? मैं तो अनाथ होकर

आई थी आपनेही मेरे प्राणो की रक्षा की मैं ही सदाके लिए आपकी आभारी हूँ

दोनो आगे बाते करनेमे असमर्थ रहे उण्णिनडा अपने हृदयमे तरगे भरनेवाले भावोको प्रकट करनेमें असमर्थ थी उसका अनुराग उसके अन्तरमे दृढमूल हो गया था, किन्तु उसे व्यक्त करनेके लिए वह शब्द कहाँ पाती ? राज्य-शासन और युद्ध-भूमिमे ही जीवन बितानेवाले अम्पु नायरको तो पता ही नही था कि ऐसे अवसरोपर क्या बोलना और क्या करना चाहिए फलत वे दोनो बहुत देरतक चुपचाप बैठे रहे परन्तु वह मौन अनन्त वाग्मितासे भी अधिक प्रभावशाली और परस्पर भाव-विनिमयके लिए पर्याप्त था अन्तमे अम्पुनायरने कहा—"किसी बातके लिए दु खी मत होना सब ठीक हो जायगा" ये शब्द उण्णिनडाको प्रणय-प्रतिज्ञाके-जैसे प्रतीत हुए

उसने केवल इतना ही उत्तर दिया—"श्रीपोर्कली भगवती सब भला करें !"

"शीघ्र ही आकर मिलूँगा," कहते हुए अम्पु नायर बाहर निकल आये

अपनी बहनके और अपने सबधमे जनताके विचार अम्पुको चन्द्रोत्तु नम्पियारसे मालूम हुए इससे उनको बुरा तो जरूर लगा, परन्तु सबसे अधिक दु खद उनके लिए यह विचार था कि इन बातोसे महाराजा और देशको कितनी बडी क्षति हो सकती है अरळात्तु नम्पिके सकेतोका अर्थ भी अब उसकी समझमें स्पष्ट रूपसे आ गया उन्हे केवल एक ही समाधान था कि स्वय महाराजाने इन बातोपर विश्वास नही किया है

कुछ लोगोने इस प्रकारकी बाते करके महाराजाके मनमे भी अम्पु और माक्कम्के प्रति अविश्वास उत्पन्न करनेका प्रयत्न किया अरळात्तु नम्पिने बडी कैट्टिलम्मासे भी इस प्रकारकी बाते की, परन्तु उस मनस्विनीने दृढ स्वरमें उत्तर दिया—"चुप रहिए आपको कुछ नहीं मालूम माक्कम् कभी महाराजाको धोखा नही दे सकती "

इस रास्तेपर लाभ न देखकर नम्पिने महाराजसे सीधे ही बाते की उन्होंने जब कोई उत्तर नही दिया तो सारी बाते उन्हे विस्तारसे सुनाई सब सुननेके बाद तपुराननने खेदके साथ कहा—

"नम्पि, आप बडे सरल है शत्रु हमे नष्ट करनेके लिए कैसे-कैसे उपाय कर रहे है, आप नही जान सकते सधि-विग्रह राजनीतिका मुख्य अवलब है"

नम्पिको इस उत्तरमे सतोप मानना ही पडा

सोहलवाँ अध्याय

कण्णवत्तु नम्पियारकी हत्यापर भी तम्पुरान उदासीन ही रहे. इससे कर्नल वेलेस्लीको भी आश्चर्य हुआ लगभग एक मास व्यतीत हो गया, फिर भी देश शान्त था विद्रोहका नाम-निशान भी कहीं नहीं था समाचार आया करते थे कि वयनाट्टुमें इधर-उधर कुछ अव्यवस्था है, परन्तु मणत्तना, मानचेरी आदि स्थानोंमें कोई हलचल नहीं थी कर्नल-को यह भी पता चला कि तम्पुरान शतरंज और कथकलि आदिमें मग्न होकर समय बिता रहे हैं

इस अस्वाभाविक शान्तिसे पहले-पहल नय-निपुण कर्नल वेलेस्लीको कुछ शंकाएँ हुईं परन्तु कण्णवत्तु-भवनकी भीषण घटनाके बाद एक मासतक महाराजाको चुप ही देखकर उसको विश्वास हो गया कि महाराजा भी डर गये हैं और अब कहीं विद्रोह नहीं हो सकता उसने सबसे कह दिया कि दो सप्ताहके अन्दर ही मैं यहाँसे रवाना हो जाऊँगा

उसने गवर्नर-जनरलको भी इसकी सूचना दे दी प्रति सप्ताहके पत्रों-में वह अपनी योजनाका राग अलापा करता था अब उसने जो देखा कि महाराजा प्रतिकारके लिए तैयार नहीं हो रहे हैं तो उसने फिरसे

इस आशयका पत्र लिखा—"केरलमे इधर-उधर मुख्य स्थानोको चुनकर दुर्ग बना लेगे और उनमे अपनी सेना रख देगे नायरोसे आयुध रखवा लेगे और घोषणा करके सबको मना कर देगे कि कोई वनवासी तम्पुरानको भोजन-सामग्री न दे ऐसा करनेके बाद केरलमे शान्ति-भगकी दिशामे एक कुत्ता भी न भौकेगा" यह भी लिख दिया था कि रवाना होनेके पूर्व सैनिक-नियमोके अनुसार यह सब करवा लिया जायगा

इस पत्रके बाद वह वापस बुलाये जानेकी प्रतीक्षा अधीरताके साथ तलश्शेरीमे करता रहा

देशमे इधर-उधर बनाये जानेवाले दुर्ग पूर्ण होने लगे कालीकटसे उत्तरकी ओरके मुख्य स्थानोमें ऐसे दुर्ग खडे हो चुके थे वहाँ जो सेना और शस्त्रास्त्र रखे गये थे उनका उद्देश्य महाराजाको रोकना नही, स्थानीय प्रभुजनोको डराकर महाराजासे दूर रखना था

इसके पश्चात् वेलेस्लीने एक घोषणा करवाई कि जो नायर छह महीनेके अन्दर अपनी बन्दूके, तलवारे आदि सब प्रकारके आयुध कपनीके सुपुर्द न कर देगा उसे कठोर दण्ड दिया जायगा उसे विश्वास था कि इसमे पूर्ण सफलता मिलेगी साथ-ही-साथ उसने यह आज्ञा भी निकाल दी कि महाराजा और उनके लोगोको किसी प्रकारकी भोजन-सामग्री न भेजी जाय

उसने अपने बडे भाईको लिख दिया कि मैने न केवल महाराजाको जीत ही लिया है, वरन् केरलमें सदाके लिए शान्ति स्थापित कर दी है वह जानता था कि अब उसके प्रधान सेनापति बनाये जानेमें विलम्ब नही होगा मराठोंके साथ युद्धकी तैयारी पूर्ण हो चुकी थी, इसलिए जब यह पत्र मिला तो गवर्नर-जनरलने तुरन्त अपने भाईको भारतकी ब्रिटिश सेनाका सेनापति नियुक्त कर दिया और इस नियुक्तिकी सूचना उसे दे दी गई

कलकत्तेसे तलश्शेरी पत्र पहुँचनेमे दो सप्ताह लगा करते थे कर्नल

वेलेस्ली अपनी तैयारियाँ पूर्ण करके यात्राके दिनकी उत्सुकताके साथ प्रतीक्षा करने लगा

तलश्शेरीमे तम्पुरानके सहायकोको दवानेका जो प्रयत्न किया जा रहा था वह लगभग सफल होता दिखाई दे रहा था खोज करनेमे यह तो नही जाना जा सका कि सहायकोके सगठनका नेता कौन है, परन्तु इतना मालूम हुआ कि सारा काम वेवरकी प्रेयमी चिरुतक्कुट्टीकेद्वारा किया जा रहा है इसके कर्नलको बहुत परेशानी हुई यदि उसे गिरफ्तार कर लिया जाय तो तलश्शेरी छोडनेके पूर्व उसका निर्णय करना सभव न होगा और चले जानेके बाद वेवर किसी न-किसी प्रकार उसको छुडा ही लेगा नागरिक अधिकारी उसको दण्ड देगे ही नही इस सब उलझनमे कर्नलने अपने दुभापियेको बुलाकर परामर्श किया उसने कहा—"केरलवर्माके जो सहायक तलश्शेरीमे ही है उनको समाप्त किये विना यदि हम चले गये तो वे तत्काल ही फिर सिर ऊँचा उठा लेगे हमारे लिए यह लज्जाकी बात होगी तुम क्या कहते हो ?"

दुभापिये सिकुवेराने उत्तर दिया—"यह ठीक है, परन्तु हमारे पास जितना समय रह गया है उसमे क्या किया जा सकता है ?"

"किस-किसके विरुद्ध पूर्ण और अकाट्य प्रमाण मिल चुका है ? जिनके बारेमे मिला है, उनके विरुद्ध वेवरकी अनुमतिके बिना हम नियमानुसार कार्रवाई भी तो नही कर सकते ?"

"सुपरवाइजरके दुभापिये लुई पेरेराके विरुद्ध प्रमाण मिला है तम्पुरानके मुख्य सहायक उण्णिमूप्पनको उसने एक पत्र लिखा था वह हाथ लग गया है इसका भी प्रमाण मिला है कि उसने तम्पुरानके लिए मय्यपीसे बन्दूके मँगवा दी है"

"वह सहायता तो अब हमने बन्द कर दी है केरल वर्मा अपनी बन्दूके लिये बैठे रहे बारूद और गोलियाँ अब उन्हे कहाँ से मिलेगी ?"

"कुछ भी हो पेरेराको तुरन्त गिरफ्तार करने के लिए आवश्यक प्रमाण हमारे पास मौजूद है शत्रुकी सहायता करनेके अपराधमें सैनिा-

नियमोंके अनुसार दण्ड भी दिया जा सकता है"

"पेरेरा ही सगठनका नेता है ?"

"नही अबतक जो प्रमाण मिला है उससे यह मालूम होता है कि नून तम्पुरानके ही किसी व्यक्तिके हाथमे है वह चिरुतक्कुट्टीकेद्वारा सब काम करा लेता है परन्तु चिरुतक्कुट्टीको इस सघके साथ सबद्ध करनेका कोई प्रमाण अबतक नही मिला इतना अवश्य है कि एक दिन अप्पु नायरको उसके घरसे निकलता हुआ देखा गया था"

"और कोई प्रमाण नही है ? मुझे भी लगता यही है कि सारा काम उसी स्त्रीके द्वारा होता है पेरेरा केवल आज्ञापालक है परन्तु स्वय उसे आज्ञा देनेवाला कौन है, इसकी जानकारी और प्रमाण प्राप्त करना आवश्यक है पेरेराको पकडा जाय तो क्या वह खुद सब-कुछ स्वीकार नही करेगा ?"

"उससे कहलानेका उपाय हो जायगा परन्तु वह सुपरवाइजरका दुभाषिया है उसे सैनिक कैसे गिरफ्तार कर सकते है ? यदि उसे गिरफ्तार किया गया तो वम्बई-सरकार ऊधम मचा देगी कलकत्तेसे बबई कितना निकट है"

सिवुवेराके सकेतका अर्थ कर्नल वेलेस्लीने समझ लिया परन्तु उसने यह भी निश्चय कर लिया कि मै एक क्षुद्र औरत और एक मामूली नौकरको अपनी योजनाएँ विफल करनेका अवसर नही दूँगा कुछ सोचकर उसने कहा—"नियमके विरुद्ध कुछ करना मुझे स्वीकार नही है तो फिर क्या इतने बडे कार्यको सिद्ध करनेका कोई दूसरा उपाय है ही नही ?"

सिवुवेराने कर्नलका विचार समझ लिया उसने कहा—"कर्नलकी अनुमति हो तो—"

कर्नलने उसे वाक्य पूरा करने नही दिया बीचमें ही कहा—"किसी भी प्रकार चिरुतक्कुट्टीके विरुद्ध पूरा प्रमाण मिल जाना चाहिए यही आवश्यक है"

उस दिन सायकाल खुदको तलश्शेरीका उप सम्राट् माननेवाला लुई पेरेरा अपने घरसे एकाएक गायब हो गया

तलश्शेरीके नागरिकोमे बडी हलचल मची प्रत्येक व्यक्तिने अपने मनोभावके अनुसार इस घटनाका अर्थ लगाया अधिकतर लोगोने यही कहा कि कण्णवत्तु नम्पियारकी फांसीकी प्रतिक्रियामे महाराजाके अनुचरोने ही यह काम किया है सुपरवाइजरकी छाया माने जानेवाले पेरेरा-को पकडनेका साहस और किसे हो सकता था ? यह समाचार फैलानेवाला था सिकुवेरा वह खुल्लम-खुल्ला कहा करता था कि "पगशिके लोग यहाँ आकर भी अनीति करने लगे "

तम्पुरानके कुछ मित्रो और चिरतक्कुट्टीने वस्तुस्थितिको बहुत-कुछ समझ लिया कण्णवत्तु नम्पियारके लिए फल लेकर जानेवाला जब वापस नही आया तभी चिरुतक्कुट्टीने समझ लिया था कि यह आपत्तिकी सूचना है उसने बहुत पहले ही समझ लिया था कि कर्नल और सिकु-वेरा उसपर शका कर रहे है वह जानती थी कि वे उसके बारेमे गुप्त रूपमे जांच-पडताल कर रहे है सब सोचकर उसने अनुमान कर लिया कि कर्नलकी आज्ञासे ही पेरेराको गायब किया गया है इस कार्रवाईके उद्देश्यके बारेमे भी उसे कोई शका नही थी पेरेरा व्यापार-कार्यमे अति

चतुर अवश्य था, परन्तु शासन-कार्यमे जो-कुछ करता था वह सब चिरुतक्कुट्टीके कथनानुसार होता था और यह भी सब जानते थे कि कर्नलको व्यापार-कार्योमे कोई अभिरुचि नही है तो फिर पेरेराकी गिरफ्तारीका कारण शासन-सम्बन्धी है और उसका लक्ष्य मै स्वय हूँ, यह भी उस बुद्धिमतीने जान लिया

एक महीनेसे अधिकसे तम्पुरानको चुप देखकर उसने अनुमान किया था कि किसी विशेष विचारसे ही वे ऐसा कर रहे है परन्तु कण्णवत्तुकी हत्याकी कोई प्रतिक्रिया न देखकर उसने समझा कि विद्रोहियोकी शक्ति अवश्य ही कम हो गई होगी बेबर भी कहने लगा कि पगश्शि, जो अब-तक व्याघ्र था, अब लोमडी बन गया है

अम्पु नायरके पाससे भी आजकल कोई सन्देश नही आता था. चिरुतवकुट्टीने इसे भी महाराजाकी बढती हुई अशक्तिका चिह्न माना. सब मिलकर, लक्षण कुछ शुभ नही दिखलाई पडे अतएव वह सोचने लगी कि यहांसे थोडा हटकर रहना ठीक होगा

परन्तु दो सप्ताह बाद ही कर्नल कलकत्ता चला जायगा यह बात उसे आश्वासनमय मालूम हुई वह जानती थी कि वेलेस्लीके चले जाने-पर मेरे लिए भयका कोई कारण नही रहेगा तम्पुरान और उनके लोग दबेगे नही यह भी वह जानती थी अम्पु नायरकी गति-विधिका कोई पता न होनेके कारण उसने एक विश्वास-पात्रको चन्द्रोत्तु नम्पियारके पास समाचार लेनेके लिए भेज दिया

पेरेग गुप्त रूपसे कर्नलके बंगलेमे ही ले जाया गया हाथोमे हथ-कडी और पैरोमे बेडी डालकर उसे एक कमरेमें बन्द कर दिया गया उस कमरेमे कर्नल, मिकुवेरा और एक-दो विश्वस्त नौकर ही प्रवेश कर सकते थे एक दिन पूरी तरह भूखा रखनेके बाद कर्नल उससे प्रश्न करने लगा पहले-पहल क्रोधमे होकर उसने जो-कुछ कहा उसका सार यह था—

"तम्पुरानके प्रमुख सलाहकारोमेसे अनेक मेरे अधीन हो गये है उनसे तुम्हारे विश्वास-घातकी सब बाते मालूम हो चुकी है उण्णिमूप्पनको जो पत्र तुमने लिखा था वह हमारे हाथ लग गया है इस सबका परि-णाम फासी होगा तुम्हारी सब सम्पत्ति जब्त करनेका आदेश मैने दे दिया है केवल यहाँ नही, कोच्चि, बम्बई आदिमे भी जो-कुछ तुम्हारा है वह सब कम्पनीके अधिकारमे आ जायगा और राज-द्रोहका दण्ड तो फासी है ही"

कर्नलका स्वभाव जाननेवाले पेरेगने क्षण-भरके लिए भी इसको धमकी-मात्र नही समझा वह जानता था कि जिसने देशके अति प्रमुख व्यक्तियोमे भी प्रमुख कण्णवत्तु नम्पियारको फांसी देनेमें आगा-पीछा नही किया वह मुझ-जैसे छोटे व्यक्तिको लटका देनेमें निश्चय ही कोई

सकोच नही करेगा अपने आन्तरिक नेत्रोमे वह उस दृश्यको स्पष्ट देखने लगा जिसका वर्णन कर्नलने किया जीवनमे केवल धनको इष्टदेव माननेवाले पेरेराको इस खयालसे भी बहुत दु ख हुआ कि उसकी सम्पत्ति जब्त कर ली जायगी

पेरेराकी मुख-मुद्रासे उसकी मनोदशाको ताड लेनेवाला सिकुवेरा पुर्तगीज भाषामे उसे सान्त्वना देने लगा उसने कहा—"सब-कुछ मजूर करके अपने साथियो और सलाहकारोके नाम कर्नलको बता दोगे तो प्राण रक्षा हो जायगी पेरेराने स्वीकार कर लिया और कर्नलसे निवेदन किया—"स्वामी, इस क्षुद्र जीवने अपनी बुद्धि से कुछ नही किया सब शैतानकी प्रेरणा से हो गया मै तो कम्पनीका दासानुदास हूँ आप कृपा करके मुझे बचाइए मै कम्पनीका नौकर बनकर उसके अन्नसे पलनेवाला हूँ जो गलती हुई वह दूसरोके कहनेमे आकर कर गया"

कर्नलने घृणाके भावसे कहा—"तेरी प्रार्थनापर हम विचार करेगे अपनी सब कार्रवाइयोका ब्यौरा हमे लिखकर दे उसपर हम विचार करेगे और फिर निर्णय करेगे कि तुझे क्या दण्ड दिया जाय"

शेष कार्य सिकुवेराको सौपकर कर्नल वहाँसे चला गया

लुई पेरेराने अपनी गलतियाँ कम बताते हुए, सारा अपराध चिर-तक्कुट्टीके सिर मढकर लिखित बयान दे दिया उसकी बातोका सार यह था कि मै एक अत्यन्त चतुर स्त्रीके हाथोमे पड गया और उसकी आज्ञा से ही सब-कुछ करता रहा उसने यह भी बताया कि सरकारकेद्वारा ही तम्पुरानको भोजन-सामग्री और वस्त्र आदि मिलती है

सिकुवेराने कहा—तुम्हारा कहना सच हो सकता है, परन्तु यह सब कर्नलको स्वीकार होगा या नही, मै नही जानता कर्नल सबको भली भाँति जानते है और चिरुतक्कुट्टीको तो लोग तुम्हारे ही अधीन बताते है

पेरेराने उत्तर दिया—यह तो सच है कि चिरुतक्कुट्टीका उस

स्थानतक पहुँचानेवाला मै ही हूँ परन्तु सुपरवाइजरके अधीन होनेके बादसे हमारे परस्पर सम्बन्ध बदल गये वह कृतघ्न अब मुझे एक आश्रित-मात्र समझती है

"तो उसको इन कार्योमे सलाह कौन देता है ? यदि कहो कि वह अपनी बुद्धिसे सोचकर ही यह सब करती है तो कौन मानेगा ?"

मेरा विश्वास है कि सूत्रधार मूसा है और एक बात भी है चिरुतक्कुट्टीने मेरा परिचय होनेके पहले अम्पु नायरके साथ उसकी मैत्री थी सुपरवाइजरके सामने इतनी चतुराई दिखानेवाली वह औरत अम्पुके सामने भीगी बिल्ली बन जाती है वह जो-कुछ भी कहे, सब-कुछ माननेके लिए वह तैयार रहती है यह सब मैने थोडे ही दिन पहले जाना था एक बार चिरुतक्कुट्टीने मुझसे पचास हजार पणम्*की रकम मांगी थी बहुत प्रयत्न करनेपर भी मै चालीस हजार ही एकत्र कर पाया, तो उसने अपने गहने गिरवी रखकर वह रकम पूरी करके इसी तलश्शेरी नगरमें अम्पु नायरके हाथोमें सौपी मैने अपनी आँखोसे देखा था"

"इसका प्रमाण ?"

"मेरी आँखे कर्नलके आनेसे एक-दो सप्ताह बाद ही यह घटना हुई थी तब युद्ध दुबारा आरम्भ नही हुआ था"

"इनका सम्बन्ध कैसा है, बिलकुल नही जानते ? कितनी भी मित्रता हो, इस प्रकार हाथ खोलकर पैसा देनेका तो कोई और कारण होना चाहिए ?"

मैने इस बारेमे जाननेका बहुत प्रयत्न किया परन्तु कुछ समझमें नही आया सीधे पूछता था तो उत्तर ही नही मिलता था एक बार केवल इतना कहा था कि "वह मेरे लिए प्राणोसे भी बढकर है"

"उसकी पूर्वकथाका कुछ परिचय है ?"

---

* ढाई आनेकी बराबरीका पुराना केरलीय सिक्का

"कई लोग कई बातें कहते हैं उसके कोई बन्धु-बान्धव अथवा परिवार नही है किसी बडे घरकी स्त्री है टीपूके सैनिक उसे गुलाम बनाकर ले गये थे बादमे उनसे तो बच गई, परन्तु बन्धुजनोने भ्रष्टा मानकर स्वीकार नही किया, इसलिए अनाथ हो गई"

"तब तुम्हारे लोगोने उसे पाया हो सकता है अप्पु नायरका परिचय इसके पहलेका होगा कुछ भी हो, वह सामान्य स्त्री नही है"

जानने योग्य सब-कुछ जान लिया, यह जानकर सिकुवेरा लौट गया उसने यह भी समझ लिया कि पूर्ण जानकारी प्राप्त करनेके लिए और कोई उपाय खोजना होगा

सत्रहवाँ अध्याय

अपने भवनसे स्वय ही निकली हुई उण्णियम्माने पडोसके इक्कण्डन नायरके घरको अपना निवास-स्थान बना लिया था इक्कण्डन नायरको यह निर्णय पूर्णतया स्वीकार था, क्योंकि उनके रहनेसे कैतेरीकी सम्पत्ति बपनीके हाथ लग जानेपर अपने हाथमें लेना सभव दीखता था उस दीर्घसूत्रीने यह भी जान लिया कि अम्पु अब वापस नही आ सकेगा और माधवमुको भ्रष्टा घोषित करके निकाल देनेपर उण्णियम्मा अकेली कैतेरीकी सारी सम्पत्तिकी उत्तराधिकारिणी बन जायगी उस समय उस सम्पत्तिपर अपना एकाधिपत्य स्थापित करनेका मनोराज्य बना करके ही उसने सम्मति दी—"उण्णियम्मा हमारे ही साथ रहेगी"

कन्तु नायरको भी यह नई बस्ती पसन्द आ गई इसका कारण केवल इक्कण्डन नायरकी नई-नई विलायती मदिरा ही नही थी, उसकी नई, युवा सुन्दर पत्नी चिन्नम्माळु भी थी इक्कण्डन नायर साठ वर्ष पार कर चुका था, परन्तु फिर भी अपनेको बूढा नही मानता था परन्तु उसकी पत्नी उसके बारेमे भिन्न मत रखती थी उसको दुःख था कि सौन्दर्य, रसिकता, विलासिता आदि युवकोचित गुणोंकी खान होनेपर भी उसे इस वृद्धकी

पत्नी बनना पड़ा इसलिए ऐसी गृहस्वामिनीको भी पतिकी मदिराके स्वादने उन्मत्त बनाना आरम्भ कर दिया

चन्तु और चिन्नम्माळुकी मित्रता बढने लगी जब इक्कण्डन नायर चन्तुसे कपनी और कुरुम्ब्रनाट्टु राजाके गुण-गान किया करता था तब चिन्नम्माळु भी पान आदि देनेके बहाने उनके बीच आ जाया करती थी बादमे जब चन्तु पूर्णतया कुरुम्ब्रनाट्टु और कपनीके पक्षमे हो गया तो उनसे प्राप्त उपहारादिसे चिन्नम्माळुका सन्दूक भरने लगा

उण्णियम्माको अपने घरमे शरण देकर इक्कण्डन नायर चन्तुके साथ तलश्शेरी चला गया उसे निश्चय हो गया था कि उसकी मनो-कामना पूर्ण होनेका समय निकट आ गया है कण्णवत्तु नम्पियारकी कहानी मिकुवेरासे ही इन दोनोको मालूम हुई थी इक्कण्डनने कहा—"अबकी फाँसीपर लटकनेवाला वह केरलवर्मा ही होगा" उसने का[illegible] पहले ही सकेत कर रखा था कि मैंने जो सहायता पहुँचाई है उसके बदले-मे कण्णवत्तु-भवनकी जमीन-जायदाद मुझे ही मिल जानी चाहिए वही बात सूचनाके रूपमे उसने मिकुवेरासे भी कही उसके उत्तरमे मिकुवेरा-ने कहा—"विद्रोहियोको नष्ट होने दो सहायकोको कपनी कभी भूलती नही"

मिकुवेराको चन्तु नायरसे और भी काम साधना था चिरुतारुट्टी-की पूर्वकथा सात दिनके अन्दर ही मालूम करनेकी सुग्रीवाज्ञा लेकर चन्तु तलश्शेरीसे आया इक्कण्डन नायरको भी कुछ और काम मिला—वह इस प्रकारकी अफवाह उडानेका था कि महाराजाने कपनीकी अधीनता स्वीकार कर ली है और कपनीको आवेदन भेजा है कि उन्हे पेन्शन देकर श्रीरगपट्टनमें रख दिया जाय कर्नल इस प्रकारकी अफवाहसे दो प्रयोजन साधना चाहता था एक तो यह कि इसपर विश्वास करनेवाले प्रमुख तत्काल कपनीके पक्षमे हो जायेंगे, क्योकि तम्पुरानकी इतने दिनोकी उदासीनताने पहले ही उन्हे भयभीत कर रखा है दूसरा प्रयोजन पूर्णत स्वार्थमूलक था वह गवर्नर-जनरलको लिख चुका था कि विद्रोहका

अन्त हो गया है परन्तु उसे यह नही मालूम था कि वेवर बवई-सरकार-को क्या लिखता रहता है उसका विश्वास था कि जब वेबर यह अफ-वाह सुनेगा तो वह बवई-सरकारको लिखे विना नही रहेगा और इससे मेरी बातका समर्थन हो जायगा

सिकुवेराकी बातसे इक्कण्डन नायर फूल उठा उसको निश्चय हो गया कि महाराजा अब रहा ही नही वह हवाई किले बनाने लगा कि अब दरबार-भरमे इक्कण्डन नायरकी उपेक्षा करनेवाला कौन होगा ?

सिकुवेराके पाससे दो रास्तोसे चले इक्कण्डन नायर और चन्तुनायर तीसरे दिन कैतेरीमे मिलनेका वादा करके रवाना हुए थे

तम्पुरानके जानेके बादसे माक्कम् केट्टिलम्मा पहलेसे अधिक प्रसन्न दीखती थी। अब वह विरह-वेश छोडकर सौभाग्यवती नायिकाके समान रहती थी तम्पुरान जब उसे अकेली छोडकर पहाडपर गये थे तबसे उसके मनमे यह शका घर कर रही थी कि मै परित्यक्ता हूँ उसके हृदय-को इस प्रकारकी भावनाएँ सदैव व्याकुल रखती थी कि "अब उनसे कब भेट होगी ? भेट होगी भी या नही ?" पुरळी पहाडसे लौटने-के बादसे ऐसी शकाएँ निर्मूल हो गई थी 'जाती ! जातानुकम्पा भव !" आदि तम्पुरानके लिखे हुए पद्य उसे बराबर सान्त्वना देते थे इस बातसे भी उसे सतोष हुआ कि तम्पुरान समस्त विपत्तियोको वहन करके रातो रात उससे मिलनेके लिए कैतेरी पधारे थे वह दृढताके साथ सोचने लगी कि अब मुझे कौन परित्यक्ता कह सकता है ?

उण्णियम्मा घर छोडकर चली गई, इससे माक्कम्को दुख हुआ किन्तु यह जानकर उसे कुछ समाधान हुआ कि वह पासके ही घरमें रहती है उस भारी घरमे चौदह वर्षकी नीलुक्कुट्टी ही उसकी एक-मात्र सखी-सहेली थी उसे आयुर्वेद-विद्यामे बडा उत्साह था परन्तु माक्कम्को कभी-कभी लगता था कि कौमार्य व्यतीत कर चुकनेवाली नीलुक्कुट्टी-को पुरुषोचित कामोमे प्रोत्साहित करना उचित नही है परन्तु उसके

आग्रह और कम्मूके चरित्रपर पूरे विश्वासके कारण उसने अभ्यास पूर्ण करनेकी अनुमति दे दी

अब माक्कम्को यह चिन्ता भी सताने लगी कि यह मातृहीन बालिका विवाहोचित आयुको पार कर रही है अम्पु नायरका कही पता नही था इधर कम्मूके आनेके दिनमे माक्कम्के मनमे यह चिन्ता भी होने लगी कि वयप्राप्त इस युग्मका पारस्परिक परिचय और निरन्तर सामीप्य अनुराग-का हेतु बने बिना नही रह सकता वही हुआ भी माक्कम्ने प्रत्यक्ष हाव-भावोसे सत्यावस्था जान ली परन्तु अम्पु नायरके आनेके पहले कुछ भी करना उचित न मानकर वह उनके आनेकी बाट जोहने लगी

माक्कम्के बारेमे देश-भरमे जो अपवाद फैला था वह अब यहाँ भी पहुँच गया उण्णियम्मा स्वय ये बाते सबसे कहा करती थी एक दिन नदीमें स्नान करते समय स्त्रियाँ आपसमे बाते कर रही थी, जो नीलु-वकुट्टीने भी सुनी उन सबका कथन था कि माक्कम् तम्पुरानके साथ विश्वास-घात कर रही है और कपनीवालोसे धन लेकर उसने उन्हे पार करानेका प्रयत्न भी किया था, परन्तु श्रीपोर्कली भगवतीने प्रत्यक्ष होकर तम्पुरानकी रक्षा कर ली उण्णियम्मा भी यही कहती थी—"देखा ता उसकी सजधज ! इस सबके लिए पैसा कहाँसे आता है ? अब रागभग आया ! बेचारे महाराजा यह सब क्या जाने ? ऐसी राक्षसियोसे ही तो बलवान [illegible] होता है !"

नीलुवकुट्टीने लौटकर रोते हुए यह सब बात कम्मूसे कही कम्मूने उत्तर दिया—"यह सब चन्तुका कृत्य है हाथम आ जाय ता सब [illegible] दूँगा" नीलुवकुट्टीको इससे शान्ति नही मिली उसने केट्टिलम्मासे कहनेका विचार किया परन्तु पूरी बात स्पष्ट रूपसे उससे कहनेका साहस उनको न हुआ

केट्टिलम्मा नीलुवकुट्टीकी बातोसे समझ गई कि [illegible] अम्पु नायर और उसपर बहुत दोषारोपण करते है जब उसने पहली बार यह सुना था कि भाई-बहन मिलकर तम्पुरानको धोखा दे [illegible]

हैन पड़ी थी परन्तु जब उसने समझा कि इस प्रकारकी अफवाहोंपर दावानियोंके विश्वास कर लेने का कितना भीषण परिणाम होगा तो उनके क्रोध और दुःखकी सीमा नही रही

कितना भी प्रयत्न करनेपर पपयवीट्टिल चन्तु नायरको चिरुतवट्टीकी पूर्वकथा जानने मे सफलता नही मिली उसके किन्ही बन्धु-मित्रोंका पता भी नही चला कही-कही यह सुननेको मिला कि लुई परान्द्वारा किसीसे खरीदी हुई गुलाम लडकी है अन्तमे उसने मान लिया कि टीपूके आक्रमण-कालमे घर-बार छोडकर इधर-उधर भागे हुए लोगोंका पता लगाना सभव नही है

जैसा इक्कण्डन नायरने वादा किया था, चन्तु नायर तीसरे दिन उसके घर आ पहुँचा इक्कण्डन घरमे नही था, फिर भी गृह-लक्ष्मीने उसका स्वागत किया और बताया कि शामको पूजाके समयतक आजायँगे फिर उसने कहा—"कोई बात सुनी? आजकल यहाँ उसके सिवा चर्चाका विषय दूसरा है ही नही"

चन्तुने पूछा—ऐसी कौन-सी बडी बात हो गई ?

"वह शैतानकी बच्ची माक्कम् तम्पुरानको छोडकर कपनीवालोंके साथ हो गई। बडी खराब है वह औरत।"

चन्तुने आश्चर्य व्यक्त करते हुए कहा—क्या, ऐसी बात है ?

"हाँ। हाँ। बिलकुल सच है सुना है कण्णवत्तु नम्पियारको भी तम्पुरानने ही मरवा डाला है जहाँ जाओ वहाँ यही बात सुननेको मिलती है अब उसका घमड जरा कम होगा"

"माक्कम्। उसका क्या? रास्तेपर रखा हुआ तबला। आने-जानेवालोंके लिए अपनी निपुणता दिखानेका एक साधन।"

"ओहो। यहाँ बैठकर ये बातें करनेके सिवाय कुछ कर भी सकते हो? उसके पास जाकर तो भीगी बिल्ली बन जाते हो। उसका बड़प्पन आखिर है क्या ?"

चन्तुको लगा कि यह बात मेरे पौरुषको एक चुनौती है उसको

स्मरण हो आया कि इतने दिन कँतेरीमे रहनेपर भी मारकम्ने अपने साथ कभी मसखरी करनेका अवसर भी उसे नही दिया उसने कहा—"उसका यह बडप्पन तो मैने ही बनाया है"

यह थोडा-बहुत सच भी था चन्तु नायरके उण्णियम्माके साथ विवाह करनेके बाद, उसके ही प्रयत्नसे, तम्पुरानने मारकम्के साथ विवाह किया था अब वह सोचने लगा—"उसका प्रताप और बडप्पन! हम सब तुच्छ है! दिखा दूँगा"

चिन्नम्माळुने आगमे घी डाला—"क्यो? क्या मारकम्की याद कर रहे है? वह सब बेकार है वह तो तम्पुरानकी केट्टिलम्मा है"

"आहा! मै भी जानता हूँ इन केट्टिलम्माओको! यदि मै मर्द हूँ तो .

"रहने भी दीजिए! अच्छा, उनके आनेमे तो देरी होगी, कुछ लेगे?"

"दोगी तो क्यो नही लूँगा? तुम भी शामिल हो जाओ!"

चिन्नम्माळुका स्वागत-सत्कार स्वीकार करनेके बाद ही चन्तु अन्त-पुरमे जाकर उण्णियम्मासे मिला उसने इस प्रकारकी अनेक बाते पत्नी-को बताई कि अब तम्पुरान चन्द दिनोके ही मेहमान है, [illegible] बहुत जमीन जायदाद हमे देनेवाले है परन्तु, उण्णियम्मा [illegible] हुई थी कि चन्तु उससे मिलनेसे पहले चिन्नम्माळुके पास रहकर आया है इस लिए अनेक बदूनियाँ सुनाकर उसने चन्तुको बाहर चला जानेके लिए विवश कर दिया वह चिन्नम्माळुके पास लौट गया

चिन्नम्माळुने मारकम्के बारेमे उसके हृदयमे जो आग सुलगा दी थी वह मद्य-लहरीके कारण और भी तीव्र हो [illegible] [illegible] नायर नई बाते एकत्रित करके आया परन्तु चन्तुको किसी बातमे विशेष उत्साह नही था उसका रुख देखकर [illegible] नायर [illegible] सोने चला गया उण्णियम्माका कोप प्रज्वलित [illegible] कारण [illegible] ने भी अपना बिस्तर बाहर ही लगवा दिया

जब सब लोग गाढ निद्रामे लीन हो गये तब चन्तु कमरमे तलवार बाँधकर और मशाल लेकर घरसे निकला कैतेरी-भवन उसकी यात्राका लक्ष्य था वह भवन निस्तब्ध था माक्कम् और नीलुक्कुट्टी भोजनसे निवृत्त होकर शयन-गृहमे प्रविष्ट हो चुकी थी कम्मू दालानमे पडा निद्रादेवीकी गोदमे जा चुका था ऊँची दीवारको एक छलाँगसे पार कर लेना चन्तु जैसे अभ्यासीके लिए कठिन नही था उसने माना कि अब काम सरल है कम्मूको एक वारसे खत्म किया जा सकता है और यदि माक्कम्ने खुशीसे दरवाजा न खोला तो उसे लात मारकर तोडा जा सकता है

दीवार फाँदकर उसने चारो ओर देखा कही कोई हलचल नही थी दबे पाँवो वह कम्मूके पास पहुँचा उसे एक ही प्रहार मे खत्म कर देनेके उद्देश्यसे उसने तलवार उठाई ही थी कि पास एक तीर आकर गिरा

वह नही जानता था कि कैनेरी-भवनकी रक्षाके लिए तम्पुराननें कुरिच्योको नियुक्त कर रखा है अस्त्र देखते ही कुरिच्योको समीप समझकर वह घबरा गया उसने देखा कि अब मेरा उद्देश्य तो सफल हो ही नही सकता, साथ ही प्राण-रक्षाकी भी शका है कुरिच्योसे बचने-का एक मात्र उपाय अन्धकार ही है समझकर उसने हाथकी मशाल घरके ऊपर फेंक दी और स्वय भाग खडा हुआ नारियलके पत्तोसे छाया हुआ घर तुरन्त जलने लगा

अन्दर सोई हुई माक्कम् या बाहर सोये हुए कम्मूने अग्नि-काडको बहुत देर तक जाना ही नही जलकर गिरनेवाली लकडियोकी आवाज-से कम्मू जागा तो उसने देखा कि घरका एक भाग बिलकुल जल चुका है आगकी गर्मी और धुएँ के कारण माक्कम् और नीलुक्कुट्टी भी जाग गई

आगको देखकर जन-समुदाय एकत्र हो गया, परन्तु किसीने उसे बुझानेका प्रयत्न नही किया सभीके मुखपर यह भाव अकित था कि "खानदानको धोखा देनेका फल यही है !" दयासे प्रेरित होकर किसीने

आग बुझानेका प्रयत्न किया तो दूसरोंने यह कहकर उसे रोक दिया कि "तम्पुरान नाराज होंगे"

कम्मूने सबसे पहले कमरेमें सोई हुई माक्कम् और नीलुक्कुट्टीको बचानेका प्रयत्न किया परन्तु चारों ओर आग फैल चुकी थी, और यह रक्षा-कार्य असम्भव हुआ जा रहा था दरवाजा खोलकर माक्कम् बाहर निकलने लगी तो धुएँके कारण बेहोश होकर गिर पडी यह देखकर नीलुक्कुट्टीने चिल्लाना शुरू किया आवाजसे विह्वल होकर कम्मू सब कुछ भूलकर अन्दर घुस गया, किसी भी प्रकार बेहोश पडी माक्कम्को उठाकर वह वायु वेगसे बाहर निकल आया अभ्यास-सिद्ध देहचापलके कारण नीलुक्कुट्टी भी साथ साथ-बाहर आ गई

ग्रामवासियोंकी सहायताकी कोई आशा न देखकर कम्मूने इधर-उधरसे दौडकर आये हुए कुरिच्योंकी सहायतासे आग बुझानेका प्रयत्न किया रात्रिके अन्तिम प्रहरमें आग काबूमें आ गई उसके बाद वह सोचने लगा कि नीलू और माक्कम्को कहाँ ले जाया जाय ?

●

अठारहवाँ अध्याय

o

आली मूसा मरक्कार उस समय केरलके व्यापारियोंमें प्रमुख था पुत्लच्चल* से लेकर मंगलापुरम्† तकके बंदरगाहोंसे तरह-तरहका व्यापार करके धनिक बने हुए दूसरे बहुत-से गुजराती, कोंकणी और मुसलमान व्यापारी मौजूद थे, परन्तु उन सबका नेतृत्व मूसा ही करता था बंबई, मद्रास, कलकत्ता आदि स्थानोंमें उसके गोदाम, आढत, दलाल और प्रबंधक आदि थे इसके अलावा उनके जहाज अरब, मिस्र आदि देशोंमें भी व्यापारके लिए जाया करते थे अंग्रेज कंपनियोंके साथके व्यापार-का एक बड़ा भाग मूसाके हाथमें था डचों, फ्रांसीसियों और मराठोंके साथ भी उसका अच्छा सम्बन्ध था इन सब बातोंको देखकर यह कहना सत्य ही होगा कि वह दक्षिण भारतकी व्यापार-शक्ति और सम्पत्प्रताप का मूर्त रूप था

उसके जहाज ईस्ट इंडिया कंपनीकी छत्र-छायामें सातों समुद्रोंमें स्वच्छन्द विहार किया करते थे अधिकार-पत्रोंके आधारपर दक्षिणापथ-

---

* एक बन्दर-स्थानका नाम

† मंगलौर

की राजधानियोमे उसके व्यापार-केन्द्र उन्नति कर रहे थे कपनीके लिए आवश्यक साधन एकत्रित करनेमे उसकी सावधानी, उसके हित-हितके प्रति उसकी जागरूकता आदिसे कपनीवाले भी उससे प्रसन्न थे

उसका व्यापार स्थानोकी दृष्टिसे ही नही, मालकी दृष्टिसे भी सर्वव्यापी था जिसमे लाभ हो उस व्यापारको करनेमे वह कभी आगा-पीछा नही करता था चावलके व्यापारसे लेकर गुलामोके व्यापार तक सबमे उसका समान हिस्सा था

तलश्शेरीकी सब मुख्य सडको, बाजारो और राज-मार्गके पार्श्वोपर जो-जो व्यापार-गृह और इमारते थी, सबका मालिक मूसा ही था राज-मार्गसे कुछ हटकर एक महाप्रासाद उसका निवास-स्थान था उसका भवन केरलीय प्रभुजनोके भवनो-जैसा नही था, बल्कि मद्रास, अर्काट, श्रीरगपट्टन आदिके मुसलमान धनिकोके भवनोकी शिल्प-कलाका नमूना था शिल्प-वैचित्र्य और साज-सज्जामे वह केरलके राजा-महाराजाओंके प्रासादोको भी चुनौती देनेवाला था प्रवेश-द्वार पार करते ही एक सुन्दर वाटिका पडती थी स्थान-स्थानसे लाकर लगाये गए वृक्षो, पुष्प मजरिया-से परिपूर्ण लता-कुजो, पुष्पयुक्त गुलाबके पौधो और सुन्दर उद्यान-मार्गो आदिसे सुशोभित वह वाटिका मूसाके वैभव और उसकी रसिकताका प्रत्यक्ष प्रमाण थी

उस वाटिकाके बीचमे सुशोभित सुन्दर प्रासाद उस गुण-लोलुप लक्ष्मी-पुत्रके योग्य ही था फारसके बेशकीमती कालीनो, यूरोपसे मँगाए गए झाड-फानूसो और विभिन्न देशोसे प्राप्त साज-सामानसे वह प्रासाद सुसज्जित था सामने एक विशाल अतिथिशाला और उसके साथ पाश्चात्य तरीकेसे सज्जित दीवानखाना था कुछ पीछेकी ओर उसका अन्तःपुर था कहा जाता था कि उसमे अगणित अप्सराओको लाकर रखा गया है लोगोका अनुमान था कि हैदरके आक्रमणके समय अनेक प्रभुगृहोसे लापता हुई कुल-कन्याएँ इसी प्रासादकी शोभा बढा रही थी

वेलेस्लीके तलश्शेरीमें आनेपर उसके सत्कारके लिए मूसाने एक भारी समारोह किया था उसमें केरलमें निवास करनेवाले सभी पाश्चात्य प्रमुजन उपस्थित थे विभव-समृद्ध भोजन-पानीय, संगीत, नृत्य और आतिशबाजी आदिका राजोचित प्रबंध किया गया था

कर्नल वेलेस्ली-जैसे बड़े अधिकारीको भी अपने घरमें बुलाकर सत्कार करनेके लिए पर्याप्त सम्पत्ति और प्रभाव रखनेवाले मूसाके प्रति तलश्शेरीमें किसीको शंका नहीं हो सकती थी किसीको यह शंका भी नहीं थी कि अम्पु नायरको तलश्शेरीमें आने-जानेकी सुविधा भी मूसासे ही मिली थी नगरके बाहर मूसाका एक मकान था कम्पनीवालोंको शंका थी कि उसका उपयोग गुलामोंको खरीदने-बेचने तथा तस्कर-व्यापारके लिए किया जाता है परन्तु इतने तुच्छ कार्यके लिए अधिकारी मूसाको विरोधी बनाना नहीं चाहते थे वहाँ दिनमें तो दिखती शान्ति, किन्तु रात्रिमें बेहद चहल-पहल रहती थी मूसाके तगड़े पहरेदारोंसे सुरक्षित उस मकानके अहातेमें प्रवेश करनेका साहस, विशेषकर रातमें, किसीको नहीं होता था उस स्थानसे तलश्शेरी दुर्गमें तथा मूसाके निवास-स्थानपर जानेवालोंको रोका न जाय, ऐसी आज्ञा पहरेदारोंको दे रखी थी और अम्पु नायर मूसाके एक मुंशीके रूपमें ही तलश्शेरी आया जाया करते थे

जनताकी मान्यता थी कि मूसा और चिरनक्कुट्टीके बीच कोई सम्बन्ध है इसीलिए मूसाके गुलाम-व्यापारको, जानकारी होते हुए भी, कम्पनीवाले रोकते नहीं थे लुई पेरेरा मूसाका घनिष्ठ मित्र था यह भी सबको विदित था कि मलयाली और मुसलमान त्योहारोंपर मूसाके घरसे बहुत-सा सामान चिरनक्कुट्टीके घर जाया करता है

इसके प्रभु-जन जब कभी तलश्शेरी आते तो उनका आदर-सत्कार करनेमें मूसा कभी कोई कमी नहीं करता था चन्द्रोत्तु नम्पियार प्रति-सप्ताह तलश्शेरी आते थे और मूसासे मिले बिना नहीं लौटते थे दोनों

ही कपनीवालोके मित्र थे इसलिए उनकी इस मुलाकातमे किसीको कोई विशेषता मालूम नही होती थी

जब कण्णवत्तु नम्पियार तलश्शेरीमे लाये गये थे तब मूसा रमजानके रोजे रख रहा था और अपने घरमे ही रहता था जब सुना कि नम्पियार हिरासतमे है तो उसे व्याकुलता हुई, किन्तु जब उन्हे रखनेके लिए उसके ही मकानकी माँग की गई तो उसे बडा आश्वासन मिला कि तत्काल कोई विपत्ति आनेवाली नही है शामको जब समाचार मिला कि किसी प्रकार उन्हे बचा लेना चाहिए तब उसने यही सोचा था कि अभी समय है उसने आज्ञा दे दी कि दूसरे दिन सुबह ही यह काम पूर्ण किया जाय

परन्तु दूसरे दिन सुबह जब वह नित्य-कर्मसे निवृत्त होकर अपने बागमे टहल रहा था तब उसे एक विश्वास-पात्र कर्मचारीसे नम्पियारकी हत्याका समाचार मिला कर्नलकी दूरदर्शिता और चतुराईसे वह आश्चर्य-चकित हो गया इसको उसने अपनी पराजय माना उसका विश्वास था कि नम्पियारको बचानेके लिए उसने जो प्रबन्ध कर रखा है उसका अनुमान भी वेलेस्ली नही कर सकेगा परन्तु जब उसे मालूम हुआ कि चिरक्कल्कुट्टीने फल आदि लेकर जिन आदमियोको भेजा था वे गिरफ्तार कर लिये गये और दूसरे दिन कुई परेरा भी गायब कर दिया गया तो वह घबरा गया उसे यह भी पता नही चल सका कि पेरेराका हुआ क्या ?

कर्नल वेलेस्लीके सामर्थ्य और अधिकारियोपर उसके प्रभावसे परिचित मूसा सरकार उसके साथ मित्रता रखनेका निरन्तर प्रयत्न करता रहा वह अच्छी तरह जानता था कि यदि उसे मेरे षड्यन्त्रोका पता चल गया तो वह मेरा नाश किये बिना न रहेगा इसलिए उसके आनेके बादसे मूसाने अपने कार्योको अत्यन्त गुप्त रूप दे दिया था उसे निश्चय मालूम था कि मेरे विरुद्ध कोई प्रमाण पेरेराके पास नही है

और, जबतक निश्चित प्रमाण नही है तबतक वेलेस्ली मेरे-जैसे प्रबल व्यक्तिके विरुद्ध कोई कार्रवाई नही करेगा

पेरेराने मूसाका नाम बताया तो वेलेस्लीको भरोसा नही हुआ उसके द्वारा कपनीको जो सहायता मिलती थी और कपनीके द्वारा उसका जो व्यापार चलता था उस सबको सोचकर वेलेस्लीने उसके विरुद्ध शका करनेकी भी गुजाइश नही देखी इसलिए उसने मान लिया कि पेरेराने अपनी और चिरुतक्कुट्टीकी रक्षाके लिए यह कहानी गढी है पेरेराकी बातके सिवा कोई प्रमाण भी नही था

फिर भी उसने मूसासे पूछनेका निश्चय किया और उसे बुलानेके लिए आदमी भेजा मूसाने उत्तर भेज दिया कि मै रोजेके कारण किसीसे मिलने नही जाता किन्तु यदि कर्नल साहबको अनिवार्य रूपसे आवश्यक मालूम होता हो तो सन्ध्याके बाद रोजा खोलनेपर उपस्थित होऊँगा

मूसा प्रभु जनोके साथ समानताका व्यवहार करनेका अभ्यस्त तो था ही, साथ ही निर्भय भी था सन्ध्याके बाद मुसलमान प्रभुका वेष धारण करके चार पाच नौकरोके साथ वेलेस्लीके बगलेपर पहुँचा वेलेस्लीके अगरक्षक दलने उसका आदरपूर्वक स्वागत किया कर्नल स्वय भी प्रसन्नताके साथ मिला परस्पर उचित आचारोपचारके बाद वेलेस्लीने कहा—"मै जानता हू कि आप कपनीके मित्र है और सदा उसे सहायता करनेको तत्पर रहते है इसीलिए एक आवश्यक कार्यके हेतु आपको आमन्त्रित किया है"

"अल्लाहके रहमसे और आपकी मिहरबानीसे हमारे-जैसे नाचीज लोगोकी जिन्दगी सुखसे कटती है मेरे कहे बिना ही आप जानते है कि मै हमेशा कपनीके लिए कुछ भी करनेको तैयार हूँ"

हाँ, तो सुनिए—हमारे सब प्रयत्न करनेपर भी मलाबारकी स्थिति शान्त नही हो रही है इसका मूल कारण केरलवर्मा है परन्तु

यह तो सच है कि आवश्यक सहायता न मिले तो वह कुछ नही कर सकता मुझे पता चला है कि इस विद्रोहीको मदद करनेवाले कुछ लोग तलश्शेरीमे ही है"

"तो उनको जड-मूलसे नाश कर देनेमे देरी क्या है? वे है कौन?"

'यह मुझे भी निश्चित नही मालूम जिस समय मालूम होगा उस समय वे फाँसीपर ही लटकेंगे, फिर कोई भी क्यो न हो"

इशारा स्पष्ट था मूसाने उत्तर दिया—"जरूर! इसमे शक क्या है? उनको खोज निकालनेमें सब प्रकारकी सहायता मै करूँगा उन्होने कैसे मदद की, आप जानते है?

"एक बात मै कहूँ—मैंने कहा था न कि केरलवर्माको कोई भोजन-सामग्री न भेजे, और जो भेजेगा उसे मृत्यु-दण्ड दिया जायगा? इसके बाद भी एक हजार बोरे चावल उसके अड्डे पर पहुँचा है हमे पता लगाना है कि यह कैसे हो सका"

मूसाने आश्चर्यके साथ उद्गार व्यक्त किया—"हजार बोरे चावल! इतना चावल तो मेरे बिना जाने इस देशके अन्दर आ ही नही सकता! चावल आजकल जगह-जगह बिकता है किसी दलालने अलग-अलग जगहोंमे खरीदकर तो नही बेच दिया? इस बातकी विश्वस-नीयतापर भी मूसाके प्रत्येक शब्दमे सदेह टपक रहा था

वेलेस्लीने कहा—यदि किसीने इतना जाननेपर भी कि यह केरल-वर्माके लिए है उस चावलको बेचा हो तो उसे कठोर दण्ड दिया जायगा

मूसा—ऐसा ही करना चाहिए मै भी पता लगाऊँगा कि इतने साहसके साथ काम करनेवाला कौन है यह मेरे भी सम्मानका प्रश्न है

इतने निश्चिन्त रूपसे बाते करते देखकर कर्नलके मनमे भी सकोच होने लगा उसको भी विश्वास हो गया कि यह सब कैसे हो रहा है शका केवल इस बातकी थी कि जिसने भी किया उसने केरलवर्माकी

मदद करनेके इरादेसे किया या केवल खरीदकर भेज दिया

कर्नलके पाससे लौटनेपर मूसाने अपनी सपत्ति—नकदी आदि—जहाजद्वारा आलप्पुषा[1] भेज दी उसका एक जहाज सामान लेकर रवाना होने ही वाला था, वही इस काम आ गया एक दूसरा जहाज भी बन्दरगाहमे तैयार रखा गया

०

उन्नीसवाँ अध्याय

तम्पुरानकी उदासीनता पूर्ण रूपसे नहीं हटी फिर भी उनके सेना-निवेशमें कुछ हलचल सबको दिखलाई पड रही थी अकस्मात् नम्पिको भी वह दिखलाई दी उन्होंने देखा कि यद्यपि महाराजा कथकलि, शतरंज और काव्य-रचनामें निमग्न हैं फिर भी उस सेना-निवेशमें लोगोंका आवागमन बढ गया है एडच्चेन कुकन नायरके साथकी बातचीत भी प्रतिदिन अधिक लम्बी होती जा रही थी नम्पि जानता था कि कुकन नायरके अधीन एक नायर-दल गुप्त रूपमें शस्त्रास्त्रकी शिक्षा ग्रहण कर रहा है परन्तु यह उसे हाल में ही ज्ञात हुआ कि उस दलको पाश्चात्य ढंगकी कवायद आदि सिखलाई जा रही है उसका निरीक्षण करनेके लिए महाराजा स्वयं भी जाया करते थे अब उसे भी विश्वास हो गया कि तम्पुरान कुछ करनेवाले हैं

तलयक्कल चन्तु एक सप्ताहसे वहाँ नहीं था दोनों छोटे राजकुमार भी कहीं गये हुए थे वेल्लूर एमन नायर और कुकन नायर ही नम्पिके साथ महाराजाकी सेवामें रह गये थे

पहाड़पर यह समाचार पहुँच चुका था कि कर्नल वेलेस्ली धनुष

मास* की १६ तारीखको तलश्शेरीमे रवाना होनेवाला है मराठोके साथ जो युद्ध होनेवाला है उसमे कर्नल वेलेस्लीको प्रधान सेनापति नियुक्त कर दिया गया है और इसका फरमान दो दिन पूर्व ही तलश्शेरी-मे पहुँचा है चन्द्रोत्तुके पाससे आया हुआ सदेशवाहक यह समाचार महाराजाको दे गया था

धनुष मासकी दूसरी तारीखको तलयुकल चन्तुके साथ चोक्करायर सेना-निवेशमे आया जाते समय और लौटते समयके उसके भावोमे बहुत अन्तर था पदके अनुसार वेश-भूषा और अनुचरो आदिके साथ आये हुए उस सचिव का महाराजाने स्नेहके साथ आलिगन किया और उसका उचित स्वागत करके उसे अपने अर्धासनपर बैठाया सेवकोने आकर जो उपहार सामने रखे उन सबको एक बार देखकर महाराजाने कहा—"मै यह नही पूछता कि आप किस कामके लिए गये थे और सब कैसा रहा सुविधासे मुझे बताइएगा कि प्रबध क्या-क्या है"

चोक्करायरने महाराजाका इगित समझ लिया कि सबके सामने बाते नही होनी चाहिएँ अतएव उसने सकेतकी भाषामे उत्तर दिया—"जैसा सोचा था पूरी तरह वैसा ही तो सब नही हो सका, फिर भी इतना प्रबन्ध हो गया है कि कोई असुविधा नही होगी"

चोक्करायरकी बाते सुननेकी उत्सुकता होनेपर भी तम्पुरानने उपयुक्त समयकी प्रतीक्षा करना ही उचित समझा उन्होने साधारण बाते

---

* अगहन केरलमे महीनोकी गणना सूर्यके सक्रमणके अनुसार की जाती है सूर्य जिस राशिमे होता है उसके ही नामसे वह मास पुकारा जाता है इस प्रकार महीनोके नाम ये है—१ चिङम् (सिहम्), चिङ-मासम् (सिहमासम्)—श्रावण २ कन्निमासम्, (कन्यामासम्) ३ तुलामासम्, ४ वृश्चिकमासम्, ५ धनुमासम्, ६ मकरमासम्, ७ कुम्भमासम्, ८ मीनमासम्, ९ मेडमासम् (मेषमासम्) १० इटव-मासम् (ऋषभमासम्) ११ मिथुनमासम्, १२ कर्कटकमासम्

उन्नीसवाँ अध्याय

तम्पुरानकी उदासीनता पूर्ण रूपसे नही हटी फिर भी उनके सेना-निवेशमें कुछ हलचल सबको दिखलाई पड रही थी अरब्बात्तु नम्पिको भी वह दिखलाई दी उन्होंने देखा कि यद्यपि महाराजा कथकलि, शतरज और काव्य-रचनामें निमग्न है फिर भी उस सेना-निवेशमे लोगोका आवागमन बढ गया है एडच्चेन कुकन नायरके साथकी बातचीत भी प्रतिदिन अधिक लम्बी होती जा रही थी नम्पि जानता था कि कुकन नायरके अधीन एक नायर-दल गुप्त रूपसे शस्त्रास्त्रकी शिक्षा ग्रहण कर रहा है परन्तु यह उसे हाल में ही ज्ञात हुआ कि उस दलको पाश्चात्य ढगकी कवायद आदि सिखलाई जा रही है उसका निरीक्षण करनेके लिए महा-राजा स्वय भी जाया करते थे अब उसे भी विश्वास हो गया कि तम्पुरान कुछ करनेवाले है

तलय्कल चन्तु एक सप्ताहसे वहां नही था दोनो छोटे राजकुमार भी कही गये हुए थे वेत्लूर एमन नायर और कुकन नायर ही नम्पिके साथ महाराजाकी सेवामें रह गये थे

पहाडपर यह समाचार पहुँच चुका था कि कर्नल वेलेस्ली धनुप

मास[1] की १६ तारीखको तलश्शेरीसे रवाना होनेवाला है मराठोंके साथ जो युद्ध होनेवाला है उसमे कर्नल वेलेस्लीको प्रधान सेनापति नियुक्त कर दिया गया है और इसका फरमान दो दिन पूर्व ही तलश्शेरी-मे पहुँचा है चन्द्रोत्तुके पाससे आया हुआ सदेशवाहक यह समाचार महाराजाको दे गया था

धनुष मासकी दूसरी तारीखको तलय्कल चन्तुके साथ चोक्करायर सेना-निवेशमे आया जाते समय और लौटते समयके उसके भावोमें बहुत अन्तर था पदके अनुसार वेश-भूषा और अनुचरो आदिके साथ आये हुए उस सैनिक का महाराजाने स्नेहके साथ आलिगन किया और उसका उचित स्वागत करके उसे अपने अर्धासनपर बैठाया सेवकोने आकर जो उपहार सामने रखे उन सबको एक बार देखकर महाराजाने कहा—"मै यह नही पूछता कि आप किस कामके लिए गये थे और सब कैसा रहा सुविधासे मुझे बताइएगा कि प्रबध क्या-क्या है"

चोक्करायरने महाराजाका इगित समझ लिया कि सबके सामने बाते नही होनी चाहिएँ अतएव उसने सकेतकी भाषामे उत्तर दिया—"जैसा सोचा था पूरी तरह वैसा ही तो सब नही हो सका, फिर भी इतना प्रबन्ध हो गया है कि कोई असुविधा नही होगी"

चोक्करायरकी बाते सुननेकी उत्सुकता होनेपर भी तम्पुराननने उपयुक्त समयकी प्रतीक्षा करना ही उचित समझा उन्होने साधारण बाते

---

[1] अगहन केरलमे महीनोकी गणना सूर्यके सक्रमणके अनुसार की जाती है सूर्य जिस राशिमे होता है उसके ही नामसे वह मास पुकारा जाता है इस प्रकार महीनोके नाम ये है—१ चिडम् (सिहम्), चिड-मासम् (सिहमासम्)—श्रावण २ कन्निमासम्, (कन्यामासम्) ३ तुलामासम्, ४ वृश्चिकमासम्, ५ धनुमासम्, ६ मकरमासम्, ७ कुम्भमासम्, ८ मीनमासम्, ९ मेडमासम् (मेषमासम्) १० इडव-मासम् (ऋषभमासम्) ११ मिथुनमासम्, १२ कर्कटकमासम्

शुरू करते हुए कहा—"सुना है, कर्नल पन्द्रह दिनोंके अन्दर कलकत्ता चला जायगा आपके कहे अनुसार ही सब होता दीखता है"

चोक्करायरने उत्तर दिया—वेलेम्लीको सेनानायक नियुक्त किया गया है सो तो मैंने सुना था, परन्तु तत्काल ही प्रयाण करनेकी बात नही मालूम हुई थी

"वेलेस्लीके जानेके बाद तो आप हमारे साथ रह नही सकते? मै भी प्रबन्ध कर सकता हूँ कि आपके पद-मान-आदर आदिमे कोई कमी न हो"

"आप-जैसे महानुभावकी सेवा करनेका अवसर मिला इमे मैं अपना अहोभाग्य मानता हूँ वेलेस्लीके चले जानेके बाद यही ठहरनेका विचार मैंने कर रखा था, परन्तु दुर्भाग्यसे वह सभव नही है"

"सो क्यो ?"

"राजमाता और अन्य बन्धु-बान्धवोका आग्रह है कि मुझे मैसूरमें ही रहना चाहिए वहाँ भी महा सकट आ पडा है कपनीवालोने राजाधिकार-को एकदम समाप्त कर रखा है प्रधानमन्त्री पूर्णतया उनका सहायक बन गया है महाराजा अथवा लोकनेताओको कोई अधिकार नही है राजवश-की सहायता करनेका उनका साहस नही होता इसलिए तत्काल वापस पहुँच जानेका वादा करनेपर ही राजमाताने यहाँ आनेकी अनुमति दी है"

"अपका कहना ठीक है निश्चय ही आपका प्रथम कर्तव्य अपने देश-के प्रति है अपने स्वामी और मातृभूमिको भूल जानेवाला और कहाँ टिक सकता है ? परन्तु मेरे लिए एक काम करके ही जाना होगा"

"क्या ? आदेश कीजिए"

"ठहरकर कहूँगा"

महाराजाने शान्त सकेतसे सबको वहाँसे हटा दिया फिर पूछा—"कहो मित्र ! क्या-क्या कर सके ?"

"पहले अनिष्ट समाचार दे दूँ पूर्णय्या* हमारे विरुद्ध है वह कपनी-

---

* मैसूरका तत्कालीन प्रधानमत्री

का सेवक बना हुआ है इसलिए उससे सहायता नही मिल सकती मंत्रि-परिषद् भी उसके अधीन है, इसलिए उससे भी हमे कोई लाभ नही राजमाता पूर्णतया हमारे साथ है, किन्तु उनमे कुछ करनेकी शक्ति नही है"

महाराजा ध्यानसे सुन रहे थे उन्होने कोई उत्तर नही दिया. चोक्करायरने आगे कहा—"अपनी ओरसे मैने कुछ प्रबन्ध किया है. भोजन-सामग्री और युद्ध-सामग्री समय-समयपर वयनाट्टुमें पहुँचाई जाती रहेगी उसके सम्बन्धमे आवश्यक लिखा-पढीके कागजात ये है उसकी जिम्मेदारी गौण्ड† सेठोने ले ली है जो-कुछ चाहिए, मेरी जमानतपर वे वयनाट्टु सीमातक पहुँचाते रहेगे वहाँ आप उसे ले लीजिए इस सबको ठीक तरहसे करवाते रहनेके लिए भी मेरा वहाँ रहना आवश्यक है"

"श्रीपोर्कली भगवतीकी कृपा ! अब कपनीवाले जो चाहे सो कर ले हमने वयनाट्टुमे प्रवेश कर लिया तो फिर कोई क्या कर सकता है? मेरे मित्र ! आजसे तुम मेरे मित्र नही, केरलवर्माके सगे भाई हो ! तुम्हारी यह सहायता मै कभी भूल नही सकता"

"दुःख यह है कि मै इससे अधिक आपके लिए कुछ भी नही कर पाया"

"इससे अधिक मुझे चाहिए क्या ? कलके लिए भोजन कहाँसे आयगा, इस अनन्त चिन्तामे तुमने मुझे मुक्त कर दिया और अधिक नही कर सके तो क्या यह कुछ कम है ?"

"यदि इतनेसे आप सन्तुष्ट है तो मुझे वापस जाने दीजिए गौण्ड व्यापारी प्रतिज्ञा भग न करे इसकी व्यवस्था मै कर लूँगा"

"जाने दूँगा, परन्तु तुरन्त नही दो सप्ताह बाद सक्षेपमे सब-कुछ बताऊँगा अगले सप्ताह कोट्टय जाकर वहाँ अपने राजमहलमें कुछ दिन

† व्यापार करनेवाली एक तमिल जाति

रहनेका विचार कर रहा हूँ यदि वहाँ तुम भी मेरे साथ हो तो कितना आनन्द होगा !"

चोक्करायर आश्चर्यमे आँखे फाडकर महाराजाकी ओर देखने लगा कोट्टय नगरी गोरी सेनाकी छावनी बन गई है वहाँ कपनीका एक किला भी है यह महाराजा और चोक्करायर दोनो जानते थे इतनी शान्तिसे आतिथ्य स्वीकार करनेके लिए जहाँ आमत्रित किया है वह शत्रु-सेनाका शिविर है अचानक ही चोक्करायरके मुँहसे निकल गया—"क्या ? कोट्टयमे ? वहाँ !"

महाराजाने कहा—"हाँ ! कोट्टयमे ही ! कुछ दिन भी वहाँ रहे बिना हम वयनाट्टु चले जायँ तो यही माना जायगा कि शत्रुओसे डरकर जगलमें छिप गए जनता भी यही मानेगी कि वेलेस्ली हमको हराकर चला गया इसलिए कम-से-कम एक महीना वहाँ रहकर अपनी प्रजाको प्रसन्न करनेका हमारा इरादा है"

चोक्करायर तब भी नही समझा कम्पनीके दुर्गको क्या यो ही अपने अधीन किया जा सकता है ? यह कैसे होगा ? उसकी शकाएँ उसके मुखपर प्रकट हुई महाराजाने कहना जारी रखा—"मित्रवर ! तुम्हारी विचार-सरणी मैं समझ रहा हूँ मैं भी जानता हूँ कि कोट्टयपर अधिकार करना इतना सरल नही है परन्तु तुम्हारी सहायता हो तो उसमे कोई कठिनाई या बाधा नही होगी"

इसके बाद महाराजा और चोक्करायर बहुत देरतक बातें करते रहे तम्पुराननने अपनी सारी योजना उसे समझा दी और उसके विस्मयकी सीमा नही रही आदरके साथ वह इतना ही कह सका—"निस्सन्देह, आपकी आज्ञाओंका पूरा-पूरा पालन हो जायगा मैं स्वय इसकी जिम्मेदारी लेता हूँ इन विचारोको और कौन-कौन जानता है ?"

"केवल एडच्चेन कुकन नायर मेरे भानजे भी अबतक नहीं जानते प्रस्थान करनेके दिन पूर्ण योजना उनको बतानेका निश्चय किया है"

इस गुप्त सम्भाषणके बाद तम्पुरान बाहर निकल आए उन्होने वेल्लूर एमन नायर और अरव्वात्तु नम्पि आदि चार-पाँच प्रमुख व्यक्तियो-को बुलाकर कहा—"मै जो-कुछ कह रहा हूँ वह अति गोपनीय है आप जानते है मैने 'वृश्चिक व्रत'* लिया है यह व्रत श्रीपोर्कली भगवतीको विशेष प्रिय है यह जिस दिन समाप्त होगा उस दिन मैने कोट्टयमें ही रहनेका निश्चय किया है आप सब लोग देशमे चले जायँ और सब सामन्तो तथा प्रभुओको उस दिनके उत्सवमे सम्मिलित होनेका निमन्त्रण दे दें उनके आदर-सत्कारके लिए उचित प्रबन्ध भी करे"

तम्पुरानकी आज्ञा सुनकर वे सब एक-दूसरेकी ओर देखने लगे. अन्तमें महाराजाने ही पूछा—"क्यो एमन नायर, बोलते क्यो नही ?"

एमन नायर—अन्नदाताकी आज्ञा शिरोधार्य है इसके बाद निवेदन करनेको रह ही क्या जाता है ? इतना ही जानना चाहता हूँ कि रवाना कब हो जाऊँ

महाराजाने मुसकराकर कहा—नम्पिको क्या शका हो रही है ?

नम्पि—तम्पुरानने निश्चय किया तो शका किस बात की ? फिर-भी इतनी शका तो मनमे उठती ही है कि क्या यह साहस नही है ? गोरी सेनाकी छावनी है सोचकर कदम उठाना है परन्तु श्रीपोर्कली भगवतीका काम है तो शका नही करनी चाहिए और फिर, यहाँ बैठे-बैठे मन भी तो ऊब गया है !

तम्पुरानने हँसकर कहा—नम्पिको प्रसन्न करना कठिन है कुछ न करूँ तो उठनेकी शक्ति नही, उदासीन रहते है आदि सुनायँगे कुछ करने लगूँ तो दुस्साहस कर रहा हूँ, कहकर आक्षेप करेगे यहाँ तो अब कठिनाई होने लगी है रसोईके अधिकारियोका कहना है कि कम्पनी-वालोने अनाजका आना रोक दिया तो अब कोठारमे कमी पड रही है.

---

* वृश्चिक (कार्तिक) मासकी पहली तारीखसे ४१ दिनका व्रत, जो कात्यायनीदेवीके प्रीत्यर्थ किया जाता है

साथके लोगोको खाना भी न दे सकूँ तो कैसे काम चलेगा ? कोट्टयमे होगे तो यह कष्ट नही होगा इसलिए वही रहनेका विचार किया है

भोजन-सामग्री कम होने लगी है यह सभी जानते थे देशमे नियुक्त प्रबन्धकर्त्ता कितना ही प्रयत्न करनेपर भी चावल, धान या अन्य वस्तुएँ एकत्र करनेमें समर्थ नही हो रहे थे उण्णिमूप्पन कम्पनीवालोके किसी दलपर डाका डालकर जो सामान ले आये थे उसीसे काम चल रहा था कुछ भी हो, सबको लगा, महाराजाका यह कथन कि भोजन-सामग्री न मिलनेका सकट मिटानेके लिए कोट्टय ही चले जायेंगे, भोजन प्रिय नम्पिके लिए उचित उत्तर है

तम्पुरानने आगे कहा—किसीको शकाका अवकाश नही है मण्डलावसान*के समयमे देवी-दर्शनके लिए कोट्टय राज मन्दिरमे पहुँच जाऊँगा किन्तु अभी यह किसीसे कहना मत मेरी इच्छा है कि कोट्टय राज्यके सभी प्रमुख व्यक्ति उस दिन वहाँ उपस्थित रहे आपमेसे कौन कहाँ जाय, इसका निर्णय आप लोग ही कर ले

इस प्रकार बाते हो ही रही थी कि कैनेरीमे पहरेके लिए नियुक्त एक कुरिच्य सैनिक वहाँ उपस्थित हुआ वह क्या सदेश लाया है सो जाननेके लिए एमन नायरको बाहर भेजा गया कुरिच्यने उन्हे कैतेरी-भवनकी अग्निका समाचार सुनाते हुए बताया कि शरीरमे इधर-उधर जली हुई केट्टिलम्माको कम्मू तथा कुरिच्योने रातको एक तेलीके घरमे रखा था, प्रभात होते ही वे किसी दूसरे स्थानको रवाना हो गये

एमन नायरने तम्पुरानको समाचार दे दिया

यह भीषण समाचार पानेपर भी महाराजाके मुखपर कोई विकार प्रकट नही हुआ "तो अब चलिए, कोट्टयमे मिलेंगे"—कहकर उन्होंने सबको उपचारपूर्वक विदा किया उसके बाद तलक्कल चन्तुको बुलाया

---

* इकतालीस दिनोका एक मण्डल होता है अत ऐसे व्रतो मण्डल-व्रत कहा जाता है मण्डल-व्रतका अन्त—मण्डलावसान

श्रीरामचन्द्रके सामने हनुमानके समान हाथ जोडकर खडे हुए उस स्वामि-भक्तको देखकर महाराजाने कहा—"कुरिच्य जो समाचार लाया है वह सुना ?"

"जी हाँ !"

"मै अभी रवाना हो रहा हूँ क्या होगा, कह नही सकता कुछ भी हो, हमने जो निश्चय कर रखा है उसमे कोई अन्तर न हो पाये उसकी जिम्मेदारी तुम्हारी, कुकनकी और चौक्करायरकी है अब मै वापस इधर आकर सब-कुछ नही कर पाऊँगा अब नेडुपरपिल[1] राजमहलमे मिलेंगे "

"जी हाँ !" चन्तुने साहस बटोरकर कहा और फिर पूछा—"बिना जाने तम्पुरान कहाँ जायेंगे ? ऐसी हालत मे रवाना होना ठीक है ?"

एक हल्की-सी मुस्कराहट महाराजाके होठोपर खेल गई उन्होने उत्तर दिया—"उनको कहाँ ले गये—कैतेरीके कुरिच्य तो जानते होगे ? देखा जायगा "

महाराजाने चोक्करायर और कुकनको सारा कार्यक्रम समझा दिया बादमे बडी केट्टिलम्मासे मिलकर विदा लेनेके पहले कुकन नायरको अलग बुलाकर कहा—"कोट्टयमे प्रवेश करते समय यदि कुलानी साथ न हुई तो उनको बहुत दुःख होगा सब बाते बताकर कल ही उन्हे आवश्यक रक्षा-प्रबन्धके साथ गुप्त मार्गसे वहाँ भेज देना तुम लोगोका उन्हे अपने साथ रखना ठीक नही होगा "

माक्कम्के ऊपर आई हुई विपत्तिकी बात सुनकर बडी केट्टिलम्मा-को अत्यधिक व्यथा हुई जब तम्पुरानने कहा—"मैने स्वय देशमें भ्रमण-के लिए जानेका विचार किया है, कुछ दिन लगेंगे, तुम मण्डलावसानमें कोट्टयम जाकर श्रीपोर्कली भगवतीकी आराधना कर आना, आवश्यक प्रबन्ध कर दिया है"—तो उनको सान्त्वना मिली

---

[1] कोट्टयम लगभग चार मीलकी दूरीपर पुराना राजमहल, जिसमें रहकर कोट्टयपर आक्रमण किया गया था

केट्टिलम्माने कहा—"वहनको ज्यादा कुछ नही हुआ यही ईश्वर-की कृपा है आपसे मिलकर वह विलकुल स्वस्थ हो जायगी उसको वहुत संभालना

फिर उन्होने रेशमके कपडेमे लपेटा हुआ एक ताल-पत्रका टुकडा पतिके हाथोमे सौंपते हुए कहा—"मेरी ओरसे यह उसको दे देना यह एक रक्षा-कवच है इसके प्रभावसे वह किसी भी रोगसे मुक्त हो सकती है उसके हाथमे ही देना"

महाराज उस कवचको लेकर पत्नीको खोजनेके लिए निकल पडे

बीसवाँ अध्याय

●

जैसा कि कुरच्चियने तम्पुरानको बताया था, कम्मूने वहाँ आये हुए पहरेदारोंकी मददसे तत्काल माक्कम् और नीलुक्कुट्टीको निकट ही एक तेलीके घरमें पहुँचा दिया था देशवासियोंका विरोध देखकर उसने निश्चय कर लिया था कि प्रभात होनेके पहले ही उन्हें उस प्रदेशसे कहीं दूर चले जाना चाहिए परन्तु जायँ कहाँ ? तम्पुरानके पास पहुँचना संभव नहीं था और किसी स्थानमें ले जायँ तो स्वाभिमानी अम्पु नायर क्या कहेंगे ? इतना ही नहीं, जहाँ-कहीं जायँ विरोधी दलके हाथोंमें न पड़े, यह भी ख्याल रखना था उसने अनुमान किया था कि यह कार्य करनेवाला कोई प्रबल व्यक्ति होना चाहिए जब उसने तम्पुरानकी प्राणप्रियापर ही आक्रमण करनेका प्रयत्न किया तो वह और कुछ भी करनेसे नहीं चूकेगा सब सोचनेके बाद उसने निश्चय किया कि अपनी स्वामिनी और नीलुक्कुट्टीको चन्द्रोत्तु नम्पियारके यहाँ पहुँचा देना ही उचित होगा

पहरेदारोंके नायक कुरिच्यको भी यह ठीक लगा कहींसे वह एक पालकी ले आया और प्रभात होनेके पहले ही उसे कुरच्चियोंसे उठवाकर उन्होंने उस प्रदेशको छोड़ दिया

मध्याह्नमे वे पानूर पहुँच गए. शिविकाको खेतकी सीमापर छोड-कर कम्मू अन्दर गया और उसने मालिकसे सब बातें बताई मध्याह्न-भोजनके वाद आराम करते हुए गृहपतिको उठाना नौकरोको अच्छा नही लगा, परन्तु जब एकके कानमे यह कहा गया कि कैतेरीसे आये है तो सब बाधाएँ विलीन हो गई और चन्द्रोत्तु नम्पियार स्वय नीचे आ गए

नौकरोके हट जानेपर कम्मूने सारी बाते नम्पियारको बताई नम्पि-यारने कहा—"यह तो पपयवीट्टिल चन्तुका ही काम होगा देशवासियो-ने मदद क्यो नही की, यह भी मैं जानता हूँ अच्छा, पालकी शीघ्र अन्दर लिवा लाओ, मैं सब प्रबन्ध किये देता हूँ"

जब कम्मूने बताया कि पालकी कुरिच्योके हाथमे है तो उनसे लेकर अन्दर लानेके लिए नम्पियारने अपने नौकरोको भेज दिया बादमे उन्होने अन्त पुरमे जाकर अपनी पत्नीको सब हाल बताया और अन्दरके एक कमरेमें केट्टिलम्माके रहनेकी व्यवस्था करने तथा उण्णिनडाको उनकी सेवाका भार देनेकी आज्ञा देकर वे बाहर निकल आए नौकरोको आदेश दे दिया गया कि वे अतिथियोका परिचय किसीको न दे पतिव्रता गृहिणी अपने पतिकी आज्ञाका अक्षरश पालन करनेके लिए कटिबद्ध हो गई

केट्टिलम्माको शिविकासे पलगपर उतार लिया गया शरीर बहुत जला हुआ तो नही था, फिर भी थकान बहुत थी और ज्वर भी था उनको आराम देनेके लिए विशेष प्रबन्ध किया गया केट्टिलम्माके साथ एक लडकीको भी उतरते देखकर नम्पियारने उनके बारेमे पूछा और कम्मूने बता दिया कि अम्पु यजमानकी भानजी है

"और तुम ?" नम्पियारने पूछा

"मैं मैं ये मेरी दीदी है"—कहते हुए कम्मूने अन्त पुरके दालान-मे खडी हुई उण्णिनडाकी ओर सकेत किया

चद्रोत्तु नम्पियारको आयुर्वेदका सामान्य ज्ञान था उन्होने जान लिया कि जलनेसे केट्टिलम्माको शारीरिक कष्टकी अपेक्षा मानसिक

कष्ट अधिक हुआ है अत विश्रामकी अधिक आवश्यकता है यदि आवश्यक हो तो दूसरे दिन वैद्यको बुलानेका उन्होने निश्चय किया अतिथियोकी सेवामें उण्णिनडा और अपनी पत्नीको छोडकर वे बाहर निकल आये और उन्होने सबसे पहले अम्पुनायरको समाचार देनेके लिए एक आदमी भेज दिया

उण्णिनडाको अपने भाईसे इस प्रकार अचानक भेंट हो जानेसे जो प्रसन्नता हुई उसकी अपेक्षा कई गुनी प्रसन्नता इस ख्यालसे हुई कि उसे केट्टिलम्माकी सेवा करनेका अवसर मिला महाराजाकी प्राणवल्लभाका दर्शन मिलना ही वह अपना सौभाग्य मानती थी, फिर केट्टिलम्मा तो उसके प्रियतम अम्पु नायरकी आदरणीया बहन भी थी, अतएव उसके आनन्दका कोई ठिकाना ही न रहा पलगके पाससे क्षण-भरके लिए भी हटना उसे स्वीकार नही था सोई हुई केट्टिलम्माके पैर दाबती हुई, आहार-निद्रादिकी कोई परवाह न करके, वह दिन-रात वही बैठी रही

जब उण्णिनडाको मालूम हुआ कि नीलुक्कुट्टी अम्पु नायरकी भानजी है तो उसे लगा कि इससे अधिक भाग्य और कुछ हो ही नही सकता था ईश्वरकी कृपासे नीलुक्कुट्टीको आगमे कोई कष्ट नही हुआ था मांके समान प्रिय माक्कम्के पास बैठकर नीलुक्कुट्टी और उण्णिनडा एक-दूसरेको ढाढस बंधाती और सान्त्वना देती रही

दोनोंके बीच अधिकतर बातचीत कम्मूके बारेमें हुई तम्पुरानके सेनामे पधारनेपर पयवीट्टिल चन्तु नायरसे कम्मू कैसे लडा और तम्पुरानने उसे कैसे आशीर्वाद दिया, यह सब नीलुक्कुट्टीने उण्णिनडा-को बताया उसके सकोचपूर्ण सम्भाषणसे उण्णिनडाने समझ लिया कि कम्मूपर उसका अनुराग कितना दृढमूल है

× × ×

केट्टिलम्माके चन्द्रोत्तु-भवन पहुँचनेके दूसरे दिन अपराह्नमें उस प्रदेशका एक प्रख्यात कथकलि-सघ वहाँ आ पहुँचा चन्द्रोत्तु-प्रभुको कथकलिमे विशेष रुचि नही थी, फिर भी उन दिनोके प्रभुजनोके नियमोंके

अनुसार उन्होने उस मघको एक दिन खेल दिखानेकी अनुमति दे दी जब केळिक्कोट्टु* आरम्भ हुआ तो उन्होने सघके आचार्यको बुलाकर पूछा—"कौन-सी कथा दिखानेवाले हो ?"

मघके आचार्यने उत्तर दिया—"तिरुअनन्तपुरम् (त्रिवेन्द्रम्) के वारियर† नामक कविने 'नल-चरित' को चार भागोमे चार दिनके अभिनयके लिए तैयार किया है हमने तीसरे दिनकी कथाका विचार किया है हमारे सघमे 'काले नल'‡ का वेश लेनेके लिए एक अति कुशल व्यक्ति है उसे देखकर आप प्रसन्न हो जायँगे"

नम्पियारने कहा—हाँ, ठीक है परन्तु मै बहुत देरतक नही जाग सकूँगा

"बहुत जागनेकी आवश्यकता नही दो पद$ देख लेना पर्याप्त होगा. अभिनयकी विशेषता अपने-आप देख लीजिएगा"

रात्रिके भोजनके बाद दीप* लगाया गया और अभिनय शुरू हुआ नम्पियार भी आकर यथास्थान बैठ गए

नलका प्रवेश हुआ प्रथम पदका अभिनय आरभ हो गया पदमे साहित्य-सौदर्य भरपूर था परन्तु अभिनयमें आचार्यकी प्रशसाके योग्य

---

* देखो, पाद-टिप्पणी २, पृष्ठ ७४

† उण्णाई वारियर नामक महाकवि, जिन्होने कथकलिके लिए चार खडोमे नल-चरित आट्टकथाकी रचना की है

‡ कार्कोटक नागके दशनसे काले बने हुए राजा नल

$ कथकलि की कथा (आट्टकथा) मे दो भाग होते है—१ पद, २ श्लोक पद वह भाग है जिसका गायन तथा अभिनय किया जाता है श्लोक द्वारा शेष कथाका मौखिक वर्णन किया जाता है

* कथकलिके मचको प्रकाशित करनेके लिए एक बहुत बड़े दीप का उपयोग किया जाता है दीप इतना बडा होता है कि उससे ही पर्याप्त प्रकाश फैल जाता है उसे लगानेका अर्थ है—कथकलिका आरभ

कोई विशेषता नहीं दिखाई दी नटका वेश और भाव अच्छा था परन्तु, जहाँ इस अंशका अभिनय किया जा रहा था कि 'नगर-वाससे कानन-वास अच्छा है' वह बहुत ही अच्छा रहा नम्पियारने भी पास बैठे हुए एक नम्पूतिरि मित्रसे उसकी प्रशंसा की

कथा आगे बढ़ी कार्कोटक नागके विषसे काले बने राजा नल रंग-भूमिपर आये तब नटकी भाव-भंगी पूर्णतया बदली हुई थी अभिनय किया गया—

काद्रवेयकुलतिलक ! निन्
कालतळिरे कूप्पुन्नेन्
आर्द्रभाव निन मनस्काम्पिल
आवोळ्ळ वेण मेन्निल !

(हे कद्रु-पुत्रोंके वंश में श्रेष्ठ ! तुम्हारे चरणोंमें प्रणाम करता हूँ तुम्हारे हृदयमे मेरे प्रति आर्द्रभाव हो जाय यही मेरी प्रार्थना है !)

नम्पूतिरि सिर हिला-हिलाकर प्रशंसा करने लगा, "भाव, अभिनय, नृत्य—सब एक समान उत्तम ! इससे अच्छा हो ही नहीं सकता !" नम्पियारको भी महसूस होने लगा कि इसके बारेमें आचार्यने जो कुछ कहा था वह ठीक ही है दोनो उसके अभिनयपर मुग्ध हो गए

कहानी आगे बढ़ी कार्कोटकका वरदान पाकर राजा नल ऋतुपर्ण-की राजधानीमे पहुँचे और बाहुक नामसे राजाके सारथी बनकर रहने लगे रातको जागकर वे दमयन्तीकी स्मृतिमें तड़पने लगे पीछेसे गीत सुनाई दिया—

विजने, बत ! महति विपिने, नी—
उणर्निन्नु वदने !
वीणेन्नु चेवू कदने ?

(अति भयानक विजन विपिनमें हे चन्द्रमुखी प्रियतमे ! तुम जागती हुई, दुःख-सागरमें डूबी क्या कर रही होगी ?)

नलका वेदनापूर्ण स्वर, रगभूमिमे प्रतिध्वनित होने लगा बाहुकका अभिनय करनेवालेका सामर्थ्य अब सबने देखा

अवने चेन्नायो ?
बन्धु भवने चेन्नायो भीरु ?
एन्नु काण्मन् इन्दुमाम्यरुचिमुखम्
एन्नु पूण्मन इन्द्रकाम्य मुटलह ?

(क्या तुम किसी आश्रममें पहुँच गई हो ? या हे भीरु, तुम किसी वन्धुके भवनमे पहुँची हो ? चन्द्रके समान तुम्हारा सुन्दर मुख अब मै कब देख पाऊँगा ?)

इस स्थलपर अभिनयकी तन्मयता कुछ निराली ही हो गई निषध-राजके वन्धुजन वहुत है, विदर्भराजके भी कम नही है उनमेसे किसके पास तुमने आश्रय लिया है ? किसी योग्य और प्रमुख प्रभुके पास ही तुम पहुँची होगी यही नटके अभिनयका अर्थ था *

नम्पियारके मनमे एकाएक एक विचार उठा वे सभ्रमके साथ चारो ओर देखने लगे एक बार ध्यानसे नटकी ओर देखा उनसे वहाँ बैठा नही गया शीघ्रतासे उठकर उन्होने नम्मूतिरिसे कहा—"आप पूरा देखिए मुझे कुछ अस्वस्थता मालूम हो रही है मै जाकर विश्राम करना चाहता हूँ"

नम्पियार भवनके ऊपरके खडमे पहुँच गए और उन्होने आचार्यको सदेशा भेजा कि बाहुकका अभिनय करनेवाले व्यक्तिको तुरन्त उनके पास भेज दे । दृश्य समाप्त होते ही नट आचार्यके साथ नम्पियारके पास पहुँचा

* कथकलिके पदसे जो सीधा अर्थ निकलता है केवल उतनेका ही अभिनय नट नही करता वह अपने मनोधर्मके अनुसार अभिनय द्वारा शब्दोकी विस्तृत व्याख्या भी करता है, जिससे अभिनयकी व्यापकता वहुत वढ जाती है

पद-ध्वनिसे ही नम्पियार उठ खडे हुए अभिनेताको देखकर उन्होने झुककर प्रणाम किया और अति विनयके साथ कहा—"बिना समाचार दिये इस प्रकार पधारे है" नेत्रोके सकेतसे आशान † को बाहर भेज-कर तम्पुरानने हँसकर कहा—"सब ठीक है यह बताइए कि माक्कम् कैसी है ?"

"श्रीपोर्कली भगवतीकी कृपासे उन्हे विशेष कष्ट नही है शरीर जहाँ-तहाँ जल गया है रोज दवा लगाई जाती है, ज्वर था सो वह भी आज कम है"

"कहाँ है ?"

"अन्त पुरमे"

"तो अभी मिलना चाहता हूँ"

"जी ? यह वेश !"

"नम्पियारका कहना ठीक है"

नम्पियारने अन्दरके कमरेकी ओर सकेत करके कहा—"वहाँ हाथ-मुह धोने और वस्त्र बदलनेका प्रबन्ध है"

नम्पियारने जिस विवेकसे काम लिया उसका महाराजाने हृदयसे अभिनन्दन किया थोडी देरमें अन्तर्गृहसे निकले तो 'बाहुक' नही, कार्कोटक नागकी विष-बाधासे मुक्त साक्षात् नैषधके समान तेजस्वी महाराज केरलवर्मा थे।

नम्पियार मार्ग दिखाते हुए आगे और महाराज पीछे-पीछे चलते हुए अन्त पुरके द्वारतक पहुँचे वहाँ नम्पियार यह कहकर रुक गए कि "वेट्टिटलम्मा अन्दर है, मै यही राह देखूँगा" महाराजाने अन्तर्गृहमें प्रवेश किया

एक बत्तीके दीपकके मन्द प्रकाशमे महाराजाने देखा कि माक्कम् वेट्टिटलम्मा पलगपर सो रही है पास ही एक युवती बैठी उसपर पखा

† आचार्य

झल रही है अपरिचित पुरुषका प्रवेश देखकर सीधे देखे विना ही उसने कहा—"वाहर चले जाइए यहाँ केट्टिलम्मा सो रही है"

"धीरे वोलो, जाग जायगी डरो मत मुझे एक वार देखना ही है" तम्पुराननने कहा

उण्णिनडाने पास ही सोई हुई नीलुक्कुट्टिको जगा दिया आँखें खोलते ही नीलुककुट्टीने देखा सामने स्वय तम्पुरान खडे है शीघ्रता-पूर्वक उठकर उसने झुककर प्रणाम किया इससे उण्णिनडाने भी अनुमान कर लिया कि ये महानुभाव कौन हो सकते है दोनो ही पलगसे कुछ दूर जाकर खडी हो गई

महाराजा पलगके एक कोनेपर बैठकर अपनी प्रियाके शरीरपर हाथ फेरने लगे ज्वर और पीडाके कारण अर्ध-निद्रित माक्कम् एकदम जागी नही परन्तु उसके मुखपर स्पर्शकी सुखानुभूति स्पष्ट दिखाई पडी महाराजाका चेहरा वात्सल्य, आर्द्रता, अनुकम्पा, प्रेम आदिका रगमच-सा वन गया उस सुखानुभवके कारण माक्कम् जागरण और सुषुप्तिकी मध्य दशामें पहुँच गई और कुछ वडबडाने लगी स्वप्नमे बोलती हुई समझकर महाराजा ध्यानसे सुनने लगे—"निकट न हो तो क्या, हृदय में तो है—कभी तो याद आती ही होगी !—मेरे लिए यही काफी है—दूसरे लोग कुछ भी कहे—आपके हृदयमें—हाय ! मरनेके पहले एक वार देख पाती !—"

महाराजाने उसकी मानसिक अवस्था समझ ली उन्होने अपने-आप ही उत्तर दिया—"मेरी प्यारी माक्कम् ! तुम सुचरिता हो ! तुम्हारे बारेमें कौन क्या कहेगा ? उत्तर देनेवाला मै नही बैठा हूँ ? ठीक है, मै कही भी रहूँ, मेरे हृदयमें तुम सदा विराजमान रहोगी"

माक्कम्की आँखें खुलने लगी फिर भी उसे सब स्वप्न-सा ही मालूम हो रहा था परन्तु जब पूर्णत जाग गई तो 'स्वामी' कहकर उठने लगी महाराजा ने प्यारके साथ उसे लिटा दिया और कहा—"उठो मत, थक

जाओगी" तब माक्कम्‌की समझमे आया कि वह स्वप्न नही, जाग्रतावस्था थी लज्जित होकर मुख छिपानेका प्रयत्न करते हुए उसने कहा—"इन अभागिनीको देखनेके लिए इतने कष्ट उठाकर आप पधारे है मेरे कारण मेरे स्वजनोको कितना कष्ट होता है। श्रीपोर्कली भगवतीकी कृपासे एक बार देखनेको तो मिला।"

"मेरी माक्कम्‌को कुछ कष्ट हो जाय तो क्या मै वहाँ नही पहुँचूँगा। दुखी न हो। तीन-चार दिनमे तुम बिलकुल ठीक हो जाओगी फिर हम सदा साथ ही रहेगे एक दिनके लिए भी अब तुमको नही छोड़ूँगा" महाराजाने उत्तर दिया

माक्कम्‌ने कोई उत्तर नही दिया तम्पुराननने फिर कहा—"जरा-सी स्वस्थ हो जाओ तुरन्त ही कोट्टय ले जानेका प्रबन्ध कर लिया है"

"तो अब वापस राज्यमे पधारनेवाले है? लोग मालूम नही क्या-क्या कहते है मुझे तो बिलकुल विश्वास नही हुआ कि इतना कष्ट सहन करनेके बाद इन म्लेच्छोकी अधीनता स्वीकार करेंगे"—माक्कम्‌ने कहा

"यह किसने कहा? तुम्हे दुःख नही होना चाहिए कपनीके अधीन होकर केरलवर्मा कभी नही रहेगा"

"तो फिर मुझे कोई दुःख नही घर जल जानेका भी मुझे कुछ बुरा नही लगता एक घर गया तो क्या हो गया? उससे भी बडा घर बना देनेवाले मेरे पास ही है मुझे किस बातका दुःख?"

"तुम्हारी बातोसे मेरी भी हिम्मत बँधती है तुम जल्दी अच्छी हो जाओ, बस इतना ही चाहिए जब सुना कि दुष्टोने कैतेरी-भवनमें आग लगा दी तो मेरे हृदयपर वज्र-सा गिर पडा था—'मेरी माक्कम्!' बस यही एक आह हृदयसे निकली थी जबतक आकर देखा नही तबतक शान्ति नही थी अच्छा, अब तुम सो जाओ"

"तो क्या अभी जा रहे है?"

"हाँ, एक बात रह गई कुञ्ञानिने तुम्हारे लिए एक रक्षा-कवच लिखवाकर भेजा है, सँभालकर तुम्हारे हाथोमे ही देनेको कहा है कहती थी कि इसको तकियेके नीचे रखकर सोग्रोगी तो जल्दी अच्छी हो जाओगी "

"मेरे ऊपर जीजीका दाक्षिण्य और वात्सल्य आपसे भी बढकर है कहाँ है वह कवच ? किससे लिखवाया है ?"

तम्पुराननने वह छोटा-सा ताल-पत्र कपडेमे लिपटा हुआ ही माक्कम्-को दे दिया हाथमे लेते ही माक्कम्को याद हो आई शरीरका दर्द, थकान आदि सब भूलकर सलज्ज भावसे बोली—"इस कवचको लिखने-वाले मन्त्रवादी अति चतुर और प्रयोग समर्थ हैं जीजीने ठीक ही कहा है यह रक्षा हाथमे पहुँचते ही मेरा सभी दु ख-दर्द मिट जायगा फिर, तकियेके नीचे रखकर सोऊँ तब तो कहना ही क्या है ?"

"अच्छा, वह मत्र कैसा है ?" तम्पुराननने पूछा

"मै पढकर सुनाऊँ ?"

"हँसी कर रही हो इस मन्द प्रकाशमे कैसे पढोगी ?

"उसे पढनेकी आवश्यकता नही, मुझे याद है सुनाऊँ ?'—'जाती ! जातानुकम्पा भव !"—माक्कम् धीरे-धीरे गुनगुनाने लगी

तम्पुरान—"बस ! बस ! यही कुञ्ञानिने भेजा है ? तो अवश्य ही इससे अच्छी हो जाओगी मेरा तो एक बार देख जानेका ही इरादा था "

तम्पुराननने खडे होते-होते कहा—"नीतुक्कुट्टी, अच्छी तरह सँभालना, भला ?"

नीतुक्कुट्टी उण्णिनङाके साथ आगे आ गई उसने कहा—"तम्पु-रान, सेवा करनेवाली तो यह नट-चेची* है एक क्षण भी पाससे हटती नही दिन-रात यही रहती है"

---

* नट-दीदी चेची—दीदी

माक्कम्ने हाथ बढाकर उण्णिनडाको अपने पास बुलाया और महाराजने कहा—"यह तो मेरी छोटी बहन ही है कैतेरीमे उस दिन जिसे देखा था उस कम्मूकी बहन है"

उण्णिनडा भक्ति-भावसे सिर नीचा किये खड़ी थी

तम्पुरान—"ओहो! मैं जानता हूँ अम्पुकी रक्षा और तलश्शेरी-की सारी बातें मैंने सुनी हैं मैं सदाके लिए तुम्हारा आभारी हूँ अब तो कुछ पूछनेको शेष रहा ही नही

माक्कम्—"यह क्या? इसने दादाको भी बचाया? वह कैसे?"

तम्पुरान—अच्छी होनेपर इसीसे सुनना कोट्टय आओ तब इसे भी साथ लेती आना उस समय मालूम होगा कि केरलवर्माके हृदयमें अपना उपकार करनेवालोंके लिए क्या स्थान है

× × ×

आँगनमे कथकलि खूब जोरोंसे चल रही थी अन्तःपुरसे बाहर निकलते ही सेवकोंसे अनुगत होकर तम्पुराननें नम्पियारके कमरेमें प्रवेश किया वहाँ अम्पु और नम्पियार तम्पुरानकी राह देख रहे थे

"अम्पु, कब आया?" महाराजाने पूछा

"अभी-अभी पहुँचा हूँ यजमानने* एक आदमी भेजा था कोई विशेष बात तो नहीं होगी?" अम्पु नायरने प्रश्न किया

महाराजाने समझ लिया कि आखिरी वाक्यका सबंध माक्कम्से है. अतएव उन्होंने उत्तर दिया—"कोई बात नही थोड़ा-सा ज्वर है दो-तीन दिनमे ठीक हो जायगी अभी तुम कहाँसे आ रहे हो?"

"तलश्शेरीमे"

"वहाँका कोई विशेष समाचार? कर्नलके जानेका समाचार तो ठीक

---

* श्रीमान

है न ? कोई परिवर्तन तो नही है ?"

"नही, तैयारियाँ जोरोसे हो रही हैं देशमे इधर-उधर रखी गई सेनाओंके सब नायकोको आमन्त्रित किया गया है इसमे कर्नलका उद्देश्य यह मालूम होता है कि जानेके पहले सबको समझा दिया जाय कि शासन किस प्रकार करना उचित होगा

तम्पुरान—इसके लिए दिन कौन-सा निश्चित किया है ?

"बारह तारीख सब गोरे सैनिक-कर्मचारियोको ग्यारह तारीखको ही तलश्शेरी पहुँचनेकी आज्ञा दी गई है"

"हाँ, कर्नलका प्रबन्ध अच्छा है क्यो नम्पियार ?"

नम्पियार—कर्नलके विदाई-समारोहका निमन्त्रण यहाँ भी आया है

तम्पुरान—अच्छा है तो मुझे क्यो नही आमन्त्रित किया ? इसके बारेमें गर्वनर-जनरलको लिखना ही होगा

अम्पु—एक और समाचार है, तलश्शेरीमे कई लोगोको गिरफ्तार कर लिया गया है जिन-जिनके ऊपर हमारे सहायक होनेकी शका होती है, सभीको कारागृहमे डाला जा रहा है चिरुतक्कुट्टीके बारेम भी पूछ ताछ हो रही है सुना है, जानेके पूर्व उसे फाँसीपर चढा देनेकी कर्नलने शपथ ली है

तम्पुरान—क्या ? स्त्रियोको फाँसी ? यह तो कही सुना भी नही !

नम्पियार—चिरुतक्कुट्टीको फाँसी मिले तो बहुत बुरा होगा उसने हमें बहुत सहायता दी है उण्णिनडाके लिए

तम्पुरान—वह मैं सँभाल लूँगा अब मुझे जाना है नम्पियारसे मुझे एक बात कहनी है

नम्पियार—नम्पियार आज्ञा सुननेके लिए सदा तैयार है

तम्पुरान— अम्पु, तुम भी सुन लो मैंने इकतालीसवे दिन * के दर्शन-

---

* मण्डल-व्रतकी समाप्तिके दिन

के लिए कोट्टय पहुंचनेका निश्चय कर लिया है मैं चाहता हूं, देशके सभी प्रमुख नेता उस समय वहां उपस्थित रहे नम्पियारको भी अवश्य ही आना चाहिए इस वर्ष सदासे अधिक धूम-धामके साथ व्रतकी समाप्ति करना चाहता हूं

"जो आज्ञा"—इतना ही उन दोनोंके मुखसे निकला

इक्कीसवाँ अध्याय

तलश्शेरीमे कर्नलको यथोचित विदाई देनेकी सब तैयारियाँ हो रही थी वेलेस्लीका जाना सैनिक-अधिकारियोको खल रहा था, किन्तु नागरिक अधिकारी मन-ही-मन प्रसन्न हो रहे थे सुपरवाइजरने अपनी प्रसन्नता छिपानेका भी प्रयत्न नही किया वेबरको मालूम था कि वेलेस्ली, जैसा हाकिम जबतक तलश्शेरीमे है तबतक उसे स्वय दिया-दीप ही बना रहना पडेगा यही उसकी ईर्ष्या और स्पर्धाका मुख्य कारण था

कर्नलके वापस बुलवाये जानेके लिए वह सब प्रकारके प्रयत्न बम्बई-सरकारके द्वारा कर ही रहा था अब उसका जाना तय हो गया तो वेबरने समझा कि उसे सतुष्ट करके भेजना मेरे लिए भी अच्छा है इस-लिए वह सब तैयारियाँ करने लगा

वेबरने अनुमान कर लिया था कि पेरेगका विलीन होना कर्नलकी ही किसी कार्रवाईका परिणाम है चिन्तासे भरी हुई चिरुताकुट्टी भी उसे प्रेरित किया करती थी सबके उत्तरमे वेबर कहा करता था—"अभी ठहर जाओ निश्चिन्त हो जाओ यह तो दो चार दिनोमे पता जायगा बादमे सब देख लेगे"

उसने अपने गुप्तचरोसे यह जान लिया था कि कर्नल मिगुवेराके

द्वारा चिरुतवकुट्टीके विरुद्ध कुछ षड्यन्त्र रचवा रहा है उसका अनु-मान था कि किसी प्रकारके झूठे प्रमाण एकत्रित करके वेलेस्ली उन दोनोंको नष्ट कर देनेका प्रयत्न कर रहा है

उधर सिकुवेराकी जांच-पडताल कुछ पूर्ण हुई उसको इस बातका प्रमाण मिल गया कि चिरुतक्कुट्टी पेरेराकेद्वारा सब समाचार जान लेती थी और उन्हे किसी गुप्त जरियेसे तम्पुरानके पास पहुँचा देती थी केरलवर्माके प्रबन्धकोमेंसे एक कभी-कभी तलश्शेरी आकर उससे मिल जाया करता था यह बात चिरुतक्कुट्टीके नौकरोमेंसे एकने स्वीकार कर ली चन्तु नायरने शपथ ली कि उसने चिरुतक्कुट्टीके हाथमें केरल-वर्माकी एक अँगूठी देखी है

सिकुवेराने चिरुतक्कुट्टीके बारेमें ही नही, मूसाके बारेमें भी जांच-की थी परन्तु उस दिशामे उसे सफलता नही मिली मूसा और चिरु-तक्कुट्टीके बीच कुछ व्यापार-सम्बन्धी मेल-जोल है इससे अधिक कुछ प्रकट नही हुआ पर्याप्त प्रमाण मिल जानेके बाद ही सिकुवेराने कर्नल-को सूचना दी चिरुतक्कुट्टी महाराजाको समाचार कैसे देती थी इसका प्रमाण न मिलनेमे कुछ कमी रह गई उसके लोग बहुत कम तलश्शेरीके बाहर जाते थे परन्तु इस कमीकी कर्नलने परवाह नही की उसने आदेश दे दिया कि अब देरी करनेकी जरूरत नही है, उसे तुरन्त गिरफ्तार कर लिया जाय

सिकुवेराने कहा—इसमे कुछ कठिनाई है जबसे उसे मालूम हुआ है कि हम जांच-पडताल कर रहे है तबसे वह सुपरवाइजरके बँगलेमें ही रहने लगी है वेबर कहेगे कि वहाँ जाकर गिरफ्तारी करनेका अधि-कार सैनिकोको नही है इतना ही नही, मूसाको लिये विना मामला पूरा नही होगा

कर्नल—हाँ, यह ठीक है तब तो मामला बहुत कठिन हो जायगा मूसाके विरुद्ध कोई प्रमाण नही है वह हमारी मदद भी करता है पूर्ण प्रमाण मिले विना उससे भिडना ठीक नही होगा

सिकुवेरा—पेरेराके साथ जैसा किया गया उसी प्रकार गुप्त रूपसे बल-प्रयोग करके चिरुतक्कुट्टीको सुपरवाइजरके पाससे अलग कर लेना चाहिए

कर्नल—सुपरवाइजरके बँगलेमे बल-प्रयोग ? यह नही हो सकता चलो, मै स्वय ही बेवरसे मिलूँगा तुम जाकर उससे कहो कि मै मिलना चाहता हूँ यहाँतक आनेकी कृपा करे

थोडे समयमे सुपरवाइजर वेलेस्लीके बँगलेमे आ गया परस्पर अभिवादनके बाद कर्नलने कहा—"मिस्टर बेवर, सब समाचार अच्छे तो है ? जानेके पहले यह रिपोर्ट दे सकनेमे कि पपशिका विद्रोह शान्त हो गया, मुझे प्रसन्नता है"

बेवर—आप एक ऊँचे पदपर नियुक्त होकर जा रहे है, इससे यहाँ सबको प्रसन्नता है मराठोके विरुद्ध हमारी सेनाके प्रधान सेनापति हम सभीके परिचित है यह बात मेरे जैसे तुच्छ लोगोके लिए भी सम्मान की है परन्तु इसपर मुझे कोई विश्वास नही होता कि यहाँ सब शान्त हो गया"

कर्नल—क्यो ? आप ऐसा क्यो कहते है ? देशके सभी प्रमुख व्यक्तियोने प्रतिज्ञा कर ली है कि वे किसी प्रकार पपशिको न तो सहायता देंगे और न उनके साथ ही रहेगे आजकल पहाडोकी ओर कोई भोजन-सामग्री जाती भी नही इस एक महीनमे सिद्ध हो चुका है कि पपशिमें अब हिलनेकी भी शक्ति नही रही मुझे तो विद्रोहका अब कोई लक्षण दिखलाई नही पडता

बेवर—मुझे जो समाचार मिला है वह इसका समर्थन नही करता पपशि बिलकुल हिलता नही, यह बात सच है परन्तु उसका वास्तविक उद्देश्य शायद कर्नलको नही मालूम परन्तु यह मै कैसे मानूँ कि इतने गुप्तचरो और सैनिकोके होते हुए कर्नलसे ये बाते छिपी हुई है ?

अन्तिम शब्दोमें निन्दाका कुछ स्फुरण कर्नलको प्रतीत हुआ उभरनेवाले क्रोधको दबाते हुए उसने कहा—"आपने क्या सुना है ? यदि

कोई बात राज्यकी शान्तिके लिए बाधक हो तो मुझे तुरन्त बताइए

वेबरने हँसते हुए कहा—संक्षेपमे कहता हूँ इस एक महीने-भर पपशि उदासीन नही रहा उसने पूरा वयनाट्टु-प्रदेश अपने अधीन कर लिया है वहाँ स्थायी रूपमे रहकर शासन करनेका सब प्रबन्ध पूरा हो गया है कोयबतूर और मैसूर आदि स्थानोसे भोजन-सामग्री प्राप्त करनेका प्रबन्ध भी पूर्ण हो गया है वह वयनाट्टुमे स्थिर हो गया तो इन सब स्थानोपर आक्रमण करनेमे क्या कठिनाई रह जायगी ?

कर्नल क्षण-भरके लिए स्तब्ध हो गया उसने स्वप्नमे भी नही सोचा था कि पपशि राजा इतना बुद्धिमत्तापूर्ण कार्य करेगे वह जानता था कि वयनाट्टुके पहाडोमे युद्ध करना तो दूर, कम्पनीके सैनिक वहाँ प्रवेश भी नही कर सकेगे वह यह भी जानता था कि वह वन-प्रदेश अकेरलीय लोगोके लिए यम-लोकका राज-मार्ग है वहाँसे तम्पुरानको कोई मदद न मिल सके, इसीलिए एमन नायरको पकडकर देश-निकाला दिया गया

कर्नलने कहा—आप लोग कुछ भी सुनकर कुछ भी कहते रहते है पपशि वयनाट्टुमें प्रवेश करके स्वय मृत्युका वरण कर रहा है इतना ही पर्याप्त है कि उसे वहाँ भोजन-सामग्री और आयुध न मिल सकें

वेबर—ऐसा आप ही मानिए मेरी जानकारी तो कुछ और ही बात कहती है पपशिने केवल भोजन-सामग्रीका ही नही, अन्य सहायताका भी प्रबन्ध कर लिया है वहाँ जाकर निवास करते ही वह हमारे ऊपर आक्रमण करनेमे देरी नही करेगा

कर्नल—कुछ भी हो, जबतक मैं यहाँ हूँ तबतक पपशि कुछ नही करेगा मेरे जानेके बाद तो आगे आनेवाले व्यक्तिकी जिम्मेदारी होगी

वेबरने हास्य भावसे ही उत्तर दिया—ओहो ! अब आपका इरादा समझमे आ गया ! आप तो इतना ही चाहते है कि किसी प्रकार यह दिखावट कि विजय प्राप्त कर ली, जय-भेरी बजाते हुए, ऊँचा स्थान और

मान पाकर यहाँसे चले जायँ मैंने भी यही अनुमान किया था अब तो आपने स्वय स्वीकार कर लिया

कर्नलको भी लगा कि गलत बात कह गया फिर भी वेबरके परिहाससे उसे असह्य क्रोध आ रहा था उसने दर्पके साथ कहा—"ये बेहूदा बाते बन्द करो इतना घमण्ड मत दिखाओ अधिक बोले तो जानते हो क्या परिणाम होगा ? समझकर बोलो कि किससे बाते कर रहे हो !"

वेबरने समझ लिया कि बात मर्म स्थलतक पहुँच गई है उसने फिर कहा—"जानता हूँ किससे बात कर रहा हूँ आदरणीय गर्वनर-जनरलके सहोदरसे वही रिश्ता सोच करके तो इतना अकडते हो ?"

आजतक वेलेस्लीके मुँहपर किसीने इस प्रकारकी बाते नही कही थी कुलीन, तेजस्वी और अपने महान् भविष्यमे विश्वास रखनेवाले उस महत्त्वाकाक्षीको यह आक्षेप गालपर चपत जैसा लगा परन्तु तुच्छ व्यक्तिके साथ वाद-विवाद करना अपने स्तरके लिए अनुचित समझकर उसने शान्त स्वरमें कहा—"सुपरवाइजर, तुम बदतमीजीके साथ बाते करते हो हम उसका उत्तर नही देंगे हम बात कर रहे थे पपशिश राजाके बारेमे जैसा तुम कह रहे थे वही यदि सच है तो उसका कारण तलश्शेरीमे ही रहनेवाले कुछ राजद्रोही है मेरा विश्वास तो यह है कि तुम्हारा उस सगठन से कोई सम्बन्ध नही है पर तुम्हारे बहुत नजदीकके कुछ लोग पपशिश और उसके लोगोको मदद पहुँचाते हैं इसका प्रमाण मुझे मिल चुका है वास्तवमे उसी विषयमें सलाह लेनेके लिए तुमको कष्ट दिया है"

वेबर—यह कहनेका क्या अर्थ ? पपशिशकी मदद करनेवाले मेरे नजदीक है ? मै इसको एक निकृष्ट षड्यन्त्र मानता हूँ आपके प्रमाणो के अनुसार वे कौन व्यक्ति है ?

कर्नल—क्रोधको रोकिए प्रमाण देखेंगे तो आपको भी मालूम हो जायगा कि घृणित और निकृष्ट वृत्ति किसकी है पपशिशको यहाँसे समाचार देनेवाले है—लुई पेरेरा और आपकी वह प्रेयसी—क्या है उस शैतान औरतका नाम ?

वेवर अति क्रुद्ध होकर खडा हो गया "आपके-जैसे लोगोको झूठे प्रमाण वना लेनेमे क्या कठिनाई हो सकती है ? पषश्शिको जीत लिया इनके झूठे प्रमाण वनाकर गवर्नर-जनरलके पास भेज देनेवाले के लिए क्या असाध्य है ? इस सवका लक्ष्य मै जानता हूँ मुझे गवर्नर-जनरलकी दृष्टिम विद्रोही सिद्ध करना चाहते है न आप ? मै भी आपका सव कच्चा-चिट्ठा ववई-सरकारको लिख चुका हूँ अव और वातें वनाकर मुझे तग करनेमे कोई लाभ नही है"

कर्नलने यह नही सोचा था कि वेवरका व्यवहार इस प्रकारका होगा उसे कोई उत्तर न सूझा और वह उलझनमे पड गया आखिर उसने कहा—"मित्रवर ! आपको तग करने या आपके ऊपर दोपारोपण करनेके लिए मैने यह सव नही किया मै जानता हूँ कि आप विद्रोहियो-का साथ कदापि नही दे सकते इसीलिए मै आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप पेरेरा और उस स्त्रीको कारागारमे रखकर विचार शुरु कीजिए"

वेवर—मेरे दुभाषिये को वलात् पकडकर लाया गया है आपने स्वय यह स्वीकार किया है नागरिक कर्मचारियोको इस प्रकार गिरफ्तार करनेका आपको क्या अधिकार है ?

कर्नल—कोई अधिकार नही परन्तु उसने स्वय लिखकर और हस्ता-क्षर करके जो यह कागज दिया है, उसे देखिए उसके वाद कहिए कि मैने क्या अन्याय किया है मुझे कोई आग्रह नही कि कार्रवाई मै ही करूँ आपको यह स्वीकार नही होगा हमारे वीच इतना मनोमालिन्य है तव इसका निर्णय अन्य निष्पक्ष लोगोको करना चाहिए

वेवर—जो सैनिक नही है उन सवपर मेरा पूर्ण अधिकार है और किसीको विचार करनेका अधिकार भी नही है यदि कोई अपनी सीमा-से वाहर जाय तो उसे भी दण्ड भोगना होगा

कर्नल—यदि ऐसा हो तो मेरे पासके प्रमाण देखकर अन्य तटस्थ लोग निर्णय करे कि इन्हे वन्दी वनाना चाहिए अथवा नही

वेवर—मुझे कोई आपत्ति नही है परन्तु उस योग्य यहाँ है कौन ?

कर्नल— एक सहायक सुपरवाइजर हो तो आपको मजूर है ? दूसरा परसो यहाँ आनेवाले सैनिक-अधिकारियोमेसे एक हो सकता है

वेबर—मुझे स्वीकार है यदि आपके पासके प्रमाण ठीक है तो मै उचित कार्रवाई करूँगा

वेबर अपने बँगलेमे वापस आया उसका विश्वास था कि चिरुतक्कुट्टी ऐसे कामोमे हस्तक्षेप नही करेगी चार वर्षोसे अधिकके परिचयसे वेबरको मालूम था कि वह उसपर न्योछावर है वह भी उससे वैसा ही प्रेम करता था जो हुआ उसके बारेमे उसे कुछ बताना कर्नलके प्रति विश्वास-घात होगा यह समझकर उसने उनसे कुछ नही कहा

चिरुतक्कुट्टीके ऊपर कर्नल अपराधका आरोप करनेवाला है यह बात सारी तलश्शेरीमे फैल गई थी अपने नौकरोद्वारा चिरुतक्कुट्टीको भी यह मालूम हो गया वह इतना जानती थी कि कर्नल और वेबर मे वैर है, इसलिए यदि कर्नलके विरुद्ध उसने कुछ किया है तो वह उसके प्राणप्रियके लिए हितकर होगा और बीच-बीचमे वह यह भी सोचा करती थी कि महाराजा तो मेरे भी अन्नदाता है उनका आदेश मानना मेरा भी कर्तव्य है महाराजाको दबानके लिए ही कर्नल आया था उसी कारण से वह उसे विरोधी मानती थी वेबरके साथ उसकी स्पर्धाने इस वैरको बढा दिया इन सब कारणोसे उसको कभी यह लगा ही नही कि उसने कोई अपराध किया है

परन्तु दो-तीन दिन पूर्व छद्म वेशमे आये अम्पु नायरसे मिलकर उसकी यह शान्ति भग हो गई उन्होने उसे बहुत-कुछ वस्तुस्थिति समझा दी कर्नल जो जांच कर रहा है वह सिद्ध हो गई तो राजद्रोहके अपराधमें उसे दण्ड दिया जायगा इसलिए अम्पु नायरने उससे तलश्शेरी छोडकर उनके साथ जानेका आग्रह किया उसने वेबरको छोडकर स्व-रक्षाके लिए जानेसे साफ इन्कार कर दिया उसका कहना था कि अब-तक जिसने आश्रय दिया उसे छोडकर जाना उचित नही है अम्पु नायर-ने बताया कि यदि वह तलश्शेरीमें ही रही तो वेबरपर भी विपत्ति

आ सकती है परन्तु ईश्वर और महाराजाके बाद बेबरको ही सबसे बडा माननेवाली चिरुतक्कुट्टीको यह मजाक मालूम हुआ उसे यह भी पता चला कि मूसा किसीको बताये बिना अपने जहाजद्वारा तलश्शेरी छोडकर चला गया है

अम्पू नायरके जानेके बाद उसे यह शका होने लगी कि मेरे कारण कही सचमुच बेबरपर कोई विपत्ति न आ जाय सुपरवाइजरसे उसने कई बार सुना था कि कर्नल गवर्नर-जनरलका भाई है, विलायतमे भी उसका बडा स्थान और ऊँची पदवी है और इन कारणोसे वह बहुत शक्तिशाली है यदि ऐसी बात है तो वह मेरे प्रियतमको नष्ट कर सकता है, यह शका उसके मनमे जड पकडने लगी चिन्तामे उसकी नीद और भूख भी जाती रही अतिस्नेह आपत्तिकी शकाका कारण है उन शकाओको वह हटा नही सकी उसे लगने लगा कि यदि मेरे कारण मेरे प्राणोंसे भी प्रिय बेबरको कोई हानि पहुँचे तो मेरे जीवनसे क्या लाभ ?

बेबर भी समझ गया कि चिरुतक्कुट्टी बहुत व्याकुल है अत्यधिक दुखके साथ उसने एक-दो बार बेबरसे कहा भी—'मेरे इस विफल जीवनसे क्या लाभ ? मेरे कारण आप भी विपत्तिमे फँस रहे हैं मैं कही चली जाऊँ"

बेबरने सान्त्वना दी—उन शैतानोको कुछ भी कहने दो मैं जानता हूँ तुमने कोई अपराध नही किया वेलेस्लीकी इच्छा है कि किसी प्रकार मुझे नष्ट करके जाय इसीके लिए वह सब-कुछ कर रहा है मगर अब तो वह जा ही रहा है

चिरुतक्कुट्टी—वह आपके ऊपर कोई विपत्ति ला सकता है ? सुपरवाइजर तो आप है ?

बेबर—तुम क्या जानो ! उसने निश्चय किया तो मुझे समाप्त ही कर सकता है हाँ, हमे भी मदद करनेवाले तो है ही बबई-सरकार हमारे पक्षमे हैं मेरी बात मान भी लेगी परन्तु गवर्नर-जनरल यदि कोई निर्णय करे तो उसके ऊपर कोई अधिकारी नही है

चिरुतक्कुट्टी—अच्छा ! इतना बडा आदमी है वह ! सुपरवाइजर-को भी वह दण्ड दे सकता है !

चिरुतक्कुट्टीकी अज्ञतापर वेबर मुसकरा दिया वह जानता था कि चिरुतक्कुट्टीके खयालमे वही कपनीका अधीश्वर है उसने समझाया, "गवर्नर-जनरलको सब अधिकार है उसका पद बडे-बडे राजा-महा-राजाओसे भी बड़ा है"

चिरुतक्कुट्टीके मुखपर भय प्रकट हुआ गद्गद् कण्ठ होकर उसने कहा—"मै नही जानती थी कर्नल !"

और वह मूर्छित होकर गिर पडी

बाईसवाँ अध्याय

●

कोट्टय नगरमें असाधारण हलचल दिखाई दे रही थी वहाँ तैनात कम्पनीकी सेनाके नायक कप्तान स्मिथको भी यह अन्तर दिखलाई पडा सभी घर विशेष रूपसे सजाये जा रहे थे विविध स्थानोंसे अपार जनता शहरमें और बाहर एकत्रित हो रही थी स्थानीय प्रभु-गृहोंमें तोरण तथा केले आदिके वृक्षोंका बाँधा जाना और सफेद रेतका बिछाया जाना देखकर कप्तान स्मिथने प्रमुख नायरोंको बुलाकर इसका कारण पूछा नायरोंने उत्तर दिया कि देवीके मन्दिरमें वृश्चिक-व्रतकी समाप्ति मनाई जानेवाली है यह हमारा वार्षिक त्योहार है और प्रति वर्ष धूम-धामसे मनाया जाता है इस वर्ष भी हम उसे उसी प्रकार मनानेवाले है कप्तानने अपने पार्श्ववर्ती कुरुम्ब्रनाट्टु राजाके प्रबन्धकोंसे पूछा तो उन्होंने भी इस बातका समर्थन किया जब उन्होंने यह भी कहा कि यदि स्वास्थ्य अच्छा होता तो कुरुम्ब्रनाट्टु महाराज भी इसमें सम्मिलित होते तो कप्तानने मान लिया कि हमें इसमें कोई हस्तक्षेप नही करना है

साथ ही, वेलेस्लीकी आज्ञाके अनुसार वह उसी दिन अपराह्नमें तलश्शेरीके लिए रवाना होनेवाला था वेलेस्लीके केरल छोडनेके पूर्व

स्मिथ उससे मिलना चाहता था उसे यह भी समाचार मिला था कि सेनापति सब सैनिक-अधिकारियोके साथ सलाह-मशविरा करके उन्हे कुछ निर्देश भी देनेवाला है स्मिथके नीचे सौन्दरराज नायडू नामका एक उप-सेनापति था उसे बुलाकर कोट्टयकी रक्षाका आवश्यक प्रबन्ध करके स्मिथ जानेकी तैयारीमे लग गया

जब सब तैयारियाँ लगभग पूर्ण हो चुकी थी उस समय एक सैनिक-ने आकर निवेदन किया कि तलश्शेरीमे एक सैनिक टुकडी आ रही है और यहाँसे लगभग चार मीलपर पहुँच चुकी है

"कम्पनीकी सेना ? इधर आ रही है या कूत्तुपरम्बु जा रही है ? इधर सेना भेजनेकी तो कोई बात नही थी ?" स्मिथने पूछा

सैनिकने उत्तर दिया—"सुना जाता है, सेना कम्पनीकी ही है देखके किसी व्यक्तिको पास फटकने भी नही दिया जाता नरका कहना है कि शायद महाराजासे युद्ध करनेके लिए किसी दूसरी जगह जा रही है"

कप्तान स्मिथने सूबेदार नायडूको बुलाकर आज्ञा दी कि कम्पनीकी सेनाको, जो और कही जानेके लिए आ रही है, आवश्यक सहायता दी जाय यदि वह कोट्टय ही आ रही हो तो उसके नेताके साथ सौहार्दका बरताव किया जाय परन्तु मेरे आनेतक उसकी अधीनता स्वीकार करना टाला जाय निश्चित समयपर स्मिथ तलश्शेरीके लिए रवाना हो गया

सूबेदार चतुर और नीति-निपुण था उसने निश्चय किया कि दो व्यक्तियोको भेजकर उस सेनाके नतासे पता लगा लिया जाय कि सेना कहाँ जा रही है और दुर्गमे उसे किसी सहायताकी आवश्यकता है या नही

सेनाने शहरसे चार मील दूर पुराने राजमहलमे डेरा डाला था वर्दी पहने और बन्दूक लिये सिपाही लोग चारो ओर पहरा दे रहे थे इसलिए देशवासियोमेसे किसीको पास जानेकी हिम्मत नही होती थी

जब देख लिया कि सेनाने पुराने राजमहलमे डेरा डाल लिया तो वे दल बनाकर कोट्टयकी ओर चल पडे

सन्ध्या होनेपर नायडूके सन्देशवाहक सेनानिवेशमे पहुँचे सैनिक वेश देखकर पहरेदारोने उन्हे रोका जब उन्होने अपना परिचय देकर आनेका उद्देश्य बताया तो एक पहरेदारने जाकर नायकको खबर दी और थोडी देरमे दोनो सन्देशवाहकोको अन्दर जानेकी अनुमति दे दी गई लगभग दो सौ सैनिक कर्नाटकी सेनाके गणवेशमे आँगनमे खडे हुए थे नताके स्थानपर सूबेदार चोक्करायर विराजमान थे उन्होने कुशल-प्रश्न किया—'हमारे मित्र सौन्दरराज नायडूका सन्देश लेकर आये हो तुम लोग ? नायडू अच्छे तो है ?"

"जी हाँ ! सूबेदार साहब अच्छे है उन्होने पुछवाया है कि आपको किसी मददकी आवश्यकता तो नही है ?"

"तत्काल तो कोई आवश्यकता नही है प्रातःकाल मै स्वय जाकर उनसे मिल आनेका विचार कर रहा हूँ"

दूतोमे से एकने पूछा—"तो यह सेना कोट्टय दुर्गमे नही जा रही है ?"

चोक्करायर—हमारा लक्ष्य फिलहाल गुप्त है नायडूसे मिलनेपर मै ही उनको बताऊँगा कप्तान साहब तो रवाना हो गए होगे ?

दूत—वे तो अपराह्नमे ही तलश्शेरीके लिए रवाना हो गए थे

चोक्करायर—अच्छा, तुम लोग जरा बैठो मै अभी आया

दूतोको इस प्रकार बैठाकर चोक्करायरने अन्दर जाकर महाराजासे निवेदन किया कि स्मिथ जा चुका है और कोट्टयकी सेनाको अबतक हमारे बारेमे कोई शका नही हुई है इसलिए आप अभी निकल पडे रात अधिक होनेके पहले ही कोट्टय पहुँच जाना सुविधाजनक होगा" महाराजाको चोक्करायरकी सलाह ठीक जँची और उन्होने उसे स्वीकार कर लिया

चोक्करायर लौटकर दूतोके पास आये और उन्होने उनसे कहा—

"तुम लोगोसे मिलकर बडी प्रसन्नता हुई श्रीरंगपट्टनमे मैने और नायडूने कन्धे मे-कन्धा मिलाकर युद्ध किया था उसके पाससे आये हुए तुम लोगोको ऐसे कैसे जाने दूँ ? रातको यही भोजन करके प्रभातमे मेरे साथ ही जाना"

दूत—आपके इस आदरके लिए हम आभारी है, परन्तु हमे आज ही, बल्कि अभी, लौटनेकी आज्ञा मिली है

चोक्करायर—यदि उन्हे मालूम होता कि इस सेनाका नायक मैं हूँ तो कभी ऐसी आज्ञा न देते कुछ भी हो, भोजन किये बिना तो हम आपको जाने नही दे सकते समय भी अधिक हो रहा है

उन्होने भोजनोपरान्त जाना स्वीकार कर लिया और वहाँ बहुत देर-तक बाते होती रही

इस बीच वहाँकी सारी सेना कोट्टयके लिए रवाना हो गई केवल सूबेदारके दरवाजेपर पहरा देनेवाले रह गए दूतोको इसका पता नही चला

दूतोको भेजनेके बाद सौदरराज नायडू सब जगह देख-भाल करके और यह निश्चय करके कि सब ठीक है, अपने स्थानपर आ गया रात्रि-भोजनका समय हुआ तब देवीके मन्दिरसे बाजो और भजनोकी आवाज सुनाई दे रही थी उसकी भी इच्छा होने लगी कि जाकर उत्सव देख आयें वह स्वय देवी-भक्त था परन्तु साहबकी अनुपस्थितिमे दुर्गको छोडकर जाना उचित न समझकर उसने अपनी इच्छाको रोक लिया सदेशवाहकोके आनेमें विलम्ब देखकर वह कुछ चिन्तित भी हो उठा इसी बीच एक सैनिकने आकर निवेदन किया कि पपयनीट्टिल चन्तु सूबेदारसे मिलना चाहते हैं

सूबेदारको मालूम था कि चन्तु नायर कपनीका विश्वास पात्र है, उसे कर्नलके पास जानेकी स्वतन्त्रता प्राप्त है और वह कप्तान स्मिथसे भी मिलने आया करता है इसलिए उसे तुरन्त बुला लानेकी आज्ञा दे दी

चन्तु नायरने आकर निवेदन किया—नम्पुरान यहाँ कहीं पास ही

है तीन दिन पहले चन्द्रोत्तुमें थे वापस पहाडपर नही गये पचास सैनिकोको मेरे साथ भेज दे तो उनके वापस जानेका मार्ग मै रोक लूँगा

सूबेदारकी समझमे नही आया कि क्या करना चाहिए अपने अधीन छोटी-सी सेनामे पचास लोगोको अलग कर देनेकी हिम्मत उसे नही हुई उसने कहा—"कप्तान साहब यहाँ नही है ऐसी हालतमें सेनाको कही भेजनेका अधिकार किसीको नही है और यदि तम्पुरान यहाँ ही आक्रमण करे तो ?"

"तम्पुरानके साथ कोई नही है इसलिए डरनेकी आवश्यकता नही कि वे यहाँ आक्रमण करेगे ऐसा मौका फिर नही मिलेगा आप सेना भेजे तो लाभ मै दिखा दूँगा"

नायटूने कुछ सोचनेके बाद कहा—"अच्छा, तो एक काम करे. कपनीकी एक टुकडी यहाँसे चार मील दूर डेरा डाले पडी है. वह कहाँ जा रही है, पता नही इधर ही आ रही है तो जितने चाहिए उतने सैनिक उनसे ले लेगे"

चन्तु नायरको यह सुनकर आश्चर्य हुआ उसने पूछा—"क्या ? कपनीकी सेना ? वहाँसे ऐसी कोई आज्ञा नही निकली कल ही तो मै कर्नलसे मिला था"

बाहर बन्दूककी आवाज सुनाई दी चन्तु ताड गया कि यह तम्पुरान-की कार्रवाई है उसने घबराकर कहा—"सूबेदार, सकट आ गया मुझे किसी प्रकार बाहर निकाल दीजिए"

सूबेदारने चन्तु नायरकी बात सुनी ही नही बन्दूककी आवाज सुनते ही वह सैनिक बाहरकी ओर दौड पडा और कुशलताके साथ अपनी सेना-को पक्ति बनाने और युद्धके लिए तैयार हो जानेकी आज्ञा देने लगा. आवाज और कोलाहलसे स्पष्ट था कि आक्रमणकारी निकट आ रहे है

गोपुरद्वार[1] पर पहरा देनेवाले गोली खाकर गिर पडे सूबेदारके

---

[1] दुर्गका मुख्य बाहरी द्वार

राजमहलसे निकलनेके पहले ही महाराजा सेना समेत अन्दर प्रवेश कर चुके थे सेनाका एक बडा भाग कप्तान स्मिथकी अनुपस्थितिका लाभ उठाकर मन्दिरमें उत्सव देखने चला गया था जो बाकी थे उनका खयाल था कि कर्नाटककी सेना आक्रमण कर रही है, क्योंकि उसकी वेशभूषा युद्ध-रीति आदि कुछ भी नायर-सेनाके समान नहीं थी बन्दूकों-की आवाजोंके बीचमें जो आज्ञाएँ सुनाई पडती थी वे भी कंपनीकी सेना-की थी दुर्गवासी सेनाकी समझमें नहीं आया कि कंपनीवाले क्यों उस-पर इस प्रकार आक्रमण कर रहे हैं! सूबेदारने बहुत प्रयत्न किया, परन्तु वह सेनाको एकत्रित करने और महाराजाका सामना करनेमें समर्थ नहीं हुआ अन्तमें उसे एक गोली लगी और बादमें दुर्ग तथा सेनापर अधि-कार कर लेनेमें कोई विलम्ब नहीं हुआ कंपनीके बहुत-से लोग मर चुके थे शेषने हार मानकर शस्त्र डाल दिये

बन्दूककी पहली आवाजसे ही चन्तुको परिस्थितिका थोडा-बहुत ज्ञान हो गया था प्राण बचानेकी चिन्तामें वह विह्वल हो उठा तम्पुरानकी नीति-निपुणता और उनके समर-चातुर्यसे वह भली भाँति परिचित था वह जानता था कि यदि महाराजा सामनेसे आक्रमण कर रहे हैं तो कुछ सेना पीछे तैयार खडी होगी उसके हाथसे बच जाना कठिन ही है सूबेदारके साथ युद्ध-भूमिपर जाएँ तो भी कहानी वही होगी राजमहलके दर-में कहीं छिपकर बैठ जाना भी सुरक्षित नहीं था, क्योंकि वह जानता था कि तम्पुरान पुण्याहके लिए तत्काल राज-मन्दिरको [illegible] साफ करायेंगे और पकडे जानेपर फाँसीके सिवा कोई [illegible] वृथा होगा

उसको मालूम था कि राज-मन्दिरसे वन-प्रदेशको जानेके लिए एक सुरंग बनी हुई है परन्तु अन्धेरेमें उसे खोज निकालना सम्भव नहीं था महाराजाको पिंजरबद्ध सिंह बनानेकी महत्त्वाकांक्षा रखनेवाला चन्तु स्वयं व्याघ्रद्वारा खदेडा हुआ जम्बूक बन गया उस परिस्थितिमें वहाँ रहना ठीक न समझकर वह किसी प्रकार अन्धेरेमें ही गिरता पडता दीवार-

के पास पहुँच गया दुर्गके अन्दर उस समय भी बन्दूकोकी आवाज हो रही थी, किन्तु उसका जोर कम होने और अन्य लक्षणोसे उसने अनुमान कर लिया कि अब युद्ध समाप्तिपर आ गया है ऊँचा गोपुर उसके-जैसे अभ्यासीके लिए कोई बडा बाधक नही था पासके एक वृक्षपर चढकर वह दीवारपर कूद गया उसे स्मरण हुआ कि दीवारके नीचे एक गहरी खाई है प्राणोके भयसे वह लक्ष्य बाँधकर खाई के उस पार कूदा और सफल भी हो गया परन्तु कूदनेका शब्द आक्रमणकारियोमे-से किसीने सुना और शब्दका सधानकर गोली दाग दी चन्तुको गोली नही लगी, परन्तु पीछा करनेवालोके भयसे वह भागने लगा

भगवतीके मन्दिरसे तालप्पोली* का वाद्य उसे सुनाई पड रहा था. किसी प्रकार उस जन-समूहमे विलीन हो जानेके लिए वह व्याकुलतासे भागने लगा

देवीकी श्रीसन्निधिमे बहुत धूमधामके साथ तालप्पोली हो रही थी. दुर्गके अन्दरके घोर युद्धका पता यहाँ मानो किसीको था ही नही शुभ्र वेश-भूषासे अलकृत कुलीन कुमारियाँ हाथोम पूजाके थाल लिय प्रदक्षिणा कर रही थी मन्दिरके आँगनमे देवी रूप चित्रित करके वाद्य-घोषके साथ देवी-स्तोत्रका गान करती हुई जनता भक्ति विभोर हुई खडी थी

मन्दिरके बाहर, गोपुरके समीप, जो जन-समूह खडा था उसीमें जाकर चन्तु नायरने प्रवेश किया परन्तु उसी समय एक जोरकी आवाज

---

* मन्दिरके उत्सवका एक अग होता है—देवीकी सवारी निकलना देवीकी मूर्तिको मदिरसे निकालकर और सजाकर अहातेमें प्रतिष्ठित किया जाता है और उसके समक्ष पुरुष शस्त्राभ्यासका प्रदर्शन करते है बादमे स्त्रिया शृङ्गार करके और मगल-थाल हाथमें लेकर देवी-के सामनेसे निकलती है देवीकी सवारी बाजे-गाजेके साथ उनके पीछे चलती है और, इस प्रकार, मदिरकी तीन प्रदक्षिणाएँ की जाती है. स्त्रियोके इस समूहगत कार्यको 'तालप्पोली' कहा जाता है

सुनाई दी—"वह आया मेरी देवीका बलि !" और एक मल्ल उसपर झपट पडा रातको दिनके समान प्रकाशित करनेवाली दीप-शिखाओंके बीच, उस विश्वासघातीको व्याघ्रसे खदेडे हुए जम्बूकके समान भागते और जन-समूहमें प्रवेश करते सभीने देख लिया था उसे मौतके घाट उतार देनेके उद्देश्यसे उसपर आक्रमण करनेवाला और कोई नही, अम्पु नायर ही था

तम्पुराननें दुर्गपर आक्रमण करते समय अपने साथके नायर-सैनिकों-को आज्ञा दे रखी थी कि वे मन्दिरमे प्रेक्षकोंके बीच सावधान होकर खडे रहे और आवश्यकता पडनेपर सहायताके लिए आ जायें उस नायर-सेनाका नेतृत्व अम्पु नायरके हाथमे था इसीलिए प्रच्छन्न वेशमे वह अन्य प्रमुख व्यक्तियोके साथ ऐसे स्थानपर खडा था जहाँसे सब आने-जाने वालोको देखा जा सके

चन्तुने भीडमे प्रवेश किया ही था कि दुःशासनको देखकर भीमसेन-के समान अम्पु नायर कम्मूके हाथसे तलवार लेकर उसपर झपट पडे कम्मू भी उनके पीछे हो लिया पास आनेके बाद ही चन्तु नायरने अपने मालिकको पहचाना उसने "मरूँ तो क्या, तुमको तो मारकर ही मरूँगा" चिल्लाते हुए अम्पु नायरके ऊपर वायु-वेगसे अपनी तलवारका वार किया अम्पु नायरको हटनेका समय भी नही मिला, परन्तु स्वामी-की रक्षामे जागरूक कम्मूने उस वारको अपनी ढालपर रोक लिया अम्पु बच गए, परन्तु उनके कंधेपर तलवारकी धार लग ही गई

जनताने अलग होकर द्वन्द्व-युद्धके लिए स्थान बना दिया तुल्य अभ्यास तथा तुल्य पौरुषके इन दो वैरियोंमेंसे एकके मर जानेसे ही यह युद्ध समाप्त हो सकता था दर्शक उत्सुकतासे परिणामकी प्रतीक्षा करने लगे महाराजा स्वयं कहा करते थे कि आयुधधारियोंमें कायंकुलमें चन्तुके बराबर कोई नही है चन्तु इसको प्रमाणित करता हुआ ही लड रहा था पैशाचिक रौद्रताका रंगमंच बने हुए चेहरेके साथ चन्तु नायर और दृढ निश्चय प्रकट करने वाले शान्त-गंभीर भावके साथ अम्पु नायर

बहुत देरतक तुल्य नैपुण्यके असि-प्रयोग करते रहे परन्तु चन्तुके असि-पराक्रमके सामने अम्पुका शरीर-लाघव मन्द पडने लगा

चन्तु लडता-लडता थकने लगा तो अम्पु नायरने आत्म-रक्षाका तरीका छोडकर आक्रमण आरम्भ किया परन्तु चन्तुके शरीरमे एक खरौच भी नही आई अब अम्पु नायर थकने लगे और प्रेक्षकोमें घबराहट शुरू हो गई

दोनो बहुत थक गए थे, फिर भी चन्तुका बल अधिक मालूम होता था उसने निश्चय कर लिया कि अब अम्पुको मारना आसान है अम्पु नायरके वारोकी शक्ति कम होने लगी और वार चूकने भी लगे ढालकी पकड भी ढीली हो चली ऐसे समय "अब ला तेरी गर्दन !" चीखते हुए चन्तुने अपनी सारी शक्ति लगाकर अम्पुपर प्रहार किया परन्तु दैव गति ! एक केलेके छिलकेमे उसका पैर फिसल गया और जब वह गिरने लगा तो उसकी तलवार हाथसे छूटकर दूर जा पडी अम्पु नायरकी तलवार और ढाल भी गिर चुकी थी इसलिए उन्होने अब मुष्टि युद्ध आरम्भ कर दिया प्राण-रक्षाके लिए लडनेवाले चन्तुका पराक्रम किसी प्रकार कम नही होता था उसकी पकडमे आये हुए अम्पु अपनी सारी शक्ति लगाकर छुटनेका प्रयत्न कर रहे थे उसी समय चन्तुने अपने हाथ छोडकर, पैर उठाकर एक झटका दिया, जिससे अम्पु नायर दूर जा गिरे वह उठकर अम्पुपर फिरसे झपटना ही चाहता था कि स्वामीकी रक्षाके लिए तत्पर कम्मू तडित-वेगसे कूदकर उसकी छातीपर चढ बैठा अँतेरीमे जो अपमान सहना पडा था उसकी यादमे ही क्रोधानल उगलते हुए उस युवक-केसरीको पहचानकर चन्तु तिरस्कारसे अट्टहास कर उठा परन्तु उसकी शक्ति समाप्त हो चुकी थी कम्मूके बलके नीचे वह दब गया छातीपर बैठकर गला दबाने वाले कम्मूके मुखपर दुःशासनका वक्ष विदारित करने वाले भीमकी रौद्रता थी !

बहुत देरतक तुल्य नैपुण्यके असि-प्रयोग करते रहे परन्तु चन्तुके असि-पराक्रमके सामने अम्पुका शरीर-लाघव मन्द पडने लगा

चन्तु लडता-लडता थकने लगा तो अम्पु नायरने आत्म-रक्षाका तरीका छोडकर आक्रमण आरम्भ किया परन्तु चन्तुके शरीरमे एक खरोंच भी नही आई अब अम्पु नायर थकने लगे और प्रेक्षकोमे घबराहट शुरू हो गई

दोनो बहुत थक गए थे, फिर भी चन्तुका बल अधिक मालूम होता था उसने निश्चय कर लिया कि अब अम्पुको मारना आसान है अम्पु नायरके वारोकी शक्ति कम होने लगी और वार चूकने भी लगे ढालकी पकड भी ढीली हो चली ऐसे समय "अब ला तेरी गर्दन !" चीखते हुए चन्तुने अपनी सारी शक्ति लगाकर अम्पुपर प्रहार किया परन्तु दैव गति ! एक केलेके छिलकेसे उसका पैर फिसल गया और जब वह गिरने लगा तो उसकी तलवार हाथसे छूटकर दूर जा पडी अम्पु नायरकी तलवार और ढाल भी गिर चुकी थी इसलिए उन्होने अब मुष्टि युद्ध आरम्भ कर दिया प्राण-रक्षाके लिए लडनेवाले चन्तुका पराक्रम किसी प्रकार कम नही होता था उसकी पकडमें आये हुए अम्पु अपनी सारी शक्ति लगाकर छूटनेका प्रयत्न कर रहे थे उसी समय चन्तुने अपने हाथ छोडकर, पैर उठाकर एक झटका दिया, जिससे अम्पु नायर दूर जा गिरे वह उठकर अम्पुपर फिरसे झपटना ही चाहता था कि स्वामीकी रक्षाके लिए तत्पर कम्मू तडित-वेगसे कूदकर उसकी छातीपर चढ बैठा अंतेरीमे जो अपमान सहना पडा था उसकी यादसे ही क्रोधानल उगलते हुए उस युवक-केसरीको पहचानकर चन्तु तिरस्कारसे अट्टहास कर उठा परन्तु उसकी शक्ति समाप्त हो चुकी थी कम्मूके बलके नीचे वह दब गया छातीपर बैठकर गला दबाने वाले कम्मूके मुखपर दुःशासनका वक्ष विदारित करने वाले भीमकी रौद्रता थी ।

सुनाई दी—"वह आया मेरी देवीका वलि !" और एक मल्ल उसपर झपट पडा रातको दिनके समान प्रकाशित करनेवाली दीप-शिखाओंके बीच, उस विश्वासघातीको व्याघ्रसे खदेडे हुए जम्बूकके समान भागते और जन-समूहमे प्रवेश करते सभीने देख लिया था उसे मौतके घाट उतार देनेके उद्देश्यसे उसपर आक्रमण करनेवाला और कोई नहीं, अम्पु नायर ही था

तम्पुराननें दुर्गपर आक्रमण करते समय अपने साथके नायर-सैनिकों-को आज्ञा दे रखी थी कि वे मन्दिरमें प्रेक्षकोंके बीच सावधान होकर खडे रहे और आवश्यकता पडनेपर सहायताके लिए आ जायें उस नायर-सेनाका नेतृत्व अम्पु नायरके हाथमें था इसीलिए प्रच्छन्न वेशमें वह अन्य प्रमुख व्यक्तियोंके साथ ऐसे स्थानपर खडा था जहाँसे सब आने-जाने वालोंको देखा जा सके

चन्तुने भीडमें प्रवेश किया ही था कि दु शासनको देखकर भीमसेन-के समान अम्पु नायर कम्मूके हाथसे तलवार लेकर उसपर झपट पडे कम्मू भी उनके पीछे हो लिया पास आनेके वाद ही चन्तु नायरने अपने सालेको पहचाना उसने "मरूँ तो क्या, तुमको तो मारकर ही मरूँगा" चिल्लाते हुए अम्पु नायरके ऊपर वायु-वेगसे अपनी तलवारका वार किया अम्पु नायरको हटनेका समय भी नहीं मिला, परन्तु स्वामी-की रक्षामें जागरूक कम्मूने उस वारको अपनी ढालपर रोक लिया अम्पु वच गए, परन्तु उनके कधेपर तलवारकी वार लग ही गई

जनताने अलग होकर द्वन्द्व-युद्धके लिए स्थान वना दिया तुल्य अभ्यास तथा तुल्य पौरुषके इन दो वैरियोंमेंसे एकके मर जानेसे ही यह युद्ध समाप्त हो सकता था दर्शक उत्सुकतासे परिणामकी प्रतीक्षा करने लगे महाराजा स्वय कहा करते थे कि आयुधधारियोंमें पपयवीट्टिल चन्तुके बरावर कोई नही है चन्तु इसको प्रमाणित करता हुआ ही लड रहा था पैशाचिक रौद्रताका रगमच वने हुए चेहरेके साथ चन्तु नायर और दृढ निश्चय प्रकट करने वाले शान्त-गभीर भावके साथ अम्पु नायर

सुनाई दी—"वह आया मेरी देवीका बलि !" और एक मल्ल उसपर झपट पडा रातको दिनके समान प्रकाशित करनेवाली दीप-शिखाओंके बीच, उस विश्वासघातीको व्याघ्रसे खदेडे हुए जम्बूकके समान भागते और जन-समूहमे प्रवेश करते सभीने देख लिया था उसे मौतके घाट उतार देनेके उद्देश्यसे उसपर आक्रमण करनेवाला और कोई नही, अम्पु नायर ही था

तम्पुराननें दुर्गपर आक्रमण करते समय अपने साथके नायर-सैनिकोको आज्ञा दे रखी थी कि वे मन्दिरमें प्रेक्षकोंके बीच सावधान होकर खडे रहे और आवश्यकता पडनेपर सहायताके लिए आ जायें उस नायर-सेनाका नेतृत्व अम्पु नायरके हाथमे था इसीलिए प्रच्छन्न वेशमें वह अन्य प्रमुख व्यक्तियोंके साथ ऐसे स्थानपर खडा था जहाँसे सब आने-जाने वालोंको देखा जा सके

चन्तुने भीडमें प्रवेश किया ही था कि दु शासनको देखकर भीमसेनके समान अम्पु नायर कम्मूके हाथसे तलवार लेकर उसपर झपट पडे कम्मू भी उनके पीछे हो लिया पास आनेके बाद ही चन्तु नायरने अपने सालेको पहचाना उसने "मरूँ तो क्या, तुमको तो मारकर ही मरूँगा" चिल्लाते हुए अम्पु नायरके ऊपर वायु-वेगसे अपनी तलवारका वार किया अम्पु नायरको हटनेका समय भी नही मिला, परन्तु स्वामीकी रक्षामें जागरूक कम्मूने उस वारको अपनी ढालपर रोक लिया अम्पु बच गए, परन्तु उनके कधेपर तलवारकी धार लग ही गई

जनताने अलग होकर द्वन्द्व-युद्धके लिए स्थान बना दिया तुल्य अभ्यास तथा तुल्य पौरुषके इन दो वैरियोंमेंसे एकके मर जानेसे ही यह युद्ध समाप्त हो सकता था दर्शक उत्सुकतासे परिणामकी प्रतीक्षा करने लगे महाराजा स्वय कहा करते थे कि आयुधधारियोंमें पपयवीट्टिल चन्तुके बराबर कोई नही है चन्तु इसको प्रमाणित करता हुआ ही लड रहा था पैशाचिक रौद्रताका रगमच बने हुए चेहरेके साथ चन्तु नायर और दृढ निश्चय प्रकट करने वाले शान्त-गभीर भावके साथ अम्पु नायर

बहुत देरतक तुल्य नैपुण्यके असि-प्रयोग करते रहे परन्तु चन्तुके असि-पाटवके सामने अम्पुका शरीर-लाघव मन्द पडने लगा

चन्तु लडता-लडता थकने लगा तो अम्पु नायरने आत्म-रक्षाका तरीका छोडकर आक्रमण आरम्भ किया परन्तु चन्तुके शरीरमे एक खरोंच भी नही आई अब अम्पु नायर थकने लगे और प्रेक्षकोमे घबराहट शुरू हो गई

दोनो बहुत थक गए थे, फिर भी चन्तुका बल अधिक मालूम होता था उसने निश्चय कर लिया कि अब अम्पुको मारना आसान है अम्पु नायरके दाँवोकी शक्ति कम होने लगी और वार चूकने भी लगे ढालकी पकड भी ढीली हो चली ऐसे समय "अब ला तेरी गर्दन !" चीखते हुए चन्तुने अपनी सारी शक्ति लगाकर अम्पुपर प्रहार किया परन्तु दैव गति ! एक केलेके छिलकेमे उसका पैर फिसल गया और जब वह गिरने लगा तो उसकी तलवार हाथसे छूटकर दूर जा पडी अम्पु नायरकी तलवार और ढाल भी गिर चुकी थी इसलिए उन्होने अब मुष्टि-युद्ध आरम्भ कर दिया प्राण-रक्षाके लिए लडनेवाले चन्तुका पराक्रम किसी प्रकार कम नही होता था उसकी पकडमें आये हुए अम्पु अपनी सारी शक्ति लगाकर छूटनेका प्रयत्न कर रहे थे उसी समय चन्तुने अपने हाथ छोडकर, पैर उठाकर एक झटका दिया, जिससे अम्पु नायर दूर जा गिरे वह उठकर अम्पुपर फिरसे झपटना ही चाहता था कि स्वामीकी रक्षाके लिए तत्पर कम्मू तडित-वेगसे कूदकर उसकी छातीपर चढ बैठा अँधेरीमे जो अपमान सहना पडा था उसकी यादमे ही क्रोधानल उगलते हुए उस युवक केसरीको पहचानकर चन्तु तिरस्कारसे अट्टहास कर उठा परन्तु उसकी शक्ति समाप्त हो चुकी थी कम्मूके बलके नीचे वह दब गया छातीपर बैठकर गला दबाने वाले कम्मूके मुखपर दुशासनका वध विदारित करने वाले भीमकी रौद्रता थी !

तेईसवाँ अध्याय

❁

वृश्चिक-व्रत समाप्त करनेका शुभ दिन जब उदित हुआ तब कोट्टय नगरमे एक मनोहर दृश्य उपस्थित था नगरका घर-घर तोरण, वन्दनवार, कदली-वृक्ष आदिसे अलकृत किया गया था राज-वीथीपर प्रसन्न-वदन जनता शुभ्र वस्त्र पहनकर निश्चिन्तता और आनन्द प्रकट करती हुई विचरण कर रही थी राजमहलके ऊपर ईस्ट इण्डिया कम्पनीकी पताकाके वदले केरल-सिंहकी पताका लहरा रही थी कम्पनीकी सेनाको परास्त करनेके वाद राज-मन्दिरमे महाराजाके वास करनेकी वार्ता प्रभातके पूर्व ही सारे देशमें फैल गई थी कोट्टय नगरकी आबाल-वृद्ध जनता उस रातको सोई नही अपने आराध्य देव तम्पुरानके दर्शन करनेकी उत्सुकतामें और उनके यशोगानमें ही उसने सारा समय व्यतीत कर दिया

प्रभात होते ही सब ओरसे प्रमुख प्रभुजनोका आना आरम्भ हो गया कूटाळि नम्पियार, कीपूर वापुन्नवर आदि प्रधान व्यक्ति वहुत पहले ही आ चुके थे प्रात काल लगभग आठ वजे चन्द्रोत्तु नम्पियारने परिवार और सेवकोंके साथ नगरमे प्रवेश किया उनके साथ दो अलकृत शिविकाएँ भी थी जनता आश्चर्य करने लगी कि इनमें कौन है नगरके

मुख्य द्वारपर ही महाराजाके प्रबन्धकर्ताओंने उन शिविकाओंका स्वागत किया और वे उन्हे राज-परिजनोंके सरक्षणमे आगे ले जाने लगे यह देखकर जनताका औत्सुक्य और भी बढ गया जब दोनो शिविकाएँ राज मन्दिरके अत पुरमे पहुँची तो बडी केट्टिलम्माने स्वयं आगे बढकर उनका स्वागत किया

उस दिन राजोचित धूम-धामके साथ तम्पुरान देवी-दर्शनके लिए पधारे अनुपम शिल्प-कलासे अलकृत हाथीदाँतकी शिविकामें आरूढ होकर दोनो हाथोमे वीरशृङ्खला और गलेमें मरकत-माला पहनकर, ब्राह्मणो, वेदपाठियो, सैनिको और स्वजन-परिजनोंसे परिवृत्त होकर वे राजमदिर-से देवी-मदिरको गये राजमार्गपर जनताने जय-जयकार करके अपनी राज-भक्ति और आनन्दका प्रकाशन किया गोरोको भगाकर हमारे अन्नदाता फिर से हमारा शासन करने आये है इसमें उस सीधी-सादी जनताको कोई शका नही थी पाश्चात्य म्लेच्छोने कोट्टय राजमहलमें कुछ दिन वास किया था इसे उसने एक दु स्वप्नके समान भुला दिया उसने मान लिया कि अब तम्पुरान ही हमारा राज करते रहेगे

दर्शन करके मन्दिरमे लौटे और भोजन करने बैठे तब दिन ढल चुका था उसके बाद देशवासियोको राजसी भोजन कराया गया वेल्लूर एमन नायर, अम्पु नायर आदि प्रमुख व्यक्तियोका सामर्थ्य उस समय देखने योग्य था कलतक जो लोग जगलो और पहाडोमें थे और रात-दिनकी चिन्ता छोडकर, भूख-प्यास सहकर देशकी स्वतन्त्रताके लिए लड रहे थे उन्हे ही आज भोजन करानेमें उत्साह दिखाते देखकर जनता मधुर शकामे पड गई कि क्या सचमुच यही वे लोग है ! उन सबके मुँहसे लगातार सुनाई पड रहा था—"इधर खीर लाओ !", "कहाँ है केला !", 'पहले यहाँ चाहिए !" "अरे रे ! इस पक्तिमें काळन* नही पहुँचा !" आदि जैसे सैनिक-पक्तियोमें, वैसे ही भोजन-पक्तियोमें

---

* केवल दहीकी कढी

भी ये आगे ही दिखलाई दिये । जन-साधारणको भोजन परोस देनेके बाद ही इन प्रमुखोको अपने भोजनकी सुध आई

महाराजा के सचिवोमें प्रमुख आठ लोग एक साथ भोजन करने बैठे उन्हे भोजन करवानेके लिए और बात-चीतके औत्सुक्यके कारण अन्य प्रभुजन भी वही बैठ गए कहनेकी आवश्यकता नही कि अपने आराध्य पुरुष महाराजाका पराक्रम, बुद्धि-वैभव, नय-निपुणता आदि ही उनकी चर्चाके विषय थे उनकी प्रजा-वत्सलता, कर्त्तव्य-निष्ठा, भगवद्-भक्ति और श्रद्धा आदि गुणोपर सभी एक समान मुग्ध थे इन सब बातोमें विशेष अभिरुचि न दिखाने वाले चन्द्रोत्तु नम्पियारने अन्तमें कहा—"एक बातसे मुझे बहुत आश्चर्य होता है कपनीकी एक प्रबल सैनिक-टुकडीके सरक्षणमे रहे इस नगरको आधे घटेमें तम्पुराननें कैसे जीत लिया !"

इसका उत्तर वहाँ एकत्रित बहुत-से लोगोको नही मालूम था अपने नायकोको अलग-अलग उत्तरदायित्व देकर इधर-उधर भेजनके बाद ही तम्पुरान युद्धके लिए निकले थे प्रधान सेनापति इडच्चेन कुकन नायर-को ही पूरा रहस्य मालूम था इसलिए उन्होने ही उत्तर दिया—"युद्धमें विजय हो गई और उद्देश्य भी सफल हो गया, अब उस बातको गुप्त रखनेकी आवश्यकता नही है मणत्तनाका युद्ध आप सब लोगोको याद है कर्नाटक सेनाका एक विभाग वहाँ था लगभग सारी सेना वहाँ काम आ गई थी उनकी सारी पोशाके और शस्त्रादि हमने एकत्र कर लिए थे उस सेनाके घायलोको भी पकड लिया गया था विगत दो मासोसे मै उन्ही सैनिकोद्वारा अपने सैनिकोको कपनी-सेनाकी युद्ध-पद्धतिका अभ्यास करा रहा था पोषाक और बन्दूक होनेके कारण उन्हे कर्नाटक-सेनासे अलग पहचानना कठिन था उनका नेतृत्व महाराजाने चोक्करायर-को सौंपा वे यहाँतक इस सेनाको ले आये दुर्गकी सेना अन्ततक यह समझती रही थी कि यह कपनीकी टुकडी है युद्ध आरभ होनेका समय

जब हुआ तभी तम्पुरानने नेतृत्व अपने हाथमे लिया जो फल हुआ सो ता आप लोगोने देख ही लिया है"

मदन आश्चर्य-चकित होकर तम्पुरानकी बुद्धि और रण-कुशलताका अभिनन्दन किया चन्द्रात्तु नम्पियारने कहा—"तम्पुरानने यह एक अति साहसका काम किया है वेलेस्लीका इससे अधिक मान भग और किसी बातसे नही हो सकता"

इस बीच ही एक सेवकने आकर निवेदन किया कि नम्पियार और अम्पु नायरको महाराजाने याद किया है दोनो क्षण-भरमे तम्पुरानके सामने उपस्थित हो गए किसी प्रस्तावनाके विना ही तम्पुरानने कहा—"तलश्शेरीसे एक समाचार आया है उसके लिए तुरन्त कुछ करना चाहिए"

नम्पियार और अम्पु दोनोने ही कुछ नही कहा दोनो महाराजाके आदेशकी राह देखते रहे महाराजाने फिर कहा—"यहाँ नम्पियारकी मदद ही काम दे सकती है"

नम्पियारने सिर झुकाकर कहा—"आज्ञा मिलने-भरकी देरी है"

महाराज—बात यह है, कर्नलने चिरतक्कुट्टीको दण्ड देनेका निश्चय कर लिया है वह अविवेकी है स्त्री-हत्या करनेमें सकोच नही करेगा उसको बचाना हमारा कर्तव्य है

अम्पु—वह सुपरवाइजरको छोडकर नही आयगी मैंने बहुत समझा-कर देखा उसका निश्चय यही है कि जो हो सो हो, मै सुपरवाइजरको छोडकर नही जाऊँगी

महाराजा—उस निश्चयको मै गलत नही समझता सुपरवाइजरके प्रति उसकी भक्ति और श्रद्धा है इसके लिए मै उस स्त्रीका आदर करता हूँ परन्तु उस बन्धनमे सुपरवाइजर कुछ कर नही पायगा मालूम होता है कि कर्नलने जिद पकड ली है

नम्पियार—आप आज्ञा दीजिए अक्षरश उसका पालन होगा

महाराज—मुझे एक रास्ता सूझता है मेजर होम्स, जो उण्णि-मूप्पनके पास हमारी कैदमें है, सुना है, गोरोका एक प्रमुख व्यक्ति है. कप्तान स्टुवर्ट भी वैसा ही बडा आदमी है मेजर होम्स वेलेस्लीका मित्र भी है इसलिए मुझे लगता है कि यदि उसके पास सदेशा भेजा जाय कि चिरुतक्कुट्टीको छोड दो तो हम भी इन दोनो सेनानायकोको छोडने-को तैयार है, तो कार्य-सिद्धि हो जायगी

पाश्चात्योंके आचार-विचारोंसे परिचित नम्पियारने सम्मति दी कि यह ठीक ही होगा एक भारतीय स्त्रीका जीवन उनके लिए तुच्छ है. मेजर होम्स-जैसे व्यक्तियोंके बदलेमें वे कितने भी भारतीयोको दे देने-मे सकोच नही करेगे इसमें सौ-फीसदी सफलता मिल सकती है नम्पि-यारने यह भी कहा कि यदि एक पत्र लेकर जायें तो ही कर्नल मानेगा.

तत्काल ही महाराजाने अपना रजत-नाराच लेकर ताल-पत्र पर लिखा—

"श्रीपोर्कलीकी जय

"कोट्टय राजमन्दिरमें विराजमान पुरळीश्वर श्री वीरप्रताप श्री श्री श्री केरलवर्मा कपनीकी सेनाके नेता वेलेस्लीको बताना चाहते है—श्रीपोर्कली भगवतीकी कृपासे अत्र कुशल विश्वास है कि वहाँ भी कुशल है विशेष—हमें समाचार मिला है कि हमारे आश्रयमे रहनेवाली और हमारी प्रजा चिरुत नामकी स्त्रीको कर्नल-की आज्ञासे कारागृहमें रखा गया है और कर्नलकी कुछ गलतफहमी-के कारण उसको कठिन दण्ड देनेका निश्चय किया गया है

"हमारा धर्म और इस देशका आचार स्त्री-हत्याको स्वीकार नही करता इस प्रकारका दण्ड हमारे राज्यमें दिया जायगा तो उसका पाप राजा होनेके कारण हमे ही लगेगा अतएव यदि कर्नल इस पाप-कृत्यके लिए सन्नद्ध होगे तो हम अपनी शत्रु-सहार-समर्थ कृपाणसे उसका प्रतिकार करनेको बाध्य हो जायेंगे

"इसके अतिरिक्त आपको स्मरण होगा, कपनीके कर्मचारियोमे-से मेजर होम्स, स्टुवर्ट आदि एक-दो गोरे लोग हमारे अधीन है हमारे लोगोके साथ आप धर्म और न्यायके अनुसार व्यवहार करे इसके लिए हम इन्हे बधकके रूपमे मानते है

"शेष इस पत्रको लानेवाले चन्द्रोत्तु नम्पियार मौखिक रूपसे बतायेंगे"

पत्र लिखकर तम्पुरानने नम्पियारको बताया और कहा—"सब अच्छी तरह कहना यह भी सकेत कर देना कि जगलमे फाँसीके लिए अलग खम्भे गाडनेकी जरूरत नही है मददके लिए अम्पु साथ जायगा आवश्यक अनुचरो और स्थानपतिके योग्य ठाट-बाटके साथ ही जाना छिपकर तो नही जा रहे हो ?"

दोनो तत्काल ही विदा हो गए

तम्पुरान राज-कार्यमे मग्न हो गए दूर-दूरसे आये देश-प्रतिनिधियो, कार्यकर्ताओ और अन्य प्रमुख व्यक्तियोसे मिलना उन्होंने अपना कर्तव्य समझा प्रत्येकसे मिलकर, आवश्यकताके अनुसार वात्सल्य और ममता-के साथ बाते करके, विदा करनेके पूर्व सबको पारितोषिक आदि दिया कपनीकी सेनाके आक्रमणके कारण जो हानि और विध्वस हुआ था उस सबके बारेमे लोगोकी कहानियाँ सुनी और सबको सान्त्वना तथा भविष्यमे रक्षाका आश्वासन भी दिया राज-भक्त प्रजाको उचित प्रोत्साहन देना, उदासीनोको समझाकर नीति-नैपुण्यसे वशमे करने आदि राजनीतिक कार्योमे ही बहुत-सा समय बीत गया देल्लूर यजमान, अरळात्तु नम्पि, कुन्न नायर आदि विश्वस्त मित्रोंके द्वारा देशवासियोको अपने साथ रखनेके बाध लेनेका आदेश-निर्देश आदि भी उन्होंने बहुत सावधानीके साथ दिया

सायकाल होते होते महाराजाको थोडा-सा विश्राम करनेका अवसर मिला तब उन्होंने अरळात्तु नम्पि, एमन नायर और कुन्नको अपने अन्त-र हाँल दैठकमे आनेका निमन्त्रण दिया

"क्यो, नम्पि, अब शुभ हुआ कि नही ?"

"इसमे क्या सन्देह ? यह तो हम लोगोका सौभाग्य है कि हम अपनी आंखोसे यह सब देख सके"—नम्पिने उत्तर दिया

"नम्पिको शिकायत थी न कि मै उदासीन हो गया था ?"

"महानुभावोंके हृदयकी गहनता मेरे जैसे साधारण व्यक्ति कैसे समझ सकते है ? मै क्षमा चाहता हूँ '

"नही, नही मैने कभी तुमको गलत समझा ही नही परन्तु एक विशेष बात बतानेके लिए अभी मैने आप लोगोको यहाँ बुलाया है अम्पु आदिके बारेमे नम्पिने कुछ शका प्रकट की थी अम्पु कम्पनीके साथ है और कैतेरीके लोग भी उस ओर झुके हुए है आदि भी कहा था न ?"

नम्पि लज्जित हुआ परम सरल होनेके कारण जो-कुछ लोगोंसे सुना उसपर विश्वास कर लिया महाराजाके प्रति भक्तिके कारण जो विश्वास किया सो सामने कह भी दिया

तम्पुरानने कहा—मै तुमको दोष नही दे रहा हूँ उस प्रकारका एक अपवाद देश-भरमें फैला था मैने भी जगह-जगहसे सुना इन सबने भी सुना होगा

एमन नायरने अपनी ओर विशेष सकेत देखकर कहा—"मैने भी सुना केट्टिलम्माके बारेमें विशेष रूपसे बाते फैली थी"

तम्पुरान—हाँ, मावक्कम्‌के बारेमें भी इस प्रकारकी बाते करनेमें लोगोने कसर नही रखी

नम्पि—सबको पपयवीट्टिल चन्तुने बिगाडा, यही लोगोका कहना था इस समय केट्टिलम्मा यहाँ नही है इससे भी लोगोकी शका बढी है आज भी इसके बारेमें लोग बातें कर रहे थे

महाराजाने दूर खडे द्वारपालको बुलाकर कुछ कहा वह अन्त पुरमें चला गया कुछ ही क्षणोमें कुञ्ञानि केट्टिलम्माके साथ परस्पर हस्ता-

वलम्बी होकर माक्कम् केट्टिलम्माने कमरेमे प्रवेश किया उन्हे आते देखकर सबने उठकर अभिवादन किया

"अब समझमे आया ?" तम्पुराननें पूछा "मुझे मालूम है किसने ये बाते फैलाई अब कहनेसे क्या लाभ ? जैसा किया वैसा भोगा"

एमन नायर—चन्तुकी मृत्यु भयानक थी

तम्पुरान—अन्यत्र व्यस्त रहा इसलिए सब-कुछ जान नही सका. क्या हुआ ?

एमन नायर—हमने जब दुर्गको घेरा तब वह अन्दर ही था दीवार फांदकर भाग निकलनेके प्रयत्नमे वह भगवतीके मन्दिरमे जन-समूहके बीच पहुँच गया वहाँ अम्पुने उसे पकड लिया भीम और दु शासनके समान दोनो भिड गए तलवारके युद्धमे अम्पुको विजय नही मिली परन्तु पैर फिसलनेसे चन्तुकी तलवार छूट गई और मल्ल-युद्ध होने लगा उसमें भी अम्पुको थका देखकर पास खडे एक अन्य युवकने चन्तुके ऊपर झपटकर उसका काम तमाम कर दिया

महाराज—क्या ? वह युवक कौन है जो चन्तुको मल्ल-युद्धमें हरा-कर मार सका ? उसका सामना करनेवाला केरलमें कोई नही था

इसका उत्तर एडच्चेन कुकन नायरने दिया—"आज सुबह अम्पुने सब बाते विस्तारसे बताई कैतेरीमे रहनेवाला एक कम्मू नामका युवक है, जिसने चन्तुको मारा उसीने अम्पुको पहले भी बचाया था युद्ध होनेके पहले ही चन्तुने तलवारका वार कर दिया था, उसे कम्मूने अपनी ढालपर ले लिया ऐसा न किया होता तो शायद अम्पुकी कहानी वही समाप्त हो गई होती तलवार ढालसे उचटकर कम्मूके कधेपर भी लगी थी, परन्तु वह अपने स्थानपर डटा रहा मल्ल-युद्धमें अम्पुको थकता हुआ देखकर वह आगे बढकर चन्तुसे भिड गया"

महाराज—ओहो ! समझ गया ! हमारी उण्णिएनडाका छोटा भाई है कम्मू उसका पराक्रम इसके पहले भी एक बार मैने स्वय देखा था. जो उचित होगा, कर दूँगा

फिर विपयको ददलकर महाराजाने दोनो केट्टिलम्माकी ओर मकेत करके कहा—"सुनो नम्पि, आज ये दोनो देवी-दर्शनके लिए जायेंगी तुम और एमन दोनो साथ हो लेना लोकापवादमे डरना चाहिए जनता देखकर ही जान ले"

तम्पुरानकी प्रजा-वत्सलता और सज्जनताने उन राज-भक्तोकी आँखोको सजल कर दिया

●

चौबीसवाँ अध्याय

•

कर्नल वेलेस्लीके केरल छोड़कर जानेका दिन पास आने लगा तो परिस्थितियाँ भी कुछ बदलने लगी. वेबरके पार्श्ववर्ती, जो अबतक दबे बैठे थे, अब सिर उठाने लगे. इतना ही नहीं, वे स्पष्ट रूपसे कर्नलको बुरा-भला भी कहने लगे. जब यह समाचार तलश्शेरी पहुँचा कि महाराजाने कोट्टयकी सेनाका पूरा सफाया करके राजधानीपर अधिकार कर लिया है तब कर्नल और वेबरका पारस्परिक संघर्ष स्पष्टतया प्रकट हो गया.

वेबरने परिहास-भावसे कहा—"केरलवर्माका यह काम अनवसर चेष्टा हो गया." जब यह बात वेलेस्लीके पास पहुँची तो उसने महसूस किया कि यह मेरा ही नहीं, मेरे भाई गवर्नर-जनरलका भी अपमान है.

वेलेस्लीने गवर्नर-जनरलको लिख दिया था कि केरलवर्मा पराजित हो गया है और समस्त प्रदेशमें विद्रोहको दबा दिया गया है. सफलताकी इन रिपोर्टोंके बलपर ही गवर्नर-जनरलने उसे मराठोंसे लड़नेके लिए संगठित सेनाका प्रधान सेनापति नियुक्त किया था. अब केरलवर्माकी कार्रवाईसे उसकी सारी रिपोर्ट झूठी पड़ गई. गवर्नर-जनरलके विरोधी दलके लोगों और बम्बई-सरकारके हाथ इस नई स्थितिसे मजबूत हो जायँगे. केरल-

वर्माकि इस कार्यसे कर्नलका अभूतपूर्व तेजोभग हुआ और उसने माना कि इससे मेरे मुँहपर कालिख-सी लग गई है

कर्नलको इससे जितनी व्याकुलता हुई, वेवरको उतनी ही प्रसन्नता हुई वह अन्दर-ही-अन्दर महसूस कर रहा था कि बम्बई-सरकारको तुच्छ माननेवाले कर्नलकी पराजय मेरी विजय है वह सोचता था कि वेलेस्ली अब विजयी होकर घमण्ड तो न कर सकेगा

इस व्याकुलतामे भी कर्नलने एक बातमे अपनी हठ नही छोडी. विद्रोहियोको मदद करनेवाला जो सगठन तलश्शेरीमें था उसे नष्ट करनेका वह और भी तत्परतासे प्रयत्न करने लगा

वेवरके साथ हुए निश्चयके अनुसार चिरुतक्कुट्टीके विरुद्ध पाये गए प्रमाण दो निष्पक्ष अधिकारियोको सौंप दिये गए उनको ठीक तरहसे जाँच लेनेके बाद उन्होने निर्णय दिया कि मूसा, पेरेरा और चिरुतक्कुट्टी विद्रोहियोंके गुप्तचर रहे हैं, अतएव उन्हे सैनिक-नियमोंके अनुसार मृत्यु-दण्ड दिया जाना चाहिए

मूसाके नगर छोडनेकी बात इस निर्णयके बाद ही कर्नलको मालूम हुई जब उसे गिरफ्तार करनेके लिए पता लगाया गया तो मालूम हुआ कि वह चतुर व्यापारी तीन चार दिन पहले ही तलश्शेरी छोडकर चला गया था उसके प्रबधकने बताया कि वे किसी कामके लिए कोलम्बो गये है

निष्पक्ष न्यायाधिपतियोका निश्चय वेवर आदिको बतानेके लिए कर्नलने एक सभाका ही आयोजन कर डाला वेवर और उप-अधिकारीगण कर्नलके कार्यालयमें उपस्थित हुए, परन्तु किसीको यह पता नही था कि सभाका प्रयोजन क्या है ?

केरलके विविध प्रदेशोंसे आमन्त्रित सेनाधिकारी, वेलेस्लीके अगरक्षक और अन्य सैनिक कर्मचारी वहाँ पहलेसे ही उपस्थित थे सबके यथास्थान बैठ जानेके बाद कर्नलने कहा—"परसो मैं यह देश छोडकर जा रहा हूँ महामान्य गवर्नर-जनरलके पाससे आदेश आया है कि मैं

हुए सेनापतिके नियुक्त होनेतकके लिए आप सबको रक्षाके तरीकेका निर्देश करके जाऊँ अभी-अभी जो समाचार मिला है उससे स्पष्ट है कि उपद्रव अभी शान्त नही हुआ और केरलवर्मा अविवेक करता रहनेपर तुला हुआ है इससे मेरी जिम्मेदारी बढ गई है मैं सैनिकोको आवश्यक आज्ञाएँ दे चुका हूँ परन्तु किसी साम्राज्यकी जय और पराजय केवल सेनापर निर्भर नही करती नागरिक अधिकारियोका सहारा न मिले तो सेना दुबल हो जाती है इस शहरमे हमारे विरुद्ध काम करनेवाला एक प्रबल दल है इसका प्रमाण मिल चुका है उस दलको जड-मूलसे नष्ट-कर देना अति आवश्यक है इसमे मेरे और नागरिक अधिकारियोके बीच कुछ मतभेद था, इसलिए जो प्रमाण प्राप्त हुए है उन्हे दो निष्पक्ष निर्णायकोके हाथोमे सौंप दिया गया था उनका निर्णय आज सुबह मेरे पास पहुँच गया है उसके अनुसार दलके सूत्रधार मूसा सरय्कार, चिरु-तवकुट्टी और पेरिराको सैनिक नियमोके अनुसार फाँसी दी जानी चाहिए अन्य मददगारोको गिरफ्तार करके कैदमे रखना चाहिए आप लोगोकी क्या राय है ?"

बेवर क्रोधसे आँखे लाल किये हुए खडा हो गया थोडी देर तो आवेशके कारण वह कुछ कह ही न सका, बादमें बोला—"यह सम्मति न तो ठीक है और न उचित ही केरलवर्मापर जोर न चल सका तो क्या अब स्त्रियोपर गुस्सा निकाला जा रहा है ? अपने मित्र मूसाको तो पहले ही वही भेज दिया—बहुत न्यायी है आप ! इस निर्णयका मैं विरोध करता हूँ इस मामलेपर विचार करनेका अधिकार नागरिक अधिकारियोको है इस सम्बन्धमे बम्बई-सरकारको लिख दिया गया है उसका उत्तर आनेतक कोई कारवाई करना मुझे स्वीकार नही है"

सभाका वातावरण क्षुब्ध हो रहा था कि इतने मे ही एक सैनिकने आकर निवेदन किया कि केरलवर्माके दो स्थानपति कुछ महत्त्वपूर्ण सदेश लेकर कर्नलके पास आये है समाचार सुनकर सभी लोग आश्चर्यमें पड गए

कर्नल—क्या ? केरलवर्माके स्थानपति ?

सैनिक—जी हाँ ! सीधे कोट्टयसे आये हैं

वेवरने हँसी उडाते हुए कहा—विदाईके उपलक्ष्यमें केरलवर्माने कर्नलके लिए उपहार आदि भेजे होंगे ! कुछ भी हो पपश्शिने असमय बाधा डाल दी है !

वेलेस्लीने बढते हुए क्रोधको दबाकर स्थानपतियोको ले आनेकी आज्ञा दे दी

अम्पु नायर और चन्द्रोत्तु नम्पियारने पदके अनुरूप वेश-भूषामें सभा-मे प्रवेश किया वहाँ एकत्र लोगोमे से बहुत-से नम्पियारको जानते थे परन्तु वेलेस्लीका उनसे परिचय नही था फिर भी वेश और व्यक्तित्व आदिसे आदरणीय समझकर कर्नलने उनको बैठनेके लिए आमन्त्रित किया

कर्नल—आप केरलवर्माके पाससे आ रहे है ?

नम्पियार—हम महामहिम कोट्टय महाराजकी आज्ञासे ही आये है

कर्नल—केरलवर्मा यहाँ क्या निवेदन करना चाहता है ? यदि सधि-प्रार्थना है तो पहले ही कहे देता हूँ, उसका समय बीत गया

नम्पियारने एक मन्दहासके साथ उत्तर दिया—"विजयश्रीसे स्वयवृत हमारे महाराजा सदा ही शान्तिप्रिय हैं यदि अपने और देशके सम्मान-के लिए बाधक न हो तो वे किसी भी समय सन्धि करनेके लिए तैयार है परतु अभी हमारे आनेका उद्देश्य यह नही है यह पत्र पढ लेगे तो ।.क सब मालूम हो जायगा यह महाराजाने आपके लिए ही भेजा है "

रेशमके वस्त्रमें लपेटे हुए ताल-पत्र उन्होने कर्नलके हाथमे दे दिये उलट-पुलटकर देखनेके बाद उसने वे तालपत्र पढकर और अनुवाद करके सुनानेके लिए सिकुवेराके हाथमें दिये उसने पत्र पढकर सबको अक्षरश समझा दिया

अनुवाद समाप्त हुआ तो कर्नलका मुख देखने योग्य था क्रोधमें आकर वह बोलने लगा—"इस मूर्ख राजाका इतना साहस ! वह हमारे

साथ समान भावसे संधि-व्यवस्था करना चाहता है। उससे कह देना कि राज-द्रोह के अपराधमे मृत्यु-दण्ड पाये हुए अपराधियो को साम्राज्याधिकार रखने वाली कपनी कभी नही छोडेगी और यदि उसने किसी गोरे व्यक्तिका बाल भी बाँका किया तो हम इस सारे देशको भस्म कर देनेमे भी सकोच नही करेगे"

सिकुवेराने यह बात अनुवाद करके सुना दी नम्बियारने कुछ सोचनेके बाद शान्तिके साथ फासीसी भाषामे कहा—"महाराजा कभी यह नही चाहते कि निरपराध व्यक्तियोका रक्त बेकार बहाया जाय वे जानते है कि मेजर होम्स एक आदरणीय सेना-नायक है और वे इग्लैडके एक ऊँचे कुलमे पैदा हुए है परन्तु अभी हमने आपके सामने जो व्यवस्था प्रस्तुत की है उसे न मानकर यदि आप कोई साहस करेगे तो महाराजाका कथन केवल धमकी नही होगा पुरली पहाडपर फाँसीके लिए विशेष खभे खडे करनेकी आवश्यकता नही है"

नम्बियारने यह सोच कर फासीसी भाषामें बात की कि सभामे कर्नलके अलावा कम-से-कम कुछ लोग तो फासीसी भाषा समझनेवाले होगे ही, इसलिए यदि मैं उससे बात करूँ तो वे भी साक्षी हो सकेंगे फल अनुकूल ही निकला उनकी बाते जो अधिकारी समझे वे एक दूसरेकी ओर देखने लगे उन्होने महसूस किया कि "यदि केवल एक देशी स्त्री और एक दुभापियेके लिए हमारे बीच के सम्मान्य लोगोको फाँसी दी जाय और जानते हुए भी उसे रोका न जाय तो यह एक घोर अपराध होगा" उनका भाव समझकर वेबर परिहासके साथ बोला—"मेजर होम्स कुलीन है, वीर है, सम्मान्य सेना-नायक है, और इग्लैडमे उनके बहुत-से सम्बन्धी ऊँचे ऊँचे पदो पर विराजमान है कप्तान स्टुवर्टकी भी बात ऐसी ही है ब्रिटिश साम्राज्यकी रक्षाके लिए यदि ऐसे श्रेष्ठ व्यक्तियोके प्राणोकी आहुति देनी पडे, उनकी मृत देह कौओ और गिद्धोकी शिकार बन जाय, तो भी क्या ? उनके लिए दुखी होनेवाले हम मूर्ख है यह मत सोचिए कि उनके प्राण एक तुच्छ स्त्री और एक दुभापियेके प्राण

लेनेके लिए बलि किये जा रहे है । यदि इनके कारण कपनीका प्राबल्य नष्ट होता हो तो इन्हे छोडा कैसे जाय ?"

सैनिक-अधिकारियोमेसे कई एक-साथ चिल्ला उठे—"क्या कहते है ? मेजर होम्स आदिको फाँसीपर चढाये जानेके लिए उनके हाथोमे सौंप दे ? नही, कभी नही इस स्त्रीको दण्ड देनेके दुराग्रहमे यदि हम मेजर होम्सके वधको स्वीकार कर लेंगे तो इसका अर्थ यह होगा कि हमने ही उनको अन्यायसे मार डाला"

वेलेस्लीने देखा कि अन्य कर्मचारियोका मत भी वैसा ही है तो वह चिन्तामें पड गया—अब क्या किया जाय ? सैनिक अधिकारियोकी बात न्याय सगत है, ऐसा उसे भी लगा, और साधारण परिस्थितिमे वह केरल वर्माके प्रस्तावको सहर्ष स्वीकार भी कर लेता, परन्तु इस समय उसे लग रहा था कि इसमे वेबरकी विजय है फिर भी दूसरा चारा न देख कर उसने फ्रासीसी भाषामे ही उत्तर दिया--"आपका मतलब मैं समझ गया इस दुश्चरित्रा स्त्रीको और उस तुच्छ दुभाषियेको मार डालने से कोई लाभ नही यदि केरल वर्मा मेजर होम्स और कप्तान स्टुवर्टको स्वतन्त्र करके मेरे पास पहुँचा देनेके लिए तैयार है तो मुझे कोई आपत्ति नही, कल सायकालतक वे यहाँ आ जायँ"

नम्पियारने अपनी स्वीकृति दे दी परन्तु उन्होने कहा कि इस करारको लिखकर पक्का कर दिया जाय, अथवा दण्ड-प्राप्त व्यक्तियोको कपनीकी अधिकार-सीमाके बाहर रख दिया जाय

वेबरने कहा—इसकी आवश्यकता नही है मेजर होम्स आदिके यहाँ पहुँचते ही आपके लोगोको मैं खुद आपके हाथोमें सौंप दूँगा ,परन्तु यह विनिमय स्वय दण्डितोको स्वीकार है या नही, यह भी तो जान लेना आवश्यक है ?

अन्य सैनिक-अधिकारियोका मत था कि अग्रेज-अधिकारियोकी तुलनाम ये देशी लोग कीडे-मकोडोके समान है, इसलिए इनसे पूछ-ताछ करनेकी कोई गुन्जाइश ही नही है वेलेस्ली इस मामलेमे उदासीन मालूम

हुआ उसने अन्तमे कहा— 'परसों प्रभातके पहले हमारे लोग यहाँ पहुँच जायँ आपको और कुछ तो कहना नही ?"

नम्पियारने मलयालम्मे उत्तर दिया—"महाराजाने निवेदन करने की आज्ञा दी है कि उनकी कामना है, आपको यात्रामे कोई कष्ट न हो और आप सकुशल अपने निर्दिष्ट स्थानको पहुँच जायँ।"

वेनेरीकी कोपाग्निमे घृताहुति सी पड गई उसने समझ लिया कि महाराजा इस प्रकारके सदेशसे मुझे अपमानित कर रहे है वह क्रोधसे आँख लाल करके वहाँसे चला गया सभा विसर्जित हो गई

केदरने बाहर निकलकर नम्पियारको पास बुलाया और उन्हे साथ लेकर कालेकी ओर चल दिया उसने पूछा—"आप तो कपनीके मित्र है, इस प्रकार कैसे आये ?"

नम्पियारने उत्तर दिया—'मै कपनीका मित्र होनेके कारण ही इस साहसके लिए तैयार हो गया। ईर्ष्यालु लोग मेरे इस प्रयत्नको गलत समझेगे, परन्तु आपके जैसे महानुभाव सच्ची स्थिति जान लेगे सच बताता हूँ एक बार चिरतक्कुट्टीने मुझपर एक भारी उपकार किया था उसके खयालसे क्या उसको इस विपत्तिमे बचाना मेरा काम नही था ?'

केदर—उसने आपकी क्या सहायता की थी !

नम्पियार—आपको याद नही मेरे आश्रयमे रहनेवाली एक युवती-को कुछ सैनिक पकड लाये थे और आपने मेरी प्रार्थना स्वीकार करके छोड दिया था

केदर—ठीक ! आपने ठीक ही किया आप न आते तो ये क्रूर उस बेचारी लडकीकी हत्या ही कर डालते मै जानता हूँ कि वह निरप-राधिनी है परन्तु केरल वर्माकी एक अगूठी उसके पास निकली है यही इसके विरुद्ध प्रमाण है परन्तु क्या एक प्रकारकी अँगूठियाँ दो लोगोंके पास नही हो सकती ? मै तो मान ही नही सकता कि चिरतक्कुट्टीने कभी कोई गलती की है

नम्पियार—उस अंगूठीके बारेमे सदेह नही होना चाहिए वह महाराजाने एक बार मुझे दी थी उस बालिकाको छुडानेमें जब उसने मेरी इतनी सहायता की तो मैंने ही कृतज्ञता-प्रकाशनके रूपमे वह उसको दी थी.

वेबर—अब मेरे हृदयसे भी एक भार उतर गया

इतने समयमे वे तीनो बँगलेतक पहुँच चुके थे एक नौकर घबराया हुआ सामने आया और उसने वेबरसे कुछ कहा दरवाजा खुला तो वहाँका दृश्य भयानक था वहाँ चिरुतक्कुट्टीका निष्प्राण शरीर पडा हुआ था इतने समयतक चुपचाप चले आनेवाले अम्पुनायरने दौडकर उसका सिर अपनी गोदमें ले लिया नम्पियार आश्चर्यसे देखते खडे रहे

वे लोग वहाँ अधिक समय नही रुके लौटते हुए अम्पु नायरने नम्पियारको सत्य स्थिति बताई चिरुतक्कुट्टी उनकी पत्नीकी जुडवाँ बहन थी दोनो ही टीपूके आक्रमणके समय एक मुसलमान सेनापतिके हाथमे पड गई थी अम्पुकी पत्नीने आत्म-हत्या करके अपने मान तथा चरित्रकी रक्षा की परन्तु उसकी अविवाहिता बहनकी उतनी हिम्मत न हुई बादमें वह पेरेराके हाथमें आई वही चिरुतक्कुट्टी थी

अम्पुनायरने बताया—"अपनी पत्नीको खोजता हुआ मैं परदेशोंमें बहुत घूमा बहुत लोगोंसे सुना था वह जीवित है और पेरेरा उसे किसी कोकणस्थसे खरीदकर तलश्शेरीमे ले आया है मैंने उसकी रक्षाके लिए बहुत प्रयत्न किया परन्तु तलश्शेरीमें आकर जब उससे मिला तो सब सच बात मालूम हुई वह मेरी पत्नी नही, चिरुतक्कुट्टी थी उसने वेबरको छोडकर आनेमे साफ इनकार कर दिया"

वह भ्रष्टा हो चुकी थी अम्पु यदि उसे ले आता तो भी लाभ क्या होता ? उसने बहुत कष्ट सहे थे परन्तु बादमें वह एक अनुराग-सुरभित जीवनमे पहुँच गई थी इससे अम्पुको बहुत प्रसन्नता हुई वेबर और चिरुतक्कुट्टीका पारस्परिक प्रेम असाधारण था

नम्पियारके मुँहसे केवल एक उद्गार निकला—"हाय!"

पच्चीसवाँ अध्याय

●

पुरळीश्वरोंकी पुरातन राजधानीका कम्पनीकी सेनासे मुक्त करा लिया जाना समस्त केरलके लिए उल्लासका विषय था। कालीकटमें जब पुर्तगीज नौसेनापतिको हराकर भगाया गया उसके बाद इतनी महत्त्वपूर्ण विजय किसी अन्य केरलीय राजाने नहीं पाई थी। कन्याकुमारीसे गोकर्ण तककी जनताने महाराजा केरलवर्माका अभिनन्दन किया। कोदण्ड शास्त्रीने कोट्टयके राजाओंके विषयमें यह कहा था कि "युद्धे येषा अहित हतये दुर्गा सन्निधत्ते", उसका पण्डित लोग समर्थन करने लगे—"यह सच ही होना चाहिए! श्री पोर्कली भगवतीने स्वयं युद्ध-क्षेत्रमें आकर सहायता की होगी!" लोग कहने लगे—"यही केरल-सिंह है!"

अपने महलमें रहकर तम्पुरान शासनका कार्य पूर्ववत् करने लगे। उनके सभी कार्यकर्ता सारा काम पूर्ववत् करनेमें निरत थे। अन्यान्य देशोंके लोग तम्पुरानके लिए उपहार लेकर आते और इस बहाने दर्शन-कर जाते। तम्पुरान सबका यथोचित आदर-सत्कार करके और उन्हें प्रसन्न बनाकर ही विदा करते थे। उनका व्यवहार ऐसा था मानो अब रहा हैं। कोट्टयमके रहेंगे। एक बातसे महाराजाको बहुत प्रसन्नता थी कि

म।क्कम्-कोट्टिलम्माके वारेमें फैला हुआ अपवाद मिट गया अग्निवाधा-से शरीरको जो हानि पहुँची थी वह पूरी तरह ठीक न होनेपर भी वह साध्वी वडी केट्टिलम्माके साथ और अपनी प्रतिष्ठाके अनुरूप स्वजन परिजनो समेत प्रतिदिन देवी-दर्शनके लिए जाया करती थी उसके वारे-मे जो वातें फैली थी उनमे तम्पुरान कितने व्याकुल थे यह केवल कुञ्ञानि केट्टिलम्मा ही जानती थी उसका पूर्ण निवारण करनेका प्रयत्न भी वे कर रही थी

तलश्शेरीसे आकर चन्द्रोत्तु नम्पियार और अम्पु नायरने सारा वृत्तात तम्पुरानको सुनाया उनकी सलाह थी कि चिरुतक्कुट्टीकी मृत्यु हो जानेसे अव वेलेस्लीके साथ किये हुए करारका पालन आवश्यक नही है परन्तु तम्पुरानको यह स्वीकार नही था उनका कहना था कि चिरु-तक्कुट्टीकी मृत्युकी जिम्मेदारी वेलेस्लीकी नही है इसलिए अपनी ओरसे किया हुआ वादा पूर्ण करना ही उचित है अन्तत मेजर होम्स और कप्तान स्टुवर्टको वेलेस्लीके पास पहुँचा देनेका ही निश्चय किया गया चोक्करायरने भी इस निर्णयका अभिनन्दन किया और कहा—"इनको कैदमें रखनेसे हमे कठिनाई ही होगी अभी छोड दें तो उसका अर्थ यह होगा कि प्रतिफलकी इच्छा किये विना ही हमने उदारता दिखाई वेलेस्ली भी इसे समझेगा और ऐसा भी न माना जायगा कि हमने डरके कारण उनको छोड दिया है"

नम्पियारका ही दोनो बन्दियोको तलश्शेरी ले जाकर वेलेस्लीको सौंप आना उचित माना गया दोनो हाथोके लिए वीर-शृङ्खला और वहु-मूल्य पारितोषिक आदि देकर उन्हे विदा करते हुए महाराजाने गुप्त रूपसे उनसे कहा—"आपको पता है, हमने थोडे ही दिनोमें यहाँसे हट-कर वयनाट्टुमें स्थायी रूपसे रहनेका निश्चय किया है इसलिए, पता नही, अव कव मिल सकेंगे हम कही भी रहे, आपकी शक्ति और सहायता-का भरोसा है

नम्पियारने गद्गद् होकर उत्तर दिया—"आप कही भी जाकर विराजे, हमारे लिए प्रत्यक्ष देवता और कोई नही है श्री पोर्कली भगवतीकी कृपासे सब मगल ही होगा "

नम्पियारके विदा होनेके बाद अम्पु नायर अन्त पुरमे गये माक्कम्के साथ उण्णिनडा भी आई थी, परन्तु उससे मिलनेका अवसर अबतक उन्हे नही मिला था यह जानकर कि अम्पु नायर माक्कम्के स्वास्थ्यके बारेमे जाननेके लिए आये है, बडी केट्टिलम्मा स्वय स्वागतके लिए आई उनके पीछे उण्णिनडा भी थी उसे देखकर अम्पुने समझ लिया कि मेरे आनेका सच्चा उद्देश्य बडी केट्टिलम्माने जान लिया है

केट्टिलम्माने कहा—अनुजत्ती* का शरीर इधर-उधर थोडा-सा जल गया था अब बहुत-कुछ ठीक हो गया है घबरानेकी कोई बात नही

अम्पु—जब आप चिंता करनेवाली है तब हम लोगोको क्या घबराहट होगी ?

केट्टिलम्मा—चिन्ता मै नही, यह करती है इतना स्नेह और श्रद्धा मैने कही नही देखी माक्कम्की खाटसे अलग उण्णिनडा देखनेको भी नही मिलती

अपनी प्रशसा सुनकर उण्णिनडाने लज्जित होकर सिर झुका लिया. केट्टिलम्माने फिर कहा—"अम्पु नायर भाग्यशाली है इस मातृहीन बालिकाका कन्या दान मै ही करनेवाली हू "

'क्या ? कुञ्जानी, मुझसे नही पूछोगी ?—"महाराजकी आवाज सुनकर सब उठ खडे हुए 'घबराओ नही," तम्पुरानने हँसते हुए कहा, "परन्तु कुञ्जानीका दान पूरी तरह मुझे स्वीकार नही जिनके माता-पिता नही है उनका रक्षक राजा है इसलिए इसका दान करनेका अधिकार मेरा है "

---

* अनुज स्त्री, तद्भव—अनुजत्ती, अनियत्ती, छोटी बहन

और अधिक सुननेके लिए उण्णिनडा वहाँ खडी नही रही वह भागकर माक्कम्के पास पहुँच गई

केट्टिलम्माने तम्पुरानको उत्तर देते हुए कहा—"राजाधिकारमें हस्तक्षेप करनेका साहस मैं करूँगी ? कभी नही सुना है—'ककए राजहस्तेन', यहाँ 'कन्याका राजहस्तेन' क्यो न हो ?"

तम्पुरान—सब यथासमय ठीक हो जायगा क्यो अम्पु ! पपयवीट्टिल चन्तुके साथ मल्ल-युद्धकी कहानी हमने सुनी थी

अम्पु—जी ! उसमें मुझे पराजय ही मिली !

तम्पुरानने मुसकराकर कहा—एक बार तो तुमने अपनी हार मानी ! मै कहता था न कि उससे भिडना हो तो जरा सँभलकर भिडना ? अन्तमें उस कम्मूने ही

अम्पु—जी ! पहले ही अपने ऊपर प्रहार झेलकर उसने मुझे बचा लिया उस घावकी परवाह किये बिना अन्तमें मल्लयुद्ध करके उस चाणूरको उसने खत्म कर दिया उसका पराक्रम असाधारण है

तम्पुरान—मैंने भी एक बार कैतेरीमें देखा था उसे ज्यादा घाव तो नही लगा ? कल सुबह मेरे पास लाना उसे मै अपना अंग-रक्षक बना लेना चाहता हूँ

कुञ्आनी केट्टिलम्मा—तो एक और कन्या दान भी कर दीजिए मालूम होता है, आज सबको खुश करनेपर ही तुले हुए हैं !

तम्पुरान—वह कौन ?

केट्टिलम्माने कम्मू और नीलुक्कुट्टीकी प्रेम-कथा भी महाराजको बताई

"ऐसी बात है ? तो ठीक है" महाराजने अपनी सम्मति दे दी

शीघ्र ही एक शुभ मुहूर्तमें दोनो विवाह महाराजाकी उपस्थितिमे सम्पन्न हो गए

इन दोनो दम्पतियोंमे अधिक आनन्द माक्कम्को हुआ उण्णिनडाके साथ उसका स्नेह सहोदरीके समान हो गया था वह कहा करती थी कि

उण्णिनडाकी स्नेहमय सेवा न होती तो मैं बचती ही नहीं अब वह उण्णिनडाको चिढ़ानेके लिए बहुधा कहने लगती—"जान गई, इतने स्नेहका कारण क्या था !" और उण्णिनडा रूठकर मुँह फेर लेती थी

× × ×

महाराजाकी आज्ञाके अनुसार उण्णिमूप्पनने मेजर हार्न और कप्तान स्टुवर्टको चन्द्रोत्तु भवनमें पहुँचा दिया [illegible] जब नम्पियार उन्हें लेकर तलश्शेरी पहुँचे उस समय वेबरी [illegible] लिए अपने वासस्थानसे निकल चुका था [illegible] सत्कारके लिए सब सैनिक तथा नागरिक अधिकारी उपस्थित [illegible] भी प्रमुख स्थानपर सर्वोच्च अधिकारी बनकर [illegible] मुखपर ग्लानि थी, फिर भी उसने साहसपूर्वक [illegible] सुपरवाइजरसे कहा—"मैं मलयाल प्रदेशमें [illegible] थी कि केरलवर्मा को दबाकर यहा स्थायी शान्ति स्थापित [illegible] दैवगतिसे मेरी योजनाएँ पूर्णत सफल नही हुई [illegible] होम्स और कप्तान स्टुवर्ट शत्रुके हाथमे है यह भी मेरे लिए लज्जाजनक विषय है एक बात तो निश्चित है यदि आवश्यकता हुई तो अपने प्रारम्भ किय हुए इस कार्यको पूर्ण करनेके लिए मै फिर यहा आनेमें सकोच नही करूँगा केरलवर्मा जबतक अधीन नही होता तबतक मैं अपने-आपको पराजित ही मानता हूँ"

वेबर—आपको व्याकुल नही होना चाहिए यहांके छोटे-छोटे दगो-को शान्त करनेके लिए आप-जैसे महान् सेनापतियोकी आवश्यकता नही है वे सब धीरे-धीरे अपने-आप शान्त हो जायँगे

वेबरकी बात पूरी भी न हो पाई थी कि बाहरसे सदेश आया—केरलवर्माके पाससे सदेशवाहक आया है आज्ञा पाकर नम्पियार कर्नलके सामने आये और फासीसी भाषामे बोले—"हम जो बन्दी-विनिमय चाहते

थे वह ईश्वरकी इच्छासे पूर्ण नही हुआ फिर भी महानुभाव महाराजाने आपके उद्देश्यका अभिनन्दन करके इन वन्दियोको आपके पास भेज दिया है"

वेलेस्लीका म्लान मुख खिल उठा उसने फ्रासीसी भाषामे ही उत्तर दिया––"महाराजासे निवेदन कीजिए कि मणत्तानाके सेनाको नष्ट कर देने या कोट्टयपर अधिकार कर लेनेसे वेलेस्ली पराजित नही हुआ था, परन्तु उनके इस वीरोचित कार्यसे वह आज पराजित हो गया है इतनी योग्यता, बुद्धि, गुण और स्वातन्त्र्य-बुद्धि रखनेवाले महाराजासे कपनीको वैर-भाव रखना पडता है यह मेरे लिए दु खका कारण है. मै स्वय उनकी महत्ता और उदारताके बारेमे गवर्नर-जनरलसे निवेदन करूँगा"

नम्पियारने महाराजाकी ओरसे कर्नलको धन्यवाद दिया दोनो बन्दी उपस्थित अधिकारियोसे मिलनेके बाद कर्नलके साथ ही जहाजपर बैठ गए, सबके जय-जयकारके बीच जहाज रवाना हुआ जब सब लोग अपने-अपने स्थानको प्रस्थान करने लगे तब वेबरने नम्पियारसे कहा––"कैसे कैसे षड्यत्र रचे इस कर्नलने! महाराजाका कोई गुप्त सहायक यहाँ था तो वह मुसलमान था उसे पहले ही यहाँसे खिसका दिया!"

नम्पियारने उत्तर दिया—यहाँ गुप्त सहायक? मुझे तो विश्वास नही होता!

वेबर—कुछ भी हो, आज आपने कपनीका बडा काम किया मै इसे कभी नही भूलूँगा कर्नलके जानेके बाद वे लोग कैदमे रह जाते तो जिम्मेदारी मुझपर आ जाती

नम्पियार—यह सब कर सकने का मुझे आनन्द है कपनीकी मददसे ही तो हमारे-जैसोका गुजारा है कर्नलके विदाई-समारोहमे सम्मिलित होनेका सौभाग्य भी मिल गया सब शुभ ही हुआ

अच्छा-अच्छा! अब हमारे बँगलेमें आकर, काफी पीकर जाना

× × ×

कर्नल वेलेस्लीको गए दो दिन बीत गये थे महाराजा केरलवर्मा मन्त्रियो, सेनापतियो आदिके साथ राज-सभामे बैठे थे वहाँ चोक्करायर दर्शनोंके लिए आये महाराजाने आदरके साथ उनका स्वागत [illegible] अर्धासनपर बैठाया और बादमे कहा—"मित्रवर—नहीं-नहीं, [illegible] कुछ दिन और मेरे साथ न रहोगे ?"

चोक्करायर—आपकी सेवामे यही बना रह सकूँ तो मेरा अहो-भाग्य ! परन्तु आप सब जानते है मेरे मालिक और मेरी मातृभूमि [illegible] पुकार है उनकी सेवा मेरा प्रथम कर्तव्य है

तम्पुरान—उसमे मै कभी बाधक नही बनूँगा [illegible] सोचनेपर कौन कह सकता है कि आपकी उपस्थिति [illegible] है ? महामनस्विनी राजमाता और अपने युवक [illegible] शुभकामना निवेदित कीजिए मै कुछ स्नेहसूचक उपहार [illegible] वे भी उनको सादर समर्पित कीजिए

चोक्करायर—आपका पावन चरित उन राजमाताके सदा [illegible]-का विषय रहता है इसलिए कुछ अधिक कहनेकी आवश्यकता नही मै जो थोडे दिन आपकी सेवामे रह सका उसे [illegible] वर-दान समझता हूँ आपको मुझपर इतना स्नेह और विश्वास हुआ यह मेरे पूर्व सुकृतोका फल है

तम्पुरान—ऐसा न कहिए आपने मेरी जो मदद की उसके लिए मै आजीवन आपका ऋणी रहूँगा सोचकर देखिए—मै जो आज इस राज-धानीमे अभिमानके साथ बैठा हूँ उसका कारण आप ही है न ? कोट्टय नगर मैने नही, आपने जीता है

चोक्करायर—महानुभावोके लिए नम्रता ही सबसे बडा गुण है आपके यह कहनेसे मुझे आश्चर्य नहीं होता

तम्पुरान—यही नही, वयनाट्टुमे आपने जो प्रबन्ध किया है वह इससे भी कितना अधिक महत्त्वपूर्ण है ? उससे हमारी रक्षा सुनिश्चित

हो गई अब कितने भी वेलेस्ली क्यो न आ जायँ, कितनी भी वन्दूके क्यो न ले आयँ, आपका प्रवन्ध जवतक कायम है, वयनाट्टु सुरक्षित है

चोक्करायर—मेरी ईश्वरसे प्रार्थना है कि आपको वयनाट्टु जानेकी आवश्यकता ही न हो यदि जाना ही पडे तो मेरे प्रवन्धमे कोई अन्तर नही पडेगा

तम्पुरान—अभी यही रहनेका इरादा है तलय्कल चन्तुने समाचार दिया है कि वयनाट्टुमें तैयारी पूरी है भविष्यमे, वेलेस्लीके वदलेमे आनेवाले व्यक्तिको देखकर निश्चय करूँगा

चोक्करायर—तो, अव आज्ञा दीजिए

महाराजाने भद्रासनसे उठकर चोक्करायरका स्नेहके साथ आलिगन किया उन्होने चोक्करायरको सुरक्षित स्थानतक पहुँचा देनेके लिए वेल्लूर एमन नायरको आज्ञा देते हुए कहा—"तुमको मै वयनाट्टूका अधिकारी नियुक्त करता हूँ वहाँ सदैव पूरी तैयारी रखना"

चोक्करायरको विदा करके महाराजा अन्त पुरमें गये वहाँ माक्कम् एक झूलेपर वैठी हुई थी साथमें उण्णिनडा और नीलुक्कुट्टी भी थी महाराजाको देखकर दोनो चली गई

माक्कम्—आज इतनी जल्दी सभा विसर्जित करके कैसे आ गए ?

महाराजा—क्यो ? वेअवसर आ पहुँचा ?

माक्कम्—कभी एक झलक पाना भी तो कठिन है ऐसे लोगोंके लिए भी वेअवसर होता है ?

महाराजा—अव तो ऐसी वात नही है कुछ दिन यही रहनेका निश्चय किया है

माक्कम्—हाँ, हाँ! मै सव जानती हूँ जीजीने सव कहा है अव जायेंगे तो साथ मै भी हूँगी मै यहाँ रहूँ तो लोग कुछ-कुछ कहते है आप भी तो कहते है—फूल सजाकर वैठी हूँ! स्वामी गहन वन मे और मै जाति, मल्लिका और केतकीको एक साथ साजकर महलमें! इससे अधिक अपवाद और क्या हो सकता है ?

महाराजा—अपनी गलती मैंने स्वीकार कर ली, देवि ! अब ऐसा नहीं लिखूँगा "जाती ! जातानुकम्पा भव !" भी आगे नहीं कहूँगा प्रतिज्ञा करता हूँ

मावक्रम्—फिर भी उस जाति पुष्पके प्रति मैं बहुत कृतज्ञ हूँ । जिस दिन उस श्लोकको रट-रटकर मैंने अपने-आपको शान्त रखा है ! जीजीने भी तो कहा था कि वह मेरे रोगोंके लिए रामबाण औषधि है ?

महाराजा—देखो तो सही ! यही ना स्त्रियोंकी [illegible] है !

किसीको भी नही मालूम था कि वेलेस्ली क्या करनेवाला है कोट्टय और कूत्तुपरम्पु* दोनो स्थानोमे दो बडी सेनाएँ रखनेपर भी उसने उनको निश्चित आज्ञा दे रखी थी कि किसीसे भी झगडा न करें इतना ही नही, वयनाट्टु आदि स्थानोकी सेनाको वापस वुला लिया था कोट्टय और कूत्तुपरम्पुके अतिरिक्त मणत्तनामे कपनीकी सेना थी वेलेस्ली खुल्लम-खुल्ला अपने मित्रोंसे कहा करता था कि वह मणत्तना-से भी सेनाको वापस वुलानेवाला है

तलश्शेरीके सुपरवाइजर वेवरको यह सब वहुत अखर रहा था जहाँ सेना विशेष थी वहीसे कपनीके व्यापारके लिए काली मिर्च आदि वसूल होती थी जवसे कर्नल सेनाओको वापस वुलाने लगा तवसे व्यापार-सामग्रीकी वसूली भी कम हो गई अव यदि मणत्तनासे भी सेना हटा ली गई तो कपनीके गोदामोके खाली पडे रहनेकी नौवत आ जायगी

उसे चिन्ता थी कि कही इस वारेमें वम्वईके गवर्नरने जवाव तलव किया और यह उत्तर दे दिया गया कि सेना-नायकको व्यापारमें दिलचस्पी नही है इसलिए ऐसा हो रहा है, तो नौकरीसे ही हाथ धोना पडेगा कपनीसे तो कोई वहाना भी वना सकता था, केवल एक चेता-वनी ही मिलती, इसलिए इस ओरसे वेवरको विशेष व्याकुलता नही थी परन्तु, वम्वई-सरकारसे छिपाकर मय्यपी†के फ्रासीसी व्यापारियो-के साथ स्वय जो व्यापार करता था वह भी इस वर्ष असभव हो जायगा कपनीके नियमोके अनुसार अन्य यूरोपीय लोग देशवासियोंसे काली

---

* एक स्थान विशेष, जहाँ 'चाक्यार कूत्तु' हुआ करता था कूत्तु-पुराण कथाओके विशेष अशोका अभिनय, जो चाक्यार जातिका कोई एक आदमी करता है उसे साधारणत 'चाक्यार कूत्तु' कहते है

† उत्तरी मलावारका तत्कालीन फ्रासीसी केन्द्र